पुरुषश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविर्वित

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम्।

संशोधकः— पूज्यपादमवर्जेकश्रीकांन्तिविजयश्चित्य-पूज्यवरश्रीचतुरविजयान्तिषद् मुनिपुण्यविजयः

प्रकाशितमित्म्— अहम्मदावाद्वास्तव्य श्रेष्ठिवर-श्रोदोलतचन्द्रात्मज-श्रोप्रेमचन्द्रमोद्दीश्रेयोनिमित्तं तत्स्तेहि पारेख-उत्तमचन्द्रात्मज-बी. प. पल् पल्. बी. इत्युपाधिधारि-रा. व. श्रीगीरधर-लालसमर्पितद्रव्यसाहाय्येन ।

-प्रथमावृत्ति र्रुचीर संवत २४६४. 400

विक्रम संवत् १९९४

वीः	सेवा	म हिर	द र	Š
	दिल्ल	ी		Rearrancerear
				X
	*			×
		ルメ		×
क्रम सक्या —	22.0	27	नि	7
काल न०	 (XXXX X			×
वण्ड				- 🔉

पूज्यश्री जिनभद्रगणिश्चमाश्रमण विरचितं

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितंम् ।

संशोधकः— पूज्यपादमवर्त्तेकश्रीकान्तिविजयशिष्य-पूज्यवरश्रीचतुरविजयान्तिषद् मुनिपुण्यविजयः

प्रकाशितमिदम्—
अहम्मदाबादवास्तव्य-श्रेष्ठिवर-श्रीदोल्जतचन्द्रात्मज श्रीप्रेमचन्द्रमोदीश्रेयोनिमित्त तत्स्नेहि पारेखउत्तमचन्द्रात्मज-बी. प पल् पल्. बी.
इत्युपाधिधारि-रा व. श्रीगीरधरलालसमर्पितद्रव्यसाहाय्येन ।

प्रथमावृत्ति वीर संबत् २४६४

600

विक्रम संवत् १९९४

प्रकाशकः— भाईश्री बबल्जंद्र केशवलाल मोदी हाजापटेलनी पोळ, अमदाबाद.



धी डायमंड ज्युबिकी प्रिन्टींग प्रेसमां परीख देवीदास छगनलाले छाप्युं. सलापोस रोड—असदाबाद.

स्मरणाञ्जलि.

धर्मारमा भोयुत वकील केशबलाल प्रेमचंद मोदीनी प्रेमभरी प्रेरणाने परिणामे प्रस्तुत प्रन्थनुं सम्पादन में तेमना तरफ्यी स्थीकार्युं हतुं। आजे अत्यंत दीलगीरीनी बात छे के प्रस्तुत प्रथने अवलोकवा पहेलां तेओ आ दुनिआमांथी अहदय यथा छे। वकील केशबलाल भाई प बीना वकीलोनी जेम असीलो साथ कूट गढमथल करी जाणनार वकील न हता पण प्रामाणिकपणे वर्तनार आदर्श वकील होवा उपरांत, तेओ धर्मात्मा, अपूर्व साहित्यप्रेमी अने साहित्यसेवक हता। भारतीय तेम न पामात्य साहित्यप्रेमी अने साहित्यसेवक हता। भारतीय तेम न पामात्य साहित्यरिक विद्वानोना तेओ मार्गदर्शक अने सहायक मित्र हता। पोताना जीवनमां तेमणे जैन साहित्यनी तेम न जैन धर्मनी अनेक रीते सेवा बजावी छे। तेमना अभावथी जैन समाजने एक विरल साहित्यसेवीनी खोट पढी छे। हुं सद्गत वकील महाश्यना आत्माने शान्ति इच्छी विरमुं छुं।

म्रुनि पुण्यविजयः

॥ अईम् ॥

प्रस्तावना

इस्तिलिखित प्रति—प्रस्तुत प्रन्यमा सशोधनमाटे पूज्यपाद प्रवर्तक भी १००८ भी कान्तिबिजयं महाराजना चडोदराना हस्तिलिखित जैन झानभंडारनी नवी लखापल मात्र पक ज प्रतिनो आधार लेवामां आव्यो छे। आ प्रतिने, लींबडीना जैन झान-मंडारनी कोई विद्वाने सुधारेल प्राचीन प्रतिना आधारे में सुधारी हतो। आ उपरांत, प्रस्तुत प्रंथने सुधारवा माटे आवश्यकिनिर्युक्ति, पिण्डिनिर्युक्ति, भोधनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, बृहत्कल्पभाष्य, पंच-कल्पभाष्य बगेरे प्रम्थोनो एण उपयोग करवामां आव्यो छे अने जेम बने तेम प्रस्तुत प्रन्थने शुद्ध करवा माटे प्रयत्न कर-वामां आव्यो छे।

पस्तुत प्रन्थनी हस्तलिखित प्रतिमां अमे वे खास विशेषताओ जोई छे। एक परसवर्णिविषयक; अर्थात् अब्भिङ्गिय देन्तो
होन्ति अणहियासेन्तेहि आ प्रमाणे घणे ठेकाणे प्राचीन
समयथी करेला परसवर्णों छे। अने बीजी विशेषता—क्यां क्यां
प्रस्तुत प्रन्थनी जे जे स्त्रगाथानुं भाष्य समाप्त थाय छे त्यां ते ते
गाथाना अंकने ताहपत्रीय प्रतोमां आघता पत्रांकदर्शक अक्षरांको
द्वारा दर्शांववामां आव्यो छे। उपरोक्त परसवर्ण अने गाथाहर्शक
अक्षरांको आखा प्रन्थमां करवामां आव्या हरो परंतु लेखकादिनी
अज्ञानताने लीधे केटलेक ठेकाणे आ बस्तु कायम रही छे अने
केटलेक ठेकाणे पमां परिवर्तन पण थयुं छे। अमे, आ बन्नेय
बस्तुओ अमारा पासेनी प्रतिमां जे प्रमाणे मळी छे ते रीते
कायम हा राखी छे। आयी अमे पटलुं का नणाववा इच्छीप
छीप के-आ ग्रंथमां परसवर्ण बगेरे जे छे ते अमे हस्तलिखित
प्रतिने आधारे ज करेला छे।

जीतकरपभाष्य—प्रस्तुत भाष्यमंथ व करूपभाष्य, व्यवहार-भाष्य, पंचकरपभाष्य, पिण्डनिर्युक्ति वगेरे प्रम्थोनी गाथाना संग्रहरूप ग्रन्थ छे। कारण के आ ग्रन्थमां पत्नी दगलावंध गाथाओं छे जैने उपरोक्त ग्रन्थोमांनी गाथाओं साथे अक्षरशः सरसाधी शकाय।

प्रनथकार — आ पुस्तकमां कीतकलपस्त्रत्र अने तेना भाष्यनो समावेश करवामां आव्यो छे। जीतकलपस्त्रत्रना प्रणेता भगयान जिनभद्रगणि श्रमाश्रमण छे प निर्विवाद हकीकत छे। आ संबंधमां तेम ज भगवान जिनभद्रगणिना समय निर्णय विषे विद्वद्वर्य श्रोमान किनविजयजीय पोते संपादन करेळ चूर्णि सहित जीत-कल्पस्त्रत्रनी प्रस्तावनामां सिवस्तर आलोचना करी छे। परले आ विषयमा जिझासुओनं ते प्रस्तावना जोवा भळामण छे। अहीं मारे मात्र पटळु ज कहेशानु छे के जीतकल्पभाष्यना कर्ता कोण छे?। प्रस्तुत भाष्यमां कोई पण ठेकाणे भाष्यकारे पोताना नामनो उल्लेख कर्यों नथी, नथी चूर्णिकारे प्रस्तुत भाष्यनो पोताना ग्रन्थमां क्यां य उल्लेख कर्यों, तेम तेथी बीजो कोई एवी स्पष्ट उल्लेख पण मळतो नथी जेना आधारे भाष्यकारना नामनो चोक्कस निर्णय करी शकाय। तेम छतां प्रस्तुत जीनकल्पभाष्यनो

तिसमयहारादीण, गाहाणऽहुण्ह वो सह्दवं तु । वित्थरयो वण्णेन्जा, जह हेट्टाऽऽवस्सप भणिय ॥६१॥

आ गाथामांना "जह हेट्टाऽऽवस्सप भणियं" प पाठ तरफ ध्यान आपतां आपणने सहेजे पम थाय छे के-अहीं "जह आव स्सप भणियं" पटलो ज पाठ वस छतां भाष्यकारे वधारानो "हेट्टा" दाब्द शामाटे मूक्यों ?। "हेट्टा" शब्द प कोई पाद-पूरणार्थक शब्द नथी के आपणे तेम मानीने चळावी लहेए। करं जोतां प्रन्थकारों "हेट्टा" अने "उचरिं" प वे शब्दोने अनुक्रमे "पूर्व" अने "अग्रे" अर्थमां ज वापरे छे। दा. त. "हेट्टा भणियं" अर्थात् पूर्व भणितम्; "उवरिं वोच्छं" अर्थात् अमे वश्ये। आ उपरथी प फलित याय छे के-"मस्तुत जीत-कल्प" ग्रंथना भाष्यकारे "तिसमयहार" अर्थात् "जाबह्या तिसमया-" (आव० निर्युक्ति गाथा ३०) इत्यादि आठ गाथा-ओनुं स्वरूप पूर्व आवश्यकमां विस्तारयी वर्णन्युं छे"। आव-श्यकनिर्युक्त्यन्तर्गत "आवश्या तिसमया०" आदि गाथाओनुं

भाष्यग्रंथ द्वारा विस्तृत व्याख्यान करनार भगवान जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण सिवाय बीजुं कोई ज नथी। पटले मारी प दढ मान्यता छं के-प्रस्तुत जीतकल्पभाष्यना प्रणेता भगवान श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण छं।

भाष्यकार तरीके वे आचार्यो जाणीता छे। एक भगवान् श्रीसंघदासगिण क्षमाश्रमण अने बीजा पृष्य श्रीजिनभद्रगिण क्षमाश्रमण। कल्पवृहद्भाष्य वगेरेना प्रणेता कोण छे? प निर्णीत निर्णा, पण प आ वे करतां कोई श्रीजा ज आचार्य छे पम अमे मानीए छीए। अस्तु, ए गमे ते हो, तो पण पृष्य श्रीजिनभद्रगिण क्षमाश्रणनी महाभाष्यकार तरीकेनी ख्याति होई प्रस्तुत भाष्यमां तेमना पूर्वे थई गपल भगवान् श्रीसंघदासगिण कृत भाष्यग्रन्था- दिनी गाथाओं होवामां कोई पण प्रकारनी विरोध नथी।

विषय—प्रस्तुत ग्रन्थमां जैन निर्धन्थ-निर्धन्थीओना जुदा जुदा अपराधस्थानविषयक प्रायश्चित्तोनुं जोतन्यवहारनं आश्री निरूपण करवामां आन्युं छे। जे विषयानुक्रमणिका जोवाथी स्पष्ट रोते जाणी शकाशे।

अंतमां हुं पटलुं ज इच्लु छुं के-प्रस्तुत यन्थना संशोधनमा सायधानी राखया छतां स्वलनाओ रहेवा पामी होय तेने विद्वानो क्षमापूर्वक सुधारीने बांचे।

> निवेदक— पुण्यविजय ।

विषयानुक्रमणिका

विषय.	भाष्यगाया.	वृष्ठ.
मूत्र गाथा १		\$
मंगल अभिघेयादि		ર
' प्रचचन ' इाब्दनो निरुक्तार्थ	१– इ	१
'प्रायश्चित्त' दाब्दनो निरुक्तार्थ	ક- <i>દ</i>	Ą
आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत व्यवहा	र ७-८	ર
आगमव्यवहार	९-५५९	3
'आगम ' व्यवहारना भेद-प्रभेदो अने		
प्रत्यक्ष आगम परोक्ष आगम	9-80	ર
प्रत्यक्ष-परोक्ष आगमनुं स्वरूप	११	ર
'अक्ष ' शब्दनी न्युत्पत्ति	१२-१३	ર
ं अक्ष 'ना अर्थ सबंधे अन्य मतनो निर्देश		
अने प्रतिषेध	१ ४–२२	ર
'नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष आगम'नी त्रिविधताः	२३-२४	₹
अवधि मनःपर्याय-केवल		
अवधिज्ञान	२५-७३	ş
अवधिज्ञाननी प्रकृतिओ	२५-३१	ક
भवप्रत्ययिक अवधिज्ञान	३२-३३	೪
गुणप्रत्ययिक अवधिज्ञान	३४	೪
'अवधि' नुंस्यह्रप	३५-३६	ક
'अवधिज्ञान'ना छ भेदो	३७	ន
आनुगामिक अषधि	३८-४६	ક
अनानुगामिक अवधि	४७-४ ९	ધ્
वर्धमानक अवधि	५०- ६ १	ધ
हीयमानक अव्धि	६ २	Ę
प्रतिपाती अवधि	६३-६ ೪	૭
अप्रतिपाती अवधि	६५ -६ <u>-</u>	હ
द्रव्याविध क्षेत्राविध	६८-६९	G

काला वधि	५० -७ १	
भावावधि	७२-५३	
मनःपर्येव ज्ञान	७४–८९	
मनपर्यव ज्ञानना वे भेदः	હછ	
ऋजुमति-विमलमति		
द्रव्यमन पर्यव	હલ્	
क्षेत्रमनःपर्यव	७६ -८१	
कालमनः पर्यव	८२-८३	
भावमनःपर्यत्र	८४-८५	
'मन पर्यव ज्ञान 'नो विषय	८६-८८	
ऋजुमति-विपुलमति	८९	
केवलज्ञान	90-909	
केवलज्ञाननुं स्वह्रप	९०-१०४	
केवलज्ञानिमां मति वगेरे ज्ञाननो	अभाव आदि १०५-९	ş
परोक्षागमञ्चषहारी	११० -६६	ę
'प्रायश्चित्त' नी न्यूनता-अधिकता	संबंधी	
पृच्छा अने उत्तर	११७–२४	१
प्रायश्चित्तदानयोग्य	१४५-३१	१
आलोचनाथ्रवणनो क्रम	१३२ ४८	१
पायश्चित्त देनारनी योग्यना अयो	ग्यना	
संवंथी विचार	8,86-588	Ş.
प्रायश्चित्तनां अढार स्थानो	१४५-५४	3.
प्रायश्चित्तनां बत्रीश स्थानो	१५५-६०	Ś
आठ संपदा	१६१–६२	Ę
चार प्रकारनी आचारसंपदा	१६३ ६६	ş
चार प्रकारनी श्रृतसंपदा	\$ Ę @-00	१
चार प्रकारनी शरीरमंपदा	१७१–७४	१
चार प्रकारनी धचनमंपदा	१७५ ७८	8
_	१७९-८४	१
चार प्रकारनी वाचनासपदा चार प्रकारनी मतिसंपदा		१

चार प्रकारनी प्रयोगमतिमपदा	१९२–९७	१७
चार प्रकारनी संग्रहपरिज्ञासपदा	१९८ २०६	86
प्रायश्चित्तनां छत्रीश स्थानो	300-33	30
चार विनयनी प्रतिपत्तिओ	२१२-१३	१९
चार प्रकारे आचारविनय	ર१੪−૨૨	१९
चार प्रकारे श्रृतिविनय	२२३−२५	२०
चार प्रकारे दिक्षेपणविनय	२२६−३३	२०
चार प्रकारे दोपनिर्घातविनय	२३४-४१	२१
आगमन्यवहारी	२४२–५४	28
'आलोचना'नादश गुणो	રક્ષ્	२२
प्रायिकत आपनार योग्य ज्ञानिओना		
अभाव यये ब्रायश्विन केम सभवे ^१	३५५−६२	२३
पत्रो शिष्यनो प्रश्न अने आचार्यनो उत्त	नर २६३ ७३	२३
दश प्रकारे प्रायधित	२७४	રષ્ઠ
प्रायश्चित्त देवानो विभाग	२७२-९०	२४
प्रायश्चित्तना करनाराओनु अस्तित्व	२९१-९९	२६
सापेक्षपणे प्रायश्चित्त देवामां लाभ अने		
निरपेक्षपणे प्रायश्चित्त देवामां अलाभ	३००-११	२६
चारित्रना अस्तित्वनी सिद्धि	३१२-१८	२७
निर्यापकोनो अन्यवच्छे इ	३१९-२१	ર૮
भक्तपरिज्ञानो विधि	इ२२-५११	36
निर्वाघात अने मध्याघात एवी		
सपराक्रमभक्तपरिज्ञानु स्वरूप	३२७	२९
द्वारगाथाओ	३२७ ३१	२९
गणनिस्सरणद्वार	३३२-३७	२९
धितिद्वार	३३८ ४०	३०
सं लेखनाद्वार	३४१-५५	३०
अगीनद्वार	३५६-६९	३१
असं विग्नद्वार	<i>७७७७</i>	३२
पकडार	३८८-८०	३३

आयोगद्वार	३८१-८६	३३
अन्यद्वार	३८७-८८	₹ ઇ
अनापृच्छाद्वार	३८९-९१	इष्ट
परीक्षाद्वार	३९२-४०७	३४
आलोचनाद्वार	४०८ -२३	३६
स्थान-धसतिद्वार	४२४-३२	३७
निर्यापकद्वार	४३३ - ३७	3८
द्रव्यदापनाद्वार	೪ ३८– ೪ ७	३८
दानिद्वार	88८-40	३९
अपरितान्तद्वार	४५१- ५२	३९
निर्जराद्वार	ક લ્ફ–૬હ	೪೦
संस्तारकद्वार	४५८-६०	80
उद्यर्तनाद्वार	४६१-६३	೪೦
स्मारणाद्वार	<i>४६४-७५</i>	೪೦
क्षचद्वार	४८६-९०	ક્ષ્
चिद्वकरणद्वार	४९१-९२	ध३
यतनाद्वार	४९३-६७	४३
निव्यीघात अने मव्याघात एवी		
अपराक्रमभक्तपरिज्ञानुं स्वरूप	४९८-५११	88
इंगिनीमरण	6 ? 3 - ? 6	४५
पाद्पोपगमन	५१६–५०	४५
श्रुतव्यवहार	५६०–६४	४९
आज्ञान्यवहार	५६५-६५४	४०
अपरिणत, अतिपरिणत अने परिणत		
शिष्योनी परीक्षा अथवा तेमनुं स्वह्रप	५६५-८८	કર
दर्पना दश्यकार्	६८९-९९	५१
कल्पना चोबीश भेद	६००-१६	५२
दर्भ कल्प आदि पदोना भांगाओ	६१७-५४	લ્ ષ્ટ
धारणा च्यवहार	६५५७४	५७

जीतन्यवहार	६७५-९४	५९
सावद्य अने अस।वद्य जीतव्यवद्वार	६८७-९४	६०
व्यवहारना स्वरूपनो उपसंहार	६९५-७०५	६०
सूत्र गाथा २-३		
प्रायश्चित्तनुं माहात्म्य	७०६-१७	६१
मूत्र गाथा ४		
प्रायश्चित्तना दश भेदो		६२
आलोचना	७ १८	६३
प्रतिक्रमण	७१ ९	६३
मिश्र-आलोचना अने प्रतिक्रमण बन्ने	७२०-२१	६३
विवेक	७२२	६३
च्यु रसर्ग	७२३	६ ३
नप	७२४	६३
छेद	७२५	६३
मूल	७२६	६३
अनत्रस्थाप्य	८२७-२८	६३
पारांचिक	७ २९–३०	६३
मुत्र गाथा ५-८		
आलोचनापायश्रित्तने योग्य अपराथम्थानो	62-186	६४
'छन्न'नो अर्थ	৬ হুৎ	६४
सूत्र गाथा ९-१२		
प्रतिक्रमणप्रायथित्तने योग्य अपगथस्थानो		६८
गुप्तिओनुं स्वरूप	७८४-८६	६८
मनोगुप्ति त्रिशे जिनदासनु उदाहरण	७८७ –९,०	इ९
वचनगुप्ति विदो कोई साधुनु उदाहरण	<i>७९</i> ,१– ९६	ह्९
कायगुप्ति विद्यो कोई साधुनुं उदाहरण	७९७-९९	ও০
कायगुप्ति विशे बीजुं उदाहरण	€00-€	७०
समितिओनुं स्वरूप	८०४-१७	૭૦
ईर्यासमिति विद्ये अर्देग्नकनुं उदाहरण	८१८-१९	७ १
भाषासमिति विशे कोई साधुतुं उदाहरण	८२०-२५	७१

प्षणासमिति षिशे वसुदेवना जीव		
नंदिवर्धननुं उदाहरण	८२६–४७	७३
आदाननिक्षेपणासमिति अने तेना		
विदो उदाहरण	८४८ ५३	હર
पारिष्ठापनिकासमिति अने तेना		
विद्ये धर्मरुचिनुं उदाहरण	८५४–६०	હર
गुरुनी आशातनानु स्वरूप	८६१-७१	७५
गुरु अने शिष्यनां षचनो	८६९ ७१	ওব
गुरुना विनयना भंगनुं स्वरूप	८७२-७७	ভঙ্
प्रकारान्तरे विनयभंगना सात प्रकारो	८ ३८	७६
इच्छाचकरणनी व्याख्या	८७९-८१	ওহ
लघुस्त्रमृषाबादनुं स्त्ररूप	८८२-९०५	ওহ
प्रतिक्रमणप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थान-		
स्रचक अविधिकास जुम्भा क्षुत वात		
असंक्षिष्टकर्म कन्दर्प हास्य विकथा		
कषाय विषयानुषंग स्वलना सहसा		
अनाभोग आभोग स्नेह भय शोक		
वाकुशिक आदि पदोनी व्याख्या	९०६–३२	ঙ ু
सूत्र गाथा १३-१५		
आल्रोचना अने प्रतिक्रमण ए वन्ने		
प्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		< ?
संभ्रम भय आपत् अनान्मवद्यता		
दुश्चि [[] न्तत आदि पदोनी न्याख्या	९,३३–५४	८ १
सूत्र गाथा १६-१७		
विवेक प्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		63
पिंड उपधि शय्या कृतयोगी कान्हातीन		
अध्वातीत शट अशठ उद्गत अनुद्रत		
कारणगृहीत आदि पदोनी व्याख्या	९५५ ७१	८४
मूत्रगाथा १८–२२		
व्युत्सर्ग पायश्चित्तने योग्य अपरायस्थानो		68

गमन आगमन विदार श्रुत सापद्यस्वप्त न	ावा-	
नदीसन्तार अर्हत् आदिपदोनी व्याख्य		८४
' उच्छास 'नुं प्रमाण वगेरे	९९१-९७	८६
मृत्र गाथा २३-७	९	
नपःपायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		<9
सूत्रगाथा २३-३%	t	८७
'झान'ना आंठ अतिचारो	९९८-१०३०	८७
'दर्शन'ना आठ अतिचारो	१०३१-६८	९०
छ व्रतरूप चारित्रना अतिचारो	१०६९-८६	९३
सूत्र गाथा ३५		
चारित्रोद्रमनु स्वरूप	६०८७-९४	९६
उद्गमना सोल दोषो	१०९५-९७	९५
आधाकर्मनो विचार	१८९८-११९४	९६
सयमश्रेणि	११०६-१०	९६
औद्देशिकनो विचार	६१९५-१२०२	१०३
पृतिकर्मनो विचार	१२०३-१५	१०४
मिश्रजातनो विचार	६२१६-१८	१०५
स्थापना दोषनो विचार	<i>६२</i> ६९–२३	१०५
प्राभृतिका दोपनो विचार	१२२४-३७	६०६
प्रादुष्करण दोषनो विचार	१२३८ ४०	१०७
कीत दोषनो विचार	१२४१-४४	१०७
प्रामित्य दोषनो विचार	१२४६ -४६	१०८
परावर्तित दोषनो विचार	१२४ 19-४८	१०८
अभ्याहृत दोपनो विचार	६२४९-५५	१०८
उद्भिन्न दोषनो विचार	१२५६ ६८	१०८
मालाहत दोषनो विचार	१२६९–७३	१०९
आच्छेद्य दोषनो विचार	१२७४	११०
अनिसृष्ट दोषनो विचार	१२७५-८२	११०
अध्यवपूरक दोषनो विचार	१२८३-८६	१११
कोटि शब्दनो अर्थ अने तेनुं स्वरूप	१२८७-१३१२	१११

उत्पादनानुं स्वरूप	29-585	११३
उत्पादनाना निक्षेपो	१३१४	११३
उत्पादनाना सोल दोषो	१३१९-२०	११४
धात्रीदोष	१३२१-२४	११४
धात्रीना (धावमाताना) पांच प्रकार	. १३२२	११४
वृतीदोष	१३२५-४०	११४
निमित्तदोष	१३४१-४९	११५
आजी १दोष	१३५०-६१	११६
वनीपकदोष	१३६२-८३	११७
चिकित्सापिण्ड	१३८४-९२	११९
क्रोध वगेरे दोषो	१३९३-९४	१६९
कोधपिंड विशे क्षपक्तुं उदाहरण	१३९५	१२०
मानपिंड विशे क्षुलकनुं उदाहरण	१३९६-९७	१२०
मायापिंड विशे वाषाढभृतिनुं उदाहरण	१३१८-१४११	१२०
लोभर्पिड विद्यो 'सिहकेसर' नामना		
मोदकने इच्छनार क्षपकनु उदाहरण	१४१२-२०	६२१
संस्तयदोष	१४२१–३६	१२२
विद्या अने मन्त्रदोष	१४३७	१२३
विद्या अने मंत्रनो तफावत	१४३८	१२३
विद्या विद्ये भिक्षपासकनुं-बौद्धउपासकनुं		
उदाहरण	६४३९–४४	१२३
मन्त्र विशे पादलित अने मुरुंडराजनुं		
उदाहरण	६४४५-४७	१२३
चूर्णदोष, योगदोष अने मूलकर्म दोष	१४४८	६२४
चूर्णदोष बाबत वे क्षुह्नकनुं उदाहरण	१४४९–५७	१२४
योगदोष	१४५८-६०	१२५
योगिवेदो बहाई पिक तापसोनुं उदाहरण	१४६१-६७	१२५
मुलकर्म	१४६८-७२	१२५
ग्रहणैषणानुं स्वरूप	१४७३-७५	१२६
ग्रहणेषणाना दश प्रकार	१४७६	१२६
शंकित दोष	१४७७-९०	१२६

दोका विषयक चतुर्भङ्गी	र्४७८	१२६
म्रक्षित दोष	१ ४९१-१५११	१२७
निक्षिप्त दोष	१५१२-४५	१२९
पिहित दोष	१५४६–५७	१३१
सहत दोष	१ ५५८–६७	१ ३२
दायक दोष	१५६८-८२	१३३
उन्मिश्र दोष	१५८३-८६	१३४
अपरिणत दोष	१५८७-९३	१३५
लिप्त दोष	१५९४-९९	१३५
छर्दित दोष	१६००-४	१३६
ग्रासेषणानुं स्वरूप	१६०५-१०	336
संयोजना दोष	१६११२१	१३६
प्रमाण दोष	१६२२-४२	१३७
अंगार दोष	१६४३-४८	१३९
धूम दोष	१६४९-५५	836
कारण दोष	१६५६-७०	१४०
उपसंहारादि	१६७१-७९	१४१
मूत्र गाथा ३६-४	૪	
पिण्डविश्रद्धि विषयक अतिचारोने		
आश्री प्रायिश्वत	१६८०-१७१९	१४२
सृत्र गांथा ४५-५	9	
तपःत्रायश्चित्तने योग्य धावत डेपन संघर्ष		
गमन क्रीडा उन्कष्टि गीत सेण्टिका		
जीवहतादि पदीनुं स्वरूप	१७२०–२४	१४६
तप प्रायश्चित्तने योग्य जधन्य मध्यम उत्कृ	ह	
उपिधने आश्री विच्युत विस्मृत अप्रेक्षि		
अनिवेदन आदि पदोनुं स्वरूप	१७२५-४१	१४७
तप:प्रायधित्तने योग्य कालातीतकरण		
अध्वातीतकरण तत्परिभोग पाना-		
संवरण भूमित्रिकाप्रेश्नण आदि पदो	१७ ४૨– ५ ૨	१४८

तप:प्रायश्चित्तने योग्य कायोत्सर्गभंग	हायो-	
त्सर्गश्रकरण वेगवन्दनादि रा	त्र च्यु	
त्सर्गादि दिवसशयनादि पदो	१७५३–६०	१५०
तप प्रायश्चित्तने थोग्य चिरकषाय उ	शस्य	
लशुनादि तर्णादिबन्धनादि पुस्तकप	ভ ক-	
तृणपञ्चक-दूष्यपञ्चकाप्रतिलेखनादि		
स्थापनाकुलप्रवेशादि पदो	१७६१-७७	१५०
तप:प्रायश्चित्तने योग्य दर्प पञ्चेन्द्रि	यव्यः	
परोपण संक्लिष्टकर्म दीर्घाध्यकल्प		
ग्लानकल्प आदि पदो	१७७८-८७	१५२
तप:प्रायश्चित्तने योग्य छेदादि		
अश्रद्धानादि पदी	१७८८ ९४	१५३
मृत्र गाथा ६०	-७ ९	
सामान्य अने विशेषपणे आपत्ति अ	ा ने	
दानविषयक नपनो द्रव्य क्षेत्र क	ाल	
•		
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ	श्री	• -
•		१५४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ	શ્રી १७९५–૨૨७९	१८४
भाव पुरुप प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सृत्र गाथा ६० तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने	श्री १७९५–२२७९ -६३	१८४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सृत्र गाथा ६०	श्री १७९५–२२७९ -६३	૧૯૪ ૧ ૯ ૪
भाव पुरुप प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सृत्र गाथा ६० तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने	श्री १७९६–२२७९ –६३ १७९५-१८१ १	
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६० तपप्रायधित्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप मूत्र गाथा ६४	श्री १७९६–२२७९ –६३ १७९५-१८१ १	
भात्र पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सूत्र गाथा ६० तपप्रायश्वित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वह्मप	श्री १७९६–२२७९ –६३ १७९५-१८१ १	१५४
भात्र पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६० तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप सूत्र गाथा ६४ द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९५-२२७९ -६३ १७९५-१८११ -६५ १८१२-१९	
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सूत्र गाथा ६० तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्थरूप सूत्र गाथा ६४ दृष्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार सूत्र गाथा ६	श्री १७९५-२२७९ -६३ १७९५-१८११ -६५ १८१२-१९	१५४
भात्र पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६० तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूष मृत्र गाथा ६४ द्रव्यनुं स्वरूष अने तेने आश्री तपोदाननो विचार मृत्र गाथा ६ क्षेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्री	श्री १७९६–२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९	ર વક રવક
भात्र पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६० तपप्रायिक्षत्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूष मृत्र गाथा ६४ द्रव्यनुं स्वरूष अने तेने आश्री तपोदाननो विचार सेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९६-२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९ ६६	ર વક રવક
भात पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सूत्र गाथा ६०- तपप्रायश्चित्तने आश्ची सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप सूत्र गाथा ६४ द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्ची तपोदाननो विचार सूत्र गाथा ६ क्षेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्ची तपोदाननो विचार सूत्र गाथा ६	श्री १७९६-२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९ ६६	ર વક રવક
भात्र पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६० तपप्रायिक्षत्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूष मृत्र गाथा ६४ द्रव्यनुं स्वरूष अने तेने आश्री तपोदाननो विचार सेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९६-२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९ ६६	ર ેલ્ફ કુલ્ફ

सूत्र गाथा ६८

भावनुं स्वरूप अने तेने आश्री		
तपोदाननु स्वरूप	१९३४-३७	१६६
मृत्र गाथा ६९	. Θ .	
पुरुषना प्रकारो अने तेने आश्री		
तपोदाननुं स्वरूप	१९३८-२२६२	१६६
सूत्र गाथा ६९		
गीतार्थ, अगीतार्थ, सहनशील, असह		
शील, शह, अशह परिणामी, अप		
णामी अतिपरिणामी पुरुवोनु स्वस		१६६
स्रत्र गाथा ७		
धृतिसंहननोपेत अने हीन, आत्मत		
परतर, उभयतर, नोभयतर अन	(1)	
अन्यतर पुरुषो	१९७८-६४	१६८
सूत्र गाथा ७	?	
कल्पम्थित अने अकल्पम्थित आदि	•	
पुरुषोनुं वर्णन	१०६५-२१०५	250
स्थितशब्दना पकार्थिको		
छ प्रकारनी कल्पस्थिति	१९६५-६६ १९६७	१६९
दशप्रकारनो कल्प अने तेनो अष्टिय		24.1
अनश्रम्थित तरीकेनो विभाग	१ २६८-७४	१६९
आचेलक्यकल्पनु स्बह्मप	१९७० - ८९	१६९
औह शिककल्पनुस्वरूप	१९९०-९१	१७१
शय्यातरकल्पनु स्वरूप	१९९२-९५	१७१
राजिपण्डकल्पनु स्वरूप	१ ९९६ –२० १२	१७१
कृतिकर्मकरूपनुं स्वरूप	२०१३-१६	१७३
व्रतकरपनु स्वरूप	२०१७-२२	१७३
पुरुषज्येष्ठकल्पनुं स्वरूप	२०२२-४८	१७३
प्रतिक्रमणकल्पनुं स्वरूप	२०४९-५५	१७५

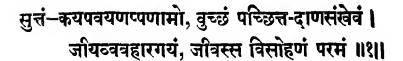
मासकल्पनुं स्वरूप	२०५६ ९३	१७६	
पर्युषणाकल्पनुं स्वरूप आदि	२०९४-२१०९	१७९	
परिद्वारकल्पनु स्वरूप	२११०-५६	१८०	
जिनकल्पनु स्वरूप	२१५ ७ -७८	१८४	
स्थविरकरुपनुं स्वरूप	२१७९-८४	१८६	
परिणत, अपरिणत, कृतयोगी, अकृतयोगं	ो,		
तरमाण, अतरमाण पुरुषोनुं स्वरूपादि	२१८५ ९२	१८६	
सूत्र गाथा ७२			
कल्पस्थितादि पृरुषोने आश्री			
तपोदान विभाग	२१९३-९५	१८७	
सूत्र गाथा ७३	•		
जीतयन्त्रविधि आदि	२१९६-२२६२	१८८	
मृत्र गाथा ७४-७	. લ		
प्रतिसेवनानु स्वरूप अने तेने आश्री			
तपोदाननो विभाग आदि	२२६३-७९	१९३	
सूत्र गाथा ८०-८	ः २		
छेदवायश्चित्तने योग्य अपराधस्यानो	२२८०-८७	१९६	
सुत्र गाथा ८३-८	६		
मूलप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्यानो	२२८८-२३००	१९६	
मूत्र गाथा ८७-९	Ę		
अनवस्थाप्यप्रायश्चित्तने योग्य			
अपराधस्थानो	२३०१-२४६२	१९८	
हस्ततालनुं स्वरूप	२३७१-८९	२०३	
हस्तालंबनुं स्वरूप	२३९०-९२	२०५	
हस्तादाननुं स्वरूप अने अवसन्नाचार्यनुं			
द ष्टान्त	२३ ९३ –२४६०	२०५	
सूत्र गाथा ९४-१०१			
पारांचिकप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२४६३-२५८५	२११	

सूत्र गाथा ९४		
तीर्थकर प्रवचन श्रुत आचार्य आदिविषयक	5	
आशातना पारांचिकनुं स्वरूप	२४६३-७६	२११
सूत्र गाथा ९५		
कषायदुष्ट अने विषयदुष्ट पारांचिकनुं		
स्बरूप	२४७७-२५२ २	२१३
मूत्र गाथा ९६		
स्त्यानर्द्धित्रमत्तपारांचिक, अन्योन्यकुर्वाण	•	
पारांचिकनु स्वरूप	२५२३-३९	२१ ६
सूत्र गाथा ९७-१०	, ?	
लिंगपारांचिक, क्षेत्रपारांचिक, काल-		
पारांचिक आदिनुं स्वरूप	२५४०-८५	२१८
सूत्र गाथा १०२		
अनथस्थाप्य अने पारांचिकनो सद्भाव		
भद्रबाहु सुधी	२५८६-८७	२२२
मूत्र गाथा १०३		
जोतकस्पनो उपसंहार	२६८८-२६०६	२२३
जीतशब्दनो अर्थ	२५८८-८९	२२३
कल्पदाब्दनो अर्थ	२५९०-९ ३	२२३
जीतक हण्डास्त्रना अध्ययनमा अधिकारी	२५९४-२६०६	२२३

॥ ॐ नमो जिनाय ॥ आचार्यश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितं

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम्।



पवयण दुवालसंगं, सामाइयमाइ विदुसारंतं ।

अहव चउिवह संघो, जत्थेव पइद्वियं नाणं ॥१॥

अहव पवचयतीई, पहाणवयणं व पत्रयणं तेण ।

अहव पवचयतीई, नाणाई पत्रयणं तेणं ॥२॥

जीवाइपयत्था वा, उवदंसिक्जंति जत्थ संपुण्णा।

सो उवएसो पवयण, तम्मि करेत्ता णमोकारं ॥३॥

वोच्छं वक्खामि त्ती, पच्छित्तं दसह एय उवर्रि तु ।

पावं छिंदति जम्हा, पायच्छित्तं ति भण्णते तेणं ।

पावं छिंदति जम्हा, पायच्छितं ति भण्णते तेणं ।

पायंणा वा वि चित्तं, सोहयई तेण पच्छितं ॥६॥

१ तुवालसंग-ब्रादशाङ्गं आचाराङ्गादि दृष्टिवादान्तम्। सामायिक-सूत्रं "करेमि भंते !" इत्यादिकम्। विन्दुसार इति चतुर्दशं पूर्वम्॥ २ पगयपसत्थं प्रकृते प्रशस्तम्॥

पणगादी आवत्ती, णिन्विगइअमादि एत्थ दाणं तु । संखेव समासो ति व, ओहो ति व होति एगद्वा ॥६॥ आगमादिव्य-वहारपञ्चकम्

आगमव्यव-हारमेदप्रमेदा.

किं अत्थी अण्णे वी, ववहारा जेण जीतगहणं तु ? । भण्णति चररऽत्थऽण्णे. आगममादी इमे सुणसु ॥७॥ पंचिवहो ववहारो, दुग्गइ-भवमूरएहिँ पण्णत्तो । आगम सुय आणा धारणा य जीए य पंचमए ॥८॥ आगमओ ववहारो, सुणह जहा धीरपुरिसपण्णतो। पचन्त्वो य परोक्त्वो, सो विह दुविहो मुणेयव्वो ॥९॥ पचक्को वि य दुविहो, इंदियजो चेव नोयइंदियजो। इंदियपञ्चक्खो वि य. पंचस्र विसएस्र णायव्वो ॥१०॥

प्रत्यक्षपरी-क्षयोर्लक्षणम जीवो अक्खो तं पति, जं वहुइ तं त होति पचक्खं। परओ पुण अक्खरसा, वहुंतं होइ पारोक्खं ॥११॥

'अक्ष'पदस्य निरुक्तम्

'अस वावण'धाऊओ. अक्खो जीवो उ भण्णए णियमा । जं वावयर भावे, जाणेणं तेण अक्लो ति ॥१२॥ 'अस भोयणिम्म' अहवा, सन्बद्दन्वाणि भोगमेतस्स । आगच्छंती जम्हा, पालेड य तेण अक्लो चि ॥१३॥ केसिंचि इंदियाई, अक्लाई तहुवलद्धि पत्रक्तं। तं तु ण जुज्जति जम्हा, अग्गाहगिमदियं विसए ॥१४॥ रूवादीविसयाणं, जीवो खल्ज इंदिएहिं उवलभगो।

जम्हा मतम्मि जीवे, ण इंदिया उवलमे विसयं ॥१५॥

दर्शनान्तरी-यामिमतस्य प्रत्यक्षलक्षण-स्य खण्डनम्

> ७ अत्थी सन्ति इत्यर्थः, " अत्यिस्त्यादिना" (सि॰ ८-४-१४८) इति सत्रेण सर्वेष्विप वचनेषु 'अत्थि 'रूपभवनात् । दोर्घत्वं तु-"नीया लोचमभूया, य आणिया दीह-बिदु-दुब्भावा। अत्थं गमेति तं चिय, जो तेसि पुरुषमेबाऽऽसि ॥" इति वचनात् । प्वमग्रेऽपि "बी, पासती, अक्खरसा, आगचछंती, अण्णत्या, सुणसु, वोच्छामी, सुत्तम्मी, क्रजस्ता" इत्यादिषु यत्र दीर्घत्व "परवाइण, गोणसाइण" इत्यादिष च यत्र हस्वत्वं दृश्येत तत्रायमेव नियमो क्षेयः। चुउर्ऽत्यऽण्णे चत्वारः सन्ति अन्ये इत्यर्थः ॥ ८ दुग्गइ-भवमूरपिं दुर्गति-संसारभञ्जकैः तीर्थकरैः प्रवेषिमिर्वेत्यर्थः ।। १५ मतम्मि मृते ॥

तम्हा विसयाणं खल्ल, अग्गाहगमिदियं भवड सिद्धं। जं इंदिएहिँ नज्जइ, तं नाणं लिंगियं होइ ॥१६॥ लिंगं चिंघ निमित्तं, कारणमेगद्वियाइँ एयाई। जाणाइ इंदिएहिं, जीवो धूमेण अर्गिंग व्य ॥१७॥ एवं खु इंदिएहिं, जं नज्जइ लिंगियं तयं नाणं। तम्हा सिद्धं अक्लो. न इंदिया पंच सोयाई ॥१८॥ एत पसंगाभिहितं, जहकण्हुइ इंदियाइँ पचक्वं। अहुणा उ इंदिएहिं, णातूणं वनहरे इणमो ॥१९॥ सोइंदिएण सोउं, तस्स व अण्णस्स वा वि पहिसेवं। चर्किलदिएण दंडुं, पहिसेविज्जंतमणयारं ॥२०॥ धृवादिगंधवासे, मूर्तिगलियादियं व उद्दवियं । कंदाइ व खज्जंतं, गंधो वि रसो वि तत्थेव ॥२१॥ फासेणऽब्भिङ्गयमादि, फासतो अप्पगासे णाऊणं। इंदियपचक्लेणं, इय णाऊणं ववहरंति ॥२२॥ दारं ॥ णोइंदियपचक्लो, ववहारो सो समासतो तिविहो। ओहि मणपन्जवे या. केवलणाणे य पचचक्वो ॥२३॥ अच्छा ता ववहारो, ओहीमादीण लक्खणं तिण्हं। संखेवओ उ एयं, अस्सुन्नत्थं इमं वोच्छं ॥२४॥ तत्थोहिणाण पढमं, सामित्ता कम-विसुद्धिओ होइ। तो तं वोच्छ बहुविइं, केत्तिय भेया भवे तस्स ? ॥२५॥

नोइन्द्रियप्रत्य-क्षागमञ्यव हारस्य त्रैविध्यम्

अवधिज्ञानम्

१६ नज्जइ ज्ञायते॥ १७ चिंघ इति लुप्तविभक्त्यन्तं पदम्। मन्थेऽस्मिन् स्थानस्थानेषु पतादृंशि लुप्तविभक्त्यन्तानि पदानि समेष्यन्ति॥
१९ जद्दकण्हुइ यथाकथि अत् ॥ २१ मूर्तिगलिया पिपीलिका । अधुनातनशक्तते यथा 'य'कारः श्रुत्यर्थमुपन्यस्यते तथा प्राचीनप्राकृते 'त'कारः
श्रुत्यर्थमुपायुज्यत इति ज्ञेयम्॥ २४ ओदीमादीण अवध्यादीनाम्। अत्र
मकार आगमिकः, न तु लाक्षणिकः। अग्रेऽप्येवमेष बोध्यम्॥

अवधिशान-स्य प्रकृतयः

संखादीआओ खलु ओहीनाणस्स सव्वपयडीओ। काई भवपच्चइया, खओवसमिया य कायो वि ॥२६॥ किइ संखातीयाओ, पगडी ओहिस्स ? भण्णए जम्हा । अंगुलअसंखभागा, आरब्भ परसवहीर ॥१७॥ उक्कोसेणमसंखा, जा लोगा होति वैत्तमाणेणं। काले वाऽऽवलियाए, असंखभागाउ आरब्भ ॥२८॥ समजत्तरबड्टीए, उक्कोसेणं असंख जाव भवे। ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिसमयपमाणा भवे पगडी ।।२९॥ इय होंति असंखाओ. ओहिण्णाणस्स सन्वपगढीओ। संखातीतगरणा, ण केवलं होंतिऽसंखेजना ॥३०॥ ता होति अणंताओ, पोग्गलकायत्थिकायमहिकच्च। संखातीतं ति ततो, असंख अणंता य गहिया हु ॥३१॥ सो पुण ओही दुविहो, भवपच्चइयो खओवसमिओ य। देवाण णारयाण य, णियमा भत्रपच्चयो ओही ॥३२॥ उप्पज्जमाणओ खल्ल, भवपच्चइओहि जत्तियो विसओ। सन्वं तं ओभासति, ण उ वड्टी णेव हाणी यु ॥३३॥ गुणपच्चइयो ओही, गन्भजमँणु-तिरिय-ऽसंखमाऊणं । कम्माण खयोवसमे, तयवरणिज्जाण उप्पन्ने ॥३४॥ अवही मज्जायत्थो, परिमितदव्वं तु जाणते जेणं। म्रुत्तिमदन्वे विसयो, ण खलु अरूवीसु दन्वेसु ॥३५॥ अर्चंतमणुवलद्धा, ओहीणाणस्स होति परचक्खा । ओहीणाणपरिणया, दन्वा असमत्थपज्जाया ॥३६॥ तं पुण ओहीणाणं, समासतो छन्त्रिहं इमं होइ। अणुगामि अणणुगामी, बहुंत य हायमाणं च ॥३७॥ पडिवाति अपडिवाती, छाँवेबहमेवं तु होति विशेयं । अणुगामिओ उ दुविहो, अंतगतो चेव मज्झगतो ॥३८॥

भवप्रत्ययि-कोऽवधिः

गुणप्रत्ययि-कोऽवधिः

> अवधेः स्वरूपम्

अवधेः षड् भेदाः

> नुगामि-ऽवधिः

अंतगतो वि य तिविहो, प्रतो तह मग्गतो य पासग्ञो। पुरतो पुण अंतगतं, इमं तु वोच्छं समासेणं ॥३९॥ जह कोई तु मणुस्सो, उकं चुडुलि व दीव मणि वाऽऽदी । काउं पुरओ गच्छइ, पणुह्ययंतो व्य जह पुरिसो॥४०॥ मग्गतो अंतगतो ऊ, तह चेव य णवरि मग्गतो काउं। अणुकडूमाणु गच्छति, अंतगतो मगातो एस ॥४१॥ पासगतंऽतगतो ऊ, चुडुलादि तहेव जाव त मणि त । परिकडमाणों गच्छति, अंतगतं एत तिह भणितं ॥४२॥ जो से किं मज्झगतो ?, तं जह प्रुरिसो कोइ चुडुलिमादीणि। कातुं सिरम्मि गच्छति, मज्झगतो एस ओही उ ॥४३॥ मज्झगतंऽतगयस्स य. ओहिल्लालस्स को पइविसेसो ?। पुरतो अंतगएणं, जोयण संखेज्जऽसंखा वा ॥४४॥ पुरतो जाणति पासति, एस विसेसो उ मज्झअंतगओ। एवं त्र मग्गतो ई, पासगतो चेव बोधव्यो ॥४५॥ अणुगामिओ उ ओही, एमेसी विष्णतो समासेणं। एतो उ अण्णुगामी, ओहिण्णाणं इमाऽऽहंस्र ॥४६॥ जह णाम कोइ प्ररिसो, एग महं अगणिटाण काउं जे। तस्सेव य पेरंते, परिघोलणहिंडमाणो त ॥४७॥ तं चेव अगणिठाणं, तत्थगतो पासति ण अण्णत्थ । एवं जत्थुप्पज्जइ, नत्थ ठितो जाण पासइ वि ॥४८॥ ण वि जाणइ अण्णत्था, संखमसंखे उ जोयणे जो उ। ओही तु अण्णुगामी, समासतो एसमक्खातो ॥४९॥ अज्झवसाणेहि पसत्थएहि सुहबद्धमाणचारिते । उवस्वरिं सुडझंते, समंततो वहूए ओही ॥५०॥

अननुगासि-कोऽवधिः

वर्धमानको-ऽविधः

४५ ई पादपूरणे। ई जेर णि रुथ मो णं इत्यादीनि अन्ययानि प्राकृते पादपूरणे प्रयुज्यन्ते ॥ ४६ इमाऽऽहंसु इदं आह॥

तत्थ जहण्णादी तु, जाव उ उक्कोस ओहिणाणं तु । वड़ंते परिणामे, गाहाहि इमं तु वोच्छामि ॥५१॥ जाँवतिया तिसमयाहारगस्स स्रहुमस्स पणगजीवस्स । ओगाहणा जहण्णा, ओहीखेत्तं जहण्णं तु ॥५२॥ सन्वबहुअगणिजीवा, णिरंतरं जत्तियं भरेज्नेसु । खेत्तं सन्वदिसागं, परमोहीखेत्त णिदिहो ॥५३॥ अंगुलमावलियाणं, भागमसंखेज दोस्र संखेजा । अंगुलमावलियंतो, आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥५४॥ इत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्यो । जोयण दिवसपुहत्तं, पक्तंतो पण्णवीसाए ॥५५॥ भरहम्मि अद्धमासो, जंबुद्दीवे य साहिओ मासो। वासं तु मणुयलोष, वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥५६॥ संखेजम्म उ काले, दीव-सम्रद्दा उ होंनि संखेजा । कालम्मि असंखेजे, दीव-सम्रद्दा वि भइयन्त्रा ॥५७॥ काले चउण्ह बुट्टी, कालो भइयन्वॉ खेत्तबुट्टीए। बुट्टीऍ द्व्य-पर्ज्ञेव, भजितव्या खेत्त–कार्लो उ ॥५८॥ सुदूमो य होति कालो, तत्तो सुहुमयर्य इवति खेत्तं। अंगुलसेढीमेत्ते, ओसप्पिणीओ असंखेजा ॥५९॥ तिसमयहारादीणं, गाहाणऽहुण्ह वी सरूवं तु । वित्थरयो वण्णेजा, जह हेट्टाऽऽवस्सए भणियं ॥६०॥ एवं तु बहुमाणो, ओही उ समासओ समक्लाओ। एत्तो परिहायंतं, ओहीणाणं इमं होति ॥६१॥ अज्झवसाठाणेहिं, अपसत्थेहिं वड़माणचारिते। संकिस्समाणचित्ते, समंततो हायते ओही ॥६२॥

हीयमान-कोऽवधिः

६२ अज्झवसाठाणेहि अध्यवसायस्थानैः । 'अज्झवसा' इत्यत्र यकारलोपेऽविद्याष्टो 'अ'कारः 'सा'मध्ये प्रविष्टः ॥

पृहिवयमाणो ओही, अंगुलभागं तु [संखऽ]संखं वा । अंग्रलमेव प्रहत्तं, हत्थ धणू जोअणे तह य ॥६३॥ जोयणसर्यं सहस्सं संखमसंखा व जाव छोगं तु । पासित्ताण पढेजा, ओहीणाणेद पडिवाती ॥६४॥ से किं अप्पहिवार्ति, ओहिण्णाणं तु ? जो अलोगस्स । आगासपएसं तू एगमवी पासती जाव ॥६५॥ असंखेजाइँ अलोऍ, पमाणमेत्ताइँ लोगखंडाईं। जाणइ पासति य तहा, खेत्तोही एसमक्खातो ॥६६॥ एसो अपिडिवादी, ओही तु समासओ समक्खातो । सर्वं पेतं चउहा, द्व्वादि समासतो वोच्छं ॥६७॥ रूवीदव्वे विसतो, दच्वोही खेत्ततो इमाऽऽहंसु । अंग्रुलअसंखभागं, उक्कोसेणं इमं वोच्छं ॥६८॥ असंखेळाडँ अलोगे. पमाणमेत्ताडँ लोगुखंडाई। जाणइ पासति य तहा, खेचोही एसमक्खातो ॥६९॥ कालतो ओहिण्णाणी, असंखभागं त आवलीए उ। सच्वजहण्णं जाणित, पासति या सो उ णियमेणं ॥७०॥ उम्मिष्पणि-ओसप्पिणिकालमतीतं अणागतं चेव । उक्कोसेण वि जाणति, पासइ या एस कालोही ॥७१॥ भावतो ओहिण्णाणी. अणंतभावे अणंतभागं च। जाणति पासति य तहा. भावोही एसमक्खातो । ७२॥ ओही भवपचितियो, खयोवसमियो य विणाओ दुविहो। तस्स उ बहू विगप्पा, दब्वे खेत्ते य कालादी ॥७३॥ तं मणपज्जवणाणं, दुविहं तु समासतो समक्खातं । उज्ज्यमती विमलमती. दव्वादि चउव्विहेक्के ॥७४॥

प्रतिपाती अवधिः

अप्रतिपाती अवधिः

द्रव्यतः क्षेत्र-तश्चावधिः

कालतोऽवविः

भावतोऽवधिः

मन पर्यवः ज्ञानम्

६४ आहीणाणेर अवधिज्ञानमिदम्॥ ६७ सन्वं पेतं सर्वमध्येतत् ॥

द्रव्यतो मनः-पर्यवम्

क्षेत्रतो सनः-पर्यवम्

दन्बओं उन्जुमती तू, अर्णतपएसे अर्णतसंघा ऊ। जाणइ पासित ते चिय, वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥७५॥ खेततो उज्जुमती तू, ऽहेलोगे जाव रयणपुढवीए। जाणइ पासति उवरिमहेट्टिझे खुडुपयरे तु ॥७६॥ एते चिय अन्भहिते, विउलतराए उ मुणइ पासित य । सुद्धवितिमिरतराए, विउलमती उञ्जमतिणो उ ॥७७॥ उन्जुमती उड्डे ऊ, जोतिसियाणं तु जाव सन्बुवरिं। जाणइ पासइँ ते चिय, वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥७८॥ तिरितं उज्ज्यमती तू, उदहिदुए तह य दीव अद्धहिए। पंचिदियजीवाणं, संग्णीपज्जत्तयाणं तु ॥७९॥ भावे मणोगिहगए, सन्वे जाणइ मणिज्जमाणे तु । ते चेव य विमल्यरें, त्रितिमिरसुद्धे तु विडलमती । ८०॥ णवर विसेसो तु इमो, अट्टाइयअंगुलेहिँ खेत्तं तु। तिरिउड्डमहे अहितं, वितिमिरसुदं तु विउलमती ॥८१॥ कालतो उज्जुमती तु, जहण्ण उक्कोसए वि पलियस्स । भागमसंखेज्जइमं, अतीत एस्से व कालदुए ॥८२॥ जाणइ पासइ ते तू, मणिज्जमाणे उ सण्णिजीवाणं । ते चेव य विष्लमती, वितिमिरसुद्धे तु जाणइ यु ॥८३॥ भावतों उज्ज्ञमती ऊ, अणंतभावे उ म्रुणति पासति य। सन्वेसि भावाणं, ते णवरमणंतभागे उ ॥८४॥ ते सब्वे विउलमती, विद्यद्भतर वितिमिरे तु भावतया । जाणति पासति य तहा, मणपज्जवणाण चउमेयं ॥८५॥ तं मणपज्जवणाणं, जेण विजाणाति सण्णिजीवाणं । दहं मणिज्जमाणे, मणदन्वे माणसं भावं ॥८६॥ जाणित पिहुज्जणो वि हु, फुडमागारेहि माणसं भावं। एसुवमा तस्स भवे. मणदन्वपगासिए अत्थे ॥८७॥

कालतो मनः-पर्यवम्

भावतो मनः-पर्यवस

मन-पर्यवस्य विषयः

ऋजुमतिः विपुलमतिश्व

केवलज्ञानम्

मणपञ्जवणाणं पुण, जणमणपरिचितितत्थपागडणं। माणुसखेचणिबद्धं, गुणपचतितं चरित्तवतो ॥८८॥ उज्ज्ञमती विउल्लमतो, जे वहंती स्नृतंगवी धीरा। मणपज्जवणाणत्थे, जाणस् ववहारसोहिकरे ॥८९॥ पंकसलिले पसाओ, जह होति कमेण तह इमो जीवो। आवरणे झिडजंते, विसुज्झति केवलं जाव ॥९०॥ केवल संभिण्णं तू, लोगमलोगं तु पासती णियमा । तं णित्थ जं ण पासति, भूतं भव्वं भविस्सं च ॥९१॥ सब्वेहि जियपदेसेहिं, जुगवं जाणति पासई । दंसणेण य णाणेणं, पईवो अब्भमस्स वा ॥९२॥ अंबरे व कतो संतो, तं सन्वं त पगासती। एवं त जनणतो होति, संभिण्णं त जं वयं ॥९३॥ तं च लोगमलोगं च, सन्वतो पुन्तमादिसु। सब्बं सब्बे त जे भावा, दब्बतो खेत्त-कालतो ॥९४॥ भावतो चेव जे भावा, पत्थि जे तु ण पासती । अभावा णत्थि ताए तु, जाणती पासती वि य ॥९५॥ अह सञ्बदञ्बपरिणामभावविष्णत्तिकारणमणंतं । सासयमन्त्राचाई, एगविहं केवलण्णाणं ॥९६॥ सब्बं णेयं चत्रहा, एतस्स परूत्रणहुयाए त् । गाहासुत्तं वृत्तं, अह त्ति जं विण्यतं हेहा ॥९७॥ भिण्णम्महणं खलु कालतो तु सो घेप्पती तु एतेसि। दन्वादीण चउण्हं, परिणामो पज्जया जाणे ॥९८॥ जीवाण अजीवाण य, उप्पाय-व्वय-ध्रवत्तपज्जाया। परपचएण तिण्हं, धम्मादीयाण परिणामो ॥९९॥

८८ गाथेयमावश्यक्रनिर्युक्ती ७६ तमा ॥ ९६ गाथेयमावश्यक्रनिर्युक्ती ७७ तमा ॥

गति-ठिति-अवगाहेहिं, संजोग-वियोगओ य सो होइ। ओदइयादीयाणं, परिणामो होइ भावाणं ॥१००॥ एतेसि चिय दव्वादियाण कालो त होनि परिणामो । कालं पति पतिसहमादिएस वण्णादिपरिणामो ।।१०१॥ दन्वादीपरिणामं. सन्वं जाणाति केवली अखिलं। किं भवती परिणामो ?, एयस्स उ कारणं इणमो ॥१०२॥ वीससपयोगे अन्भातियाण खंधाण वीससुप्पायो । पण्णरसहा पयोगो, तिविहे कालम्मि परिणामो ॥१०३॥ जो केवली मणूसो, ण सो त बाहं करेऽण्णसत्ताणं। णियमेण अणाबाहं, पावइ मोक्खं खविय सेमं ॥१०४॥ जं छउमत्थियणाणं. केवलिणो ण खल विज्ञए तं त । जम्हा खयोवसमिए, वृहंते छाउमत्था उ ॥१०५॥ भावे केवलणाणं. वृहति णियमेण खाइए णिचं। ण उ अक्लीणे मीसे, लाइयभावस्स उप्पत्ती ॥१०६॥ तम्हा एगविहं खलु, केवलणाणं तु होति उववण्णं। जैणाऽऽह केवलम्मि, छपुणाऽणामोहता (?) तेसि ॥?०७॥ आदिगरा धम्माणं, चरित्त-वरणाण-दंसणसमग्गा । सञ्जत्तगणाणेणं, ववहारं ववहरंति जिणा । १०८॥ पचन्त्वन्त्रवहारी, इंदिय-णोइंदिएसु वन्त्वातो । आगमजो ववहारी, पारोक्खं तू इमं वोच्छं ॥१०९॥ पचक्लागमसरिसी, होति परोक्लो वि आगमो जस्स। चंदम्रहीव तु सो वि हु, आगमववहारवं होति ॥११०॥

केवलिनि मत्यादि-ज्ञानाना-सभावः

परोक्षागम-व्यवहारी

> १०४ करेऽण्णसत्ताणं करोत्यन्यसस्वानाम्॥ १०८ गाथेयं व्य० उ० १० भा० गा० २०६॥ **११० इत आरभ्य पश्चद्दा** गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० २०७-२२१॥

णातं आगमियं ति य, एगट्टं जस्म सो परायत्तो । मो पारोक्खो बुबति, तस्म पदेसा इमे होंति ॥१११॥ पारोक्खं ववहारं, आगमतो सुतथरा ववहरंति । चोहस-दसपुव्वधरा, णवपुव्वि य गंधहत्थी य ॥११२॥ किह आगमववहारी ?, जम्हा जीवादयो णव पयत्था । उवलद्धा तेहिं तु, सन्वेहिं णयवियप्पेहिं ॥११३॥ जह केवली वियाणित, दव्वं खेतं च काल भावं च। तह चउलक्षणमेतं, सत्रणाणी वी वियाणाति ॥११४॥ पणगं मासविवड्डि, मासिगहाणी य पणगहाणी य । एगाहे पंचाहं, पंचाहे चेत्र एगाहं ॥११५॥ राग-इोसविवर्डि. हाणि वा णातु देति पचक्ली । चोद्दसपुन्वादी वि हु, तह णाउं देंति हीणऽहियं ॥११६॥ चोअगपुच्छा पचक्लणाणिणो थेवे वि कह बहुं देंति ?। भण्णित सुणसु एत्थं, दिह्नं वाणिएण इमं ॥११७॥ जं जह मोक्षं रयणं, तं जाणित रयणवाणियो णिडणो । थोवं तु महल्लस्य वि, कासति अप्पस्स वि बहुं तु ॥११८॥ अहवा वि कायमणिणो सुमहल्लस्सावि कागिणी मोल्लं। वइरस्स तु अप्पस्स वि. मोह्नं होती सतसहरसं ॥११९॥ इय मासाण बहुण वि, राग-होसऽप्याए थोवं तु । राग-होसोवचया, पणगे वि जिणा बहुं देंति ॥१२०॥ पचक्ली पचक्लं, पासति पहिसेवगस्स सो भावं। किह जाणित पारोक्यवी ?, णातमिणं तत्थ धमएणं ॥१२१॥ णालीयमण्ण जिणा, उत्रसंघारं करेंति पारोक्खे। जह सो कालं जाणित, सुएण सोहिं तहा सो तु ॥१२२॥

प्रायश्वित्त-न्यूनाधिक्ये चोदकस्य पृच्छा आचार्यस्यो-त्तरं च

११८ का नित कस्यचित् ॥ १२२ उवसंघारं उपसंहारं तुलनामित्यर्थः॥

प्रायश्चित्त-दानयोखः

जेणं जीवा-ऽजीवा, उवलद्धा सव्वभावपरिणामा । तो पुरुवधरा सोहिं, कुरुवंति सुओवदेसेणं ॥१२३॥ तं पुण केण कतं तु. स्रुतणाणं जेण जीवमादीया। णज्जंति सञ्चभावा ?, केवलणाणीण तं द्व कतं ॥१२४॥ संते वि आगमम्मी, जाहे आलोतियं त तेण भवे। सम्मं णाऽऽलोएती. पहिवज्जति सारियो जडया ॥१२५॥ तो तस्स उ पच्छित्तं, जेण विद्यज्झति तगं पयच्छंति। आगमववहारी छन्विहो वि पलिउंचिएँ ण देति ॥१२६॥ आलोतिय-पहिकते, होती आलोयणा तु णियमेणं । अणालोइयम्मि भयणा. किह पुण भयणा भवति तस्त्रशा १२७॥ आलोयणापरिणतो. अंतर कालं करे अभिम्रहो वा । अहवा वी आयरिओ, एमेव य होति संपत्तो ॥१२८॥ आराहओ तु तह वी. जं सम्मालोयणापरिणतो तु । णाराहेति अपरिणयो, एवं भयणा भवति एसा ॥१२९॥ अवराहं वियाणंति, तम्स सोहिं व जद्दवी। तहाऽवाऽऽलोयणा वृत्ता, आलोअंते बहू गुणा ॥१३०॥ दन्वेहि पज्जवेहि य, कम खेत्ते काल-भावपरिसद्धं। आलोयणं स्रणित्ता, तो वनहारं पडज्जंति ॥१३१॥ दव्वे सच्चित्तादी. पज्जव दद्या बहुविगप्पेहिं। पुवाणुपुन्त्रिमादी, कमओ एवं तु आलोए ॥१३२॥ अद्धाण जणवए वा, खेत्ते काले सभिक्ख दुविभक्खे । भावे हट्ट गिलाणे, सेविय जह तंतहाऽऽलोए ॥१३३॥ अहवा सहस्र ८०णाणा. भीएण व पेल्लिएण व परेहिं।

भालोचना-श्रवणक्रमः

> १२५ सारियो स्मारित ॥१२७ गाथेयं च्य० उ० १० भा० गा० २२४॥ १३० गाथाद्विकं च्य० उ० १० भा० गा० २२६-२२७। जह्वी यद्यपि। सहाऽबाऽऽस्त्रोयणा तथाऽप्यास्त्रोचना॥

वसणेण पमाएण व, मुढेण व राग-दोसेहि ॥१३४॥ पुर्व्व अपासिऊणं, छुढे पायम्मि जं पुणो पासे । ण य तरति णियत्तेषं, पायं सहसाकरणमेयं ॥१३५॥ अण्णतरपमाएणं, असंपडत्तस्सऽणोवडत्तस्स । इरियाइसु भृतत्थे, अवदृतो एतदण्णाणं ॥१३६॥ भीओ पलायमाणो, अभियोगभएण वा वि जं कुज्जा। पहितो व अपहितो वा. पेल्लिजा पेल्लिओ पाणे ॥१३७॥ गीतादि होति वसणं, पंचिवहो खलु भवे पमादो छ। मिच्छत्तभावणा तु, मोहो तह राग-दोसा ऊ ॥१३८॥ एतेसिं ठाणाणं, अण्णयरे कारणे समुप्पण्णे। तो आगमवीर्यसं, करेंति अत्ता-तदुभएणं ॥१३९॥ जिंद आगमो य आलोयणा य दोण्णि विसमं त निवयंति । एसा खळु वीमंसा, जो असह जेण वा सुज्झे ॥१४०॥ नाणमाईणि अण्णाणि, जेण अत्थे उ सो भवे । राग-होसप्पहीणे वा, जे व इट्टा विसोहिए ॥१४१॥ सुत्तं अत्थे उभयं, आलोयण आगमो इती उभयं। जं तदुभयं ति बुत्तं, तत्थेसा होति परिभासा ॥१४२॥ पडिसेवणातियारे, जदि णाऽऽउदृति जहकमं सन्वे । ण ह देन्ती पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४३॥ पडिसेवणातियारे, जिंद आउट्टइ जहकर्म सन्वे। देंति तओ पिच्छत्तं, आगमववहारिणो तस्त ॥१४४॥ कहेहि सच्चं जो बुत्तो, जाणमाणो वि गृहति।

१३४ इत आरभ्य गाथादशकं व्यव उ० १० भाव गाव २२८-२३७॥ १३५ तरति शक्नोति॥१३८ "पंचिवहो पमादो-कसाय-विगहा-वियड-इन्दिय-निहा पमाया " इति जीतकल्पचूणों पत्र २९॥१४१ "नाण-मादीणि अत्ताणि जेण अत्तो उ सो भवे।" इति व्यव भाव्ये, अय-मेष पाठः साधुः॥

ण तस्स देंति पच्छित्तं, बेन्ति अण्णत्य सोहय ॥१४५॥

प्रायश्चित्त-दातुर्योग्या-योग्यत्वविचार

ण संभरति जो दोसे. सब्भावा ण य मायया । पचक्की साहए ते उ. माइणो उ ण साहई ॥१४६॥ जित आगमो य आलोयणा य दोण्हि वि समं ण णिवइयाई। ण हु देंति उ पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४७॥ जित आगमी य आलोयणा य दोण्डि वि समं णिवइताई। दिंति ततो पच्छित्तं, आगमवबहारिणो तस्स ॥१४८॥ को पुण पायच्छित्ते, दायव्वे अणरिहो व अरिहो वा ?। भण्णइ इणमो सुणस्, अरिहो जो वा अणरिहो उ ॥१४९॥ अट्टारसहिं ठाणेहिं, जो होति परिणिट्टिओ। नडलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥१५०॥ अद्वारसिंह ठाणेहिं, जो होति सपरिद्वितो । अलमत्यो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५१॥ अट्रारसिंह ठाणेहिं. जो होड अपतिद्रितो। नऽलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥१५२॥ अट्रारसहिं ठाणेहिं, जो होति सपिनिट्रिनो । अलमत्यो तारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ॥१५३॥ वयछक कायछकं, अकष्पो गिहिभायणं । पलियंक गोयर णिसिज्ज ण्हाणे भूसा अहार ठाणेते ॥१५४॥ परिणिट्टियों परिण्णाया, पनिट्टिनो जो ठिओ उ तेस हवे। अविद् सोहि ण याणति, अठिनो पुण अण्णहा कुज्जा ॥१५५॥ बत्तीसाए त टाणेहिं, जो होइ परिणिट्टितो । णऽलमत्थो नारिसो होइ. ववहारं ववहरित्तए ॥१५६॥ बत्तीसाए त ठाणेहिं, जो होति परिणिहितो ।

अष्टादश स्थानानि

१४५ गाथाचतुष्कं व्यव उ० १० भाव गाव २३८-२४१ ॥ १५० इत आरभ्य सप्तिकातिर्गाधा व्यव उ० १० भाव गाव २४२-२६८।। {

अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५७॥ बत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपइहितो। णऽलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥१५८॥ वत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होति सुपतिहिता । अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५९॥ अट्टविहा गणिसंपय, एकेका चउविहा उ वोद्धव्या । एसा खळु वत्तीसा, ते खळु ठाणा इमे होंति ॥१६०॥ आयार सुय सरीरे, वयणे वायण मती पतोगमती। एतेस संपया खळु, अट्टमिया संगहपरिण्या ॥१६१॥ एसा अट्टविहा खलु, एकेकाए चउन्त्रिहो भेदो। इणमो उ समासेणं, वोच्छामी आणुपूर्व्वीए ॥१६२॥ आयारसंपयाए, संजमधुवजोगजुत्तया पढमा। वितिय असंपरगहिया, अणिययवित्ती भवे ततिया ॥१६३॥ तत्तो य बुहृमीले, आयारं संपया चउद्धेसा । चरणिमह संजमो तू, तहियं णिचं तु उवउत्तो ॥१६४॥ आयरिओ अ बहुस्सुय-तवस्ति-जचाइएहि व मदेहिं। जो होति अणुस्सित्तो, सो त असंपगहीउ ति ॥१६५॥ अणिययचारी अणियतिवत्ती अगिहो य होति जो अणिसो। णिहुयसहाव अचंचल, णायन्त्रो बुहुसीलो ति ॥१६६॥ बहुसुत परिजितसुत्ते, विचित्तसुत्ते य होति बोद्धव्ये । वोसविसुद्धिकरे या, चउहा सुतसंपदा होति ॥१६७॥ बहुसुत जुगप्पहाणे, अब्भंतर बाहिरं च बहु जाणे। होति चसद्दगहणा, चारित्तं पी सुबहुवं हु ॥१६८॥ सगणामं व परिजितं, उक्तम-कमयो बहू हिँव कमेहिं। ससमय-परसमएहिं, उस्सम्म-ऽववातयो वि वित् ॥१६९॥

द्वात्रिशत् स्थानानि

अष्टें। सम्पदः

चतुर्घाऽऽचार-सम्पदः

> श्रुतसम्प-चतुष्कम्

१६९ उस्सग्ग-ऽववातयो विविद्य उत्सर्गा-ऽपवादयोरपि विद्वान्॥

शरीरसम्प-चतुष्कम्

वचनसम्प-ञ्चतुष्कम्

घोसा उदात्तमादी, तेहिँ विसुद्धं तु घोसपरिसुद्धं । एसा स्रतोवसंपय, दारं, सरीरसंपयमतो वोच्छं ॥१७०॥ आरोह-परीणाहो. तह य अणोत्तप्पया सरीरस्स । परिपुर्णिपदियमाऽऽइय, संघतणथिरं य बोद्धवो ॥१७१॥ आरोहो दिग्वत्तं, विक्खंभो होति तित्तियो चेव। आरोह-परिणाहो, य संपया एस णादन्त्रा ॥१७२॥ तपु लज्जाए धात्, अलज्जणिन्नो अहीणसन्वंगो । होति अणोत्तप्पो खळु, दारं, अविकलइंदी तुपरिपुण्णो ।१७३। पढमादीसंघयणो, बिलयसरीरो थिरो मुणेयव्यो। एसा सरीरसंपय, दारं, एत्तो वयणम्मि वोच्छामि ॥१७४॥ आएन्ज महुर्वयणे, अणिसियवयणे तहा असंदिद्धे । आदिन्ज गन्झक्को, दारं, अत्थवनाढं भवे महरं ॥१७५॥ अहवा अफरसवयणो, खीरासवलद्धिमादिजुत्तो वा । अहवा ससर-सहग-गंभीरजुओ महुरवको ॥१७६॥ णिस्सिओं कोहादीहिं, राग-दोसेहि वा वि जं वयइ। होति अणिस्सियवयणो, जो वयती एयवइरित्तं ॥१७७॥ अव्वत्तं अफ़ुडत्तं, अत्यवहुत्ता व होति संदिद्धं । विवरीयमसंदिद्धं, वयणेसा संपदा चत्रहा ॥१७८॥ वायणभेदा चतुरो, विधिउद्दिसणा सम्रुद्धिसणओ य। परिणिव्यविया वाए, णिज्जवणा चेव अत्थस्स ॥१७९॥ वेणेव गुणेणं तू, वाएयव्वा परिक्खितं सीसा ।

वाचनासम्प-श्वतुष्कम्

> १७२ णादच्या ज्ञातच्या ॥ १७८ इत आरभ्येकोनविञ्चानिगीया व्यव उठ १० आ० गा० २६९-२८७॥

अपरीणामगमादी, वियाणितुमभायणे ण वाएति।

जह आममहियवडे, अंबे व ण छुब्भए खीरं ॥१८१॥

उहिसई विजिणेउं, जं जरस तु जोग्ग तं तस्स ॥१८०॥

जदि छुब्भई विणस्सति, णस्सति वा एवमपरिणामादी । णोहिस्से छेदमुतं, दारं, सम्रुहिसे याऽवि तं चेव॥१८२॥ परिणिव्वविया वाए, जित्तयमेत्तं तु तरित तु ग्वेतुं। जाहगदिद्वंतेणं, परिजिएँ ताहऽण्णु उद्दिसति ॥१८३॥ णिजनवयो अत्थस्सा, जो उवजाणेति अत्थो सत्तसा। अत्थेण वि णिव्यहति इ. अत्थं पि कहेति जं भणितं ॥१८४॥ मइसंपय चडमेदा, जगाह ईहा अवाय धारणया । जग्गहमति छन्भेता, तत्थ इमे होंति छन्भेया ॥१८५॥ खिष्प बहु बहुविई वा, धुव णिस्सित तह य होयऽसंदिदं। ओगिण्हति एवीहा, अवायमिति धारणा चैव ॥१८६॥ परवाइण सिस्सेण व, उचारितमेत्तमेव ओगिण्हे। तं खिप्पं बहुगं पुण, पंच व छ व सत्त गंथसता ॥१८७॥ बहुविइऽणेगपयारं, जह लिहित पहारए गणेइ वि य। अक्लाणगं कहेति इ, सद्दसमूहं वज्जेगविहं ॥१८८॥ ण वि विस्सरइ धुवं तं, अनिस्सियं जं ण पोत्थए लिहितं। अणुभासिय व्य गेण्हति, निस्संकित होअसंदिद्धं ॥१८९॥ जग्गहियस्स तु ईहा, ईहिए पच्छा अगंतर अवायो । अवगते पच्छा धारण, तीय विसेसी इमी णवरं ॥१९०॥ बहु बहुविह पोराणं, दुद्धर णितयं तहेव असंदिद्धं। पोराण पुरा व जितं, दुद्धर णय-भंगगुविलत्ता ॥१९१॥ एतो उ पत्रोगमती, चउन्त्रिहा होति आणुपुन्त्रीए। आय पुरिसं च खेतं, वत्थुं वि पर्वजए वातं ॥१९२॥

मतिसम्प-चतुष्कम्

ŧ0

प्रयोगमति-सम्पदः चतुष्कम्

१८३ जाइगिद्धितेणं जाहकस्तिर्यग्विशेषः, तद्दशन्तं यथा-"पातुं ेवं थोवं, खोरं पासाणि जाहओ लिह्ह । एमेव जितं काउं, पुच्छति मतिमं न खेदेति ॥१॥" आवश्यक हारिभद्रो टीका पत्र १०३ । ताहुऽण्णु तद्राऽन्यत् ॥ १८७ परवाहण परवादिना ॥

जाणित पयोग भिसजो, वाही जेणाऽऽउरस्स छिज्जित उ। इय वाओ व कहा वा, णियसत्ती णाउ कातव्वा ॥१९३॥ पुरिसं उवासगाई, अहवा वी जाणगाइयं पुरिसं । पुर्वं तु गमेऊणं, ताहे वाओ पडत्तव्वो ॥१९४॥ खेर्त मालवमाई, अहवा वी साहुभावियं जं तु । णाऊण तहा विहिणा, वाओ हु तहि पउत्तव्यो ॥१९५॥ वत्थुं पुण परवाई, बहुआगमिओ न वा वि नाऊणं। राया व रायमत्तो, दारुण-भद्दस्सभावो वा ॥१९६॥ एसा उ पञ्जोगमई, एत्तो वोच्छामि संगहपरिण्णं। सा वि य चडिवगप्पा, तीय विभागी इमी होइ ॥१९७॥ बहुजणजोग्गं पेहे, खेत्तं तह पीडफलहमोगिण्हे । वासाम्र एते दोण्णि वि, काले य समाणए काले ॥१९८॥ पूर अहागुरुं वि य, चडत्थ एसा उ संगहपरिण्णा । एतो एकेकीय य. इमा विभासा मुणेयन्वा ॥१९९॥ वासे बहुजणजोग्गं, वित्थिण्णं जं तु गच्छपायोग्गं । पहिलेह बाल-दुब्बल-गिलाण-मादेसमादीणं ॥२००॥ खेत असइ अगहिता, ताहे गच्छंति ते उ अण्णत्थ । पीढप्फलगग्गहणे, ण उ मङ्लंती णिसिङजादी ॥२०१॥ वासासु विसेसेणं, अण्णं कालं तु गमय अण्णत्थ । पाणा सीयल-क्रंथादिआ य तो गहण वासाम्र ॥२०२॥ जं जिम्म होति काले, कायब्वं तं समाणए तिम्म । सज्झाय पेह जवही, जप्पायण भिक्खमादी तु ॥२०३॥ अहगुरु जेणं पद्माविओ तु जस्स व अहीत पासिम्म । अहवा अहागुरू खल्ल, हवंति रातिणियतरया उ ॥२०४॥

बतुधी संप्रह-परिज्ञासंपत्

१९३ जियसती णाउ कातव्या निजय्क्ति ज्ञात्या कर्तव्या ॥ १९६ रायम्तो हालामात्यः ॥ १९८ इतोऽष्टचत्यारिद्यद्रायाः व्यव उ० १० गा० २८८-३३२ ॥ २०४ रातिजियतस्या रात्निकतराः व्रतपर्यायस्येष्ठतराः ॥

तेसि अब्भ्रद्राणं, हण्डम्मह तह य होति आयारे । जबहीवहणं विस्सामणं च संप्रयणा एसा ॥२०५॥ एसा खळ बत्तीसा, जाणाति जो पतिद्वितो एत्थं । ववहारे अलमत्थो. अहवा वि भवे इमेहिं त ॥२०६॥ छत्तीसाए त ठाणेहिं, जो होयऽपरिणिहिओ । णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२०७॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं. जो होति अपतिद्विता ॥ ण्डलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तण् ॥२०८॥ छत्तीसाए च ठाणेहिं, जो होइ परिणिहितो । अलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥२०९॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होइ सुपइहिओ । अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२१०॥ जा होती वत्तीसा, तम्मी छोढूण विणयपडिवत्ती। चतुभेदं तो होती, छत्तीसा एस ठाणाण ॥२११॥ बत्तीस विणय चिया वोच्छं चडमेय विणतपहिवर्ति। आयरियंतेवासी, जह विगएता भवे णिरिणो ॥२१२॥ आयारे स्नुत विणए, विक्लिवनणे चेव होति बोधहो । दोसस्स य णिग्वाओ, विणए चउहेस पहिवत्ती ॥२१३॥ आयारे विणयो खलु, चउिहा होति आणुपुन्त्रीए। संजमसामायारी, तवे य गणिविहरणा चेव ॥२१४॥ प्गञ्जविहारे या, सामायारी य एस चडहा तु। एतेसिं त विभागं, वोच्छामि अहाणुपुच्वीए ॥२१५॥ संयममायरइ सर्तं. परं च गाहेइ संजमं णियमा। सीयंतथिरीकरणं. उज्जतचरणं च उदबृहे ॥२१६॥ सो सत्तरसो पुढवातियाण घट्ट-परियावणो-इवणं। परिहरियन्त्रं णियमा, संजमयो एस बोद्धन्त्रो ॥२१७॥

षट्त्रिंशत् स्थानानि

विनय प्रतिपत्तयः

चतुर्धाऽऽ-चारविनयः

पक्ले य पोसहेस्रं, कारेति तवं सतं करेति वि य। भिक्खायरियाय तहा, णियुंजति परं सयं वा वि । ॥२१८॥ सन्विम बारसविहे. णिउंजति परं सतं च उज्जमति। गणसामायारीए, गणं विसीयंत्र चोएति ॥२१९॥ पडिलेहण-पक्खोडण-बाल-गिलाणाइवेयवचेतुं । सीदंतं गोहती, सनं च जुत्तो तु एएसु ॥२२०॥ एगल्लविहारादी, पहिमा पहिवज्जए सतं वऽण्णं। पडिवज्जावे एवं, अप्पाण परं च विणएति ॥२२१॥ आयारविणय एसो, जहक्रमं विष्णुओ समासेणं। एतो ऊ स्रतविणयं, जहाणुपुर्विव पक्क्तामि ॥२२२॥ मुत्तं अत्थं च तहा. हितकर णिस्सेसयं च वाएड ! एसो चडिहो खळु, सुत्रविणता होति णायव्यो ॥२२३॥ मुत्तं गाहेति जुत्तो, दारं, अत्थं च मुणावए पयत्तेणं। जं जस्स होति जोग्गं, परिणामगमादितं त हियं ॥२२४॥ णिस्सेसमपरिसेसं, जाव समत्तं तु ताव वाएति । एसो स्रुतविणयो खळु, बोच्छं विक्खेवणाविणयं ॥२२५॥ अहिट्टं दिट्टं खलु, दिट्टं साहम्मियत्तविणएणं। चुतधम्म ठावे धम्मे, तस्सेव हितद्व अब्धुे ॥२२६॥ विण्णाणाभावम्मि वि, 'खिव पेरणे' विक्खिवच परसमया। ससमते णमभिच्छुभे, अदिद्वधम्मं तु दिद्व वा ॥२२७॥ धम्मसहावो सम्मद्सण जं जेण पुन्वि ण उ रुद्धं। सो होयऽदिद्वपुच्चो, तं गाहे दिद्वपुच्चिमव ॥२२८॥ जह भायरं व पियरं, व मिच्छदिहिं पि गाहे सम्मत्तं। दिद्वपुरुवं सावग, साहम्मि करेइ पन्त्रावे ॥२२९॥ चतधम्मो णहधम्मो, चरित्तधम्माओ दंसणाओ वा। तं गवेति तर्हि चिया, पुणो वि धम्मे जहहिद्रे ॥२३०॥

चतुर्धा श्रतविनयः

चतुर्घा विक्षेपणविनयः

तस्स त्ती तस्से व उ, चरित्तथम्मस्स बुड्डिहेतुं तु। वारेतऽणेसणादी, ण य गिण्हे सर्व हितद्वाए ॥२३१॥ जं इह-परलोए या, हितं सुई तं खमं मुणेतव्वं । णिस्सेयस मोक्खो तु, अणुगामऽणुगच्छए जं तु ॥२३२॥ विक्लेवणविणएसो, जहक्कमं विष्णितो समासेणं। एत्तो तु पवक्खामी, विणयं दोसाण णिग्घाते ॥२३३॥ दोसा कसायमाई, बंधो अहवा वि अद्रवयहीओ। णिययं व णिच्छियं वा, वाय विणासो य एगद्वा २३४॥ रुट्टस्स कोहविणयण, दुट्टस्स य दोसविणयणं जं त । कं खिय कंख्च्छेए, आयप्पणिहाण चउहेसा ॥२३५॥ सीयधर्मिम व डाई, वंजुलरुक्लो व जह व उरगविसं। रुट्टस्स तहा को हं, पविणेती उवसमेति ति ॥२३६॥ दुहो कसाय-विसयाइएहिँ माणपयभावदुहो व्व । तस्स पविणेइ दोसं, णासयए धंसए व ति ॥२३७॥ कंखा उ भत्त-पाणे, परसमए अहव कंख एमाई। तस्स पत्रिणेइ कंखं, संखिड अण्णं व देसेणं ॥२३८॥ चरगाइमाइएसु तु, अहिंसमक्खो व्य अत्थि जा कंखा। तं हेज-कारणेहिं, विणयउ जह होइ णिकंखो ॥२३९॥ जो एएस ण बट्टइ, कोहे दोसे तहेव कंखाए। सो होति सुष्पणिहिओ, सोभणपरिणामजुत्तो वा ॥२४०॥ छत्तीसेयाणि ठाणाणि, भणिताणि अणुपुन्त्रसो । जो कसलो एतेहिं, सो ववहारी समक्खातो ॥२४१॥ अट्टिइ अट्टारसिंह य, दसिंह य ठाणेहिं जे अपारोक्ला। आलोयणदोसेहिं, छहि य अपारोक्ख विण्णेया ॥२४२॥

चतुर्घा दोष-निर्घातविनयः

२३३ विक्खेषणविणयसी विश्लेषणविनय पदः॥ २३४ अद्वृपयडीओ अष्टकमैत्रकृतिजः।

आलोयणागुणेहिं, छहिं य ठाणेहिं जे अपारोक्खा ।

द्ध अलोचना गुणाः

पंचहि य णियंठेहिं, पंचहि य चरित्तमंतेहिं ॥२४३॥ अट्टायारवमादी, वयछकादी हवंति यऽहरसं । दसविद्वपायच्छित्ते, आलोयणमादिए चेत्र ॥२४४॥ आलोयणदोसेहिं, आकंपणमादिएहिं दसहिं तु। छहिँ काएहिँ वएहि व, दसिं चाऽऽलोयणगुणेहिं।।२४५॥ इमेहि-आयार विणयगुण कप्पदीवणा अत्तसोहि चजुभावो । अज्जव महव लाघव, तुट्टी पल्हायकरणं च ॥२४६॥ मिच्छत्तत्वाऽऽयारे, पहमं आलोयणा तहिं पहमं । विणयो विणासणं ति य, मायाए विणयणगुणेमो ॥२४७॥ चारित्त कप्पो णियमा, णिरितयारित्त विगडिये सी य। दीविय पभासित चि य, पगासितो चेन एगद्वा ॥२४८॥ अतियारपंकपंकंकितो य आया विसोहिओ होति। आलोइए य आया, उज्जभावे ठाविओ होइ ॥२४९॥ अज्ञवभावे अज्ञव, सयं चियाऽऽलोइए कओ होइ। मद्द्रभावेणं पुण, अमाणि होऊग आलोए।।२५०!। अतियारगुरुभएणं, अकंतालोतिए लहु होति। मुद्धो हं ती य तुट्टी, दारं, अतियारुको य परहाणो । १५१॥ आलोयणागुणेम्, जे ऊ एवं इवंनऽपारोक्ता । छद्वाणयपडिएहिं, छहिँ चेव य जे अपारोक्ला ॥२५२॥ संखादीया ठाणा, छहिँ ठागेहिँ पडियाण ठाणाणं। जे संजया सरागा, एगे द्वाणे विगयरागा ॥२५३॥ एआऽऽगमदवहारी, पण्णता राग-दोसणीहया। आणाऍ जिणिदाणं, जे ववहारं ववहरंति ।:२५४॥

२४६ गाथेयं व्यव उ० १० गाव ४७३॥ २५३ इतो द्वाविदातिर्गाधाः व्यव उ० १० गाव ३३३-३५२॥

इय भणिए चोएती, ते वोच्छिण्णा हु संपदं इहइं। तेस्र य वोच्छिण्णेस्, णत्थि विसुद्धी चरित्तस्स ॥२५५॥ चोहसपुव्यधराणं, बोच्छेदो केवलीण बोच्छेदे। केसिंचि य आदेसो, पायच्छित्तं पि वोच्छिणं ॥२५६॥ जं जित्रण सुज्झति, पार्व तस्स तह देंति पच्छित्तं। जिण-चोद्दसपुन्वधरा, तविवरीता जहिच्छाए॥२५७॥ पारगमपारगं वा, जाणंते जस्स जं च करणिक्जं। देति तहा पचक्वी, घुणक्खरसमो त पारोक्खी ॥२५८॥ जा य जणाहिए बुत्ता. सत्ते मग्गविराहणा । ण सुज्झे तीइ देंतो छ, असुद्धो कं च सोहए २५९॥ देंता वि ण दीवंती, मास-च उम्मासियाओं सोहीओ । क्रणमाणा विय सोहिं. ण पासिमो जो व सिं देजा ।२६०॥ सोहीए य अभावे. देंताण करेंतगाण य अभावे। वट्टति संपतिकाले, तित्थं सम्मत्त-णाणेहिं ॥२६१॥ णिज्जवगा य ण संती, महपुरिसाणं तु तैसि वोच्छेते । तम्हा संपयकाले, णित्थ विसुद्धी स्वविहियाणं ॥२६२॥ एवं त चोतियम्मी, आयरिओ भणति ण ह तुमे णातं। पच्छितं कहितं तू, किं धरती किंच बोच्छिणं ? ।।२६३॥ अत्थं पडुच सूत्त, अणागनं तं तु किंचि आमसनि। अत्थो विको वि स्रतं, अणागतं चेव आमसति ॥२६४॥ सब्बं चिय परिछत्तं, पश्चक्खाणस्स ततियवत्युमिम । तत्तो चिय णिज्जूढं, कप्प पकप्पा य ववहारो ॥२६५॥ ताणि घरंती अज्ञ वि, तेसु घरंतेसु कह तुमं भणिस । वोच्छिणं पच्छितं ?, तत्थ इमा तु परूवणया ॥२६६॥

प्रायक्षित्ता-भावविषयं चोदकस्य वचनम

> आचार्यस्य प्रतिबन्नः

२६४ आमसनि आमृषति-विचारयति ॥ २६५ पकःपो निशीयृ सुत्रम्॥

सपदपरूवण अणुसज्जणा य दस चोद्दसऽह दुप्पसहे । अत्थि ण दीसति धणिएण विणा तित्थं च णिज्जवए।२६७:। पण्णवगस्स त सपदं. पच्छितं चीयगस्स तमणि । तं संपर्य पि विज्ञति, जहा तहा मे णिसामेहि ॥२६८॥ श्चेजित चकी भोए, पासाए सिप्पिरयणणिम्मविए। तं दट्टं रायीणं, अण्णेसिच्छा सम्रूपण्णा ॥२६९॥ अम्हें कारावेमो, पासाए परिसे ति इति तेहिं। चित्तकरा पेसविया. णिउणं लिहिऊण आणेह ॥२७०॥ पासाद स्सयणे मणहारितं तेहिं चित्तकारेहिं। लीलविह्मणं णवरिं, आगारो होति सो चैव ॥२७१॥ जह रूपादिविसेसा. परिहीणा होति पागतजणस्स । ण य ते ण होंति गेहा, भुंजंति य तेस्र ते भोगे ॥२७२॥ एमेव य पारोक्खी, तदाऽणुरूवं त सो व्य ववहरति। कि पुण ववहरितन्त्रं, पायन्छित्तं इवं दसहा ॥२७३॥ आलोयण पडिकमणे, मीस विवेगे तहा वियोसगो । तव छेद मूल अणवदृया य पारंचिए चेव ॥२७४॥ पत्नवरिं भिण्णहिती, सवित्थरेणं तु आणुपुन्त्रीए । एयं प्रण जह धरती, जं जत्था तं चिमाऽऽहंस्र ॥२७५॥ दसहा अणुसर्जाती, जा चोहसपुव्ति पढमसंघरणे। तेणाऽऽरेणऽदृविद्दं, तित्थंतिम जाव दुप्पसहो ॥२७६॥ तम्मि कालगए तित्थं चरित्तं च वोच्छि जिहीति ॥ दोसु तु वोच्छिण्णेसु, चोइसपुन्ताऽऽतिमे य संघयणे। तव(तो)पारंच-ऽणवद्दा. णव-दस पच्छित्तवोच्छिण्णा।२७७॥

दशधा प्रायश्वित्तम् प्रायश्वित्त-दानस्य विभागः

> १७३ षागतजणस्स प्राकृतजनस्य ॥ २७५ पतुवरिं पतव् उपरि-अग्रे । जत्था तं चिमांऽऽहंसु यत्र तत् चेदमाह ॥ २७३ गाथेयं व्य॰ उ॰ १० गा० ३५३॥

सेस अट्टहऽणुसज्जति, जा तित्थं पन दसे य लिंगादी । चोदे तं पि ण दीसदि, एवभणंतं ग्ररू भणति ॥२७८॥ दोसु त वोच्छिण्णेस, अट्टविहं देंतया करेंता य। ण य केयी दीसंती. एवभणंतस्स चतुगुरुगा ॥२७९॥ दोस्र त वोच्छिण्णेस, अट्टविई देतया करेंता य। पचन्खं दीसंती, जहा तहा मे णिसामेहि ॥२८०॥ पंच णियंटा भणिया, पुलाग बडसा कुसील निग्गंटा। तह य सिणाओ तेसि, पच्छित्त जहकर्म बोच्छं ॥२८१॥ आलोयण पहिकमणे, मीस विवेगे तहा विओसग्गे। तत्तो य तवे छेदे, पच्छित्त पुलागे छऽप्पेते ॥२८२॥ बगुस-पडिसेवगाणं, पायच्छित्ता हवंति सब्वे वि । थेराण भवे कप्पे, जिणकप्पे अट्टहा होति ॥२८३॥ आलोयणा विवेगो वा, णियंठस्स दुवे भवे । विवेगो य सिणायस्स, एमेया पडिवत्तीओ ॥२८४॥ पंचेव संजया खल्ल, णायग्रएण कहिता जिजवरेणं। सामाइसंजयादी, पच्छित्तं तेसि बुच्छामि ॥२८५॥ सामाइसंजताणं, पिच्छत्ता छेय-मूलरहियऽहु । थेराण जिणाणं पुण, तवगंतं छिवत्रहं होति ॥२८६॥ छेदोवट्टावणिए, पायच्छित्ता हवंति सब्वे वि । थेराण जिणाणं पुण, मूळंतं अदृहा होति ॥२८७॥ परिहारविमुद्धीए, मूर्लंता अट्ट होंति पच्छिता । थेराण जिणाणं पुण, छव्विहमेतं चिय तवंतं ॥२८८॥ आलोयणा विवेगे य. ततियं त ण विज्जइ सुहमस्मि संपराए, अहक्खाए तहेव य ॥२८९॥

२७९ इतस्रयोद्श गाषाः व्यव उठ १० गाव ३५५ ३६६ ॥ २८२ छ प्पेते पद्भयेतानि ॥

प्रायश्चित्तविधा-तृणामस्तित्वम्

वडस-पहिसेवया खलु, इत्तिरि-छेटा य संजता दोणिण । जा तित्थं अणुसन्जंति, अत्थि हु तेणं तु पश्छितं ॥२९० जदि अत्थि ण दीसंती, केइ करेंता उ भण्णती सुणसु । दीसंत उत्रार्ण, कुव्वंता तिथमं णातं ॥२९१॥ जह धणियो सानेनखो, णिरवेनखो चेन होह [दुनिहो] तु । धारणग संतविभवो, असंतविभवो य सो दुविहो ॥२९२॥ मंतविभवो तु जाहेव मिगतो ताहे देति तं सब्बं। जो पुण असंतविभवो, तस्त विसेसो इमो होति ॥२९३॥ णिरवेक्लो तिष्णि चयती, अत्ताण धणं च तह य धारणयं। सावेक्खो प्रण रक्खित, अप्पाण घणं च घारणगं ॥२९४॥ जो त् असैनविभवो, दश्मं घेत्तण पहइ पाडेण । सो अप्पाण घणं पि य, धारणगं चेव णासेति ॥२९५॥ जो पुण सहती कालं, सो अत्यं लहति रक्खित य तं च। ण किलिस्सइ य सतं पी, एव उवाओ तु सव्वत्थ ॥२९६ जो तु धरेजा अवृदं, असंतविभवो सतं। कुणमाणो य कम्मं तु, णिन्विसे करिसावणं ॥२९७॥ अणमप्पेण कालेणं, सो तगं तु विमोयए। दिईतेसो मणितो, अत्थोवणयो इमो तस्स ॥२९८॥ संतविभवेहिँ तुझा, धिति-संघयणेहिँ जे उ संपण्णा । ते आवण्णा सन्त्रं, वहंति णिरणुम्महं घीरा ॥२९९॥ संघयण-धितीहीणा, असंतिवभवेहिँ होति तुल्ला तु । णिरवेक्लो जिद तेसिं, देति तयो ते ण सुज्झंति ॥३००॥ ते तेण परिचत्ता, लिंगविवेगं तु काउ वर्चति । तित्थुच्छेदो एवं, अप्पा वि य चत्ता इगमो उ ॥३०१॥

सापेक्ष-निर-पेक्षतया प्राय-श्चित्तदाने ला-भाऽलाभी

२९३ इत आरम्य नव गायाः च्य० उ० १० भा० गा० ३६७-३७५॥

ते उद्वेत पराणा, पच्छा एक। णियो तयो होति । ताहे किं तु करेतू?, एवं अप्पा परिचत्तो ॥३०२॥ साविक्खों पवयणम्मी, अणवत्थपसंगवारणाकुसलो । चारित्तरक्खणहा, अन्वोच्छित्तीय तु विसुज्झे ॥३०३ ॥ कल्लाणगमावण्णे, अतरते जहक्रमेण काउं जे। दस कारेंति चतुत्ये, तब्बिडणाऽऽयंबिलतवे य ॥३०४ एकासण पुरिमहा, णिन्त्रिगती चेत्र विगुणविगुणाओ । पत्तेयाऽसहुदाणं, कारेंति व सिण्णगासंति ॥३०५॥ चड-तिग-दुगकञ्जाणा, एगं कञ्जाणगं च कारिंति । जं जो उतरित तं तस्स देंति असहस्स झोसेंति ॥३०६॥ एवं सदयं दिज्जति, जेणं सो संजमे थिरो होति। ण य सन्बहा ण दिज्जइ, अणवत्थपसंगदोसाओ ॥३०७॥ तिल्रहारगदिहुंतो, पसंगदोसेण जह वहं पत्तो । जणणी य थणच्छेर्यं, पत्ता अणिवारयन्ती तु ॥३०८॥ णिब्भत्थणाइ बितियाऍ वारिओ जीविआदिआभागी। णेत्र य थणछेदादी, पत्ता जणणी य अवराहं ॥३०९॥ इय अणिवारियदोसा, संसार्र दुक्खसागरप्रुवेति । विणियत्तपसंगा पुण, करेंति संसारवोच्छेई ॥३१०:। प्वं धरती सोही, देन्त कर्रना वि एव दीसंति । दारं । जं पि य दंसण-णाणेहिं भाति तित्थं ति तं सुणपु ॥३११॥ एवं ते भणंतेणं, सेणियमादी वि याविया समणा। समणस्स उ स्नम्मी, पत्थी णरएयु उववातो ॥३१२॥

चरणस्य अस्तिता

३०२ पलाणा पलायिताः । पकाणियो एकाकी ॥ ३०३ इत आरभ्येकादश गाया व्यव उ० १० भाव गाव ३७६-३८६ ॥ ३०८ तिल्लहारम^{दि}हेनो तिलह(एकद्दण्टनः गुरुमस्वविनिश्चयवृत्ती उ० १ गाया २०० मध्ये, व्यव उ० १० भाव गाया ३८० टीकायां स प्रहच्यः ॥

जं पि य हु एकवीसं, वाससइस्साइँ होइती तित्थं। तं मिच्छा सिद्धी वा, सन्वगतीसुं पि होज्जाहि ॥३१३॥ अण्णं च इमो दोसो, पश्छित्ताभावतो तु पावइ हु। जह न वि चिद्वति चरणं, तत्थ इमं गाहमाहंस्र ॥३१४॥ पायच्छिते असंतम्म, चरित्तं पि ण चिट्ठति । चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे णो सचरित्तया ॥३१५॥ अचरित्तयाए तित्थे. णेव्याणं पि ण गच्छती । णेव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्ला णिरत्थिया ॥३१६॥ ण विणा तित्थं णियंठेहिं, णियंठा व अतित्थगा। छकायसंजमो जाव, ताव दुण्हाऽणुसज्जणा ॥३१७॥ सन्वन्नुहिं परुविय, छक्काय महन्वया य समितीओ । स चेत्र य पण्णत्रणा, संपयकालम्मि साहणं ॥३१८॥ तं णो वश्वइ तित्यं, दंसण-णाणेहिँ एव सिद्धं तु । णिज्जवगा वोच्छिण्णा, जंपि य भणियं त तंण तहा॥३१९॥ स्रण जह णिज्जवगऽत्थी, दीसंनि जहा य णिज्जविज्जंता । इह दुविहा णिज्जनगा, अत्ताण परे य बोधव्या ॥३२०॥ पाओवगमे इंगिणि, दुविहा खल्ज होति आयणिज्ञवगा । णिज्जवणा य परेण व, भत्तपरिण्णाऍ बोद्धव्वा ॥३२१॥ पाओवगमे इंगिणि, दोण्णि वि चिट्टंन ताव मरणाई। भत्तपरिण्णाऍ विहिं, वाच्छामि अहाणुप्रव्वीए ॥३२२॥ पावज्जादी काउं, णेयव्यं ताव जाव वोच्छित्ती । पंच तुलेतुण य सो, भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥३२३॥ सपरक्कमे य अपरक्कमे य वाघाय आणुपुट्यी य । सुत्तऽत्यजाणएणं, समाहिमरणं तु कातन्त्रं ॥३२४ ॥

निर्यापकाना-मञ्जवच्छेदः

भक्तपरिज्ञा-विधिः भिक्ल-वियारसमत्या, जो अण्णगणं तु गंतु चाएति । एस सपरक्कमो खळु, तिव्यवरीओ भवे इवरो ॥३२५॥ एक्केक्फ्रं तं दुविहं, णिव्याधायं तहेव वाघायं । वाघाती वि य दुविहो, कालाइधरो व्य इयरो व्य ॥३२६॥ सपरक्कमं तु तहियं, णिव्वाघायं तहेव वाघातं । बोच्छामि समासेणं, ढप्पं अपरक्कमं दुविहं ॥३२७॥ तं पुण अणुगंतव्वं, दारेहिँ इमेहिँ आणुपुन्तीए । गणिपिसरणाइएहिं, तेसि विभागं त वोच्छामि ॥३२८॥ गणणिसिरणा परगणा, सिति संलेहा अगीयऽसंत्रिगो । एगाऽऽभोगण अण्णे, अणपुच्छ परिच्छ आलोए ॥३२९॥ ठाण वसही पसत्थे, णिज्जवगा दव्वदायणा चरिमे। हाणि परितंत णिज्जर. संथास्व्वत्तणादीणि ॥३३०॥ सारेजण य कवयं, णिव्वाचाएण चिंधकरणं च । वाघाए जयणा या, भत्तपरिण्णाय कायव्या ॥३३१॥ गणिणिसरणिम उ विही, जो कप्पे विणतो उ सत्तविहो। सो चेव णिरवसेसो, भत्तपरिण्णाएँ इहाँ पि ॥३३२॥ णिसिरिच् गणं वीरो, गंतूण य परगणं तु सो ताहे। कुणति दढ्डव्यसायो, भत्तपरिष्णं परिणयो य ॥३३३॥ किं कारण अवक्रमणं, थेराण इहं तत्रोकिलंताणं ?। अब्ध्रुज्जयम्मि मरणे, कालुणिया झाणवाघातो ॥३३४॥ सगणे आणाहाणी, अप्पत्तिय होति एवमादीहिं। परगणे गुरुक्रलवासो, अप्पत्तियत्रज्ञितो होति ॥३३५॥ उनगरणगणणिमित्ते, तु बुगगहो दिस्स वा वि गणभेदो । बालादी थेराण व, उचियाकरणम्मि वाघातो ॥३३६॥

निर्व्याचाताया सन्याचाताया-श्व सपराक्रमः भक्तपरिज्ञायाः स्वरूपम्

> गणनिःसरण-द्वारम्

३२८ इतः पञ्च गोथाः ६४० उ० १० भा० गा० ३९९-४०३॥ ३३४ इतः षड् गाथाः ६४० उ० १० भा० गा० ४६४-४०९॥ श्रितिद्वारम्

सिणेहो पेलवी होती, णिग्गए उभयस्स वि।
आह्य वा वि वाघाए, णो स होई विजन्भभो ॥३३७॥
दन्त्रसिती भावसिती, दन्त्रसिती होई दारुणिस्सेणी ।
भावसिति संजमो जा, तीय वि भंगा इमे होंति ॥३३८॥
संजमठाणाणं कंडगाण लेसाठितीविसेसाणं ।
उवरिस्ला परक्रमणं, भावसिती केवलं जाव ॥३३९॥
भावसिती अहिगारो, विसुद्धभावेण तत्थ ठातव्वं ।
ण हु जबृगमणकज्जे, हेडिल्लपदं पसंसंति ॥३४०॥

सिति चि दारं॥

संकेखना-द्वारम् संस्रेहणा उ तिविहा, जहण्ण मञ्झा तहेव उक्कोसा ।
छम्मासा विरसं वा, वारस विरसा जहाकमसा ॥३४१॥
चिद्वतु जहण्ण मञ्झा, उक्कोसं तत्थ ताव वोच्छामि ।
जं संस्रिहिऊण मुणी, साहंती अप्पणा अट्टं ॥३४२॥
चत्तारि विचित्ताई, विगतीणिङजूहियाई चत्तारि ।
दोम्र चउत्थाऽऽयामं, अविगिष्ट विगिष्ट कोडेकं ॥३४३॥
संवच्छराई चउरो, तवं विचित्तं चउत्थमादीयं ।
काऊण सव्वगुणिनं, पारेती उग्गमिवसुद्धं ॥३४४॥
पुणरिव चउरण्णा तू, विचित्त काऊण विगतिवज्जं तु ।
पारेति सो महप्पा, णिद्धं पणिपं च वज्जेइ ॥३४५॥
अण्णा दोण्णि समाओ, चउत्थ काऊग पारे आयामं ।
कंजीएणं तु तयो, अण्णेकसमं दुहा काउं ।३४६॥
तत्थेकं छम्मासं, चतुत्थ छटं च काउ पारेति ।
आयामेणं णियमा, वितिष् छम्मासिष् विगिटं ॥३४७॥

३४२ इतो नव गाथाः व्यव उ० १० भाव गाव ४११-४१८ ॥ ३४४ सव्वगुणितं सर्वेगुणिकं प्रतिबन्धरदितम्, यथेष्टमित् यावत् ।

अद्वम दसम दुवालस, काउं पारे तमेव आयामं। अण्णेकहायणं तू, कोडीसहितं तु काऊणं ॥३४८॥ आयाम-चडत्यादी, काऊण अपारिए पुणी अण्णं । जं कुणयाऽऽयामादी, तं भण्णति कोहिसहितं तु ॥३४९॥ आयंबिल उसिणोएण पारें हावंतो आणुपुन्तीए । जह दीव-तेल्ल-वत्तीखओ समं तह सरीरायुं ॥३५०॥ बारसमम्मि य वरिसे, जे मासा उवरिमा उ चत्तारि । पारणए तेसि त, एकंतरतं इमं धारे ॥३५१॥ तेल्लस्स उ गंडूसं, णीसद्वं जाव खेलसंबुत्तो । तो णिसिरे खेलमत्ते, किं कारण ? गल्लधरणं तु ॥३५२॥ ञ्जस्वता ग्रहजंतं, मा हु खुहेज्ज ति तेण धारेइ। माऽह णमोकारस्सा, अपचलो सो हु होज्जाहि ॥३५३॥ उकोसिया तु एसा, संलेहा मन्द्रिमा जहण्णा य । संवच्छर छम्मासा, एमेव य मास-पऋवेहिं ॥३५४॥ एत्तो एगतरेणं, संस्रेहेणं खवेतु अप्पाणं। कुज्जा भत्तपरिण्णं, इंगिणि पाओवगमणं च ॥३५५॥ अग्गीयसगासम्मी, भत्तपरिण्णं तु जो करेज्ञाहि। चजगुरुगा तस्स भवे, किं कारण ? जेणिमे दोसा ॥३५६॥ णासेइ अगीयत्थो, चडरंगं सव्वलोगसारंगं। णट्टिम य चडरंगे, ण हु सुलभं होति चडरंगं ॥३५७॥ किं पुण तं चउरंगं, जं णहं दुल्ल हं पुणो होति ?। माणुस्सं धम्मस्रती, सद्धा तह संजमे विरियं ॥३५८॥ किह णासेति अगीतो, पढम-वितिएहिँ अहिओ सो उ । ओभासें कालिमाए, तो निद्धम्मो ति छड्डेज्जा ॥३५९॥

अगीत-द्वारम्

३५३ इतोऽष्टाविदानिर्गायाः व्यव उ० १० मा० गा० ४२०-४४७॥

अंतो वा बाहिं वा. दिया व रातो व सो विचित्तो त । अट्टब्र्ट्ट्वसट्टो. पहिगमणादीणि कुज्जाहि ॥३६०॥ मरिज्जण अट्टज्झाणा, गच्छेज्ज व तिरिय वणसुरेसुं वा । संभरिकण य वेरं, पडिणीयनं करेज्जाहि ॥३६१॥ अहवा वि सन्वरीए. मोयं देज्जाहि जायमाणस्स । सो डंडियादि होज्जा, रुट्टो साहे णिवाईणं ॥३६२॥ कुज्जा कुलादिपत्थारं, सो वा रुट्टो तु गच्छे गिच्छत्तं । तप्पच्चयं तु दी हं, भमेज्ज संसारकंतारं ॥३६३॥ सो दिट्टो य विगिचितो, संविगोहि तु अण्णसाहृहिं। आसासियमणुसद्धो, मरणज्जह पुणो वि पहिनणो ॥३६४॥ एए अण्णे यबहू, तहियं दोसा सपचवाया य। एपहि कारणेहि, अमीये ण कप्पति परिण्णा ॥३६५॥ तम्हा पंच व छ स्सत्त वा वि जोयणसने समहिए वा। गीयत्थपायमूलं, परिमगोजना अपरितंतो ॥३६६॥ एकं व दो व तिनि व, उकासं बारसेव वासाई। गीयत्थपायमूलं, परिमग्गेज्जा अवरितंनो ॥३६७॥ गीतत्थदुल्लुमं खलु, पहुच कालं तु मग्गणा एसा । ते खळ गवेसमाणे. खेत्ते काले य परिमाणं ॥३६८॥ तेण य गीयत्थेणं, पत्रवणगहियत्थसन्त्रसारेणं । णिज्जवएण समाही, कायव्वा उत्तिमट्टिम ॥३६९॥ अगीय ति दारं ॥

असंविप्न-द्वारम् एवमसंविग्गे वी, पहिवन्नंतस्स हेाति चउगुरुगा। किं कारणं तु ? तिहयं, जम्हा दोसा हवंति इमे ॥३७०॥ णासेति असंविग्गो, चउरंगं सन्वलोयसारंगं। णहिम्म य चउरंगे, ण हु सुलहं होति चउरंगं॥३७१॥ आहाकिम्मय पाणय, पुष्फा सीया य बहुजणे णायं।
सेज्जा संथारो वि य, उनही निय होति अविसुद्धो॥३७२॥
एते अण्णे य तिहं, बहने दोसा सपचनाया य।
एतेण कारणेणं, असंतिग्गे ण कष्पति परिण्णा ॥३७३॥
तम्हा पंच व छ स्सत्त वा वि जोयणसते समिहए वा।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३७४॥
एकं व दो व तिण्णि व, उक्कोसं बारसेव वासाइं।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३७५॥
संविग्गदुछुहं खलु, कालं तु पडुच मग्गणा एसा।
ते खलु गवेसमाणे, खेते काले य परिमाणं ॥३७६॥
तेण य संविग्गेणं, पनयणगहियत्थसन्त्रसारेणं।
णिज्जनगेण समाही, कातन्त्र उत्तिमटुम्मि ॥३७७॥
संविग्गेति दारं॥

एगिम उ णिज्जवए, विराहणा होति कज्जहाणी य।
सो सेहा वि य चत्ता, पावयणं चेव उड्डाहो ॥३७८॥
तस्सद्दगतोभासण, सेहादिअदाणें सो य परिचत्तो ।
दांतुं व अदाउं वा, हवंति सेहा वि णिद्धम्मा ॥३७९॥
क्रवह अदिज्जमाणे, मारेति वल ति पवयणं चतं ।
सेहा य जं पिडिगया, जणे अवण्णं पयासंति॥३८०॥ दारं॥
सयमेवाऽऽभोएतुं, अतिसेसि णिमित्तियो व आयरिओ ।
देवयणिवेयणेण व, जह णगरे कंचणपुरम्मि ॥३८१॥
कंचणपुर गुरुसण्णा, देवयरुयणा य पुच्छ कहणा य ।
पारणग स्वीर रुहिरं, आमंतण संघणासणया ॥३८२॥
अहवा वि सो व परतो, पारग मिच्छत्त पारए गुरुगा ।
असती खेमसुभिक्खे, णिच्याघाते ण पडिवत्ती ॥३८३॥

एकद्वारम

आभोग-द्वारम्

३८२ माथेयं व्यव १० गाव ४५२॥

सतं चेव चिरावासो, वासावासे तवस्सिणं ।
तेणं तस्स विसेसेणं, वासासु पढिवज्जणं ॥३८४॥
असिवोमादीएसु तु, पढिवज्जंते इमे भवे दोसा ।
संजम-आयविराहण, आणाईया य दोसा उ ॥३८५॥
असिवादीहिँ वहंता, वं उवगरणं व संजता चत्ता ।
उवहिं विणा य छडुणें, चत्तो सो पवयणं चेव ॥३८६॥ दारं॥

अन्यद्वारम्

एगो संधारगतो, बितियो संलेहें तितय पिडसेहो । अपहुर्चतऽसमाही, तस्स व तेसिं व असमाही ॥३८७॥ इविज्ञ जिंद वाघातो, बितियं तत्थ ठावए । चिलिमिलिं अन्तरे काउं, बहिं वंदावए जणं ॥३८८॥दारं॥

अनाप्टच्छा-द्वारम अणपुच्छाऍ गणस्सा, पिडच्छए तं जती गुरू गुरुगा।
चत्तारि तु विण्णेया, गच्छमणिच्छंते जं पावे ॥३८९॥
पाणगादीणि जोग्गाणि, जाणि तस्स समाहिए।
अछंभे तस्स जाणाही, पिरकेसो य जायणे ॥३९०॥
असंथरं अजोग्गो वा, जोगवाही व जइ भवे।
एसणादिपरिकेसो, जा य तस्स विराहणा ॥३९१॥ दारं॥
अपरिच्छणम्मि गुरुगा, दोण्ह वि अण्णोण्णगं जहाकमसो।
होति विराहण दुविहा, एको एको व जं पावे।।३९२॥

परीक्षाद्वारम्

तम्हा परिच्छणा खलु, दन्वे भावे य होति दोण्हं पि।
तिह्यं तु जो परिच्छति, दबपरिच्छाऍ ते इणमो ॥३९३॥
मादणपयकित्वादी, दन्वे आणेह मे त्ति तो उदिते।
यदि उबहसंति ते तू, अहो इमो विगयगेहि त्ति ॥३९४॥
किह मोच्छिइ त्ति भत्तं ?, तेसेवं दबयो परिच्छा उ।
भावे कसाइजंती, तेसि सगासे ण पहिवज्जे ॥३९५॥

३८५ इतो गायाद्वादशकं न्य० १० गा० ४४९-४६०॥ ३९५ मोच्छिइ मोक्यति । तेसेवं तेषामेवम् ॥

一日 かんしょうしょう アイカスト・ア

अह पुण विरूवरूवे, आणीऍ दुगुंछए भणंतऽण्णं। आणेमो त्ति ववसिए, पडिवर्ज्जित तेसि सो पासे ॥३९६॥ एवंभासी ते तू, परिच्छए दब-भावयो विहिणा। ते वि य तं तु परिच्छे, दुविहपरिच्छाऍ इणमो तु ॥३९७॥ कलमोयणो य पयसा, अर्ण व सभावअणुमतं तस्स । उनणीयं जो कुंछइ, दबपरिच्छाऍ सो सुद्धो ॥३९८॥ भावे पुण पुच्छिजाइ, किं संलेहो कतो ति ण कयो ति ?। इति उदिए सो ताहे, हंतूणं अंगुलिं दाए ॥३९९॥ पेच्छह ता मे एयं, किं कतों ण कतो त्ति एव उदितम्मि । भणति गुरू तो ण तयो, एयं चिय ते ण संलीहं ॥४००॥ ण हु ते दच्वसंलेहं, पुच्छे पासामि ते किसं। कीस ते अंगुली भगगा ?, भावं संलिहमाऽऽउर ! ॥४०१॥ भावो चिय एत्थं तू , संलिहियन्वो सदा पयत्तेणं। तेणाऽऽयष्ट्रं साहे, दिइंतोऽमच-कोंकणए ॥४०२॥ रण्णा कोंकणगाऽमञ्जा, दो वि णिव्विसया कता । दोद्धिए कंजियं छोइं, कोंकणो तक्खणा गतो ॥४०३॥ भण्डीओ बड्रह्मए काए, अमबी जा भरेड़ तु । ताव पुण्णं तू पंचाहं, णलिए णिहणं गतो ॥४०४॥ एवं जेहिं संलीडो, भावो ते तू साहगा। असंस्रीहे ण साहेन्ति, अमची इव ते खलु ॥४०५॥ इंदियाणि कसाए य, गारवे य किसे कुण। ण चेयं ते पसंसामो, किसं साह ! सरीरगं ॥४०६॥

३९८ व्यव १० गाव ४६१ ॥ ३९९ इंत्यूणं उत्प्छुत्य । दाप दर्शयेत् ॥ ४०१ व्यव १० गाव ४६३ ॥ ४०३ गायाद्विकं व्यव १० गाव ४६४–६५ ॥ ४०६ व्यव १० गाव ४६६ ॥

आलोचना-द्वारम्

एवं परिच्छिञ्जणं, जदि सुद्धो ताहे तं पडिच्छंति । दारं ॥ ताहे य अत्तसोहिं, करेति विहिणा इमेणं त ॥४०७॥ आयरियपादमूलं, गंतुर्ण सति परिक्कमे ताहे। सब्बेण अत्तसोही, परसक्खीयं त कायव्या ॥४०८॥ जह सुकुसलो वि बेज्जो, अण्णस्स कहेति अप्पणो वाही। वेज्जस्स य सो सोतं, तो परिकम्मं समारभइ ॥४०९॥ जाणंतेण वि एवं, पायच्छित्तविहमप्पणा णिउणं। तह वि य पागडनर्यं, आलोएतव्वयं होति ॥४१०॥ छत्तीसग्रुणसमण्णागएण तेण वि अवस्स कायन्त्रा । आलोयण निंदण गरहणा य ण पुणो य बितियं ति ॥४११॥ किं कारणमालीयण, एवपयत्तेण होति दायन्वा ?। भण्णइ सुणसु इणमो, आलोयंतस्स जे उ गुणा ॥४१२॥ आयार विणयगुण कप्पदीवणा अत्तसोहि उज्जभावो । अज्जव महव लाघव, तुट्टी परहायजणणं च ॥४१३॥ पावज्जादी आलोयणा त तिण्हं चतुन्किय विसोही । जह अप्पणी तह परे. कायव्वा उत्तिमद्रम्मि ॥४१४॥ तिण्हं ती णाणादी, दन्वादि चउनकर्ग मुणेयन्वं। जो अतियारी तेमृ, कयो आलोएति तं सन्वं ॥४१५॥ णाणे वितहपरूवण, जं वा आसेवितं तदट्टाए। चैयणमचैयणं वा, दब्बे खेत्तादिस इमं त ॥४१६॥ णाणणिमित्तं अद्धाणमेति ओमे व अच्छति तदहा । णार्ण च आगमेस्सइ, क्रुणती परिकम्मर्ण देहे ॥४१७॥ पहिसेवति विगईओ, सेहादच्वे व एसती पियति । वायंतस्स व किरिया, कया तु पणगादिहाणीए ॥४१८॥

४०८ गायाचतुष्कं व्यव १० गाव ४६७-७०॥ ४१० पागडतस्यं प्रकटतरं-स्पष्टम् ॥ ४१३ गाथाखयोविंदातिः व्यव १० गाव ४७३-९४॥

एमेव दंसणम्मि वि, सदृहणा णवरि तत्थ णाणतं। एसण-इत्थीदोसे, वयंति चरणे सिया सेवा ॥४१९॥ अहवा तिगसालंबेण दव्यमादी चउवकमाहस । आसेवियं णिरालंबओ व आलोयए तं तु ॥४२०॥ पडिसेवणातियारा, जदि वीसरिया कहिंचि होज्जाहि । तेस्र कह वट्टियव्वं, सरलुद्धरणम्मि समणेणं ? ॥४२१॥ जे मे जाणंति जिणा, अवराहे जेस्र जेस्र ठाणेस्र । ते हं आलोएउं, उबद्वितो सन्वभावेण ॥४२२॥ एवं आलोएंतो, विसुद्धभावपरिणामसंजुत्तो । आराहओ तह वि सो, गारवपलिउंचणारहितो ॥४२३॥दारं॥ ठाणं पुण केरिसयं, होति पसत्थं तु तस्स जं जोगां ?। स्थान-वसति-भण्णति जत्थ ण होज्जा, झाणस्स उ तस्स वाघाओ ॥४२४॥ द्वारम् गंधव्य-नदृ-जङ्क-८स्स-चयक-जंत-८ग्गिकम्म-पुरुसे य। णन्तिकक-रयग-देवड-डोम्बिल-पाडहिय-रायपहे ॥४२५॥ चोरग-कोट्टग-कल्लाल-करकए पुष्फ-दगसमीवे य। आरामअहे वियडे, जागवरे पुन्वभणिए व ॥४२६॥ पद्दम-वितिएस कप्पे. उद्देसेस उवस्सया जे तु । विहिसुत्ते य णिसिद्धा, तिन्त्रवरीए भवे सिज्जा ॥४२७॥ उज्जाणे तरुमूले, सुण्णवर अणिसद्व हरिय मग्गे य। एवंविहे ण ठायइ, होज्ज समाहीय वाघाओ ॥४२८॥ इंदियपडिसंचारो, मणसंखोभकरणं जहिं णिथ । चाउस्सालाइँ द्वे, अणुण्णवेऊग ठायंति ॥४२९॥

४२१ सलुद्धरणिम शल्योद्धरणे अपराधालोचनायामित्यर्थः॥ ४२३ पलिउंचणा प्रतिकुञ्च्यतेऽन्ययासेवितं अन्यया कथ्यते यया सा प्रतिकुञ्चना। व्यवहारपीठिका गाया १५० पत्रं ५०॥

पाणगजोग्गाहारे, ठवेंति से तत्थ जत्थ ण उवेन्ति ।

अपरिणया वं सो वा, अपचय-गेहिरक्खद्रा ॥४३०॥ भुत्तभोगी पुरा जो तु, गीयत्थो नि य भानितो। संतेसाऽऽहारथम्मेस्र, सो वि खिष्पं त खुब्भती ॥४३१॥ पडिलोम अणुलोमा वा, विसया जत्थ दूरतो। ठावित्ता तत्थ से णिचं, कहणा जाणगस्स वि ॥४३२॥दारं॥ पासत्थोसण्णक्रसीलठाणपरिवज्जिया उ णिज्जवगा । पियधम्मऽवज्जभीरू, गुणसंपण्णा अपरितंना ॥४३३॥ जो जारिसतो कालो, भरहेरवएस होति वासेस । ते तारिसया तइया, अडयालीसा तु णिज्जवगा ॥४३४:। उच्चत्त दार संथार कहग वादी य अगादारिम । भत्ते पाण वियारं, कहुग दिसा जे समत्था य ॥४३५॥ दुवालसम्र एतेसु, एक्केक्के चउरौ भवे । दिसि चउसु पुब्बे एक्केक्के, अडयालीसं भवंती तु ॥४३६॥ एवं खळु उक्कोसा, परिहायंती हवंति दो चेव। दा गीय किं णिमित्तं ?, अमुण्णकरणं जहण्णेणं ॥४३७॥दारं॥ तस्स य चरिमाहारी, इही दायबों तण्हछेयहा। सम्बस्स चरिमकाले, अतीव तण्हा सम्रुज्जलह ॥४३८॥ णव विगइ सत्त ओदण, अट्टारस वंजणुचपाणं च। अणुपुविविद्वारीणं, समाहिकामाण उवहरइ ॥४३९॥ काल-सभावाणुमतो, पुन्तज्ञ्चसिओ सुओवइट्टो वा ।

श्लोसिज्जति सो वि तहा, जयणाय चउव्विहाहारी ॥४४०॥

निर्यापकद्वारम्

इब्यदापना-द्वारम्

४३१ संतेसाऽऽहारधम्मेसु सत्सु आहारधर्मेषु ॥ ४३७ गाथावर्कं हव १० गा० ४९५-५००॥ ४४१ कहिंचुप्पन्नति कथञ्चिदुत्पवते॥

तण्हाछेदम्मि कते, ण तस्स तहितं पवत्तए भावो । अहव कहिंचुप्पज्जति, तहिव णियत्तेइ एवं तु ॥४४१॥

किं व तं जोवभुत्तं मे, परिणामास्र्यिं सुर्यि ? । दिट्टसारो सुहं झाइ, चोयणेसेव सीययो ॥४४२॥ चरिमं च एस भ्रंजित, सद्धाजणणं च होति उभए वि। संजय-गिहियाणं वा, तो देंति इमीय त विहीय ॥४४३॥ तिविहं तु वोसिरिहीइ, सो ता उक्कोसगाइँ दव्वाइं। मग्गेता जयणाए, चरिमाहारं पदंसेंति ॥४४४॥ पासित्त ताणि कोयी. तीरप्पत्तस्स किं ममेतेहिं ?। वेरगमणुष्पत्तो. संवेगपरायणो होति ॥४४५॥ सव्वं भोच्चा कोई, धिद्धीकारं इमेण किं मे ? ति। वेरगगमणुष्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥४४६॥ सन्वं भोच्चा कोई, मणुण्णरसपरिणतो हवेज्जाहि। तं चेवऽणुवंधेतो, देसं सव्वं च रोहीया ॥४४७॥ दारं ॥ विगयीकयाणुर्वधे, आहारऽणुर्वधणाऍ वोच्छेदो । परिहायमाणदन्वे, गुणवड्टि समाहि अणुर्क्षपा ॥४४८॥ द्वियपरीणामं ता, हावेति दिणे दिणे तुजा तिण्णि। बिन्ति ण लभंति दुलमे, सलभिम वि होतिमा जयणा।।४४९॥ आहारं ताव छिंदाहि, गेहि तो णं चइस्सिस । जं अतं ण हु पुन्वं ते, तीरपत्तो तमिच्छसि ॥४५०॥दारं॥ वद्दंति अपरितंता, दिया व रायो व सन्वपरिकम्मं । पडियरगा म्रुणिवरगा, कम्मरयं णिज्जरेमाणा ॥४५१॥ जो जत्थ होति कुसलो, सो तु ण हावेइ तं सइ बलम्मि। उज्जुत्ता सति जोगे, तस्स वि दीवेति तं सट्टं ॥४५२॥दारं॥

हानिद्वा**रम्**

अपरितान्त-द्वारम्

४४२ झाइ चोयणेसेच सीययो ध्यायति चोदना प्रेवेच सीदत: ॥ ४४४ गाथाद्विकं व्य० १० गा० ५०१-२॥ ४४५ ममेतेहिं मम प्रतेः ॥ ४४७ इतः ४७२ गाथान्ता गाया व्य० १० गा० ५०३-२८॥ ४४९ होतिमा भवति इयम् ॥

निर्जराद्वारम्

देहिविओगो सिष्पं, व होज्ज अहवा वि कालकरणेणं।
दोण्हं पि णिज्जरा वृहमाणों गच्छो उ एयट्टा।४५३॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, सज्झायम्मी विसेसेणं ॥४५४॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, काउरसग्गे विसेसेणं ॥४५५॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, वेयावचे विसेसेणं ॥४५६॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेति अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, विसेसतो उत्तिमट्टिम॥४५०॥ दारं॥
अण्णयरिम वि जोगे, विसेसतो उत्तिमट्टिम॥४५०॥ दारं॥

धंस्तारद्वारम्

संथारों उत्तिमहे, भृमि-सिला-फलगमादि णायन्य।
संथारपट्टमादी, दुगचीराक बहू वा वि ॥४५८॥
तह वि असंथरमाणे, कुसमादी तिष्णि अन्द्रसिरतणाति।
तेसऽसित असंथरणे, व होज्ज मुसिरा वि तो पच्छा॥४५९॥
तह वि असंथर कोतव, पावारग णवय तूलि भूमीए।
एमेव अणिह्यासे, संथारगमादि पल्लंके ॥४६०॥ दारं॥
पिंडलेहण संथारं, पाणग उन्वत्तणादि णिगगमणं।
स्यमेव करेति सहू, असहुस्स करेति अण्णे उ ॥४६१॥
कायोवचितो बलवं, णिक्लमण पवेसणं च सो कुणित।
तह वि य अविसहमाणं, संथारगंत तु संघारे।४६२॥
संथारो तस्स मनतो, समाहिहेनं तु होति कायन्वो।

उदर्शनाद्वारम्

स्मारणाद्वारम्

धीरपुरिसपण्णत्ते, सप्पुरिसणिसेविए परमरम्मे । धण्णा सिल्लातलतले, णिरावयक्खा णिक्जंति ॥४६४॥

तह वि य अविसहमाणे, समाहिहेर्ड उदाहरणं ॥४६३॥दारं॥

जदि ताव सावया कुलगिरिकंदरविसमकडगढगोस्र । साईंति उत्तिमट्टं, धितिधणियसहायगा धीरा ॥४६५॥ किं पुण अणगारसहायगेण अण्णोण्णसंगहबलेणं । प्रलोतिए ण सका, साहेउं अप्पणो अट्टं ?।।४६६॥ जिणवयणमप्पमेयं, णिउणं कण्णाहुई स्रुणेतेणं । सका हु साहुमज्झे, संसारमहोद्दिं तरितं ॥४६७॥ सब्वे सब्बद्धाए, सब्बण्णू सब्बकम्मभूमीसु । सन्वगुरु सन्वमहिया, सन्वे मेरुम्मि अहिसित्ता ॥४६८॥ सन्वाहि वि लद्धीहि, सन्वे वि परीसहे पराइता। सन्वे वि य तित्थगरा, पायोक्गमेण सिद्धि गया ॥४६९॥ अवसेसा अणगारा, तीय-पडुप्पण्ण-ऽणागया सन्वे । केई पायोवगया, पचक्लाणिंगिणी केयी ॥४७०॥ सन्त्राओ अज्ञाओ, सन्त्रे वि य पहरासंघयणवज्जा । सन्वे य देसविरया, पचचखाणेण तु मरंति ॥४७१॥ सन्बसहप्पभवाओ, जीवियसाराओं सन्बजणयायो । आहाराओ रतणं, ण विज्ञए उत्तिमं अण्णं ॥४७२॥ सेलेसि सिद्ध विगाह, केवलिओघायए य मोत्तर्ण। सन्वे सन्वावत्थं, आहारे हेाति आयत्ता ॥४७३॥ तं तारिसयं रयणं, सारं जं सन्वलोग्रयणाणं । सन्वं परिचइत्ता, पाओवगया पविहरंति ॥४७४॥ एवं पाओवगमं, णिष्पडिकम्मं जिणेहिं पण्णत्तं । जं सोऊण परिण्णी, वनसायपरिक्तमं कुणति ॥४७५॥ दारं॥ कोर्यि परीसहेहिं, वाउलिओ वेयणहिओ वा वि । कवचद्वारम् ओभासेज क्याई, पढमं बितियं च आसज्ज ॥४७६॥

४६९ पराइत्ता पराजित्य ॥ ४७४ इत. ४८७ गाथान्ता गाया व्यव १० गा० ५३०-४३॥ ४७६ वेयणद्विओ वेदनार्तः॥

गीयत्थमगीयत्थं. सारेडं तह विवोहणं काउं। तो पडिबोहय छट्टे, पढमे पगए सिया वितिए ॥४७०॥ इन्दि दु परीसहचम्, जोहेतवा मणेण काएण। तो मरणदेसयाले, कवयब्धूआं तु आहारी ॥४७८॥ णायं संगामदुगं, महसिल-रहमुसलवण्णणा तेसि । असुर-सुरिन्दावरणं, चेडग एगो गह सरस्स ॥४७९॥ महसिलकेटे तहियं, वहंते कृणिओ त रहिएणं ! हक्तावलगोणं, पहतो पद्रमिम कणएणं ॥४८०॥ उप्पिहितं सो कणओ, कवयावरणम्मि तो ततो पहितो । तो तस्स कोणिएणं, छिण्णं सीसं खुरूपेणं ॥४८१॥ दिद्वतस्सीवणओ, कवयत्थाणी इहं तहाऽऽहारो । सत्तू परीसहा खल्ल, आराहण रज्जथाणीया ॥४८२॥ जह वाऽऽउंटियपाए, पायं काऊण हत्थिणो प्ररिसो । आरुहति तह परिण्णी, आहारेणं तु झाणवरं ॥४८३॥ उवगरणेहि विह्नणो, जह वा पुरिसो ण साहए कज्जं। पवाऽऽहारपरिण्णी. दिहुता तत्थिमे होंति ॥४८४॥ लक्ष पवष जोहे. संगामे पत्थिष इय । आतरे सिक्खए चेव, दिहुत समाहिकामेती ॥४८५॥ दत्तेणं णावाए, आउह तहोवाहणोसहेहिं च। उवगरणेहिं च विणा, जहसंखमसाहगा सब्वे ॥४८६॥ एवाऽऽहारेण विणा, समाहिकामो ण साहर्ष समाहि । तम्हा समाहिहेर्जं, दायन्त्रो तस्स आहारो ॥४८७॥

४७९-४८१ पतद्राथागतश्चेटक-कोणिकसम्बन्धः महाशिला रथ-मुश्रास्वर्णना च भगवतीस्त्रयसमग्रातकनवमोद्देशकादवसेया। पत्र ३१५॥ ४८६ द्तेणं दात्रेण॥

धिति-संघयणविज्ञत्तो, असमत्यो परीसहेऽहियासेउं। फिट्टित चंदगविज्ञा, तेण विणा कवयभूएणं ॥४८८॥ सरीरमुज्झियं जेण, को संगो तस्स भोयणे ?। समाहिसंधणाहेरं, दिज्जए सो सि अंतिए ॥४८९॥ सुद्धं एसिन् ठार्वति, हाणिओ वा दिणे दिणे । पुन्वताए उ जयणाए, तं तु गोवेन्ति अण्णहि ॥४९०॥ द्वारं॥ णिच्याघाएणेवं, कालगयविगिचणा विहीपुट्वं । कातन्त्र चिधकरणं, अर्चिधकरणे भवे गुरुगा ॥४९१॥ उवगरण सरीरिम्म य, अचिधकरणिम्म मंडिओ तहियं। ममाणगवेसणाए, गामाणं घायणं कुणति ॥४९२॥ दारं ॥ ण पगासेज्ज लहुत्तं, परीसहृदएण होज्ज वाघाओ । उपण्णे वाघाए, जो गीयत्थाण त खवाओ ॥४९३॥ को गीयाण उवाओ ?, संलेहग उट्टविज्जए अण्णो । उच्छहर जो वडण्णो, इयरे उ गिलाणपरिकम्मं ॥४९४॥ वसभो वा ठाविज्जति, अण्णस्सऽसतीअ तम्मि संथारे। कालगतो त्ति य काउं, संझाकालम्मि णीणंति ॥४९५॥ एव तू णायम्मी, ढंडियमादीहि होति जयणेसा । सत गमण पेसणं वा, खिसण चडरो अणुग्घाता ॥४९६॥ सपरक्तमे य भणियं, णिन्त्राघाई तहेव वाघायं । णिन्वाघाइम इयरं, एत्तो अपरक्तमं वोच्छं ॥४९७॥ अपरकमो बलहीणो, अण्णगण ण जाति कुणइ गन्छम्मि । सपरकमो व्व सेसं, णिव्वाघाती गतो एसो ॥४९८॥ वाघाति आणुपुच्ची, रोगाऽऽयंकेहिँ णवरि अभिभूओ। बालमरणं पि य सिया, मरेज्ज उ इमेहिं हेऊहिं ॥४९९॥

चिह्नकरण-द्वारम्

यतनाद्वारम्

निर्व्याघात-सम्याघाता-पराक्रमभक्त-परिज्ञायाः स्वरूपम्

४८८ चंदगविज्ञा चन्द्रकवेधः पुत्तिकाक्षिचन्द्रकस्य वेधः ॥ ४८९ इतः ४९७ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५४४-५२ ॥ ४९९ इतः ५०५ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५५३-५९ ॥ वाल-ऽच्छभरल-विसगय-विस्वियगाऽऽयंक सण्णिकोसलए। कसास गद्ध रज्जू, ओमा-ऽसिव-ऽहिघाय-संबद्धे ॥५००॥ वालेण गोणसाइण, खइओ होज्जाहि सडिउमारदो। कण्णोद्वणासिगादी, विभंगिया अच्छभल्लेण ॥५०१॥ लद्धो व विसेणं तू, विसूयिया वा से उद्दिता होज्जा। आयंको वा कोयी, खयमादी उद्विश्रो होज्जा ॥५०२॥ तिणित त बारा किरिया. तस्स कया ण वि य उबसमी जातो। जह ओमें कोसलेणं, सण्णीणं पंच उ सयाई ॥५०३॥ सण्णीणं रुद्धाई, अह्यं भत्तं तु तुब्भ दाहामि । लाभंतरं च णाउं, लुद्धेणं विक्कियं धण्णं ॥५०४॥ तो णाउ वित्तिछेदं, उसासणिरोहमादिणि कताणि। अणहीयासेन्तेहिं, खुहवेदण ओमें साहृहिं ॥५०५॥ एवं ता कोसलए, अण्णिम्य वि ओमों होज्ज एमेव। सहसा छिण्णद्धाणे, असिवगाहिया व कुज्जाहिं ॥५०६॥ अभिघाओं वा विज्ञ. गिरिभित्ती कोणगादि वा होज्जा। संबद्ध हत्थ-पादादयो व वादेण होज्जाहि ॥५०७। एतेहि कारणेहि, वाबाइम मरण होति णायव्वं। परिकम्ममकाऊणं, पचक्वाई ततो भत्तं ॥५०८॥ अह पूण जिंद होज्जाही, पंडियमरणं त काउ असमत्थो । ऊसास गद्धपट्टं, रज्जुग्गहणं व कुज्जाहि ॥५०९॥ अणुपुव्विविद्वारेणं, उस्सग्गणिवाइयाण जा सोही। विहरंतएण सोही, भणिता आयारलोवा या ॥५१०॥ एसा पश्चक्खाणे, आय परे भणिय णिज्जवाण विही । इंगिणि-पायोवगमे, बोच्छामी आयणिज्ञवर्ण ॥५११॥

५०७ माथाद्विकं व्यव १० गाव ५६०-६१ ॥ ५१० व्यव १० गाव ५६२ ॥

पन्वजादी काउं. णेतन्वं जाव होयऽवोच्छित्ती । पंच तुलेत्ग य सो, इंगिणिमरणं ववसिओ यु ॥५१२॥ आय-परपरिकम्भं, भत्तपरिण्णाऍ दो अणुण्णाता । परिविज्जिया य इंगिणि, चडविवहाहारविरती य ॥५१३॥ टाण णिसीय तुयहुण, इत्तिरियाई जहासमाहीए । सयमेत्र य सो कुणती, उत्रसम्म प्रीसहऽहियासे ॥५१४॥ संघयण-धितीजुत्तो. णव-दसपुच्या सुतेण अंगा वा । इंगिणिमरणं णियमा, पडिवज्जंड एरिसो साह ॥५१५॥ पन्त्रज्ञादी काउं. णेयव्वं जाव होयऽवोच्छित्ती । पंच तुलेतूण य सो, पायोवगमं परिणतो य ॥५१६॥ तं दुविहं णायव्वं, णीहारिं चेव तह अणीहारिं। वहिता गामादीणं, गिरिकंदरमादि णीहारिं ॥५१७॥ वइयादिस जं अंतो. उद्वेडमणा य ठाय अणीहारिं। कम्हा पादवगमणं ?, जं उवमा पादवेणेत्यं ॥५१८॥ सम विसमिम व पडिओ, अच्छति जह पादवी व णिक्कंषी। णिचल णिप्पडिकम्मो. णिक्खिवती जं जिंह अंगं ॥५१९॥ तं ठित होति तह चिय, णवरं चलणं परप्ययोगातो । वायादी हिं तरुस्स व, पडिणीयादी हिं तह तस्स ॥५२०॥ तसपाण-बीयरहिते, त्रिच्छिण्णवियार थंडिल निसुद्धे । णिहोसा णिहोसे, उर्वेति अब्भ्रुज्जयं मरणं ॥५२१॥ पुरुभवियवेरेणं, देवो साहरइ कोति पाताले। मा सो चरिमसरीरो, ण वेदर्ण किंचि पाविहिती ॥५२२॥ उपण्णे जनसम्मे. दिव्वे माणुस्सए तिरिक्ले य । सच्वे पराजिणित्ता, पायोवगया पविद्वरंति ॥५२३॥

इक्तिनीमरणम्

पादपोप-गमनम्

५१२ गाथाचतुष्कं व्य० १० गा० ५६३-६६॥ ५**१८ वर्षा मजिका** गोकुलम् ॥ ५२१ गाथात्रिकं व्य० १० गा० ५६८-७०॥ ५२**२ साहरर्** कोति सहरति कोऽपि ।

देव-णर दुगतिगऽस्से, केथी पक्लेवर्ग सिया कुज्जा। वोसट्ट-चत्तदेहो, अहाउयं कोइ पालिज्जा ॥५२४॥ अणुलोमा पहिलोमं. दुगं त उभयसहिया तिगं होति। अहवा चित्तमचित्तं, दुर्गं तिगी मीसग समग्गं ॥५२५॥ पुढवि-दग-अगणि-मारुय-वणस्सति-तसेसु कोइ साहरइ। वोसट्ट-चत्तदेहा, अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥५२६॥ धिति-बलजुत्तेहिं तहिं, उत्रसग्गा जह सढा उ धीरेहिं। णिदरिसणा केइ तहिं, वोच्छाभि इमे समासेणं ॥५२७॥ मुणिसुन्वयंतेवासी, खंदगमणगार क्रंभकारकडं। देवी प्ररंदरजसा, इंडगि पालक महगे य ॥५२८॥ पचसया जैतेणं, रुट्टेण पुरोहिएण मलिया उ । राग-होसतुलगं, समकरणं चिंतयंतेहिं ॥५२९॥ जंतेहिँ करकएहि व, सत्थेहि व सावएहिँ विविहेहिं। देहे विद्धंसन्ते, ण य ते झाणातो फिट्टंति ॥५३०॥ पहिणीययाएँ कोई, अग्गि सि पदेज्ज असुभपरिणामो । पादोवगते संते, जह चाणकस्स वा करिसे ॥५३१॥ पडिणीययाऍ कोई, चम्मं से खीलएहँ विहणिता। महु-चयमिक्खयदेहं, पित्रीलियाणं तु दिज्जाहिं ॥५३२ जह सो चिलायपुत्तो, बोसट्ट-णिसट्ट-चत्तरेहाओ । सोणियगंधेण पिबीलियाहिँ जह चालिण व कतो॥५३३॥

५२४ गायात्रिकं व्यव १० गाव ५७४-७६ ॥ ५२७ सदा सोदाः ॥ ५२८-३० स्कन्दकदृष्टान्त उत्तराध्ययनस्त्रेत्रे क्रितोयाध्यययननिर्युकौ १११-११३ गायास् तद्दीकायां च वर्त्तते । पत्र ११४ ॥ ५२८ गाथाद्वादशकं व्यव १० गाव ५८९-६०० ॥ ५३३ चिल्लातिपुत्रोदाहरणमावद्यकचूर्णी-तोऽबसेयम् गाथा ८७२ पत्र ४९७ ॥

मोगञ्जसेलसिहरे, जह सो कालासवेसिओ भगवं। खडुओ विउविज्ञणं, देवेण सियालरूवेणं ॥५३४॥ जह से वंसिपदेसी, वोसट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहाओं। वंसीपत्तेहँ विणिग्गएहँ आगासमुद्धितो ॥५३५॥ जहऽवंतीसुक्रमालो, वोसट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहाओ। धीरो सपेल्लियाए, सिवाऍ खड़ओ तिरत्तेण ॥५३६॥ जह ते गोद्रहाणे, वोसट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहागा । उदगेणुबुब्भमाणा, वियर्म्मी संकरे लग्गा ॥५३७॥ जह सा वत्तीसघडा, वासट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहागा। धीराघाएण उ दीविएण डिलयम्मि ओलड्या ॥५ ३८॥ बावीस आणुपुट्यी, तिरिक्ख मणुया व भंसणत्थाए । विसयाणुकंपरक्खण, करेज्ज देवा व मणुया वा ॥५३९॥ जह णाम असी कोसी. अण्णो कोसी असी विखल अण्णो। इय में अण्णो देहो, अण्णो जीवो ति मण्णंति ॥५४०॥ एगंतणिज्जरा से, दुविहा आराहणा ध्रुवा तस्स । अंतिकरियं च साह, करेज्ज देवोववर्ति वा ॥५४१॥ एवं धिति-बलजुत्तो, अहियासेति पहिलोम उवसमी । एत्तो पुण अणुलोमे, जह सहती ते तहा बोच्छं !।५४२॥ सकारं सम्माणं, ण्हाणादीयाणि तत्थ कुज्जाहि । वोसट्ट-चत्तदेहो, अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥५४३॥ पुन्वभवियपेमेणं, देवो देवक्ररु-उत्तरक्रुरासु । कोई हु साहरेज्जा, सव्बसुहा जत्य अणुभावा ॥५४४॥

५३४ कालासवेसिकोदन्तं उत्तराध्ययनस्त्रवितीयाध्ययननिर्युक्ति-११५ गाथातस्तद्वृत्तितश्चावसेयम् पत्र १२०॥ ५३६ अवन्तीसुकुमाल-वृत्तान्त आवश्यकचूर्णीवितीयभाग पत्र १५७ गाथा १३८० चूर्णितोऽ-बधेयः॥ ५४० व्य० १० गा० ५७१॥ ५४१ व्य० १० गा० ५७७॥ ५४३ गाथेकाद्शकं व्य० १० गा० ५७८-५८८॥

पुन्वभविषयेमेणं, देवो साहरति णागभवणिम्म ।
जहियं इद्वा कंता, सहस्रहा होंति अणुभावा ॥५४५॥
बत्तीसलक्त्वणधरो, पायोवगयो य पागडसरीरो ।
पुरिसन्वेसिणि कण्णा, रायविदिण्णा तु गिण्हेन्जा ॥५४६॥
मन्जण-गंधं पुष्फोवकार-परियारणं च कुन्जाहिं ।
सा पवर रायकण्णा, इमेहिं जुत्ता गुणगणेहिं ॥५४७॥
णवयंगसोयबोहिय, अद्वारसरतिविसेसकुसला तु ।
चोयद्वीमहिलगुणा, णिजणा य विसत्तरिकलाहिं ॥५४८॥
दो सोय-णेत्तमादिग, णवंगसोया हर्वान्त एतेस्र ।
देसीभास अठारस, रतीविसेसा च जगुवीसं ॥५४९॥
कोसल्लगे व वीसइविहं तु एमादिएहिं तु गुणेहिं ।
जुत्ताए रूत्र-जोन्वण-विलास-लायण्णकलियाए ॥५५०॥
चजकण्णिम्म रहस्से, राएणं रायिन्णपसराए ।
तिमि-मगरेहि व उदही, ण खोभितो जो मणो ग्रुणिणो

जाहे पराइया सा, ण समत्या सीलखंडणं काउं।
णेऊण सेलसिहरं, तो सिलमुविरं मुयित तस्स ॥५५२॥
एगंतणिउजरा से, दुविहा आराहणा धुवा तस्स ।
अंतिकरिया व साहू, करेडज देवोववित्तं वा ॥५५३॥
एमादीहिँ वहुविहं, दुविहं तिविहेहिँ ते महाभागा।
योरेहि ज्वसग्गेहिं, चालिउजंना वि णिद्दयया ॥५५४॥
पुवा-ऽवर-दाहिण-उत्तरेहिं वाएहिँ आवयंतेहिं।
जह ण वि कंपइ मेरू, तह ते झाणाओं न चलिति ॥५५५॥
पदमिम य संघयणे, वृहंता सेलकुडुसामाणा।
तेसिं पि य वोच्छेदो, चडदसपुव्वीण वोच्छेदे ५५६॥

५५५ गाथाविकं व्यव १० गाव ५७२-७३॥

एयं पाओवगमं, णिप्पडिकम्मं जिणेहिँ पण्णत्तं । तित्थयर-गणहरेहि य, साहूहि य सेवियमुदारं ॥५५७॥ एवं जहाणुरूवा, संपतिकालम्मि अत्थि जह सोही। विज्जंति य सोहिकरा, तं सब्वेयं समक्खायं ॥५५८॥ एसाऽऽगमववहारो, जहोवएसं जहक्रमं कहिओ । एत्तो सुतवबहारं, सुण वच्छ ! जहाणुपुदीए ॥५५९॥ णिज्जृढं चोद्दसपुव्विएण जं भद्दबाहुणा सुत्तं । पंचिवहो ववहारो, दुवालसंगरस णवणीयं ॥५६०॥ जो सुतमहिज्जित बहुं, सुत्तत्थं च णिउणं ण याणाति । कृत्पे ववहारिम्म य, ण सो पमाणं सुयधराणं ॥५६१।। जो सुतमहिज्जति वहुं, सुत्तन्थं च णिउणं वियाणाति । कप्पे ववहारम्मि य, सा उ पमाणं सुतधराणं ॥५६२॥ कप्पस्स य णिज्जुत्ति, ववहारस्सेव परमणिजणस्स । जो अत्थओ न जाणति, सो ववहारी णऽणुण्णातो॥५६३॥ कप्पस्स य णिज्जुत्ति, ववहारस्सेव परमणिउणस्स । जो अत्यतो विजाणित, ववहारी सो अणुण्णातो ॥५६४॥ एसो सुतववहारो, जहोवएसं जहक्रमं कहितो । आणाए ववहारं, सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥५६५॥ समणस्स उत्तिमट्टे, सल्लुद्धरणकरणे अभिग्रहस्स । दुरत्था जत्थ भवे, छत्तीसगुणा उ आयरिया ॥५६६॥ अपरक्कमो मि जातो. गंतुं जे कारणं तु उप्पणं। अद्वारसमण्णयरे, वसणगते इच्छिमो आणं ॥५६७॥ अपरकमो तबस्सी, गंतुं ण चतेइ सोहिकरमूलं। सीसं पेसेति तहिं, जहिच्छ साहिं तुमसमीवे ॥५६८॥

श्रुतब्यवहार:

भाज्ञाव्यवहार.

५५८ सब्वेयं सर्वमेतत् ॥ ५५९ इतः ५८९ गाथान्ता गाथाः व्य॰ १० गा० ६०२-३४ ॥ ५६८ चतेर शक्तोति । जहिच्छ सोहि तुमसमीवे यथा इच्छामि शोधि युष्मत्समीपे ॥

अपरिणत-अ-तिपरिणत-परि णतानां शिष्या-णां परीक्षणम् सो वि अपरक्रमगती. सीसं पेसेति धारणाक्रसलं । णात तहि जो जोग्गो. इमेण विहिणा परिच्छिता ॥५६९॥ अपरक्षमो य सीसं. आणापरिणामगं परिच्छेजा । रुक्खे व बीयकाए. सुत्ते वाडमोहणाडडधारिं ॥५७०॥ दह महल्ल महीरुह, भणितो रुक्ते विलग्गितं डेवे । अपरिणतो बेति तयो. णो बट्टिन रुक्खें आरोई ॥५७१॥ किं वा मारेतबो. अहतं ? तो वेह डेव रुक्खातो । अतिपरिणामो भणती, इय होत् अम्ह वेसिच्छा ॥५७२॥ बेति गुरू अह तं तू, अपरिगय अत्ये अ भाससे एवं । किं व मए तं भणितो. आरुह रुक्ते त सचित्ते ? ॥५७३॥ तव-णियम-णाणरुवर्यं, आरुहिउं भवमहण्णवावतं । संसारागडमूलं, डेवेहि मए तुमं भणितो ॥५७४॥ जो पुण परिणामो खलु. 'आरुह'भिणता तु सो विचितेति। णिच्छंति पावमेते, जीवाणं थावराणं वि ॥५७५॥ किं पुण पंचिदीणं ?, तं भवियन्वेत्थ कारणेणं तु । आरुहणवनसियं तु, नारंति गुरूऽहना थंभे ॥५७६॥ एवाऽऽणध बीयाई, भिणते पडिसेह अपरिणामी तु। अतिपरिणामो पोट्टल, बंधुणं आगतो तन्थ ॥५७७॥ पचाह गुरू ते तू, जहोदियाऽऽणेह अविलीबीये। ण विरोहसमत्थाई, सिचताई विभणियाई ॥५७८॥ परिणामगो हु तत्थ वि, भणती आणेमि केरिसाई तु ?। कित्तियमित्ताई वा ?, विरोहमविरोहजोग्गाई ?॥५७९॥

५७० आणापरिणामगं आज्ञापरिणामिनं अवश्यमाज्ञाधारिण-मित्यर्थः । वाऽमोहगाऽऽधारि दाऽमोहनाऽऽधारिणम् ॥ ५७१ देवे प्रतिक्षिप-पत इत्यर्थ ॥ ५७२ अम्ह वेतिच्छा अस्माकमण्येषा इच्छा ॥ ५७६ भवियब्वेत्य भवितब्यमञ् ॥ ५७७ पत्राऽऽणध पत्रमानयत ॥

सो वि गुरू हिं भणिया, ण ताव कर्ज पुणो भणीहामी। हसिओ व मए वाऽसी, वीमंसत्थं व भणितो सि ॥५८०॥ पदमक्लरमुद्देसं, संधी सत्तऽत्य तदभयं प्रहो । अक्खर-वंजणसुद्धं, कहेति सन्वं जहाभणितं ॥६८१॥ ववं परिच्छिऊणं, जोगंग णाऊण पेसवे तं तु। वचाहि तस्सगासं, सोहिं सोऊण आगच्छ ॥५८२॥ अह सो गतो उ तहियं, तस्म सगासम्मि सो करे सोहिं। द्ग-तिग-चऊविमुद्धं, तिविहे काले विगडभावो ॥५८३॥ दुविहं तु दप्प कप्पे, तिविहं णाणाइणं तु अद्वाए । दव्वे खेत्ते काले, भावे य च बिवई एवं ॥५८४॥ तिविहं अतीयकाले, पच्चुप्पण्णे व सेविधं जं तु । सेविस्सं वा एस्से, पागडभावो विगडभावो ॥ ५८५॥ कि पुण आलोएती ?, अतियारं सो इमो य अतियारो । वतछकादीओं खलु, णातन्त्रो आणुपुन्त्रीए ॥५८६॥ वयछक कायछकं, अकष्पो गिहिभायणं। पलियंक णिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥५८७॥ तं पुण होज्ञाऽऽसेविय, दृष्णें अहव होज्ज कष्पेणं। द्ष्पेण दसविहं तू, इणमो वोच्छं समासेणं ॥५८८॥ दृष्य अकृष्य णिरालंब चियत्ते अष्यसन्थ बीसन्थे । अपरिच्छ अकडजोगी, अणाणुनावी य णीसंको ॥५८९॥ बायाम-वग्गणादी, णिकारण धावणं तु द्प्पो उ । दारं॥ कायापरिणतगहणं, अकप्पों जं वा अगीतेणं ॥५९०॥ दारं॥ संसारखङ्कपडिनो, णाणादवलंबितुं सम्रुत्तरइ । मोक्खतडं जह पुरिसो, विद्ववियाणेण विसमाओ ॥५९१॥ णाणादीपरिवड्ढी, ण भविस्सति मे असेवयो बितियं। तेसिं पसंधणह व, सालंबणिसेवणा होति ॥५९२॥

द्र्पस्य दश भेदाः जा पुण णिकारणयो, अपसत्थालंबणा य सेवा उ। अग्रुएण वि आयरियं, को दोसो वा णिरालंबं ॥५९३॥दारं॥ जं सेवितं तु वितियं, गेलण्णादी असंथरंतेणं । हट्टो वि पुणो तं चिय, चियत्तिकचो णिसेवंतो ॥५९४॥दारं॥ बल-वण्ण-रूवहेतुं, फासुयभोई वि होति अपसत्यो । किं पुण जो अविसुद्धं, णिसेवए वण्णमादद्वा ? ॥५९५॥दारं॥ सेवंतो तु अकिन्न, लोए लोउत्तरम्मि य विरुद्धं। परपक्त सपक्ते वा. वीसत्थासेवणमलज्जे ॥५९६॥ दारं॥ अपरिच्छितमाय-वए. णिसेवमाणो उ होइ अपरिच्छो ।दारं॥ तिग्रणं जोगमकाउं, वितियासेवी अकडजोगी ॥५९७॥दारं॥ बितियपदे जो त परं, तायेत्ता णाणुतप्पती पच्छा । सो होति अणणुतावी, किं पुण दप्पेण सेविचा? ॥५९८॥दारं॥ करण-भएसु तु संका, करणे कुव्वं ण संकइ कयाइ। इहलोयस्स ण भायइ, परलोए वा भया एसा ॥५९९॥दारं॥ एसा दिप्पयसेवा, दसभेय समासतो समक्खाया। दारं॥ एतो किप्यसेवं, चउवीसविहा इमाऽऽहंस ॥६००॥ दंसण-णाण-चरित्ते, तब-पवयण-समिति-गृत्तिहेडं वा । साहम्मियवच्छरलेण वा वि कुलयो गणस्सेव ॥६०१॥ संघस्ताऽऽयरियस्स य, असहुस्स गिलाण-बाल-बुहृस्स । उदयऽगिंग चोर सावय, भय कंताराऽऽवती वसणे ॥६०२॥ दंसणपभावगाणं, सत्थाणऽहाए सेवए जं तु । णाणे स्नत-ऽत्थाणं, असंथरासेवणे सुद्धो ॥६०३॥ चरणे एसणदोसा, इत्थीदोसा य जत्थ खेत्तमि। तत्तो विणिक्समंतो, जं सेवाऽसंथरे सुद्धो ॥६०४॥

कल्पस्य चतुः विंशतिभदाः णेहादि तर्व काहं, कए विगिट्टे वि लागतरणाती। अभिवायणा पवयणे, विण्हुस्स विउन्दणा चेव ॥६०५॥ इरियं ण सोहइस्सं, चक्खुणिमित्तिकिरिया उ रीयाए। स्वित्तादि बीय तइया, अहवा वि इमं तु तइयाए ॥६०६॥ अद्धाणकप्पणेसी, अण्णं वऽसिवादिकारणेहिं तु । संकियमाई गिण्हे, जयणाए तत्थ सुद्धो तु ॥६०७॥ आयाणे चलहत्थो, पमज्जमाणेहिँ अण्णहिं जाइ। अहवा वि तस्स अद्वा, ओसह किंची करंजाहि ॥६०८॥ पंचिमऍ काइभूमादिवंधमाणे उ आरमे किंचि। विगडादि मणअगुत्ते, वइ-काए खित्त-दित्तादी ॥६०९॥ वच्छन्ले असिहमुंडो, णित्थारिओं जह तु अज्जवइरेहि । क्रुल-गण-संवे अभिचारुगादि रायाइणं कुज्जा ॥६१०॥ आयरिय-असहु-अतरा, वाले बुढ्ढे य जेण तु समाही । तं जायितूण देन्ती, पणगादीहि तु जयणाए ॥६११॥ णिवदिक्तियादि असह, बालो वहरोच्व दिक्तितो कज्जे। बुट्टो वी कज्जम्मी, जह दिक्यिकों रिक्खयज्जेहिं ॥६१२॥ उद्य-ऽगिग-चोर-सावय-भएसु थंभणि पलाण रुक्खे वा । कंतारे पलंबादी, दन्वादी आवई चउहा ॥६१३॥

६०५ लागतरणाती लाजातरणादि, तोर्यत इवाऽस्यामितस्वच्छतया इत्यधिकरणेऽनिट तरणम्, लाजा आण्टा त्रीहयस्तैनिर्वृत्तं तरणं
लाजातरणम्, उपचारात् पेयाऽभिधीयते । गुरुतत्विविनिश्चयवृत्ती
उ० २ गोद्या २०-२१ पत्र ५९ । विष्णुकुमारविकुर्वणाविषयकं कथानकं वसुदेविहिण्डि प्रथमखण्ड १२८ पत्रादवसेयम्॥
६१० आर्यवज्ञतम्बन्धः आवश्यकचुर्णी प्रथमखण्ड पत्र ३९६ मध्यादवसात्य्यः॥ ६११ जायित्रण याचित्वा॥ ६१२ वज्रदीक्षासम्बन्धः
आवश्यकचुर्णी प्रथमखण्डएत्र ३९१ मध्यादवलोकनीयः। आर्थरिक्षतवृद्धितृदीक्षासम्बन्धः आवश्यकचुर्णी ४०६ पत्राद् ज्ञातव्यः॥

कोई त वियहवसणी. गोज्जादी वा वि होज्ज णिक्खंतो । जयणाऍ वियडगहणं, गाएज व गीतवसणी उ ॥६१४॥ एयअण्णयरागाहेस दंसणे णाण चरण सालंबो । पहिसेविजं कयादी, होति पसत्थो पसत्थेसु ॥६१५॥ एसा कप्पियसेवा, चडवीसविहा समासतो कहिता। अहुणा उ चारणा तू, इणमो बोच्छं समासेणं ॥६१६॥ ठावेतु दप्प कप्पे, हेट्टा दप्पस्स टस पदे ठावे l कप्पाही चउवीसइ, तेसिमइ अहारस पदा उ ॥६१७॥ पढमस्स य कज्जस्सा. पढमेण पदेण संवितं होज्जा । पढमे छक्के अर्बिभतरं त पढमं भवे द्वाणं ॥६१८॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवितं होज्जा। पढमे छक्के अधिभतरं तु इय जाव णिसिभत्तं ॥६१९॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवियं होज्जा। बितिए छक्के अब्भितरं त पहमं भवे द्वाणं ॥६२०॥ पदमस्स य कज्जस्सा, पहमेण पदेण सेवितं होडजा । बितिए छक्के अधिभतरं तु इय जाव तसकायं ॥६२१॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पएण सेवियं होज्जा । तइए छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे हाणं । ६२२॥ पढमस्स य कजनस्सा, पढमेण पदेण संवियं होज्जा । तितए छक्के अब्भितरं तु इय जाव तु विभूसा ॥६२३॥ पढममग्रुचंतेणं, वितियादीए तु जाव दसमं तु । पढमच्छकाईसु उ, पुणो पुणो चारणिज्जाई ॥६२४॥ दिष्यसेवाए तू, दृष्येणं चारियाणि अहुरस । दस अद्वारसगुणिना, आसीयसतं तु गाहाणं ॥६२५॥

६१५ नाथेयं व्य॰ उ०१० गा० ६३८॥ ६१७ गाथायुगरुं व्य० उ० १० ना॰ ६३९-४०॥ ६२० गायाचतुष्कं व्य॰ उ०१० गा० ६४३-४६॥

एवं बीतिज्जस्स वि, कज्जस्सा गाह होति छ चेव। सन्वाओ गाहाओ, चत्तारि सता त बत्तीमा ॥६२६॥ वितियस्स य कज्जस्सा. पढमेण पदेण सेवियं होज्जा। पहमे छक्के अब्भितरं त पहमं भवे ट्राणं ॥६२७॥ एवं वितियस्सा वि हु, कज्जस्सा एय चेव गाहाओ । वितिअगअभिलावेणं, सन्वाओ भाणियव्वाआ ॥६२८॥ पढमं ठाणं दप्पो, दप्पो चिय तस्स वी भवे पढमं। पढमं छक्क वयाई, पाणतिवाओ तहि पढमं ॥६२९॥ एवं तु मुसावायो, अदत्त मेहण परिग्गहे चेव। वितिछक्ते प्रद्यादी, ततिछक्ते होयऽकष्पादी ॥६३०॥ एवं द्प्पयम्मी, द्प्पेणं चारिया उ अट्टरस । एवमकप्पादीस वि. एक्केक्के होतिमहरस ॥६३१॥ बितियं कर्जं कष्पो, पहमपटं तत्थ दंसणणिमित्तं । पढमं छक वयाई, तत्थ वि पढमं तु पाणवहो ॥६३२॥ दंसण अणुम्सुयन्तो, पुन्वकमेणं त चारणीयाई। अद्वारस ठाणाई, एवं णाणादिएक्केक्के ।।६३३।। चउवीस अट्टारसगा, एवं एते हवंति कप्पमिम । दस होति अकष्पम्मी, सन्वसमासेण म्रण संखं ॥६३४॥ दप्पेणाऽसीयसर्त, गाहाणं कप्पे होति चत्तारि । बत्तीसाऽऽयातेते. छस्तय हांनी त वारस य ॥६३५॥ सोतूण तस्स पडिसेवर्ण त आस्रोयणं कमविहिं तु । आगम पुरिसन्जायं, परियाग वर्ल च खेत्तं च ॥६३६॥ अह सा गतो सदेसं. संतस्साऽऽलोइयल्लयं सन्वं। आयरियाण कहेती, परियाग बलं च खेतं च ॥६३७॥

६३२ गाथात्रिकं व्यव उ० ६० गा० ६५६-५८॥ ६३६ गाथेयं व्यव उ० १० गा० ६५९॥

सो ववहारविहिण्णू, अणुसिज्जित्ता सुनोवदेसेण । सीसस्स देइ आणं, तस्स इमं देह पिच्छत्तं ॥६३८॥ पढमस्स य कडजस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्रा। णक्खते पीछा भे, सुके पणगं तवं कुणह ॥६३९॥ पढमस्स य कज्जस्सा, द्सविद्दमालोयणं णिसामित्ता । णक्खत्ते पीला भे, सुके दसमं तवं कुणह । ६४०॥ पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेता । णक्खत्ते पीला भे, सके पक्तं तवं क्रणह ॥६४१॥ पदयस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिमामित्ता। णक्खते पीला मे, सुके वीसं तर्व कुणह ॥६४२॥ पहमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्ता । णक्खत्ते पीला भे, पणुवीसनवं कुणह सक्ते ॥६४३॥ एवं ता उवघाए, अणुघाए एत चेव गाहाओ। णवरं तू अभिलावो, किण्हे पणगादि वत्तव्यो ॥६४४॥ पदमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्ता । णक्खत्ते पीला भे, चाउम्मासं तत्रं कुगह मुक्के ॥६४५॥ एडमस्स य कज्जस्सा, दसविह्यालीयणं णिसामेता । णक्खते पीला में, चाउम्मासं कुणह किण्हे ॥६४६॥ पढमस्स य कन्जस्सा, दसविहमालोयण णिसामेचा । णक्तते पीला भे, छम्मासनवं कुणह सुक्के ॥६४०॥ पढमस्स य कज्जस्मा, दसविहमालोयणं णिसामेता। णक्खते पीला भे, छम्मासत्त्रं कुणइ किण्हे ॥६४८॥ छिंदंतु वर्त भाणं, गच्छंतु तबस्स साहणो मूर्छ। अञ्वावारा गच्छे, अञ्वितिया वा परिहरंत ॥६४९॥

६३८ गाथेयं व्यव उ० १० गाव ६६१॥ ६४४ इतो गाथापर्कं व्यव उ० १० गाव ६६३-६९॥

4

पणगादिभाणछेदं, साहूमुले भवे पूणकरणं। पुन्वमवहाय सन्वं, पंचाऽऽभवणाउ उवरिं तु ॥६५०॥ लिंगादीजोगत्थे, जहण्ण उनकोसओ व बोधव्यो। उक्कोस जहण्यो वा, विहरत सो अञ्चितीओ उ ॥६५१॥ बितियस्स य कज्जस्सा, तहियं चउवीसगं वियाणित्ता । णवकारेणाउत्ता, हवन्त्र एवं भणेज्जासि ॥६५२॥ एवं गंतूण तहिं, जहावएसेण देहि पच्छितं । आणाप् ववहारो, भणिषसो धीरपुरिसेहि ॥६५३॥ एसाऽऽणाववहारो, जहोवएसं जहक्रमं भणितो । धारणववहारं पुण, सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥६५४॥ उद्धारणा विहारण, संधारण संपहारणा चेव । धारणववहारसस उ, णामा एगद्विना एते ॥६५५॥ पाबल्लेण खवेच व. उद्धियपयधारणा उ उद्धारो । विविहेहिँ पगारेहिं, धारेयऽत्थं विधारो तु ॥ ६५६॥ सं एगीभावम्मी, 'धी धरणे' ताणि एव भावेणं। धारेयडत्थपयाणि तु, तम्हा संधारणा होति ॥६५७॥ जम्हा संपहारेजं, ववहारं पजुंजती । तम्हा कारणे तेण, णातन्वा संपहारणा । ६५८॥ धारणववहारेसो, पउंजियन्त्रो तु केरिसे पुरिसे ?। भण्णाइ गुणसंपण्णे. जारिसए नं सुणेह ति ॥६५९॥ पवयणजसंसि पुरिसे, अणुगाहविसारए तवस्सिम्मि । सुरसुय बहुरसुयम्मि य, विवक्कपरियागबुद्धिम्मि ॥६६०॥ एतेसु धीरपुरिसा, पुरिसन्जाएसु किंचि खलिएसु । रहिए विहारइता, जहारिहं देन्ति पच्छितं ॥६६१॥

धारणा-व्यवहारः रहिए णाम असन्ते, आतिरलमिम वनहारतियगमिम । ताहे विहारइत्ता, वीमंसेत्ण जं भणियं ॥६६२॥ प्रिंतस्स च अवराहं, विधारइत्ताण जस्स जं भणितं। तं देन्ती पच्छित्तं, केणं देन्ती उ ? तं सुणस्र ॥६६३॥ जो घारिओ सुतत्थो, अणुओगविहीय घीरपुरिसेहिं। अञ्चीणपलीणेहिं, जतणाजुत्तेहिं दंतेहिं ॥६६४॥ अञ्चीणा णाणादिस्र, पइ पइलीणा उ होन्ति त पलीणा । कोहादी वा पछयं, जेसि गया ते पलीणा त ॥६६५॥ जतणाजुत्तो पयत्तवं, दंतो जो उवरतो त पावेहिं। अहवा दन्तो इंदियदमेण नोइंदिएणं च ॥६६६॥ एरिसया जे पुरिसा, अत्थधरा ते भवंति जोगगा उ। धारणववहारन्तु, ववहरिउं धारणाकुसला ।।६६७॥ अहवा जेणं ईयाऽऽदिहा, सोही परस्स कीरंती। तारिसयं चेव प्रणो, उप्पण्णं कारणं तस्स ॥६६८॥ सो तिम चेव दव्ये, खित्ते काले य कारणे प्रसित्ते। तारिसर्य अकरेन्तो, ण ह सो आराहओ होति ॥६६९॥ सो तम्मि चेव दव्वे, खित्ते काले य कारणे पुरिसे। तारिसयं चिय भृतो, कुन्वंतो राहओ होति ॥६७०॥ अहवा वि इमे अण्णे, धारणववहारजोग्गयमुर्वेति । धारणववहारेणं, जे ववहारं ववहरंति ॥६७१॥ वेयावश्वकरो वा, सीसो वा देसिहंडओ वा वि। दुम्मेहत्ता ण तरइ, अवधारेउं बहू जो तु ॥६७२॥ जस्स च उद्धरिकणं, अत्थपयाई तु देंति आयरिया। जेहिं करेहि कज्जे, आहारेन्तो तु सो देसं ॥६७३॥

-

धारणववहारो खल्ल, जहकमं विश्वतो समासेणं। जीतेणं ववहारं, सुण वच्छ ! जहक्र वोच्छं ॥६७४॥ वत्तणुवत्तपवत्तो, बहुसो आसेवितो महाणेणं। एसो उ जीतकप्पो, पंचमयो होति ववहारो ॥६७५॥ वत्तो णामं एकसि, अणुवत्तो जो पुणो वितियवारे । ततियव्वारपवत्तो, परिग्गिहीओ महाणेणं ॥६७६॥ बहुसी बहुस्प्रपहिं, जो बत्ती ण य णिवारिती होति। वत्तणुपवत्तमाणं, जीएण कतं हवति एयं ॥६७७॥ जो आगमे य सुत्ते, य सुन्पतो आण-धारणाए य। सो ववहार जीएणं, कुणती बत्ताणुवत्तेणं ॥६७८॥ असुतो असुयत्थकतो, जह असुयस्स असुएण ववहारो । असुअत्थविय तह कओ, असुतो असुएण ववहारो ॥६७९॥ तं चेवऽणुकज्जंनो, ववहारविहिं पयुंजति जहुत्तं । जीतेण एस भणितो, ववहारो धीरपुरिसेहिं ॥६८०॥ धीरपुरिसपण्णत्तो, पंचमयो आगमो विद्यसत्थो । वियधम्मऽवज्जभीरूपुरिसज्जाताणुचिण्णो य ॥६८१॥ सो जह कालादी गं, अपडिक्रंतस्य गिन्त्रिगइयं तू। म्रहणंतिकिडिय पाणग, असंवरे एवमादीस् ॥६८२॥ एगिन्दिऽणन्तवन्जे, घट्टण तावेऽणगाढ गाढे य। णिब्बिगतियमादीयं, जा आयामन्तमुद्दवणे ॥६८३॥ विगलिंदऽणंतवरूण, परियावऽणगाढ गाढ उद्दवणे। पुरिमड्रादिकमेण उ, णेतव्वं जाव खमगं हु ॥६८४॥ पंचिदि घट्ट तावणऽणगाढ गाढे तहेव उद्दवणे । एगासणमायामं, खमणं तह पंचकल्लाणं ॥६८५॥

जीतव्य-वहारः सावद्यासावद्ये जीते

एमादीओ एसो, णायव्यो होति जीयववहारो । अणवज्जविसोहिकरो, संविग्गणगार्चिण्णो ति ॥६८६॥ जं जीतं सावज्जं. ण तेण जीएण होति ववहारो । जं जीयमसावज्जं, तेण उ जीएण ववहारो ।:६८७॥ केरिस सावज्जं तु?, केरिसयं वा भवे असावज्जं ?। केरिसयस्स व दिज्जति, सावडजं वा वि ? इयरं वा ? ॥६८८॥ खार थडि हरमाला, पोट्टेण व रिंगणं तु सावज्जं । दसविह पायच्छित्तं, होइ असावज्ज जीयं त ॥६८९॥ ओसण्णे बहुदोसे, णिद्धंधसे पत्रयणे य णिरवेक्खे । एयारिसम्मि पुरिसे, दिज्जिति सावज्ज जीयं तु ॥६९०॥ संविग्गे पियधम्मे. य अप्पमत्ते यऽवज्जभीरुम्मि । कम्ही पमायखिलए, देयमसावज्ञ जीयं त ॥६९१॥ जं जीयमसोहिकरं, प तेण जीएण होति ववहारो। जं जीयं सोहिकरं. तेण उ जीएण ववहारो ॥६९२॥ जं जीयमसोहिकरं, पासत्थ-पमत्तसंजयाचिण्णं। जड वि महाणाचि०णं. ण तेण जीएण ववहारो ॥६९३॥ जं जीयं सोहिकरं, संविग्गपरायणेण दंतेण । एक्केण वि आइ॰णं, तेण उ जीएण ववहारो ॥६९४॥ प्वं जहोवइट्टस्स धीर-विदुदेसित-प्पसत्थस्स । णिस्संदो ववहारस्स एस कहितो समासेणं ॥६९५॥ को वित्थरेण वोज्ञण समत्थो णिरवसेसए अन्थे। ववहारो जस्स ठिता, जीहाण मुहे सतसहस्सं ? ।।६९६॥ किं पुण गुणोवदेसो, ववहारस्स तु विदुष्पसत्थस्स । एवं मे परिकहियं, दुवालसंगस्स णवणीयं ॥६९७॥

ववहारे पंचसु वी, विजंते केण तू ववहरेज्जा ? ।
आगमववहारेणं, तस्स अभावा सुतेणं तु ॥६९८॥
सुतववहारअभावे, ववहारं ववहरेज्ज आणाए ।
जेणं सो उ सुतस्सा, अणुसिरसो एगदेसेणं ॥६९९॥
आणाएँ अभावाओ, ववहारं ववहरेज्ज धरणाए ।
जेणेसा वि सुयस्सा, वृहइ तू एगदेसिम्म ॥७००॥
धारणऽणंतर जीयं, एत्थं पुण जीयकृष्ये पगयं तु ।
जेणेसो सावेक्खो, अणुसज्जइ जाव तित्थं ति ॥७०१॥

अणं च---

दव्वं खेतं कालं, भावं पुरिस पिंडसेवणाओ य ।
धिति वल्ल संघयणं वा, आवंक्खित जीयकप्पो उ ॥७०२॥
एस पसंगाभिहितो, चोयगवयणाओं अहुण जीवस्स ।
वोच्छामि सोहणं तू, परमं सुममाहितो एण्हि ॥७०३॥
'जीव ति पाणधारणे,' पाणा पुण आउमादि णिहिट्ठा ।
अहवा जीवइ जीविस्सई य जिवं ति होइ जिओ॥७०४॥
होइ विसोहणा सोहण, जह तू वत्थस्म नोयमादोहि ।
तह कम्ममलक्खाउरिह्नयस्स जीवस्स पिच्छत्तं ॥७०५॥
सोधनं ॥

एयं पुण पिच्छत्तं, परम पहागं ति होति एगद्धं।
कस्तेयं परमं ? ती, जीवस्स उ होइ पिच्छत्तं ॥७०६॥
संवर-विणिज्जराओ, मोक्खस्स पहो तवो पहो तासिं। प्राथितस्यम्
तवसो य पहाणंगं, पिच्छत्तं जं च णाणस्स ॥२॥

संवर घट्टण पिइणं, एगट्टं सो य संवरो दुविहो । देसे सब्वे य तहा, एमेव य णिज्जरा दुविहा १:७०७॥ संविरयासवदारो, णवकम्मोवज्जणं ण कुन्वइ उ ।
पुन्वज्जितस्स खवणं, विणिज्जरा सा उ णायन्वा ॥७०८॥
सेलेसि पिडवण्णे, दुचरिमसमयम्मि बद्दमाणे य ।
तिहँ सन्वसंवरा णिज्जरा य अवसेस देसम्मि ॥७०९॥
संवर-विणिज्जराओ, उभयमवी मोक्खकारणं होति ।
मोक्खपहो हेतू कारणं ति एते उ एगद्धा ॥७१०॥
एतेसिं दोण्ह वि तू, तवो पहो हेउ कारणं होति ।
एतस्स वि पिच्छत्तं, पहाणमंगं म्रुणेतन्वं ॥७११॥
जेण तवो बारसहा, पिच्छत्तं णिवतती तु दसमेदे ।
तेण पहाणं अंगं, तवस्स तू होति पिच्छत्तं ॥७१२॥
गाहापच्छद्धणं, तस्स वि जं भिणय जं च णाणस्स ।
णंतर तितगाहाए, सारं तू तं चिमं आह ॥७१३॥

सारो चरणं तस्सा, णिव्वाणं चरणसाहणत्थं च। पच्छित्तं तेण तयं, णेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं॥३॥

सामाइयमादीयं, सुतणाणं विंदुमारपज्जनं।
तस्स वि सारो चरणं, चरणस्स वि होति णेव्वाणं ॥७१४॥
णेव्वाणस्स अणंतर, चरणं चरणा अणंतरं णाणं।
णाणविसुद्धीए पुण, चारित्तविसुद्ध्या होति ॥७१५॥
चारित्तविसुद्धीए, णेव्वाणफलं तु पावती अचिरा।
सा पुण चरित्तसुद्धी, पिच्छत्ताहीण णातव्वा ॥७१६॥
जम्हा एतेऽत्थ गुणा, पिच्छत्ते विण्णया तु सुत्तम्मि।
तम्हा खल्ज णायव्वं, दसहा मोक्लित्थिणा जहिमं॥७१७॥

प्राथितस्य तं दसविहमालोयण-पडिकमणो-भय-विवेग-वोसग्गा। ्^{मेदाः} तव-छेद-मूल-अणवट्टया य पारंचियं चेव ॥४॥ आलोयणअरिहं ती. आ मज्जाआऽऽलोयणा गुरुसमासे। **अ**लोचना जं पाव विगडिएणं, सुज्झति पच्छित्त पढमेयं ।.७१८॥ मिच्छादुक्कडमेर्राण, चेव जं सुज्झती तु पावं तु । प्रतिक्रमणम् ण य विगडिज्जिति गुरुणो, पडिक्समणरिहं हवति एयं ॥७१९॥ जह तु अणाभोगेणं, खेलादी णिसिरितं तु होजाहिं। तदु**म**यम् हिंसाइए य दोसे, ण य आवण्णो त किंचिदवि ॥७२०॥ जं पाव सेवित्रंग, गुरुणो विगडिज्जनी उ सम्मं तु । गुरुसंदिष्ट पडिकम, तदुभयमेतं मुणेतव्वं ॥७२१॥ जं किंचि दव्व गहितं, अहिक्रम्प्पं व अहव ऊणं त । विवेक: विहिणा त विर्गिचन्ते, पच्छित्त विवेगअरिहेदं १,७२२॥ जं कायचेट्टमेत्तेण णिरोहेणं त सुज्झती पावं। व्युःसर्गः जह दुस्सिमिणादीयं, पच्छित्तेयं वियोसगं ॥७२३॥ णिव्वीतियमादीओ, छम्मासंतो उ जत्थ दिज्जइ तु । तपः एय तवारिह भणिनं, इदाणि छेदारिहं वोच्छं ।:७२४॥ जेण पडिसेविएणं, द्सिज्जइ जस्स पुन्वपरियाओ । छेद : तत्तियमेत्तं छिज्जइ, सेसगपरियायरक्खट्टा । ७२५॥ जिम्म पिडसेवियम्मी, सन्वं छेत्रूण पुन्त्रपरियायं। मूलम् पुणरवि महब्वयाई, आरोविर्ज्ञात मूलरिहे ॥७२६॥ जिम्म पडिसेवियम्मी, अणब्हो कंचि काल कीरइ तु। अनवस्थाप्यम मूलवएसुं पंचसु, चिण्णतवो पच्छ होतूणं १०७२७॥ तद्दोसोवरयस्य उ. महन्त्रयारुत्रण कीरती तस्स । अणबहुष्पो एसो. एतो पारंचियं वोच्छं ॥७२८॥ अंचु गती-पूजणयो, पारंचर गच्छती त पारं तु। तवमादीणं कमसो, सो लिंगादीहैं चतुथा तु ॥७२९॥ पाराश्चिकम

आलोयणमादीणं, दसण्ह वी एस होति पिंडत्थो । सद्वाणे सद्वाणे, विभागतो इणमो वोच्छामि ॥७३०॥

थालोचना-प्रायश्वित्तम् करणिजा जे जोगा, तेसुवयुत्तस्स णिरतियारस्स । छउमत्थस्स विसोही, जइणो आलोयणा भणिया॥५

के पुण करणिज्जा ? जे, तित्थंकर-गणहरोत्रइट्टा उ । मुत्ताणुसारओ तू , संजम-दुक्खक्खया होऊ ॥७३१॥ जेत्तिय जे णिहिट्टा, जुजि जोगे कातमादिआ तिण्णि। जं जीवे जुंजयती, पेरयती वा ततो जोगा । ७३२॥ संखेवयो उ एते, ग्रहपुत्तियमादि जाव उस्सम्मो। दियरायोसमायारी, जा जहियं वृत्त सुत्तिमा ॥७३३॥ ते त जया उवउत्तो, अमवत्त करेड णिर्तियारा य । तद आलोयणमेत्तेण चेत्र सुद्धी त छदुमस्स ॥७३४॥ छउमं कम्मं भण्णइ, णाणावरणं च दंसणावरणं। मोहणिय अंतरायं, चडव्विहं होति णायव्वं ॥७३५॥ जे त जया करणिज्जे, उवयूत्तों करेति णिरतियारी य । णणुतत्थ का व सुद्धी ?. का व असुद्धी उ ? चोएति ॥ गुरुराह तत्थ चेट्टा, जा किरिया सुहुम आसवेसुं वा । अहव पमाया मुहुमा, अनियार ण जाणनी छतुमो ॥७३७॥ ते अइयारा सुहुमा, आलोइयमेत्तया विसुज्झंति । सा आलोयण चोयग !. करणिजा तीस जोगेस ॥७३८॥ को कारयो ? जनी तु. जइ साहु पयत्तियो विणिहिद्वो। पंचम गाह समत्ता, गाई छट्ठं इमं वोच्छं ॥७३९॥ आहाराईगहणे, तह बहियाणिग्गमेसु णेगेसु । उच्चार-विहारावणि-चेइय-जइवंदणादीसुं ॥६॥

छदा

आहारों जेसि आदी, सो चउहा होइमो उ आहारो। भत्तं पाणं खाइम, साद्मि होती चउन्धं तु ॥७४०॥ आदिगाहणेणं पुण, सेज्जा-संथार-वत्थ-पायद्वा । पाउंछणअद्वा वा, ओहोबहुबग्गहट्टा वा ॥७४२॥ अहव गिलाणस्भद्धा, आयरिए बाल बुहू खमए वा । दुब्बल सेहे व महोद्रे व आदेसअट्टा वा ॥७४२॥ एतेमि पाउग्गं, आहारो अहव होज्ञ सेज्ञादी । ओसह-भेमजाणि य, एमादी होज अट्टो उ ॥७४३॥ एतेसि अट्टाए. गुरु पुरुखता गुरुण्ऽणुण्णाओ। मुत्ताणुसारओं तू , उत्रयुनों विहीय घेतूणं ।'७४४॥ आलोएनी गुरुणो, जं जह महियं तु भनमादीयं। मुत्ताणुसारतो तू , आकोयणरेत्तयो युद्धो ॥७४५॥ मीसाऽऽह जई एत्रं, विहिमहणं होति एवऽमुद्धं तु । तो गहणमेव सब्वे, आहारादीण या कुणउ ॥७४६॥ चोअग ! जिंद एवं तु. संजमजोगा उ होंनि संपुण्णा । आहारमाइयाणं, को णाम परिगारं कुज्जा ? ५०४०॥ अव्यं च इमो दोसो, अमहणा पावती महंतो उ। आयारियादी चत्ता. णाणादीणं च बोच्छेरा ॥७४८॥ तम्हा अवस्म गहर्ग, आहारादीण होति विहिणा उ । आहाराईगहणे, एगो पाटो समत्तमो । ७४९॥ णिग्गम गुरुम्लाओ, सेज्ञाओ ता हवेज्ञ णिग्गमणं। ते य अणेगा णिगाम, कुलादिया इणमु वोच्छामि ॥७५०॥ कुल गण संघे चेइय. तह्न्यविणासणे द्विहभेदे। एतेसि णिवारणया, गुरुवृत्र करेज णिग्गमणं ॥७५१॥ संथारादीण अह्या, अप्विगणत्था उ पाडिहारीणं ।

निगमों गुरुमूलाओ, वसहीओ वा करेजाहि ॥७५२॥
गाहापच्छदेणं, जं भणितुचार अवणिसहो तु ।
अवणी भूमी भण्णति, तेण उ उच्चारभूमी उ ॥७५३॥
सज्झाय विहारो तु, अवणीसिहओ विहारभूमी उ ।
चेइयवंदणहेउं, गच्छे आसण्ण दृरं वा ॥७५४॥
आयरिया तु अपुन्वा. अहवा साह अतीव संविग्गा ।
वंदण-संसयहेउं, गच्छे आसन्न दृरं वा ॥७५५॥
आदीगहणेणं पुण, सहा सण्णाय अहव ओसण्णा ।
दंसणगाहण निक्लमणं च ओसण्णउच्छहणा ॥७५६॥
एतेहिँ व कडजेहिं, गुरुमृला णिग्गमो उ साहूणं ।
गाहा छट्ठ समत्ता, अहुणा पुण सत्तमं वोच्छं ॥७५७॥

जं चऽण्णं करणिज्जं, जतिणो हत्थमयबाहिरायरियं। अवियडियम्मि असुद्धो, आलोएंनो तयं सुद्धो॥७॥

जं चडण्णमवृत्तं ती, करणिडजं तं इमं तु खेनादी।
इत्थसवा आरेणं, परयो व इमं पवन्तवामि ॥७५८॥
स्वित्तपिहलेह थंडिल, णिक्समणं अहव होज्ज सेहस्स।
संलेहणं व कोई, आयरियादी व कुज्जा तु ॥७५९॥
इत्थसयाओं परेणं, जं आयरियं तु होज्ज खेतादी।
समितिविसुद्धिणिमित्तं, अवस्स आलोयणं कुज्जा ॥७६०॥
जं पुण हत्थसयाओं, अंतो आसेवियं हवेज्जाहिं।
तं विगडिज्जइ किंची, अहव ण विगडिज्जती किंचि ॥७६१॥
जह—
पासवण-खेल-सिंघाणगादि उवयत्ते णत्थि आलोगा।

पासवण-खेल-सिंघाणगादि उत्रयुत्ते णस्थि आलोगा । आलोएइ पमत्तोऽणालोइऍ होतऽसुद्धो.तु ॥७६२॥ सत्तम गाह समत्ता, एत्तो वच्छामि अट्टमं गाहं । कारण निग्ममें जत्थ उ, स-प्रगणाओ व आगमणं ॥७६३॥

कारणविणिग्गयस्म य,मगणाओ परगणागतस्स विय। उवमंपया विहारे, आलोयणमणइयारस्स ॥८॥

दुविहो उ णिगामो खलु, कारण निकारणो व गच्छाओ । असिवादी कारणिओ, णिकारण चक्क-धूथादी ॥७६४॥ असिवे ओमोयरिष, रायदुढे भए व गेलण्णे। अहवा वि उत्तम्हे, समाहिकामो तु गच्छेज्ञा ॥७६५॥ आयरियपेसणादी, विणिग्गमो गच्छयो व होज्जाहि । कारण णिरमार्गे एसो, णिकारणयो इमं वोच्छं ॥७६६॥ चक्के भूमे पहिमा, जम्मण णिक्खमण णाण णिव्वाणे। महिम समोसर्गे वा. सण्णायग-वह्यमादिसु वा ॥७६७॥ असमत्तकष्पियाणं, णिकारण णिगामा भवे एते । एने चिय कारणयो, जयणाजुत्तस्स गीनस्य ॥७६८॥ कारणविणिग्गएगं, णिरतीयाराण वी अवस्सं तु। आलोयण दानन्त्रा, समिनिवियुद्धीणिमित्तं तु ॥७६९॥ सा आलोयण द्विहा, औंँण विभागतो य णायन्त्रा । ओहो संखेवो ऊ, विभागों पुण विस्थरो भणिओ ॥७७०॥ ओहो तत्थ इमो खलु, अब्भंतरअद्धमासआयस्स । पडिकंतस्स य इरियं, साहुसमुद्दिसणवेला तु ॥७७१॥ णिरईयारो य जती. भत्तद्वी वि य हवेज्ज जदि सो तु । ओहेण तत्थ आलोइतूण तो मंडलिं पविसे ॥७७२॥ अप्पा मूलगुणेसुं, विराहणा अप्प उत्तरगुणेसुं। अप्पं पासत्थाइस्र, दाणग्गहणं त ओहेसा ॥७७३॥

अण्णाय उ वेलाए, विभागआलोयणा तु दायन्वा । समितिविस्रद्धिणिमित्तं, एमेव य पक्खपरयो वि ॥७७४॥ एवं ता कारणिए, असिवादीणिग्गयस्स सगणाओ । अतिदारविरहियस्स वि. आलोयणमेत्तयो सुद्धी ॥७७५॥ जे बहियाऽऽगत साहु, ते दुविहा होन्ति तू मुणेतच्या। सम्पुर्वा अपूर्वा वा, सम्पुर्वा सगन्छतो चेव । ७७६॥ परगणे जे अमणुण्णा, ते दुविहा होंति तू मुणेयच्या । संविग्गमसंविग्गा, पासत्थादी असंविग्गा ॥७७७॥ परगणसंविगाओ, जो साह आगनो उ अण्णगणं। तेण अवस्साऽऽलोयण. विभागनो होति दायन्वा ५७७८॥ उवसंपद पंचिवहा, सुन सुह दुक्खे य खेत मगो य। विणयोवसंपया वि य. पंचिमया होति नायव्या ॥७७९॥ पंचिवहाए नियमा, एगिवहाए व जत्थ उवसंपे । निरतीयारेण वि या, विभागनोऽवस्य दानव्या । ७८०।। विहरेन्ति एगसंभोडया उ फड़ादनी उ गीयन्था। तत्थऽण्णात्थ व खेत्ते, समणुण्णा एम गन्छिम्म ।,७८१॥ एगाह पणग पक्ते, चडमासे वि जन्ध वि ग्रिकंति। तत्थ विभागालोयण, अवरोप्पर तेहिँ दायव्या । ७८२:। आलोयणारिहं नि इ. पहम दारयेयं समक्रवानं । दारं । पडिकमणारिइमेनो, विनियं दारं इमं वीच्छं ॥७८३॥

प्रतिक्रमण-प्रायश्वित्तम्

श्रीयः

गुत्ती-समितिपमत्तो, गुरुणो आसायणा विणयभंगे । इच्छाईणमकरणे, लहुस मुसादिण्णमुच्छासु ॥९॥

पुरक्खणम्मि (?) गुत्ती, ताणि मणादीणि होन्ति तिण्णेव । तेहिँ कहिंचि पमायं, साहु करेडजा इमं नं च ॥७८४॥

दुर्चितिय दुब्भासिय, दुच्चेट्टिय एमऽग्रुत्तिया होति । मणमादीणं कमसो, एस पमाओ उ साहस्स ॥७८५॥ गुत्तो होइ कह ०णू, मणमादीहिं तु साहणा निर्वं। तत्थोदाहरणे तू, जिजदासादी इमे वोच्छं ॥७८६॥ मणगुत्तीए वहियं, जिणदासा सावशो उ सेहिसूनो। सो सन्त्रगाइपहिमं. पहिन्ग्णो जाणसालाए ॥७८७। भज्जुब्भामिग परलंक घेच खीलजुबमाग्या तत्थ । तस्सेव पायग्रवरि. मंचगपादं ठवेळणं १,७८८॥ अणयारमायरंती, पादो विद्धो य मंचाबीलेणं । तो तं महंति वियणं, अहियासेनी तहि सम्मं ॥७८९॥ मणद्कडमुष्पण्णं, ण तस्म झाणस्मि णिचलमङ्स्स । दहूण नोय विलियं, इय मणगुत्ती करेनच्या ॥७९०॥ वइगुत्तीए साहू, सण्णायगपवित्र गच्छर दहुं। चोरगाह सेणावइ, विमोइनो भणिउ मा साह ! ७९ १॥ चलिया य जण्णजन्ता. मण्णायग मिलिय अनरा चेत्र। माइ-पिति-भातिगादी, सो वि णियत्तो समै नेहिं । ७९२॥ तेजेहि गहित ग्रतिया, विद्वो नो बिन्त मी इसी समणी। अम्हेहि गहिय मुकी, तो बेती अम्मया तम्म 1,७९३॥ त्रम्हेहि गहिय ग्रको ?, आमं आणेह बेति नच्छरियं। जा छिंदामि थणं नि इ. किं ? ती सेणावनी भणइ ॥७९४॥ दुज्जायजम्म एसो, दिहुं अम्हं तहा वि ण वि सिद्धे। कह पुत्तो ? त्ती आमं, कहण वि सिट्टं ? ति घन्मकहा । ७९५॥ आउद्दो उवसंतो, मुक्तां मज्झं पि तं सि माय त्ति । सब्बं समिप्पियं ती, बहुगुत्ती एव कातव्या १७९६॥

मनो गुप्ती जिनदासी-दाहरणम्

वचनगृप्ती कस्यचित् साधोहदा-हरणम् कायगुप्ती कस्यचित् **साधोरा**ह-**रणम्**

काय पुप्ती द्वितीयम्-

दाहरणम्

काइगग्रत्ताहरणं, अद्धाणपवण्णगो जहा साहू ।
आवासियम्मि सत्थे, ण लभित तिह थेडिलं किंचि ॥७९०॥
लद्धं च णेण किह वी, एगो पाओ जिह पइट्ठाइ ।
तिहयं ठिएगपादो, सन्वं राई तहा थद्धो ॥७९८॥
ण य ठिवतो तेणाथंडिलम्मि होनन्वमेव गुत्तेणं ।
सुमहन्भए वि अहवा, साहू ण भिंदे गई एगो ॥७९९॥
सक्क पसंसा अस्सदहाण देवागमो विउन्वणया ।
मंडुकलि सुदुम बहू, जनणा मो संक्रमे सणियं॥८००॥
हत्थी विगुन्विओ या, आगच्छित मग्गतो गुलगुलेंतो ।
ण य कुणत गतीभेदं, गएण हत्थेण उच्छ्टहो ॥८०१॥
वेइ पडंतो मिच्छामिदुक्तडं जिय विराहियं मे ति ।
ण वि अप्पाणे चिंता, देवो तुट्टो णमंसित य ॥८०२॥
गुत्तीदारं भणियं, अगुत्तगुत्ती वि हू पसंगण ।
समिईदारं वांच्छं, सिमितं समितं वि माताओ।॥८०३॥

समितीना स्वरूपम् गमणिकिस्या हु समिनी, सामण्णे परिणयस्स वा गमणं।
सम्ममयित त्ति समिनी, सामण्णे परिणयस्स वा गमणं।
सम्ममयित त्ति समिनित. सा पंचह इस्यिमादीया ॥८०४॥
कह समिनीमु पमादं, साहु करेजा तु ? भण्णए मुणमु ।
उट्टुमुहा कहरत्तो, वच्च साहु पमाएतो ॥८०५॥
सावज्ञ भास भामिनि, गारित्थय द्वहुर व्व भासेज्ञा।
एमादी तु पमाओं। भासाए हानि णानव्वो ॥८०६॥
हिंडेतों गोयरिम्म, संकिनमादीमु जो तु नाऽऽयुत्तो।
भिक्खाएँ गहणकाले, एनण एमो पमाओ तु ॥८०७॥
आदाण-भंडणिक्खेवणिम्म जो होइ एत्थऽणाउत्तो।
एसो होति पमायो, एत्थ पमायिन्म छ ब्भंगा ॥८०८॥

गहणं आदाणं ती, होति णिसहो नहाऽहियत्थिम । खिव पेरणे व भाणतो, अहिउक्खेत्रो तु णिक्खेत्रो ॥८०९॥ ण वि पेहे ण पमज्जे, ण वि पेहे पमज्जती तु बिनिभंगो। पेहे ण पमज्ज तित्रो, पेह पमज्जे चउत्थो त ॥८१०॥ जो सो चडत्थ भंगो, पेहेति पमज्जती य तस्स पुणी। भंगा भवंति चडरो, द्वेहद्वमञ्जूषे पढमो ॥८११॥ वितियो द्पेहसुपमञ्जणिम तइओ सुपेहद्पमञ्जे। स्रपडिल्लेहियस्रपमिज्जयम्मि भंगो चउत्येसो ॥८१२॥ आदिमभंगा तिण्णि इ, अपेहअपमज्जणे य पढमादी। तिण्णि दुपेहादी वि य, छ ब्भंगा होंनि एने छ ॥८१३॥ उचारे पासवणे, खेले सिंघाणमादियाणं च । परिटवणे एत्थं पि हु, पमाइणो होन्ति छ ब्भंगा ए८१४॥ परिठवणुचागदी, उचग्ती तेण होति उचारी ॥ पस्सवड़ त्ति य तेणं, पासवणं भण्णए काई ॥८१५॥ अहबुचरई काइय, पार्यं सर्वर्ड य पासवणसण्णा । खेळलणाओ खेलो, णासिगलाणाओ सिंचाणो ॥८१६॥ एस पमाओ भणितो, पंचमु समिईमु इरियमादीसु । अहुण पसंगेणं चिय, वोच्छामि इ अप्पमायं तु ॥८१७॥ जुगमेत्तंतरदिही, पदं पदं नसति चक्लुपूर्यं च। अन्विक्तितायुत्तो, अरहण्णगो एत्युदाहरणं ॥८१८॥ अह अरहण्णगमाह. समितीअ समीय गृड हेवन्तो । छलिओ पादो छिण्णो, अण्णाए संधिओ याति ॥८१९॥ भासासमितो साहः भिक्लब्हा णगररोहए कोयी। णिग्गंतु बाहिकडए, हिंडंतो केणयी पुट्टो ॥८२०॥ केवइय आस हत्थी ?, धणणिचयो दारु-धण्णमादीणि। णिव्विण्णमणिव्विण्णं, णगरं तो बेइमं समितो ॥८२१॥

ईयांसिम ११-वहन्नकः

भाष;समिती कश्चित् साधु बहं सुणेति कण्णेहिं, बहुं अच्छीहि पेच्छति ।

बेड ण याणामो त्ती, सज्झाय-ज्झाण-जोगविस्त्रता।

हिंदंना ण वि पिच्छह, ण वि सुणहा किह हु ? तो बेति ॥८२२॥

ण य दिट्टं सुयं सन्त्रं, भिक्खु अक्लाउमरहति ॥८२३॥ अहव य भामति कर्जे, णिरवर्जमकारणे ण भासति य । विकह-विसोत्तियपरिवज्जितो जनी भासणासमितो ॥८२४॥ बायालमेसणाओ, भोयणदोसे य जो विमोहेति। सो एसणाए समिओ, दिट्टंगो इत्थ वसुदेवो ॥८२५॥ वसुदेव अण्णजम्मे, आहरणं एमणाए समिएणं। मगहा णंदिग्गामे. गोयम धेजजाइ वक्कायरो ॥८२६॥ तस्स य वारुणि भज्जा, गब्भो तीए कयाइ संधुओं। धेजाइ मतो छम्मासि गव्य धेजाञ्चण ब्जाए ॥८२७॥ मातुलसंबट्टण कम्मकरण वेयारणा अ लोएणं। णित्य तह एत्य किंचि इ, नो बेनी माउलो तं च ॥८२८॥ मा सुण लोयम्स तुमं, धुयाओं तिष्णि तासि जेहवरी। दाहामि करे कम्मं, पक्रयो पत्ते य बीबाहे । ८२९॥ सा णेच्छई विसण्णो. माउलओ भणति अण्ण दाहामि। सा वि तहेव य णेच्छइ, तइयं ती णेच्छइ य मा वि ॥८३०॥ णिन्त्रिण नंदिवद्धण, आयरियाणं सगासे णेकवंतो । जाओं छद्रक्षमओं. गिण्हड य अभिग्गहमिमं तु । ८३१॥

बाल-गिलाणादीणं, वैयावर्चं मए त कायव्वं।

अस्सद्दराण देवस्य आगमो कुणइ दो समणरूवे।

बेति य गिलाणों पडिनो, वेयात्रचं तु सद्दहे जो उ । सो सिग्धं उद्वेत, सुतं च तं नंदिसेणेणं ॥८३४॥

तं कुणइ तिन्त्रसद्धो, खायजसो सक्क गुणकित्ती ॥८३२॥

अतिसारगहियमेगो, अडबीय ठियो गओ वितिओ ॥८३३॥

एषणासमितौ बसुडेवजीवो नन्दिबर्धनः

छट्टोववासपारणगमाणितो कवल घेत्कामेण। तं स्रुत मोर्च रभसुद्धिओ य भण केण कर्जं ? ति ॥८३५॥ पाणगदन्वं च तहिं, जं णत्थी तेण बेति कज्जं ति। णिग्गय आहिंडते. अणेमणं क्रुणित ण य पेल्ले ॥८३६॥ इत एकवार वितियं, च हिंडिओ लद्ध तइयवाराए। अणुकंपा तूरंतो, गयो य तो तस्सगासं तु ॥८३७॥ खर-फरुस-णिहरेहिं, अक्कोसइ मो गिळाणतो रहो। दे मंदभग ! घुकिय, तुमिम नं णाममेत्तेणं ॥८३८॥ साहुवयारि ति तुमं, णामड् अहं तु उद्दिसिउ आयो । एयाऍ अवत्थाए, तं अच्छाँस भत्तलोहिल्लो ॥८३९॥ अमयमिव मण्णमाणो. तं फरुसगिरं त सो ससंभंतो । चल्रणगतो खामेती. धुवति य तं समलल्जितं तु ॥८४०॥ उट्टेह क्यामां त्ती, तह काहामो जहा उ अचिरंणं। होहिह णिरुया तब्मे, बेती ण तरामि गंतुं जे ॥८४१॥ आरुभहा पट्टीए, आरूढो ताहे तो पयारं तु । परमासुड दुर्गार्थ, मुंचित सो तस्स पहीए ॥८४२॥ फरुसं बेति दुस्रण्डिय!. येगविघाओ कतो ति दुक्खविओ। इय बहुविहमक्कोसति, परे परे सो वि भगवं तु ॥८४३॥ ण गणेती फरुसगिरं, न वि अ हु दुव्विसहमसुइगंधं च। चंदणिमव मण्णंनो, मिच्छामी दुक्कडं भणित ॥८४४॥ चिन्तेइ किं करेगी, कह णु समाही हवेज साहस्स ?। इय बहुविहप्पगारं, ण वि तिण्णो जाहे खोमें ।।८४५॥ ताहे अभित्थृणित्ता, गतो तयो आगयो य इयरो वि । आछोएइ गुरूहि य, धण्णो ति तयो समणुसट्टो । ८४६॥ जह तेणं ण वि पेक्षिय, एसण इय एव साहुणा जिहें। जइअव्वं एमेसा, एसणसमिती समक्खाया ॥८४७॥

बादान-निश्चेषणा-समितिः तत्रोदाह-रणं च

पुन्ति चक्ख परिक्खिय. पमिलाउं जो ठवेति गिण्हइ वा। आयाणभंडनिक्खेवणाएँ सो होड इह समितो ॥८४८॥ एत्थ वि ते चिय भंगा. कायच्या जाव होति अंतिमतो । सुप्पिहलेहिय-सुपमि ज्यां च भंगो च उत्थो उ ॥८४९॥ एसो गज्ज्ञो एतथं. तम्युवयुत्तो स होति खलु समितो । आहरण गुरुण भणितो. साह वचामो गामं ति ॥८५०॥ ओगाहिए पडिग्गहे, नाहें ठिया कारणेण केणावि । तत्थेगो पेहेउं णिक्खित्तती विद्यों पुण आह ॥८५१॥ वेहियमेनं कि वेहणा, पुणी ? होज्ज एत्थ कि सप्पो ?। स्विणिद्वित्रदेवयाए. विडिव्यतो तत्थ तो सप्पो ॥८५२॥ अवाहिए य दिहो, आउड़ो बेनि मिच्छकारं च। समिताअपिमना एते. एकोस-जहण्णया होन्ति ॥८५३॥ जचारं पानवणं, खेळादि व अण्णपाणमहियं वा । सुदिवेडए पदेसे, णिमिरंतो होइ इह ममिओ ॥८५४॥ इत्थ वि ते चिय भंगा, तहेव समियो तु अंतिमे होति । आहरणं धम्मस्ती. परिठावणसमितिम्रज्जूतो ॥८५५॥ काइयऽसमाहि परिठावणे य गहिनो अभिगाहो तेणं। सक पसंसा अस्सहहाण देवागम विजन्ये ११८५६॥ सुबह पिपीलियाओ, बाहाडा यावि काइयऽसमाही । अण्णो य काइयाए, उबहिनो बेयऽहं असह ॥८५७॥ अहयं त काइयाडो, वेह परिद्रय समाहि मा अच्छ।

णिग्गय णिसिरे जहि जहि, पित्रीलिया ऊ सरे नत्थ । ८° ८॥

मा मा य णिसिद्धो त्तीः मा पिय देवो य आउद्दो ॥८५९॥

अइ साहु किलामिज्जइ, ताहे पीनो य धरिना देवेण ।

एत पसंगाभिहितं, आसातण इणग्न वोच्छामि ॥८६०॥

वंदित्त गतो देवो, समितीम एव होति जतितव्वं ।

पारिष्ठ.पनिका समितिः तत्रार्थे धर्भक्चे-राहरणम्

आशातना

गुरुवो आयरिया तू. णाणादीओ उ होइ आयारो । आयरण परूत्रणया, बद्दुइ सो तेसिमाऽऽमाणा ॥८६१॥ तीय विभासा इणमो, आसातण दयद वयणमेव ति । आयाय सातवाणा. आयस्स उ साहणा जा उ ॥८६२॥ सा होती आसातण. आओ लाभो ति आगमो यावि। णाणादीणं साया. सायण धंनो विणासो ति ॥८६३॥ आतस्स साहणं ती, यकारलोवस्मि होइ आसयणा । आयरियाणं इणमो, आसयणा होइभेहि तु ।।८६४॥ दहरो अञ्चलीणो ति य, दुम्मेहो दमग मंदबुद्धि ति । अवि अप्पलाभलद्धी, सोमो परिभवः आपरियं ॥८६५॥ अहवा वि वदे एवं, उबएस परस्म देन्ति एवं त । दसविष्ठ वैयावच्चं, कायव्य सयं ण कृव्वंति । ८६६।। अहव तिहा आसायण, मण-वड-काएण मणपदोसादी । वायाए आसायण, अंतरभासादि क्रव्यिज्ञा ॥८६७॥ काएणं संघट्टण, जमलित पुरतो व बचनी पंथे। अहवा आसायणमो, तुसिणीमादी मुजेयन्वा ॥८६८॥ आलते वाहिते, वावारिय पुच्छिए णिसहे या । गुरुवयणा पंचेते, सीसस्स तु छा इनेक्केक्के ॥८६९॥ तुसिणीए हुंकारे, कि ? ति व कि चडगरं करेसि ? ति। कि णिच्बुईं ण देसी ?, केनइयं वा विरडसि ? ति ॥८७०॥ एवं छा आलते. तसिणीमादी उ होति णातव्वा । वाहितादि य छ चिय, एक्केक्कपयम्मि बोद्धव्या ॥८७१॥ गुरुआसायण भणिया, एत्तो वोच्छामि विणयभंगं तु । णेगविष्ट अब्ध्रहाणे. अभिगाहे आसणे चेव ..८७२॥ आसणदाणं सकारणा य सम्माणणा य कितिकम्मे । अंजिक्किपगाह अणुगती य दिनपञ्जुवासणना ॥८७३॥

गुरु-शिष्ययो-

वंचनानि

विनयस्य भन्नः जंते पडिसंसाइण, आसणमादीहि होति सकारो। सम्माणो उवहीए. जोगां जं जस्स तं क्रजा ॥८७४॥ कष्पो संयारो वा, जिं चेट्ठो अच्छई तु आयरिओ । णायागमस्स कालं, पडिलेहिय वेतु तं अच्छे ।८७५॥ कितिकम्पं वंदणयं, इत्थुस्सेहो णिडालदेसम्म । अंजलिपगाइमेतं, सेसा उ पया हु कंडोत्ता ॥८७६॥ एमादी विणयं तू, जो ण वि कुणती उ स्रिमादीणं। विणयब्भंगो एसो, सत्तविहो अहव णाणादी ॥८७७॥ णाणे दंसण चरणे, मण वर् कायोवयार सत्तविहो । पतेस अवृद्धते. समासओ एस भंगो तु ॥८७८॥ विणयन्भंगो एसो. ओहेण समासओ समन्खायो इच्छादी दसहा तू, अकरणेणमो तू बोच्छामि । ८७९॥ इच्छा-मिच्छा-तहकारो, आवसिया य णिमीहिया। आपुच्छणा य पहिपुच्छा, छंद्रणा य निमंत्रणा ॥८८०॥ जबसंपया य काले, इच्छाद्अकरणया उ दसहेसा। लहसम्रसावादि त्ती, एतो उ समासनो वोच्छं ॥८८१॥ पयजाउँ मरुप, पचनखाणे य गमणपरियाए । सम्रहेससंखडीओ, खुड्रयपरिहारियसुहीओ ॥८८२॥ अवस गमणं दिसास, एगकुले चेव एगद्व्वं य । प्मादी तु पदेहि, मुसं तु लहुसं वए साहू ॥८८३॥ पयस्रासि किं दिवा ? ण पयस्रामि सह बितिय णिण्हवे गुरुतो। अण्णदाविय णिण्हावे, बहुमा गुरुमा बहुतराणं ॥८८४॥ णिण्हवणे णिण्हवणे, पन्छितं वर्ड्ड ऊ जा सपयं । **ळडु-गुरुमासो सु**हुमो, लहुमादौ बायरो होति ॥८८५॥ कि वचिस वासंते ?, ण गच्छे णणु वासविंदवी एते । दारं । श्चेंजित णीह मरुया, कहं ? ति णणु सव्वगेहेस ।८८६॥

सप्तथा विनय**भ**ङ्गः मुंजसु पश्चवलाणं, महं ति तक्लण पभ्रंजियो पुट्टो। किं व ण में पंचिवहा, पचक्लाता अविर्तीओ ? ॥८८७॥ वचसि ? णाइं वन्ने, तक्खण वन्नंत पुन्छिओ भणति । सिद्धंतं ण वि जाणह, णणु गम्मित गम्ममाणं तु ? ॥८८८॥ दस एयस्स य मज्झ य, पुच्छितों परियाग बेइ तु छलेण। मज्झ जव ति य वंदिएं, भणाइ बे पंचगा दस उ ॥८८९ दारं॥ वट्टड त सम्रहेसो, कि अच्छह कत्थ एस गयणंमि । दारं । बद्दन्ति संखडीओ, घरेसु णणु याउग्वंडणया ॥८९०॥ दारं॥ खडूगजणणी उ मुया, परुण्णो जियइ ति एव भणियंमि । माइत्ता सव्वजिया, भविंसु ते णे समायाते ॥८९१॥ दारं। ओसण्णे दट्टणं, दिद्वा परिहारिय त्ति छहुकहणे। कत्थुज्जाणे गुरुओ. अदिष्ठ दिहे य लहुगुरुगा ॥८९२॥ छह्नहुगा उ नियत्ते, आस्रोएंतम्मि छग्तुरू होन्ति। परिहरमाणा विकर्ह, अप्परिहारी भवे छेदो ॥८९३॥ खाणुगमाई मुखं, सन्वे तुब्भेगो हं ति अणवहो । सन्वे उ बाहिरा पवयणस्स तुन्भे त्ति पारंची ॥८९४॥ भण वय दिदृणियहे, आस्रोयामंति घोडगमुही । किमणुस्सा सन्वेगो. सन्वे बाहि प्रयणस्स ॥८९५॥ मासो लहुओ गुरुओ, चउरो नासा हवंति लहुगुरुगा । छम्मासा लह्युह्गा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥८९६॥ दारं। गच्छिस ण ताव गच्छं, तक्खण वच्चंत पुच्छितो भणइ । वेला ताव ण जायइ, परलोगं वा वि मोक्खं वा ॥८९७॥ कतरिं दिसिं गमिस्सांस ?, पुट्वं अवरं गतो भणति पुट्टो । कि वा ण होति प्रव्वा, इमा दिसा अवरगामस्स ? ॥८९८॥ अहमेगक्कलं गच्छं, बचह बहुकुलपवेसणे पुट्टो । भणित कई दोण्णि कुले, एगसरीरेण पविसिस्सं ॥८९९॥

वहर एगं दन्वं, घेच्छं णेगगह पुच्छिओ भणति ।
गहणं तु लक्खणं पोगगलाण णऽण्णेसि तेणेगं ॥९००॥ दारं॥
पयलादी तु पदा खल्ज, एमेते विण्णिया समासेणं ।
लहुगुरुया जाव म्रुसं, लहुसगमेयं मुणेतन्वं ॥९०१। दारं॥
तण हगल छार मल्लग, जगहमणणुण्णवेचु जो गिण्हे ।
लहुसग अदत्तमेयं अहवा रुक्खादिम्र लहुसं ॥९०२॥
मुहणंत पायकेसरि, पत्तद्वरणं च गोच्छओ चेव ।
लहुसपरिग्गहमेसो, गुच्छ करंतस्स साहुस्स ॥९०३॥
अहवा वि इमो अण्णो, सेज्ञातर-गोण—साण—कागादी ।
धारण कप्पट्टस्स व, रक्ख-ममत्तादि कुज्ञा तु ॥९०४॥
वितियवय-तिवय-पंचमलहुस्सगा एते होतिणानन्वा ।
गाहेसा तु समत्ता, णवमा दसमं अतो वोच्छं ॥९०५॥
अविहीय कासजंभियखुयवायाऽसंकिलिङकंमेसु ।
कंदप्पहासविकहाकसायविसयाणुसंगेसु॥१०॥

अविधिः

ख्यानम्

कास-जम्मा-दीना व्या- अविही इत्यमदातुं, अहवा मुहणंतयं अदातूणं।
जंभाइए वि एवं, खुइए वी एव वत्तव्वं ॥९०६॥
खु त्ति कतं तं खुइतं, छीयं वा होति इह उ खुइतं तु।
वायणिसम्मो दुविहो, उहे य अहे य णायव्वो ॥९०७॥
उहं उड़ीयादी, वायणिसम्मो अहे मुणेतव्वो ।
मुहणंतय इत्यं वा, उड़ोए तत्य जयणाए ॥९०८॥
मुयकहृणा उ हेट्टे वायणिसम्मस्स होइ जयणेसा।
इयवियिश्चो जो खळ, अविहीए सो णिसम्मो तु॥९०९॥
छेयण-मेयणमादी, असंकिलिट य होइ कंमं तु।
कंदणो वायाए, काएण व होति णातव्वो ॥९१०॥

हासं तु हासमेव तु, विकहा पुण इत्थिमाइया चन्हा । कोहादी उ कसाया, विसया सद्दाइया णेया ॥९११॥ जा तेसि तु पसज्जण. सहसाऽणाभोगयो व साहूणं। सा होति विसयसंगो, अविहीगाहा समत्ता उ ॥९१२॥ खिलतस्स य सवत्थ वि, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स। सहसाऽणाभोगेण व, मिच्छकारो पडिकमणं ॥११॥

१खलना

खलणा दुविहा भणिया. सहसाऽणाभोगतो व होजाहि।
सा कत्थ पुणो दुविहा, सञ्बत्थ इमं पवक्खामि॥९१३॥
सञ्वत्थ ग्रिससु, समिती णाणादिएसु व हवेजा।
सञ्वत्थ वि एतेसुं, खलणेसा होति णायञ्चा॥९१४॥
सहसाऽणाभोगेण व, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स।
सहसाऽणाभोगाणं, को णु विसेसो ? ति चोएइ॥९१५॥
आउत्तो वि य होतुं, कारेन्नो वि ण याणतीयारं।
जह हं करेमि एयं, कए य नाऽयं अणाभोगो॥९१६॥
आउत्त पुञ्चभासा, पहिसेवण सहस एव जा तु भवे।
ण य तरित णियत्तेंचं, सहसकारो भवे एसो ॥९१७॥
सहसाऽणाभोगा ज. सञ्बत्थ उ विणया समासेणं।
एस विसोहिट्टाणं, मिच्छकारो पहिक्रमणं॥९१८॥

सहसाऽना-भोगो

॥ गाहा सम्मत्ता ॥

आभोगेण वि तणुएस णेहभयसोगबाउसादीस । कंदप्यसोगविगहादिएसु णेयं पडिक्रमणं ॥१२॥

आभोगे जाणंतो, तणुओ थोवे तु होति णातच्यो ।
तं पुण करेज्ज कप्पट्ट-सेज्जनर-सिण्णमाइसु वा ॥९१९॥
एमादीणेहाऊ, जं कय कप्पट्टगादि आभोगा ।
तस्स तु पायच्छित्तं, मिच्छकारो पडिकमणं ॥९२०॥

आभे गः

स्नेहः

भयम्

तणुओ णेहो भणितो, भइ सत्तविहं इमं तु बोच्छामि । इह परलोगाऽऽयाणे, अक्रम्ह आजीवियऽसिलोए ॥९२१॥ मरणभयं सत्तमयं, एतेसि समासतो विभागो इमो । मणुओ मणुयस्सेव तु, देवो देवस्स तिरि तिरिए ॥९२२॥ बीभेइ सजाईए, इहलोगभए य होति बोद्धव्वं । परलोगभयं विसरिस, जह मणुओ बीभे तिरिदेवे ॥९२३॥ धणमायाणं भण्णति, तब्भय चोरादियाण जं बीभे । तस्सेव य रक्खट्टा, वइ-पागाराइ जं कुणति ॥९२४॥ अणिमित्त अकम्हभयं, ण वि किंची पासती तह वि बीभे । अदवीए रातीय व. आजीवभयं जहा अहणो ॥९२५॥ दकालो आएसो, कह जीवीई ति एस चितेति । मरणभयं सिद्धं चिय, मरणिमति महब्भयं जह तु ॥९२६॥ असिलोगो ति इ अयसो. जइ एव करिस्स होहिई अयसो। असिलोगभयं एयं, वेयणभय होइ मीयादी ॥९२७॥ सत्तविर्हं भयमेयं, एएसु यु विद्यं तु जं तणुए। तस्स विसोहिद्राणं मिच्छकारो पडिक्रमणं ॥९२८॥ सोगं आभोषण वि. चिन्तादि करंते विष्ययोगम्मि । तस्स त पायच्छित्तं, मिच्छकारो पहिक्रमणं ॥९२९॥ आभोगमणाभोगे, संबुडमम्संबुडे य अहसुहुमे । पंचिवहो बाउसिओ, सहमाभोगेण पगयेत्थं ॥९३०॥ कंदप्पादी तु पदा, पुब्बुत्तकमा तु दसमगाहाए ।

शोकः

बाकुशिद:

कंदप्पादी तु पदा. पुन्युत्तकमा तु दसमगाहाए । एव जहिंदिहेमू, तणुए सोही पिडकमणं ॥९३१॥ वितिय दार समत्तं, पिडकमणारिहमहुण तितयं तु । तदुभयदारं वोच्छं, तत्थ इमा होइ गाहा तु ॥९३२॥

संममभयातुरावतिसहसाणाभोगऽणप्पवसओ वा । सञ्बवयातीयारे, तदुभयमासंकिते चेव ॥१३॥ संभमोऽणेगविहो खल्ज, इत्थी अगणी व उदगमादीओ। भय दसुग मिलक्स् वा, मालक्तेणाइओ बहुहा ॥ ९३३॥ पढमिनतीयातिपहिं, परीसहेहाऽऽतुरो तु बहुहा तु । जावर चंचरा इणमो, समासतोऽहं पत्रवलामि ॥९३४॥ दन्वावति खेत्तावइ, कालावइ भावआवई चेव। दन्वावती तु दन्वं, जं दुलभं होति साहस्स ॥९३५॥ वित्थिण्णमडम्बादी, खेत्तावति एस होइ णातव्वा। कालावनी त ओमे, भावे त गुरू-गिलाणादी ॥९३६॥ महमाऽणाभोगा तू, पुन्तुत्ता अहुण वोच्छऽणप्पवसो । णप्यत्रसो उ परवसो, सो होति इमेहि कज्जेहि ॥९३७॥ वाइय पित्तिय सिंभिय, अहवा वी होज्ज सण्णिवाएणं। एतेहि अणप्पवसो, अहवा होज्जा इमेहि तु ॥९३८॥ जनखाइद्रसरीरो, मोइणिए अहव होज्ज कम्मुद्र । एतेहि अणप्पवसो, होज्जाही कारणेहिं तु ॥९३९॥ एव जहु दिहेसुं, संभममादीसु कारणेसुं हु। सन्वन्वयायियारं, णासं तु करेज्जऽणप्यवसी ॥९४०॥ पुरुवि जल अगणि मारुय, वणस्सती कुज्ज रुक्खरहणं वा। बिय तिय चउरो पंचिदियं व साह विराहेजा ॥९४१॥ एव ग्रुसावादादी, अणपज्जो आयरेज्ज साहृ तु । पिंडविसोहादीणि व, सेवेज्ज व उत्तरगुणाणि ॥९४२॥ एमादी आवण्णे. अतियारविसोहि तदुभयं होति । तदुभय गुरुमालोइय, मिच्छामी दुकडे बेति ॥९४३॥ आसंकिए तदुभयं, मूलगुणे उत्तरे य णातव्वं । परिखिदित ण वि सक्के, कतमक्रयं एस आसंका ॥९४४॥

तदुभयाई-प्रायश्वित्तम्

स**म्त्रम**भयौ

आपत्

अनात्मवशः

दुन्तिय दुन्मासिय, दुन्चे हिय एवमादियं बहुहा। उवउत्तो विण याणति, जं देवसियातियाराति ॥१४॥

'दु ति दुगुंछा' घातू, संजमजनरोहि कुन्छियं होति। तं मणसा जह चिंतिय, दुचिंतिय एव णातव्वं ॥९४५॥ एवं तू दुन्भासिय, दुचेट्टिय एवमेव णातव्वं । दुष्पिडलेहियमादी, आदीसद्देण बोद्धव्वं ॥९४६॥ एमादियं तु बहुसो, अणेगसो होइ हू मुणेतव्वं । उवज्तो विण जाणित, ण वि संभरती उ जं भणियं ॥९४७॥ आदिग्गहणेणं पुण, राइय पिक्खिय तहेव चन्नमासे। संवन्छिरिए य तहा, अतियारा होति बोद्धव्वा ॥९४८॥

सब्वेसु य बितियपए, दंसणणाणचरणावराहेसु । आउत्तस्स तदुभयं, सहसकाराइणा चेव ॥१५॥

पढमं उस्सम्मपदं, अवतादपयं तु वितिययं होति ।
सन्तमहणेणं पुण, सन्त अवराहा सुणेयन्ता ॥९४९॥
दंसण णाण चिरत्ते, जे अवराहा तु होन्ति गीतत्थे ।
कारणजयणाजुत्ते, एव जयंतस्स जे उ भवे ॥९५०॥
जह तिक्खउदमवेगे, विसमिम्म व विज्ञलम्म वसंतो ।
कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जह पावए पढणं ॥९५१॥
तह समणसुविहियाणं, सन्वपयत्तेण वी जयंताणं ।
कम्मोदयपचइया, विराहणा कस्सइ हवेज्ञा ॥९५२॥
प(पु ?)रिसज्जतणाजुत्ते, तस्स विसोहीय तदुभयं होति ।
सहसा वि होइ तदुभय, आवण्णे दंसणाईस्र ॥९५३॥
तदुभयदार समत्तं, विवेगदारं अयो पक्क्लामि ।
कस्स पुण विवेगो ज, तत्थ इमा होति गाहा तु ॥९५४॥

पिण्ड:

उपधि:

संख्या

क्रतयोगी

पिंडावहिसेज्जादी, गहियं कडजोगिणोवयुत्तेणं । पच्छा णायमसुद्धं, सुद्धो विहिणा विगिंचंता।।१६॥

'पिडि संघाए' धातू, पिंडो संघाओं भण्णए तम्हा । सो इह सचित्ताई, णत्रणवभेदो पुणेक्केको ॥९५५॥ पुढवी आउकाए, तेऊ वाऊ वणस्सती चैव । बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिंदिया चेव ॥९५६॥ एक्केको पुण तिविहो, पुढवीमादी सचित्तमादीओ। सत्तावीसपभेदो, पिंडेस समासतो होति ॥९५७॥ ओहिय ओवग्गहिओ, उनही दुनिहो समासतो होति । होड विभागेणं प्रण, जह भणिओ ओहजुत्तीए ॥९५८॥ भण्णति सिज्जा वसही, आदीसद्देण होति डगलादी । ओसहभेमज्जाणि य. आदीसहेण लहियाणि ॥९५९॥ कडजोगी गीयत्यो, जं वुत्तं होति जो उ गहियत्थो। विंडेसण-पाणेसण-वन्थेसण-सेज्जमादीणं ॥९६०॥ अहवा छेदसुयादीसुत्तत्थाहि जित्तो तु गीयत्थो । गहितुं तेणुवयुत्तेण णात पच्छा असुद्धं तु ॥ ९६१॥ केण असुद्धं ? भण्णति, उग्गमउप्पायणेसणादीहिं। अहवा वि संकियादी, सो सुज्झति विहिविगिचंतो ॥९६२॥

काल्रद्धाणाऽतिच्छियमणुग्गयत्थमियगहियमसढो उ। कारणगहिउव्वरिए, भत्तादिविगिंचणे सुद्धो ॥१७॥

पढमाऍ पोरिसीए, पिडगाहेत्ताण असणपाणादी। जो तइयमइकामे, कालातीतं इमं होति ॥९६३॥ अद्धोयणा परेणं, आणियःणीयं व असणपाणादी। एयऽद्धाणातीतं, सो सढ असढो वहकामो ॥९६४॥

कालातीतम्

अध्यातीतम्

बठा**ब**ठी

विगहा-किहादीहिं, होति सदो एस होति असदो तु।
गेलण्णवावडत्ता, होज्ज व सागारिया तत्थ ।।९६५॥
थंडिल्लअभावा वा, तेणाहिभयं व तत्थ होज्जाहि।
एमादीकज्जेहिं, असदो तृ होइ णायव्वो ॥९६६॥
एमादी असदो जं, विही विगिचंतो होति सुद्धो उ।
अणुदित अत्थमिओ वा, गहियं असदेणिमं वोच्छं॥९६७॥

अनुद्रता-स्तमने गिरि-राहु-मेह-महिया-पंसु-रयावरिओं होडज वा सविया। उग्गयबुद्धी साहू, एमेव य होयऽणत्थिमए ॥९६८॥ पच्छा णायमणुग्गय, अहव अत्थिमओं एस इण्हिं तु। एचण्णायंमि सढो, सुद्धों तु विही विगिचंतो ॥९६९॥ आयरिए य गिलाणे, पाहुणए तमग बाल बुट्टे य।

कारणगृही**त**म्

एनेसड्डा गहितं, तं होती कारणग्गहियं ॥९७०॥ विहिपरिभ्रुचुव्वरियं, विही विगिचन्त होति सुद्धं तु ॥ एयं विवेगदारं, एत्तो वोच्छामि वोसग्गं ॥९७१॥

व्युःसर्ग-प्रायश्वित्तम् गमणागमणविहारे, सुयंमि सावज्जसुविणयादिसु य । णावाणदिसंतारे, पायच्छित्तं वियोसग्गो ॥१८॥

गमनागमन-विहारः वसही गुरुमूला वा, गमणं अण्णत्य पुणरवागमणं।
एयं गमणागमणं, विहार सज्झायभूमी तु ॥९७२॥
तो सज्झायणिमित्तं, गमणं अन्नत्य होज्ञ साहुस्स।
गमणागमणिवहारं, णातव्वं होति एतं तु ॥९७३॥
समितिविद्यद्विणिमित्तं, एत्यं पिछत्त होति उस्समगो।
होति सुतं सुतणाणं, उद्देसगमादि णातव्वं ॥९७४॥
पट्टवणुद्दिसणे या, सम्रदिसणे तह य होतऽणुण्णाए।

श्रुतम्

कालपिडक्कमणिम्म य, सुयस्स एत्थं तु उस्सम्मो ॥९७५॥ पाणितवायादीयो, सावज्जो सुमिणतो तु णातच्वो । आदिम्महणेणं पुण, अणवज्जपसत्थएमुं पि ॥९७६॥

साबदस्बप्रम्

चस्सद्दगहणाओ, दुस्सउणा दुण्णिमित्त गहिया उ। पहमनयादीएसु य, सन्वेसु निसीहि उस्सग्गी ॥९७७॥ णावा चडव्विहा तू, सम्रद्दणाविक तिण्णि उ णदीए। उज्जाणी ओयाणी, तिरिच्छगामी भवे तइया ॥९७८॥ जंघद्धा संघट्टो, णाभी लेबोवरि तु लेबुवरि । बाहोडुपाइओ खळु, णदिसंतारेवमादीओ ॥९७९॥ णावादीहि पएहिं, जाव तु उडुपादिसंतरंती तु । सन्वत्थ तु पच्छित्तं, जतणाजुत्तस्स उस्सग्गो ॥९८०॥ भत्ते पाणे सयणामणे य, अरहंतसमणसेज्जासु । उचारे पासवणे, पणवीसं होन्ति उस्सासा ॥१९॥ भत्तं पाणं [सय]णं. सयणं सेज्जा उ होति णातन्त्रा । 'आस उवेसण' धातू, उवेसणं आसणं होति ॥९८१॥ 'अरह पूयाए' धातू, पूयामरिहंति तेण अरिहंता। अरिहंति वंदण णमंसणं च तम्हा तु अरिहंता ॥९८२॥ कोहाई उ अरी ऊ, अहव रयं कम्म होइ अट्टविहं। अरिणो व रयं इंता, तम्हा उ इवंति अरिहंता ॥९८३॥ सयणं सेज्ज पहिस्सय-भत्तादी जाव होति सेज्जा ज। इत्थसयाउ परेणं, गमणागमणम्मि सन्त्रत्थ ॥९८४॥ समितिविसद्धिणिमित्तं, जयणाजुत्तस्स होति उस्सग्गो । पणुवीसं उस्सासा, उद्यारमयो तु वोच्छामि ॥९८५॥ उच्चरती उचारं, पस्सवती तेण होति पस्सवणं। सण्णा काइय कमसो, अहव इमो होइ सहस्यो ॥९८६॥ उचरति काइयं तू, जम्हा तेणं तु होति उचारो। पायं सवती जम्हा, तम्हा तू होति पासवणं ॥९८७॥ परिठविष्सेष्सुं, इत्थसया आरतो व परतो वा । सोही काउस्सम्मो, पणुवीसं होति ऊसासा ॥९८८॥

नावा नदीस-न्तारः

अईन्

हत्थसतबाहिरातो, गमणागमणाइएसु पणुवीसं । पाणिवहादिसुमिणए, सतमृद्वसतं चउत्थम्मि ॥२०॥ गाहद्भ पढम कंठं, पाणवहे सुमिणदंसणे रातो । कतकारियादिएसं, विसोहि ऊमाम सतमेगं ॥९८९॥ एव मुसावादादिसु, उस्सग्गो जाव होति णिसिभत्तं । सतग्रस्सामाण भवे, अद्वसतं पुण चडत्थम्मि ॥९९०॥ देसिय राइय पिक्लिय, चाउम्मासे तहेव वरिसे य। सतमद्धं तिण्णि सता, पंच सतऽहत्तर सहस्सं ॥२१॥ देसियमादिपदाणं. कमसो ऊसासमाणमेयं तु । ते पुण कह विण्णेया, उस्सासा ? तमिह वोच्छामि ॥९९.१॥ लोयस्मुज्जोयगरा, चउरो एगं सनं मुणेयव्यं। पंचासा दोहि भवे, तिण्णि सया होंति बारसहिं ॥९२२॥ पंच सया वीसाए, अट्टमहस्सं च होति चत्ताए। देसियमाजस्सम्मे, होई एयं तु परिमाणं ॥९९३॥ अहवा-पणुवीस अद्धतेरस, सिलोग पण्णत्तरिं च बोधव्या । सतमेगं पणवीसं, दो वावण्णा य वरिसेणं ॥९९४॥ उद्देस समुद्देसे, सत्तावीसं तहेवऽणुण्णाए । अहेव य ऊसासा, पहुवण-पिङक्मणमादो ॥२२॥ उद्देसय अज्झयणे, सुतखंधे चेव होति अंगे य। उद्दिसणादिपयाणं, सत्तावीसं त उस्सासा ॥९९५॥ पट्टबणपिकमणे, अहस्सासा उ होति उस्सग्गो। आदिग्महणेणं पुण, पहुत्रयंते वि अणुओगं ॥९९६॥ कालपहिक्सणे वि य, अवसडणे चैत्र होति सञ्बत्य । उस्सासा अद्व भवे, काउस्सम्मो म्रणेतन्वो ॥९९७॥

उच्^{ञ्च}।**स**स्य मानम् उद्देसय अज्झयणे, सुतरवंधंगेसु कमसो पमादिस्स। कालाइकमणादिमु, णाणायाराइयारेसु ॥२३॥ णाणायारो दुविहो, ओहेण विभागयो य णातव्वो । उद्देसय अञ्झयणे, स्रयखंधंगे विभागो त ॥९९८॥ उद्देसादिचउण्ड वि. अतियारो अद्रहा मुणेतन्वो । पत्तेयं पत्तयं, कालादि इहं पवयणस्मि ॥९९९॥ काले विणए बहुमाणे उवहाणे तहा अणिण्हवणे। वंजण अत्थ तदुभए, अट्टविहो णाणमायारो ॥१०००॥ जो तु करेति अकाले, सञ्झायं कुणइ वा असञ्झाए। सङ्झाए वा ण कुणति, कालतियारी भवे एस ।।१००१॥ जचादिमद्रम्मत्तो, थद्धो विणयं ण कुव्वति गुरूणं । हीलयइ व जो तु गुरुं, विणयइयारो भवे एस ॥१००२॥ सुतणाणम्मि गुरुम्मि व. भत्ती वहुमाण जो तु ण करेति। भत्ती होयुवयारी, बहुमाणी गोरवसिणेही ॥१००३॥ बहुमाणे अइयारो, एमेसो विण्णिओ समासेणं। उवहाणं होति तवो. आयंबिलमादिओ सो य ॥१००४॥ जो नं ण कुणति साहू, अह्वा वि ण सद्देयमुबहाणं। सो उवहाणितयारो. णेण्हवणेत्रो पवनखामि ॥१००५॥ णिण्हवणं अवलवणं, अग्रुगसगासे अहं णऽहिज्ञामि । अण्णं जुगपदाणं, आयरियं सो उ उद्दिसति ॥१००६॥ णिण्हवणे अतियारो, एमेसो विण्यतो समासेणं ! वंजणमादिपदाणं, अतियारमतो पवनखामि ॥१००७॥ भणितं वंजणमक्खर, तिणिष्फिण्णं सुतं सुणेतन्वं । पागतिणबद्धमेयं. सक्क्यमादी करेजाहि ॥१००८॥ धम्मो मंगलमुकटं, दया संवर णिजारा। तस्सेव य अत्थस्सा. अण्णाणि य वंजणाणि करे ॥१००९॥

अष्ट ज्ञाना तिचाराः

अहवा मत्ता बिंदू, अण्णभिहाणेण बाधितं अत्थं। वंजिज्जित जेण अत्थो, वंजणिमिति भण्णते सुत्तं ॥१०१०॥ वंजणभेदेण इहं, अत्यविणासी हवेडज त कयाई। अत्थविणासा चरणं, चरणविणासे अमोक्खो त ॥१०११॥ मोक्खाभावातो प्रण, पयत्तदिक्खा णिरत्थिया होति । जम्हा पते दोसा, तम्हा सुत्तं ण भिदिज्जा ॥१०१२॥ वंजणमेदो भणिओ, अत्थे मेदं अतो पवक्खामि। अत्थं त वियप्पंती, तेहिं चिय वंजणेहऽण्णं ॥१०१३॥ आयारे सुत्तमिणं, आवंती पंचमम्मि अज्झयणे। आवंती केआवंती. छोगंसी विपरिम्रसंति ति ॥१०१४॥ अद्वार्ष अणद्वाए, एतेसं विष्पराम्रसंती तु । एयं सत्तं आरिस, अत्थ विकलेतिमं अण्णं ॥१०१५॥ आवंनी होति देसो, तत्थ तु अरहट्टकूवजा केया। सा पडिया हेट्टे तू , तं लोगो विष्पराम्रसङ् ॥१०१६॥ अत्यविसंवाएवं, तदुभयदारं इमं पवक्खामि । जत्य द्व सुत्तत्था खल्जु, दो वि विणस्मैति नं च इमं ॥१०१७॥ धम्मो मंगलमुकत्थो, अहिंसा पव्यतमत्थए। देवा वि तस्स णस्संति, जस्य धम्मे सया मती ॥१०१८॥ अहाकरेष्ठ रंधंति, कट्टेसु रहकारी उ। रण्णो भत्तम्म णो जत्थ, गहभो जत्थ दीसति ॥१०१९॥ एसो तदुभयभेदो, दोण्णि वि णासंति एत्थ स्रतत्था। एवं तु ण कातव्वं, दोसा ते चेव पुट्युत्ता ॥१०२०॥ णाणायारो एसो, अट्टविगप्पो जिलेहिं पण्णतो । उद्देसनमादीणं, पच्छित्तदितं इमं कमसो ॥१०२१॥ णिव्विगतिय पुरिमङ्गेगभत्त आयंबिलं चऽणागाढे। पुरिमादी समणंतं, आगाढे एवमत्थे वि ॥२४॥

उद्देसे णिव्विगति, पुरिमहुं सोहि होति अडझयणे।
पुतस्वंधे एगभत्तं, अंगम्मि य होति आयामं ॥१०२२॥
एवं ताऽणागाहे, आगाहजोगम्मि होति पुरिमादी।
अंतम्मि होति खमणं, एमेव य होति अत्थे वि ॥१०२३॥

सामण्णं पुण सुत्ते, मतमायामं चउत्थमत्थम्मि । अप्पत्तापत्तावत्तवायणुद्देसणादीसु ॥२५॥

ओहो सामण्णं तू. सन्वम्मी चेव होति सुत्तम्मि । अविसेसिय सुत्तत्थे, आयाम चउत्थ कमसो तु ॥१०२४॥ अप्पत्तो दुविहो तू, सुतेण अत्थेण चेव बोद्धन्त्रो । पुन्तित्र सुत्त अत्थे, बितिय अपत्तो सुणेतन्त्रो ॥१०२५॥ अप्पत्त त्ति गतम् ॥

तिन्तिणिआदि अपत्तो, अन्त्रसों वए सुए न णातन्त्रो । वायंतस्स तु एते, चउगुरुया उद्दिसादिसु य।।१०२६॥ पत्तमवाएंतस्स वि, उद्दिसणादीसु चेत्र य पदेसु । चउगुरुया बोद्धन्त्रा, अववाए कारणा सुद्धो ॥१०२७॥

कालाऽविसज्जणादिसु,मंडलिबसुहापमज्जणादिसु य। णिवीतियं अकरणे, अक्षणिसेज्जा अभत्तहो ॥२६॥

कालाविसज्जणाती, ण पिंडकंनं तु जिमह कालस्स ।
तिविहा य होति मण्डली, वसुहा भूमी मुणेनच्या ॥१०२८॥
भोयण सुत्ते अत्थे, तिविहेसा मंडली मुणेयच्या ।
कालऽविसज्जणे मंडलिभूमीअपमज्जणे विगती ॥१०२९॥
सुत्ते वा अत्थे वा, ण करि णिसेज्जं च अक्ख ण रएति ।
चस्सद्देणं वंदण, उस्सम्म ण कुच्चित चडत्थं ॥१०३०॥

आगाढाऽणागाढम्मि सब्धंगे य देसभंगे य । जोगे छट्ट चउत्थं, चउत्थनायंत्रिलं कमसा ॥२७॥ मोगो तु होति द्विहो आगाहो चेव तह अणागाहो। दुरिहे वि हो त भैगो मध्ये देसे य णातव्यो ॥१०३१। मन इभंगे छहं होति च उत्थ तु देसे आगाहै णागाहै तु चडार्थ, वच्चे देसे य आवामे ॥१०३२॥ कह भंगो सञ्बद्मी कह वा देसिक्म एव चोएति। भण्णति एडिंगडाहि माहाहि समाप क्वामि १०३३॥ दिगात अणहा भुजार । न वृणह आयी बले भ सहहति । एसी उ सव्धांगा देसे भंगी इसा होति । १०३८॥ काउस्सग्गमकाउं, भुंजइ भोत्तृण वा कुणति पच्छा । संदिसह त्ति व भणती एवं देसे भवे भंगो ॥१०३५ णाणाचारो भणिओ. अट्टविहो एस तु समासेण । अहुणा अट्टविहो चिय. आयारो दंसणे होति ॥१०३६॥ णिम्संकित णिकंखित, णिव्वितिगिच्छा अमुहदिही य। उववृह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ट ॥१०३७॥ दंसणयारी अद्वहा एमेसा होइ तू समासेण । प्तेसि विवक्तो ऊ, अइयारो होति सो य इमो ॥१०३८॥ संसयकरणं संका. कंखा अण्णोज्णदंसणभाहो । वितिगिच्छा अप्पणो ऊ, सोम्गति होज्जा ण वा वि ति॥१०३९॥ अहवा वि दुगुंछा ऊ, विड त्ति साहू हवंति णातन्त्रा । ते उ दुगुंछति णिचं, मंडलि मोए य जल्लादी ॥१०४०॥ णेगविहा इड्डीओ, पूर्व परितित्थयाण दडूण। सोत्णं वा जस्स उ, मइमोहो होति मूढेसा ॥१०४१॥ जनवृह होति दुविहा, पसत्य अपसत्यिया य णातव्या । साइणं तु पसत्था, चरगादीणऽप्पसत्था तु ॥१०४२॥

अष्टघ' दर्शनाच र:

दंसणणाणचरित्ते, तवसंजमविणयवेयवद्यादी । अन्ध्रुज्जयस्य उच्छाइबद्धणं होति त पसत्था ॥१०४३॥ अपसत्था उवबूहा, अण्णाणे अविर्तोय मिन्छते । चरगादी बहुते, उबबूहति दुविह एउ गता ॥१०४४॥ थिरकरणा वि य दुविहा, पसत्थ इयरा य होति णातन्वा। साहूण पसत्था तू. णाणादीएहि सीयंति ॥१०४५॥ बहुदोसे माणुस्से, मा सीद थिरीकरेति एवं तु। एस पसत्था भगिया, अपसत्येत्तो पत्रक्लामि ॥१०४६॥ मिच्छादिद्वीए तू, चरगादी थिरिकरेंत अपसत्था। पासत्यादी अहवा, थिरीकरेन्तम्मि अपसत्था ॥१०४७॥ बच्छाञ्चा वि य दुविहा, पसत्थ इयरा य होति णातन्त्रा । आयरियादि पसत्था, पासत्थादीण इयरा तु ॥१०४८॥ आयरिय गिलाणे या, पाहुणए असहु-बाल-बुड़ादी । आहारोबिहमादीण, समाहिकरणं पसत्यं तु ॥१०४९॥ पामत्थोसण्णाणं, कुसोल-संसत्त-णीयवामी गं। अहव गिहत्थादीणं, एमादी अप्पसत्था तु ॥१०५०॥ दुविहा पहावणा वि य, पसत्य इयरा य होति णायवा । तित्थगरादि पसत्था, मिच्छत्तऽण्णाणे अपसत्था ॥१०५१॥ तित्थयर प्रवयणे वा, णाणादीणं च तिण्णि वी स्रोप्। मग्गं णेव्याणस्स उ. पभावयंते पसत्येसा ॥१०५२॥ मिच्छत्तऽण्णाणादो, पभावयंतेस होति अपसत्था । एसो दंसणयारो, पच्छितं तेसि वोच्छामि ॥१०५३॥ संकादिएसु देसे, लमणं मिच्छोवबृहणादिसु य। पुरिमादी लमणंतं, भिक्खुपमितीण य चतुण्हं॥२८॥

संकादी अट्ट पदा, देसे सन्वे य होति णायन्वा । संकादीण चउण्हं, देसे खमणं त णायव्वं ॥१०५४॥ उववृहादिचडण्ह वि, अपसत्थै देसे होयभत्तद्वं। सर्विम्म होति मूलं. एवं संकाइएसुं पि ॥१०५५॥ एवं ता ओहेणं, अविसेसो होति एस पच्छिते। पुरिसविभागेणऽहुणा, देसे सोही इमा होति ॥१०५६॥ संकादो अद्वय्नु वी. देसे भिक्खुस्स होति पुरिमडं। वसभे एकासणयं, आयामं होति उवज्झाए ॥१०५७॥ आयरिय अभत्तद्वो, एस विभागेण होइ सोही तु। अहुणा जनवूहादीण, अकरणें सोही इमा जियणो ॥१०५८॥ एवं चिय पत्तेयं, उववूहादीण अकरणे जतीणं । आयामंतं णिव्वीतिआदि पासत्यसृहेसु ॥२९॥ एवं चिय पुरिमदं, अणंतरुहिद्वपुरिसभैएणं। पिह पिह जित ण करेती, उववृह पसत्थ साहुणं ॥१०५९॥ एव थिरीकरणं तू, वच्छल्ल पभावणा पसत्थेस् । पवयण-जइमादीणं, अकरिते तत्थिमा सोही ॥१०६०॥ भिन्खुस्स तु पुरिमडूं, वसभा भत्तेक होति सोही तु । अभिसेगे आयामं, आयरिए होयऽभत्तहं ॥१०६१॥ गाहापच्छद्धस्साऽणन्तरगाहाऍ होति संबंधो । एयस्स वियत्तपए, संबंधो तं चिमं वोच्छं ॥१०६२॥ परिवारादिणिमित्तं, ममत्तपरिपालणादि वच्छले । साहम्मिउ त्ति संजमहेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥३०॥ पासत्थोसण्णाणं, क्रसील-संसत्त णीयवासीणं। जो कुणित ममत्तादी, परिवारणिमित्तहेतुं च ॥१०६३॥

तस्स इमं पिच्छत्तं, निव्वीयादी त अंते आयामं। भिक्खमादीयाणं, चउण्ह वी होति जहकमसी ॥१०६४॥ आदिग्गहणेणं पुण, सट्टा सण्णायमा व सेज्जनरा। दाइंनाऽऽहारादी. तेण ममत्तादि कुज्जा तु ॥१०६५॥ अह पुण साहमिम त्ती, संनमहेउं च उद्धिमिस्सति वा। कुलगणसंघगिलाणे, तप्पिस्सित एवबुद्धी तु ॥१०६६॥ एव ममत्त करेंते, परिवालण अहव तस्स वच्छल्लं। दहआलंबणिचतो, सुज्झति सन्बत्थ साह तु ।। १०६७॥ एमो अट्टवियणो, अतियारो दंसणे समक्खातो । चारित्ते अतियारं, इणमो उ समासतो बोच्छं ॥१०६८॥ एगिंदियाण घट्टणमगाढगाढपरितावणोद्दवणे । णिव्त्रीयं पुरिमर्डं, आसणमायामगं कमसो ॥३१॥ एगिंदिय पुढवादी, जा पत्तेया वणस्सती होति । एतेसि पंचण्ह वि, पिह पिह संघट्टणे विगती ॥१०६९॥ परियावियऽणागाढे, पुरिमड्रं गार्ढे होति भत्तेक्कं। उद्दवणे आयामं. एत्तो अणंताईणं वोच्छं ॥१०७०॥३१॥ पुरिमादी समणंतं, अणंतविगलिंदियाण पत्तेयं। पंचिंदियम्मि एकासणादि कल्लाणगमहेगं ॥३२॥ साहारणवणकाए, बिय तिय चउरिंदिए य विगलम्मि । पतेसि चडण्हं पी, पिह पिह संघट्टणे पुरिमं ॥१०७१॥ परिआवित अणागाहे. भत्तेक्कं गाहे होति आयामं। उद्दवणेऽभत्तद्रं, पंचिदिविसोहिमं वोच्छं ॥२०७२॥ पंचेंदियसंघट्टे, एकासणयं त होति णातव्वं । अणगाहे आयामं, परिताविए गाहे भत्तद्वं ॥१०७३॥

उद्दवणे कल्लाणं. एगं चिय होति तत्थ णायव्यं। पढमवए सोहेसा, पमायसहियस्स णायव्वा ॥१०७४॥३२॥ मोसादिसु मेहूणविज्जिएसु दब्जादिवत्थुभिण्णेसु । हीणे मज्झकोसे, आसणआयामसमणाइं ॥३३॥ मोसाऽदत्तादाणं, परिग्नहो चेत्र होति णातव्त्रो । एते मोसादिवया. मेहुणवज्जा मुणेतव्या ॥१०७५॥ तत्थ ग्रुसं चउभेदं, दब्वे खेत्ते य काल भावे य। तत्थ तिहा दव्वप्रसं, जहण्ण मज्झे तहुक्कोमं ॥१०७६॥ एवं खेत्तम्रसं पी, कालमुसा तह य होति भावमुसं। हीणं मज्झकोसं, सभेदिभण्णं मुणेतव्वं ॥१०७७॥ एवमदत्तपरिग्गह, दब्बादी चडह होन्ति णायब्बा। हीणा मज्झकोसा, तिविहं पत्तेय पत्तेय ॥१०७८॥ मोसम्मि चउन्मेदे, दन्त्रादो होण मज्झ उक्कोसे । द्व्वादीणं कमसो, इवं तु सोहि पत्रक्वामि ॥१०७९॥ दव्यप्रसे तु जहण्णे, भत्तेक्कं मज्झें होति आयामं । उक्कोसेस चउत्थं, एवं खेत्तादिएसं पि ॥१०८०॥ एवमदत्तपरिगाह, दच्वादीसं त एस चेव गमो। हीणे मज्ब्रुकोसे, आसण-आयाम खमणाई । १०८१॥ एव ग्रसावायादिस, सोही भणिया समामतो एसा । एत्तो त राइभत्ते, सोहि बोच्छं समासेण ॥१०८२॥३३॥

लेवाडयपरिवासे, अभत्तहो सुकसण्णिहीए य। इतराय छडमत्तं, अडमगं सेस णिसिभत्ते ॥३४॥ लेवाडय कंटोत्तं, संदिवहेडादि अगयमादो वा। परिवासेन्ते एसि, सोही साहुस्स भन्नड ॥५०८३॥

इतरा य गिल्लपिणहि. गुलघनतेल्लादिया मुणेतन्त्रा । परिवासेते नेसि सोही छट्टं तु माहम्म १०८४ णिसिभने सेम निविद्दं, दियगहि। राओग्रूच पढमं ता। राओगह दिवसुत्तं गहर्भुनणसभययो रातो १०८५॥ निविदेवं णिसिभनं, साही पत्थं त अद्भमं होति । तिविद्वस्मि वि पत्तेयं ए समत्ते न णिसिभत्तं १०८६ ३४॥ उद्दसियचरिमतिए, कम्मे पासंडसघरमीसे य। बादरपाहुडियाए, सपचवायाहडे लोमे ॥३५॥ अ छ उ न। गाहन्था, एतेमि उगमादि अहुः । लक्खण आवत्ती दाणमेव वोच्छं मविन्थरतो ॥१०८७॥ सोलम जगमदोसा, सोलस जपायणाएँ दोसा उ। दस एमणाएँ दोसा. संजोयणमादि पंचेव ॥१०८८॥ सो जगमो चतुद्धा, णामादी तत्थ दिव्यमो होति। जोतिसतणोसहीणं, मेहरिणकरेवमादीणं ॥१०८९॥ अहवा वि लडुगादी, भावे तिविहुग्गमो सुणेतव्वो । दंसण णाण चॅरिने, चरिचुग्गमेण एत्थं अहीगारो ॥१०९०॥ कि कारणं चरित्ते, अहिगारी एत्य होति भणिनी तु ?। चोदग ! मुण चारिचे, जे तु गुणा ते तु होन्ति इमे ॥१०९१॥ दंसणणाणप्यभवं, चरणं सुद्धे तु तम्मि तस्सुद्धी । चरणेण कम्मसुद्धी. जगमसुद्धी चरणसुद्धी ॥१०९२॥ पिंडोविहसेजाम, जेण असुदास चरण ण विसुज्झे। पिंडोविहसेजासु, सुद्धासु चरणसुद्धी उ ॥१०९३॥ तो चरणसृद्धिहेतुं, पिडस्म उ उग्गमेण अहिगारो । तस्स पुण जगगमस्सा, सोलम दारा इमे होन्ति ॥१०९४॥ आहाकम्मुद्देसिय, पूतीकम्मे य मीसजाये य । वनणा पाहुडियाएं, पायोयर कीत पामिचे ॥१०९५॥

षोडश उद्गमदोषाः आधाद र्भ

परियदिए अभिद्दे डिभण्णे मालोह्डे इय । अच्छेज्जे अणिसट्टे, अज्ङ्वीयरए य सोलसमे ॥१०९६॥ एते सोलस दारा, उद्दिद्वमियाणि विवरणं वोच्छं। एतेसि पढम आहा. तस्स इमे होति णव दारा ॥१०९७॥ आहाकम्मियणामा, एगट्टा कस्स वा वि किं वा वि। परपक्ते य सपक्ते, चडरो गहणे त आणादी ॥१०९८॥ तत्य इमे णामा खलु, आहाकम्मस्स होन्ति चत्तारि । आह-अहेकम्मे या, अहयम्मे अत्तकम्मे य ॥१०९९॥ ओरालसरीराणं. उह्दवणऽइवायणं त जस्सद्रा। मणमाहित्ता कुव्वति, आहाक्रम्मं तयं बेन्ति ॥११००॥ ओरालग्गहणेणं, तिरिक्खमणुयाऽहवा सुहुमवज्जा। उद्दवणं उत्तासण, अतिवातिवविज्ञया पीला ॥११०१॥ काय-वइ-मणा तिव्णि उ, अहवा देहायु-इंदिय-प्पाणा । सामित्त अवायाणे, होइऽतिवाओ उ करणम्मि ॥११०२॥ हिययम्मि समाहेउं, एगमणेगे व गाहगे जो ता। वहणं करेति दाता, कायाण तमाहकम्मं तु ॥११०३॥ जस्सद्वा तं त कतं, तं जो भ्रंजित सतं त कायवहं। अणुमण्णइ आहेइ य, स कम्मवन्धं तमायाए ॥११०४॥ अवि य हु विवाहमङ्गे, भणितं भ्रुंजंतों आहक्रम्मं तु । पसिढिलबन्धादीया, पगडीओ करेति धणियादी॥११०५॥

आहेति गतम् ॥

संजमठाणाणं कंडगाण लेस्साठितीविसेसाणं । भावं अहे करेती, तम्हा तु भवे अहेकम्मं ॥११०६॥ सं एगीभावम्मि, जम उवरम एगीभावउवरमणं । सम्म जमो वा संजमो, मण-वइ-कायाण जमणं तु॥११०७॥

संयमश्रेणिः

चिद्धइ संजमों जिह्यं, तं होइ हु संजमस्स ठाणं हु।
तं पुण चिरत्तपज्जव, होन्ति अणंतेक्ठाणं हु॥११०८॥
संजमठाणमसंखा, उ कंडगं कंडगा असंखा उ।
हवित उ लेसाठाणं, ते तु असंखेज्ज जवमज्झं ॥११००॥
तत्तो परिहायंता, लेसा कंडा य संजमद्वाणा ।
एरिसयाणमसंखा, लोगा उ हवंति ठाणाणं॥१११०॥
एसा संजमसेढी, तत्थ विद्युद्धीसु ठाणमादीसु ।
वृद्धेत्कोसाजसुरिठितिजोगेसु होतूणं ॥११११॥
तं शुंजमहेकम्मं, हेट्टिल्लेऽहिट्टवेति अप्पाणं ।
सुत्ते उदियमहे तू, करपकरिचणोविचणमादी (१)॥१११२॥
वंधित अहेभवाउं, पकरेति अहोसुहाइँ कम्माइं ।
घणकरणं तिच्चेण उ, भावेण चयो उवचयो तु ॥१११३।
तेसिं सुरूण उद्धण अप्ययं दुग्गतीऍ पवडंतं ।
ण चएति विहारेजं, अहकम्मं भण्णए तम्हा ॥१११४॥
अहेकम्मे त्ति गतम् ॥

अद्वाएँ अणद्वाए, छक्कायपमद्दणं तु जो कुणित ।
अणियाए य णियाए, बेन्ति तु दन्वाऽऽयहम्मं ती ॥१११५॥
जाणंतमजाणंतो, बहेति णिद्दिसिय ओहओ वा वि ।
जाणगमजाणए या, भणिता णिय अणिय होतेसा ॥१११६॥
दन्वायहम्ममेयं, भावाया तिण्णि णाणमाईणि ।
परपाणपाडणस्यो, भावायं अप्पणो हणित ॥१११७॥
णिच्छयणयस्स चरणा-ऽऽयवियाये णाण-दंसणबहो वि ।
ववहारस्स च चरणे, हयम्मि भयणा च सेसाणं ॥१११८॥
आयाहम्मग एयं, एत्तो बोच्छामि अत्तकम्मं तु ।
जो परकम्मं अत्तीकरेति तं अत्तकम्मं तु ॥१११९॥

आहाकम्मपरिणयो, फासुयमवि संकिलिट्टपरिणामो। आतियमाणो बज्झति, तं जाणस्र अत्तकम्मं तु ॥११२०॥ परकम्ममत्तकम्भीकरेति तं जो उ गिण्हिजं अंजे। चौषति परिकरिया, कहण्णु अण्णत्थ संकमति ? ॥११२१॥ भण्णइ परप्पन्तं, जह विसमइयं तु मारगं होति । तह परकडे वि वंधो, परिणामवसेण जीयस्स ॥११२२॥ बेती परकडभोयिण, तो तुब्भ वि एव होति बंधो उ। जह अण्णत्थ पडते, कुडे जो पडति सो बज्झे ॥११२३॥ ग्रहराष्ट्र जो पमत्तो. जो य अदक्खो स बज्झए तत्थ । अपमत्तो ण वि बज्झति, तहेव दक्खे य जो होति ॥११२४॥ इय जो यु अप्पमत्तो. मणवायाकायजोगकरणेहिं। सो तु ण बज्झति णियमा, बज्झति इयरो परकडे वि ॥११२५॥ कामं सयं न कुन्वति, जाणंतो पुण तहावि तग्गाही। बड़ेति तप्पसंगं, अगिण्हमाणो उ वारेति ॥११२६॥ तम्हा उ परकडिम्म वि, अत्तीकरणं त होयऽसुद्धेहिं। मणमादीहि कई पुण, अत्तिकरे ? भण्णति इमेहिं ॥११२७॥ पहिसेवण पडिस्रुणणा, संवासऽणुमोयणा चडण्हं पि। प्एडिं पगारेडिं, अत्तिकरे तित्थमे णाया ॥११२८॥ पहिसेवणाएँ तेणा, पहिसुणणाए य रायपुत्ती तु । संवासम्मि य पछी, अणुमोयणे रायदुद्दो उ ॥११२९॥ आहाकम्मियणामा, एते चडरो समासतो भणिया । एगद्विताणि अहुणा, वोच्छामि समासतो चेव ॥११३०॥ एगट्ट एगवंजण, एगट्टं णाणवंजणं चेव। णाणह प्रावंजण, णाणहा णाणवंजणया ॥११३१॥ जह खीरं खीरं चिय, एगट्टं एगवंजणं दिट्टं। एगड णाणवंजण, दुद्ध पयो वालु खीरं च ॥११३२॥

णाणहमेगवंजण, गोमहिसअजाइयाण खीरं ति। णाणहु णाणवंजण, घडपडकडसगडरहमादी ॥११३३॥ एविमहमाइकम्मं, आहाकम्मं ति पढमओ भंगो । आहा अहेकम्मादी, बितिओ सिक्किन्द इव भंगो ॥११३४॥ तिततो भंगो तू आतकम्ममहकम्म पणगमादी य। आहाकम्म पडुचा, णियमा सुन्नो चडत्यो उ ॥११३५॥ इंदर्श जह सद्दा, प्रांदरादी तु णातिवत्तंति । अइ-आइ-अत्तकम्मा, तहा अहे णातिवर्त्तति ॥११३६॥ आहाकम्मेण अहे, करेंति जं हणति पाणभृयाई। जं तं आतियमाणी, परकम्मं अत्तणी कुण्ड ॥११३७॥ पगद्वितदारमिणं, अहुणा कस्स कडमाहकम्म भवे ?। भण्णति साहम्मिकडं, सो बारसहा इमो होति ॥११३८॥ णामं उवणा दविए, खेत्ते काले य पवयणे लिंगे। दंसण णाण चरित्ते, अभिग्गहे भावणाहि च ॥११३९॥ णामेणं साहम्मी, जाव उ कालेण सन्त्र बोधन्त्रा। पवयण लिंगेणं वा, साहम्मिय पत्थ चर्जांगो ॥११४०॥ प्वयणमणुम्म्यंते, दंसणमादी उ भावणा जाव। सन्बत्थ तु चलभंगा, जोएयन्त्रा जहाकमसो ॥११४१॥ एवं लिंगेणं पी, तह दंसणमादिएहिँ चडभंगा। भइएस उवरिमेस, हेट्टिझपयं त छड्डेजा ॥११४२॥ प्वं बुद्धीए तू, सन्वे वि जहक्रमेण जोएजा। चउभंग जाव चरिमो, अभिग्गहे भावणाहि च ॥११४३॥ पत्तेयबृद्धि णिण्हय, उवासए केवली य आसज्ज । खड्याइए य भावे, पहुच भंगे तु जोएजा ॥११४४॥ जत्य तु ततिओ भंगो, ण तत्य कप्पति तु सेसए भयणा । तित्थगरिणिण्डञोवासगादि कप्पे ण सेसाणं ॥११४५॥

कस्स ति जहुद्दिई, एरिस साहम्मियाण ण वि कप्पे। किं ती आहाकम्मं, असणाईयं इमं तं च ॥११४६॥ सालीमाई अगहे, फले य संठी य साइमं होति। तस्स कडणिट्टियम्मि, सुद्धासुद्धे य चत्तारि ॥११४७॥ भंगा I कोइवरालगगामे, वसही रमणिज्ञ भिक्ख सज्झाए। खेत्तपिंडलेह संजय, सावयपुच्छुज्जुए कहणा ।।११४८॥ जुज्जति गणस्स खेत्रं, णवर गुरूणं ति णन्थि पायोग्गं । सालि त्ति कए रूपण, परिभायण णियगगेहेसु ॥११४९॥ वोळेंता ते व अण्णे वा, जाव तु किमियं ? तिकहिय सब्भावे। वज्जेन्ति एव णाए, अहवा अव्लं वयंती तु ॥११५०॥ ष्सऽसणे कम्पं तू, इवेज्ज कह पाणगे इवेज्जाहि ?। तह वि य साहु ण उन्ती, सावगपुच्छा दगं लोणं ॥११५२॥ अह ताव सात्रयो तू, खणेज्ञ महुरोद्गं तिहं अगडं। अच्छति य ढिक्किएणं, जावाऽऽगय साहुणो तत्थ ॥११५२॥ ष्त्य वि तहेव जाणण, वज्जण तह चेव होति णातन्वा। एवं खाइम सातिम, णेयव्य जहक्रमेणं तु ॥११५३॥ कक्किंडिंग अंबगा वा, दाडिम दक्का व बीयपूरा वा। एमाड खाइमं त् . साइम तह तिगडुआदीयं ॥११५४॥ कि आहायम्मं ती, एतं तं विण्णयं समासेणं । परपक्त सपक्ते ती. अहुणा दारं अणुष्पत्तं ॥११५५॥ वरपक्लो तु गिहत्थो, समणा समणी य होइ तु सपक्लो । एत्य कडनिट्रिएहिं, चउभंगो होइ तं वोच्छं ॥११५६॥ तस्स कड तस्स निष्टिय, तस्स कडऽण्णस्स निष्टियं चेव । अण्णकद तस्स निष्टिय, अण्ण कडं निष्टियऽण्णस्स ॥११५७॥ वाविता ऌ्या मलिया, कंडित एगच्छड कडा जे तु। तिच्छड निष्ठिय होन्ती, ते रद्धा दुगुणमहकम्मं ॥११५८॥

कडनिद्रियाण लक्खणिमणमो त समासतो सुणेतव्वं । फासुकडं रद्धं वा, णिट्टियमितरं कडं होति ॥११५९॥ समणह वावियादी, जा दछहा एय होति तस्स कडं। तस्सट्ट तिछडरद्धं, णिट्टितमेसो पढमभंगो ॥११६०॥ समणह जाव दुछडा, जबरि य तुरियऽग्ण कार्णुपण्णं। तेसऽह तिछडरद्धा, वितिभंगो एस णानव्वो ॥११६१॥ जा दुछडा अत्तट्टा, णवरि य साह तु पाहणा आया । तेसञ्ड कया निछडा. तनिभंगो एस णानव्यो । ११६२॥ आयट्टा जा दुछडा, आयट्टा चैव तिछडरद्धा य । एस चडत्थो भंगो, कतरं कच्चे ण कप्पइ वा ? ॥११६३॥ पढमततिए ण कप्पे, बितियचडत्था उ दोण्णि वी कप्पे। एमेव पाणगे बी. खातिम तह साइमे चेव ॥११६४॥ साहणिमित्ता रद्धं, जाव ण फासुं कडं तु नाव कडं । फासुकड णिड्डियं तू , चाउलधुत्रणादि पाणम्मि ॥११६५॥ फलमादि छिण्णछोडिय, फासुकडं णिहितं सुणैतन्त्रं । एमेव साइमे वी, अल्लगमादी ग्रुणेतच्या ॥११६६॥ सन्वत्थ त चतुभंगो, जोएअन्वो जहक्कमं होति । एत्थं तू परिदृरणा. विहि अविही सन्व बोद्धन्या ॥११६७॥ छायं पि विवज्जेन्ती, केयी फलहेत्रगादिवृत्तस्स । तं तु ण जुज्जिति जम्हा, फलं पि कप्पं वितियभंगे 🛭 🛂 १८॥ परपचइया छाया, ण वि सा रुक्लो व्व बड़िता कत्ता । णहुच्छाए य दुमे, कप्पइ एवं भणंतस्स ॥११६९॥ बड्टित हायति छाया, तच्छिनकं पूर्यं पित्र ण कप्ये । ण य आहाय मुविहिए, णिन्वत्तयती रवीछाया ॥११७०॥ अवणवणचारिगगणे, छाया णहा दिया पुणो होति । कप्पति णिरायवे णाम, आयवे तं विवन्नतं ॥११७१॥

तम्हा ण एस दोसो, तु संभवे कम्मलक्खणविहूणो। तं पि य हु अतिघिणिल्ला, वन्जेमाणा अदोसिल्ला ॥११७२॥ परपक्ख सपक्खे त्ती, एमेर्य विण्णियं समासेणं। चउरो ति दारमहुणा, वोच्छामि समासतो चैव ॥११७३॥ चउरो अतिक्रमे वृतिक्रमे य अतियार तह अणायारा । आहाकम्मे एते. चउरो वि जहक्रमं जोए ॥११७४॥ तस्स पुण संभवो ऊ, आहाकम्मस्स कह उ होज्जाहि ?। णिदरिसणं जह भरए, सहूा दहूण मरुपूर्य ॥११७५॥ महसदृादीएसुं, तेसु वि सद्धा ततो सम्रुपण्णा । अम्हे वि य साहूणं, करेमि भत्तं तु सविसेसं ॥११७६॥ साळीघयगुळगोरस, नवेसु ब्रहीफलेसु जाएसु । दाणा अभिगमसहूरी, आहाकम्मे निमंतणया ॥११७७॥ आमंतियपिंडसुणणा, सन्वासु सुभो अतिक्रमो होति । पदमेयाइ वतिकर्मो, गहिए होई अईयारो ॥११७८॥ मुह्छूर्हे अणायारो, केयी गिलियम्मि बेन्ति अणायारं। किं कारण ? छूटे वी, पुणरावत्ती कयाइ भवे ॥११७९॥ तो खेळमञ्जयम्मी, णिग्गलइ ण एव पत्तोऽणायारं । गिळयम्मि अणायारो, तस्स णियत्ती तओ णितथ ॥११८०॥ सेसेहि णियत्तेजा, एग दुग तिगे व एत्य दिइंतो । जह तिहि आगास टितो, परेहि विणियत्तिओ इत्थी ॥११८१॥ चडरो गहणे एवं, अतिकसादी त विणया एते । आणादी चंडरो वि य, दारं एत्तो पवष्रवामि ॥११८२॥ आणं सन्वजिणाणं, गेण्हंतो तं अतिक्रमति छुद्धो । आणं च अतिक्रमंतो. कस्साऽऽएसा क्रणति सेसं ?।।११८३॥

एगेण कयमकज्जं, करेति तप्पचया पुणो अण्णो ।
सायाबहुल्परंपर, वोच्छेओ संजमतवाणं ॥११८४॥
जो जहवायं ण कुणति, मिच्छादिष्टी तओ हु को अण्णो ?।
बहुति य मिच्छत्तं, परस्स संकं जणेमाणो ॥११८५॥
दुविहा विराहणा खल्ल, संजमतो चेव तह य आयाए ।
आहाकम्मगहणे, तत्थ इमा संजमे होति ॥११८६॥
बहुति तप्पसंगं, गेही य परस्स अप्पणो चेव ।
सजियं पि भिण्णदाढो,ण मुयति णिद्धंथसो पच्छा ॥११८७॥
खद्धे णिद्धे य ख्या, मुत्ते हाणी तिगिच्छणे काया ।
पिडयरगाण य हाणी, कुणित किलेसं च किस्संतो ॥११८८॥
पाएण पिकच्चेण य, आहाकम्मं तु भारियं होति ।
एसा आनिवराहणया, तम्हा तू तं ण भोत्तव्वं ॥११८९॥
पिडदारगाहा सम्मत्ता ॥

अन्भोज्जे गमणादी, पुच्छा दन्व काल देस भावे य।
एव जयंते छलणा, दिहुंता तित्थमे दोण्णि ॥११९०॥
जह वंतादि अभोज्जं, जाव य चंदो य सूरउद्यं च ।
जज्जाणा दोण्णि भवे, सिवत्थरं सन्व बोद्धन्वं ॥११९१॥
जह ते दंसणकंखी, अपूरितिच्छा विणासिया रण्णा।
दिहु वितरे सुक्का, एमेव इहं समोआरो ॥११९२॥
आहाकम्मं भुंजति, ण पिडक्कमए य तस्स टाणस्स।
एमेव अहति बोहो, छक्कणिछको जह कवोहो ॥११९३॥
आहाकम्मदारं, एवमिणं मे समासतो कहितं।
आवत्ती दाणं वा, विसोहिमेतेसिमं वोच्छं ॥११९४॥
आहाकम्मे चतुगुरु, आवत्ती दाण होयऽभत्तद्वं।
उद्देसियं पि दुविहं, ओहे य विभागओ चेव ॥११९५॥

जोहेशिकम्

अोहे मासलहुं तू, आवत्ती दाण होति पुरिमहुं।
होन्ति विभागुद्देसे, मूलक्ष्यू इमे तिष्णि। ११९६॥
उद्देसकडे कम्मे, एक्केक चल्विहो भवे भेदो।
कह होति चल्मेदो १, इमाहि गाहाहि वोच्छामि।।११९०॥
उद्देसियं सम्रद्देसियं च आदेसियं समाएसं।
एमेव कडे चल्रो, कम्मिम्म वि होंति चतारि।।११९८॥
जावंतिगमुद्देसो. पासंडीणं भवे समुद्देसो।
समणाणं आएसो, णिग्गंथाणं समाएसो।।११९९॥
उद्देसियम्म लहुओ, पत्तंयं होति चतुमु ठाणेमु।
एमेव कडे गुरुओ, कम्मादिम लहुग तिम्नु गुरुगा॥१२००॥
थी (१) लहुमासा गुरुगा. चल्लुगा तिष्णि तू मुणेतव्वा।
तक्कालेहि विसिद्धा, दाणं तु अनो पत्रक्वामि।।१२०१॥
लहुमासे पुरिमहुं, गुरुमासे होति एगभनं तु।
चललहुए आयामं, चलगुरुए होयऽभत्तं ॥१२०२॥
उद्देसिए त्ति गयं।

पूतिकर्म

पूतीकम्मं दुविहं, दच्चे भावे य होइ णायच्चं।
दच्चिम्म छगणधम्मी, भावे दुविहं इमं होति ॥१२०३॥
स्रहुमं व बादरं वा, दुविहेयं होति हू सुणेतच्चं।
बादर पुणरिव दुविहं, उवगरणे भत्त-पाणे य ॥१२०४॥
इंधण गंधे धुमे, स्रहुमेयं एत्थ णित्थ पृइत्तं।
चुल्छुक्खिल्यादीणं, उवगरणे पूतियं होति ॥१२०५॥
प्वं मासलहं तू. आवत्ती दाण होति पुरिमहं।
होए लोणे हिंगू, संकामण भत्तपूतीयं ॥१२०६॥
पत्थं मासगुरुं तू, आवत्ती दाणमेगभत्तं तु।
उवगरण भत्तपाणे, पूतिस्स उ लक्खणं वोच्छं ॥१२०७॥

सिष्झंतस्युवगारं, सिद्धस्स करेति वा वि जं द्व्वं । तं जनगरणं भण्णति, चुल्लुक्खलिद्विवडोयादी ॥१२०८॥ संघट्टकया चुल्ली, उक्खलि डोए तहेय दव्वी य। सो होति आइकम्मी, पूर्तीकम्मं इमं होति ॥१२०९॥ संघियचिक्खन्लेणं, सयचुन्लीखंडियाइ संदवणं। एमेव उक्खलीय वि. फड्डगमादी तु जं लोए ॥१२१०॥ एवं सतडोतीए, दन्वीए वा वि संघदारूणं। अगिलियं जिंद लाए, गंडफलं वा वि एगतरं ॥१२११॥ उवगरणपूर्ति भणितं, एत्तो वोच्छामि भत्तपूर्ति तु । हाए लोणे हिंगू, संकामण फोडणं धूमे ॥१२१२॥ अत्तिद्विय आयाणे, डागं लोणं व कम्म हिंगुं वा । तं भत्तपाणपूर्ति, फोडणमण्णं व जं छुभइ ॥१२१३॥ संकामे इं कम्मं, तेणेव य भायणेण संकामे । जं सुट्टं तं पूर्ति, अहवा रद्धं तिह होज्जा ॥१२१४॥ अंगारभूइ थाली, वेसण हेट्टामुहीए जं धूमे । संघट्टकडे तम्मि उ, अत्तद्व करेन्ते पूनीयं ॥१२१५॥ प्रति सि गयं ॥

मीसज्जायं तिविहं, जावंतिगमीस वितिय पासंडे।
साह्मीसं तितयं, पिच्छत्तं तेसि वोच्छामि ॥१२१६॥
पढमे चउलहुया तू, विति तितते चउगुरू सुणेतव्वा।
तवकालेहिं विसिद्धा, चउगुरूगा होन्ति णायव्वा ॥१२१७॥
चउलहुए आयामं, चउगुरूप होति तु चउत्थं तु।
मीसज्जानं भणितं, ठवणाभत्तं अतो वोच्छं॥१२१८॥
ठवणाभत्तं दुविहं, इत्तरठवियं तहेव चिरठवियं।
इत्तरठविए पणगं, चिरठविए होति मासलहं ॥१२१९॥

मिथजातम्

स्थापना

पणने णिव्विगई तू, लहुमासे दाण होति पुरिमहूं। इत्तर चिरठविए या. समासतो लक्खणं वोच्छं ॥१२२०॥ संघाडग हिंडते, परिवाडिटिएस त गेहेस । एक्को दोसवयोगं, करेति भिक्तवाएँ गेहेस ॥१२२१॥ बितिओ साणादीणं, देयुवओगं परे तहेक्सिम। तेण परेण चडत्थे, डक्स्वित्ता इत्तरद्वविया ॥१२२२॥ चतुथघरा तु परेणं, चिरठविया जाव पुव्वकोडी उ । एयं ठवियाऽभिहितं, एत्तो वोच्छामि पाहुडियं ॥१२२३॥ सा पाहुडिया दुविहा, सुहुमा तह बादरा य बोद्धव्या। औसकण उस्सक्के. एक्केका सा भवे दुविहा ॥१२२४॥ सुहुमाए लहुपणगं, आवत्ती दाण होति णिव्यिगति । चउगुरुग बायराए, आवत्ती दाणऽभत्तहं । १२२५॥ पत्थं सहमा त इमा, जह काइ अगारि कन्तमाणी उ। भणिया त चेडरूवेण देहि अम्मो ! महं भत्तं ॥१२२६॥ भणितोद्विनो त्ति होही, जाया ! कन्तामि ता इमं पेछुं । जइ तं सुणेति साह, ण गच्छए तत्थ आरंभो ॥१ :२७॥ अस्मुट्टिया भणंती, तुज्झ मि देमि ति किं ति परिहरति। किइ दाणि ण उद्विस्से ?, साहपभावेण लब्भामो ॥१२३८॥ एवं णाऊण ततो, परिहरती एस होति ओसका । उस्सक्कण कन्तंनी, भणिता चेडेण दे भत्तं ॥१२२९॥ कन्तामि भणति पेछं, तो ते दाहामि पुत्त ! मा रोव । सा य समत्ता पेळु, देही एत्ताहें सो भणति ॥१२३०॥ मा ताव शंख पुत्तय !, परिवाडीए इहेहिही साह । एयद्वयुद्धिता ते, दाई सोडं विवज्जेति ॥१२३१॥ अंग्रुलिए चालेउं, कट्टीत कप्पट्टतो घरं जत्तो । किन्ति ? कहिए ण वस्ति,पाहुदिया एअ सुहुमा उ ॥१२३२॥

प्रामृतिका

बायरपाहृहिया वि य, ओसकऽहिसक्रणे य दुविहा उ । कप्पट्टगसंघाडय, ओसरणेण च णिद्देसो ॥१२३३॥ जह पुत्तविवाहदिणो, ओसरणानिन्छिए सुणिय सहूो । ओसक्के ओसरणं, संखडिपाहेणदब्बद्धी ॥१२३४॥ अप्पत्तम्मी ठवियं, ओसरणे होहिइ ति उस्सक्के । संपागडमितरं वा, करेति उज्जूमणुज्जु वा ॥१२३५॥ मंगलहेतुं पुण्णद्वया व ओसक्कें तं च उस्तक्के। किं कारणं ? ति पुट्टो, सिट्टे ताहे विवज्जेन्ति ॥१२३६॥ पाहुडिभत्तं भुंजति, ण पडिक्ममए य तस्स ठाणस्स । एमेव अडित बोडो छुक्कणि छुक्को जह कमेडो ॥१२३७॥ पाहुदिया भणितेसा, एत्तो पायोवगरण वोच्छामि । पाद् पयासणम्मी, अपगासपगासणं जं तु ॥१२३८॥ पायोकरणं दुविहं, पागडयरणं पगासकरणं च। पागडे मासलहुं तू, पगासकरणे उ चतुलहुगा ॥१२३९॥ लहुमासे पुरिमहूं, चतुलहुए दाण होति आयामं। पायोकरणं भणियं, कीनकडमयो तु वोच्छामि ॥१२४०॥ कीतकडं पि य दुविहं, द्व्ये भावे य दुविहमेक्केको । आयपरकीयमेवं, पच्छितं तेसि वोच्छामि ॥१२४१॥ दन्वाय-परकीए, दुविहे वि चउलहू ग्रुणेयन्वं। दाणं आयामं तू, भावम्मि अतो परं वोच्छं ॥१२४२॥ मावे तु आयकीयं, चउलहुगा एत्य वी मुणेयन्वा । दाणं आयामं तू, भावे परकीय वोच्छामि ॥१२४३॥ मासल्रहुमिहावत्ती, दाणं पुण एत्य होति पुरिमहू। कीयकढें भणियं, पामिसमतो उ वोच्छामि ॥१२४४॥

प्रादुष्करणम्

कीतकृतम्

प्रामित्यम्

पामिषं पि य दुविह, लोइय लोचत्तरं समासेणं । लोइऍ चतुल्रहुगा तू, आवत्ती दाणमायामं ॥१२४५॥ लोउत्तरें मासलहुं, दाणं पुण एत्थ होति पुरिमहूं। पामिचेयं भणियं, परियद्वियमिणमी वोच्छामि ॥१२४६॥

परावर्तितम्

परियद्दियं पि दुविहं, लोइय कोउत्तरं समासेणं । लोइऍ चउलहुगा तू, आवत्ती दाणमायामं ॥१२४७॥ लोउत्तरे मासलहुं, आवत्ती दाण होति पुरिमट्टं।

अ∓याह्तम्

परियष्टिय भणिएयं, अभिहडदारं अयो वोच्छं ॥१२४८॥ तं होति दुहाऽभिहर्ड. आतिव्णं चेत्र तह अणाइक्णं। आइण्ण णोणिसीहं, होति णिसीहं च दुविहं तु ॥१२४९॥ छण्ण णिसीहं भण्णति, पगडं पुण होति णोणिसीहं ति। एक्केकं परगामे, सम्मामे चेव बोद्धव्वं ॥१२५०॥ सम्मामाह्ड दुविहं, आइण्णं चेव होयऽणाइण्णं । अणइण्णे मासलहुं, दाणेत्थं होति पुरिमहुं ॥१२५१॥ परगामाहड दुविहं, सदेस परदेसओ व णाँयव्वं । एक्केकं पुण दुविहं, जलेण तह थलपहेणं च ॥१२५२॥ सप्पचराय णिप्पचराय पुण होति दुविहमेक्केकं। संजमआयनिराहण, सपचरायम्मि जोएजा ॥१२५३॥ परदेसआहडम्मी, सञ्चवायम्मि होन्ति चउगुरुगा । णिष्पच्चवाऍ लहुगा, दार्ग एतेसि वोच्छामि ॥१२५४॥ चउगुरुगे अभत्तर्द्धं, दाण हं होति तृ मुणेयन्वं । चउलहुए आयामं, एमेव य होति सद्देसे ॥१२५५॥

उद्भिनम्

उव्भिण्ण होति तिविद्दं, पिहितुव्भिण्णं कवाडउव्भिण्णं । जं नं पिहितुब्भिण्णे. तं दुविहं फासुगमफासुं ॥१२५६॥ फाम्रग छगणेणं तू, दहरएणं च एत्थ मासलहुं। तिहर्य पवहणदोसा, दाणं पुण एत्य पुरिमहूं ॥१२५७॥

अप्पासुपुद्धविमादी, सिचित्तं तु जं भवे लितं।
तिह्यं उन्भिज्जंते, कायाण विराहणा इणमो ॥१२५८॥
सिचित्तपुद्धविलित्तं, लेख सिलं वा वि दाउमोलितं।
सिचित्तपुद्धविलेवो, चिरं पि उद्गं अचिरिलित्तं ॥१२५९॥
चिरिलितपुद्धविकायो, निम्मेतुं लिप्पमाणे आउवहो।
जञ्जस्तावणम्मी, तेऊ वाऊ वि तत्थेव॥१२६०॥
पणगिबयाइ वणस्सति, तस कुंथुपिपीलिएवमादी हिं।
एते ऊ लिप्पंते, इमे तु दोसा तु उल्लिते ॥१२६१॥
परस्स तं देति सए व गेहे, तेल्लं व लोणं व घयं गुलं वा।
उग्धादितं तं तु करेयऽवस्सं, स विक्वयं तेण किणानि वऽण्णं॥
॥१२६२॥

टाणकयिवक्षयादी. अहिगरणं होति अजयभावस्स । णिवडंति जे य तिहयं. जीवा मृहयंगमूसादी ॥१२६३॥ जेहेव कुंभादिसु पुन्वस्तिते, उब्भिज्जमाणम्मि वि कायघाओ । ओस्टिप्पमाणे वि तहेव घाओं, उब्भिणमेयं पिहियं पि बुत्तं ॥१२६४॥

आवित्त दाणमेत्थं, ओहेणं चउलह मुणेयव्वा।
दाणं आयामं तू, विभागओ कायणिष्कणं ॥२२६५॥
एमेव कवाडिम्म वि. कायवही होइ ऊ मुणेयव्वो।
उप्पिहिय पिहिज्जैते. सिवसेमा जंतमाईसु ॥१२६६॥
वरकोइल्लंचारा, आवत्तण पेढियाए हिहुवरि।
णिन्ते ठिते य अन्तो, डिंभादीपेल्लणे दोसा॥१२६७॥
एत्य वि चउलहुगा तू. ओहेणं दाणमेत्थमायामं।
होति विभागेणं पुण, पुढवादोकायणिष्कणं ॥१२६८॥
उव्भिण्णेयं भणियं, अहुणा मालोहढं पवक्लामि।
तं तिविद्दं उट्टमहे, तिरियं मालोहढं चेव ॥१२६९॥

मालाहृतम्

जृह दुभूमादीयं, अह जहूियकोष्ट्रयाइयं होति । तिरि अद्भालगादी, इत्थपसाराउ जं गिण्हे ॥१२७०॥ सन्वं पि यु तं दुविहं, जहण्ण उक्कोसयं च बोद्धव्वं। अग्गपएहि जहण्णं, तिव्ववरीयं ति उक्कोसं ॥१२७१॥ मालोहड उक्कोसे, आवत्ती चउलह मुणेतन्त्रा। दाणं आयामं तू, जहण्णमालोहडमियाणि ॥१२७२॥ एत्थ तु मासलहुं तू, आवत्ती दाण होति पुरिमहूं। इय मालोहड भणितं. अच्छेज्जं अहण वोच्छामि ॥१२७३॥ तिविहं पुण अच्छेज्जं, पभू य सामी य नेणए चेव। एक्केक्के चतुलहुगा, दार्ण पुण एत्थमायामं ॥१२७४॥ अणिसिट्टं पि य तिनिहं, साहारण चोछए य जड्डे य। तिविहे वि य अणिसहे, चउलहुगा दाणमायामं । १२७५ः। साहारणमणिसहं. टाइयमादीण जं तु होज्जाहि। स्वीरं आपण संखिडि, दिहंती गोहिभत्तेणं (१२७६॥ सो चोझगो वि द्विहो, छिण्णमछिण्णो समासनो होति। परिछिण्णं चिय दिज्जति, एसो छिण्णो मुणेतन्त्रो ॥१२७७॥ अच्छिण्णपरिमाणो, सो वि णिसहो तहेव अणिसहो। णीसट्ठो तेसि चिय, णेतूण समप्पितो जो तु ॥?२७८॥ आणेति भुत्तसेसं. जं गहियं एय होति अणिसट्टं। छिण्णम्मि चोल्लगम्मी, कप्पति घेतुं णिसद्वेयं ॥११७९॥

अणिसद्वमणुण्णायं, कप्पति घेतुं तहेव अदिहं ।

रायकुलातो भत्तं, णीयं जड्डस्स तं ण कप्पति तु ।

चोल्लग अणिसहेयं, जडुणिसहं अतो बोच्छं ॥१२८०॥

णिवपिंडमंतराया, अदिण्णगहणादिदोसा य ॥१२८१॥

आच्छेद्यम

अनिसृष्टम्

जङ्घो व पतोसगतो, परिपाडे वसहिमादि भंजिज्जा। डोंबस्म संतिओ वि हु, अहिट्टो कप्पति घेतुं ॥१२८२॥ अध्यवपूरकम् अणिसद्र भणियमेयं, एत्तो अन्झोयरं पवक्खामि । अहियं उदरं अञ्झोयरो त जं सगिहमेगिम्म ॥१२८३॥ अहिगं त तंदुलादी, छुब्भति अज्झोयरो च सो तिविहो। जावंतिय पासंडे, साह अज्झोयरे चेव ॥१२८४॥ जावंतियम्मि लहुतो, आवत्ती दाणमेत्य पुरिमृहं । पासंडी साहूण य, मासगुरू दाण भत्तेक्कं ॥१२८५॥ एसो अज्झोयरयो. सोलस वी उग्गमस्स दोसेते। णव कोडीउ भवंतिह, किं भणियं होति कोडि ? ति॥१२८६॥ कोडिज्जंते जम्हा, बहुवी दोसा उ सहियए गच्छं। 'कोटि' कोडि त्ति तेण भण्णति, णव कोडीओ इमाताओ ॥१२८७॥ बन्दस्यार्थः हणण हणावण अणुमोदणं च प्यणं प्यावणऽणुमोया। कोटयः किणण किणावण अणुमोयणं च कोडीड णव एया ।।१२८८॥ णव चेव अट्टारसगं, सत्तावीमा नहेव चउपण्णा। णउती दो चेव सया, तु सत्तरा होन्ति कोडीणं ॥१२८९॥ ता चैव य णव कोडी, रागद्दोसेहिं गुणिय अट्टरस । अण्णाण मिच्छ अविरति,तिहिँ गुणिए सत्तवीसा तु ॥१२९०॥ पुढवादीछसु संजय, छिहँ गुणिया होति एस चतुपण्णा । संतीमादीदसहिं उ. गुणिया णजती तु बोद्धव्या ॥१२९१॥ णउती तिहिं गुणियात्. दंसणणाणेहिं तह चरित्तेणं। सत दोकि होन्ति सयरा, कोडीणं एस वित्थारो ॥१२९२॥ संखेवेण दुहा ऊ, जगमकोडी विसोहिकोडी य। जगमकोटी छन्विह, विसोहिकोडी अणेगविहा ॥१२९३॥

हणणतियं षयणतियं, उभ्ममकोडी तु छिन्वहा एसा । अहवा वि इमा छव्विह, जगमकोडी ग्रुणेयव्वा ॥१२९४॥ आहाकम्मुहेसिय, चरिमतियं पृति मीसजायं च। बाद्रपाहुडिया वि य, अज्झोयरए य चरिमदुगे ॥१२९५॥ एसा विसोहिकोडी, छव्विहभेया समासतोऽभिहिता। एत्तो छद्धा सुद्धं, वोच्छामो आणुपुरवीए ॥१२९६॥ जगमकोडी अवयव, लेवालेवे य अकयकप्पे या। कंजिय आयामे चातुस्रोयसंसद्वपूती य ॥१२९७॥ मुक्केण वि जं छिक्कं, अमुर्ण तं धोव्वए जहा छोओ। इय सुक्केण वि छिक्कं, धोवड कम्मेण भाणं तु ॥१२९८॥ लेबालेवे चि जं वृत्तं, जं पि दच्वमलेबडं । तं पि घेतुं ण कप्पेति, तक्कादी किम्रु छैवडं ? ॥१२९९॥ कंजियमादीगहणं, कम्हा तु कतं तु ? भण्णती सुणसु । साहुस्स उ आहेतुं, जं कीरइ आहकम्मं तं ॥१३००॥ इय णाजमाह कोयी, साहणिमित्ता य ओयणो उ कतो। ण उ कंजियमादीणि, तो वज्जो ओयणो एगो ॥१३०१॥ ण उ कंजियमादीणि, तो तम्महणे कते तमेवं त । जदि वि ण दिहा आहा. ओदणमहा नह वि वज्जे ॥१३०२॥ सेसा विसोहिकोडी, ठवितगमादी त जड वडणाभोगा। गहिता इवेज छुद्धा. अण्णम्मी भत्तपाणिम्म ॥१३०३॥ ताहे त जहासति, विगिचितव्वं तमण्णपाणं त । दन्वादिकमेणं तू, इमेण वोच्छं समासेणं ॥१३०४॥ दन्वे तं चिय दन्वं. खेत्तं परेसेस जेस तं पहियं। काले अकालहीणं, जावऽण्णा भिक्ख णऽक्कमति ॥ १३०५॥ भावे अरत्तदुद्दी, असदी जं पासती तगं छड्डे।

अणलखियमीसदब्वे, सन्वविवेगोऽवयवे सुद्धो ॥१३०६॥ अह पुण ण संथरेजा, ताहे परिठावणा तु तम्मत्तं । इत्यं चडभंगो तु, सुक्खोल्लणित्राययो इणमो ॥१३०७॥ मुक्ते मुक्तं पहियं, मुक्ते उन्नं तु उन्नं मुक्तं तु । जल्ले उर**लं च तहा. एस च**ज्त्यो भवे भंगो ॥१३०८ मुक्ले सुक्लं पहियं, पढमगभंगो विगिचति सुई तु । बितियम्मि दवं छोढ़ं, गालेति दवं करं दाउं ॥१३०९॥ ततियम्मि करं छोट्टं. उल्लिपइ ओदणादि जं तरति। चरिमे सन्वविवेगो, दुलभद्वे वा वि तम्मत्तं ॥१३१०॥ एव विगिचित्तऽसहो, जेसु पदेसुं तु सुज्झए साह । मायावी ण वि सुज्झे, तम्हा असहेण होयव्वं ॥१३११॥ एवं गवेसणाए, उगमदारं समासतो भणितं । उपायणमहूणा तू, समासओ हं पवक्लामि ॥१६१२॥ सोलस उग्गमदोसे, गिहिणो उ सम्रुट्टिए वियाणाहि। जप्पायणाएँ दोसे, साहत सम्रुहिए जाण ॥१३१३॥ णामं ठवणा दविए, भावे उप्पायणा मुणेयन्वा। द्व्ये सचित्तादिविहाण, चित्ते दुपयादि तिविह इमा ॥१३१४॥ आयास्रयमादीहिं, वालचिय-तुरंगबीयमादीसु । सुय-आस-दुमादीणं, उप्पायणया त् सचित्ता ॥१३१५॥ कणग-रययाइयाणं, जहेट्टधातुविहिता तु अचित्ता । मीसा उ सभंडाणं, दुपया तुष्पायणा दुव्वे ॥१३१६॥ भावे पसत्थ इयरा, कोहादुष्पायणा तु अपसत्था । कोहादिज्या धायादिणं च णाणादि तु पसत्था ॥१३१७॥ अपसित्थयभावःपायणाएँ एत्थं तु होति अहिगारो । सा सोलसहा तु इमा, धायादीया मुणेयव्या ।।१३१८॥

उत्पादनाया निक्षेपाः षोडश उत्पा-दनादोषाः

धाती द्ती णिमित्ते, आजीव वणीमए तिगिच्छा य। कोहे माणे माया, छोमे य हवंति दस एते ॥१३१९॥ पुर्विव-पच्छासंथव, विज्ञा मंते य चुण्ण जोए य। उप्पायणाएँ दोसा, सोलसमे मूलकम्मे य॥१३२०॥

धात्रीदो**दः**

धारयति धीयए वा, धयंति वा तमिति तेण धाती तु । जहिवभवं आसि पुरा, खीराई पंच धातीओ ॥१३२१॥

पश्च धात्रय:

खीरे य मज्जणे मंडणे य कीलावणंकधानी य।
धाइचं कुणमाणो, एगयरं धातिपिंडो तु ॥१३२२॥
तं दुविहं धातिचं, करणे कारावणे य बोद्धव्वं।
तं पुण दारगमादी, पडुच धाति व्य कुज्जाहि ॥१३२३॥
पंचिवह धातिपिंडे, आवत्ती चउलह मुणेयव्या।
दाणं आयामं तू, दूनीपिंडं अनो बोच्छं ॥१३२४॥

दूतीदोष:

सम्माम परम्मामे, दुविहा दृती तु होति णायव्या।
एक्केका वि य दुविहा, पागड छण्णा य णायव्या। १३२५॥
पागड णिस्संको चिय, अप्पाहेन्तो व भणित इयरो वा।
सेज्ञातरखंतिया तू, घृया वा अण्णगामिम्म ॥१३२६॥
भिक्लादी वचंतो. अप्पाहणि जेति खंतियाईणं।
सा ते अग्रुगं माया, सो व पिया पागडं भणित ॥१३२७॥
छण्णा पुणाइ दुविहा, दृती एत्यं तु होति णायव्या।
छोउत्तरं तत्थेगा, वितिया पुण उभयपक्ले वि॥१३२८॥
छोउत्तरं संघाडम, संकंतो सावछण्णवयणेहिं।
कह पुण छण्णं ? सेज्ञायरीय अप्पाहिओ गंतुं॥१३२९॥
संघाडयपचयद्दा, वेती दृति ति अम्ह ण वि कप्पे।
अविकोतिया सुया ते, जा वेइ इमं भणमु खंती।।१३३०॥
सा वि य भणती होतू, यारिज्ञिहिती अयाणिया सा उ।

लोउत्तरछण्णेसा, उभयच्छण्णं अतो वोच्छं ॥१३३१॥ जामाइतित्थजत्तागतस्स उवादिपोक्कडेण कतं । सो आगतो ति ध्रया, उभयच्छण्णं इमं भणित ॥१३३२॥ एव भणेजाहि खंती, तं किर तह चेत्र चिंतियं जं ता। जह ण वि संघाडो से, अण्णो व वियाणित कोति ॥१३३३.। उभयच्छण्णा एसा, सग्गामे अभिहिता भवे द्वी। एमेव परग्गामे. दुह दृती कह पुण करंज्ञा ? ॥१३३४॥ गामाण दोण्ह वेरं, सेज्ञायरिध्यय तत्थ परगामे । सामत्थं गामस्स य, जह एवं इणिमों परगामं ॥१३३५॥ खंतो तु तत्थ पच्छा, भिक्खायरियाएँ तो तु सेज्जतरी। अप्पाहेती खंतं, मम घृय भणेज्ञस् एवं ॥१३३६॥ जह गामों पडिउकामो, सा उ भणेज्ञामु मा कुण पमायं। तीय कहियं तु तस्या, तेण वि गामस्स तं कहियं ॥१३३७॥ ते य ठिय एगपासे, इतरे पहिता कतं तहि जुद्धं । सेज्जातरिपति-पुत्ता, जामाता चैव वहिओ उ ॥१३३८॥ बेति जणो केणेयं, कहियं ? ति बेति सेज्जयरी । जामाति-पुत्त-पतिमारएण खंतेण में सिद्धं ॥१३३९॥ जम्हा एते दोसा, दृतितं खूण कप्पती तम्हा। द्तीर्पिंडे चउल्रहु, आवत्ती दाणमायामं ॥१३४०॥ णियमा तिकालिवसयम्मि णिमित्ते छिन्वहे भवे दोसा। सन्जं तु बृद्दमाणो, आतुभए तत्थिमं णानं ॥१३४१॥ आकंपिया णिमित्तेण भोडणी केणती त लिंगीणं। भोइयचिरगयपुच्छा, केवतिकालेण एजाहि ? ॥१३४२॥ कल्लं चिय एति ची, इयरी पहिभणति पचयो को उ ? । तुह गुज्झदेस तिल्ञओ, सुविणाती पचए कहए ॥१३४३॥

निमित्तदोषः

तीय क्यं आउत्तं, पेसविओ परिजणो य पञ्चोणी । इतरो वि अविदिओ श्विय, पविसिस्सं भोडओ चिन्ते ॥१३४४॥ घरवित्तंता मित्तं, दिह्रो उविणगाओ य परिवग्गो। कह तुन्मे णायं ? ती. पेसविआ भोतिणीए त ॥१३४५॥ पुट्टाय आदिअत्तेणं, तीय य सिद्धं सलाहमाणीए। समणे तीय भविस्सं, जाणइ तिल्ञो य णे सहो ॥१३४६॥ कोवो वलवागब्भं, च पुच्छितो पंचपुण्डमाहंस्र भ फालण दिहो जदि णेव तो तहं अवितह कतेवं ॥१३४७॥ तम्हा ण वागरेजा, णिमित्तर्षिडेस विष्णिओ तु मए । तीतणिमित्ते चउलहु, आवत्ती दाणमायामं ॥१३४८॥ पुडुपण्णऽणागए या. चउगुरुगा दाण होयऽभत्तद्वं । आजीवपिण्डमेत्तो, समासओ हं पवनखामि ॥१३४९॥

बाजीबदोबः जाती कुछ गण कम्मे, सिप्पे आजीवणा उ पंचिवहा । स्याए अस्याए, व कहेइ अप्पाणमेकेके ॥१३५०॥ जाती कुल गण कम्मे. सिप्पे आजीवणा तु पंचिवहा । एकेके चतुलहुगा, आवत्ती दाणमायामं ॥१३५१॥ जाती माहणमादी, मातिसम्रत्था व होति बोधव्या। तहियं सुवाए तू, जाणावेमेहि अप्पाणं ॥१३५२॥ होमाडवितहकहणे, णज्जति जह सोत्तियस्स पुत्तो ति । वसितो वेस गुरुकुले, आयरियगुणे व सुएति ॥१३५३॥ सम्ममसम्मा किरिया, अणेण ऊणाहिया व विवरीया। समिहा-मंता-ऽऽहुति-डाण-जाय-काले य घोसादी ॥१३५४॥ बेति फ़र्ड चिय सुक्यं, असोइणं वा वि ते कतमितं ति । तहितं भद्दगपंता. दोसा इणमो भवंती त ॥१३५५॥ भहो अम्ह सपन्ता. एस त्ती भिन्त देज्जहेयस्य।

वनीपकदोष्ट्रः

पंतो ओभामेती, महमंगलि कुणति भिक्खद्वा ॥१३५६॥ जगाईयं तु कुलं, पितुवंसादि व्य तत्थ वि तहेव। मह्रसरस्स तमादिण, जाएई मंडलपवेसं ॥१३५७॥ देउलदरिसण-भासाउवणयणे मण्डवाइ सुएति । जंतपीलणमादि तु, कम्मं तुष्णादियं सिष्पं ॥१३५८॥ अहवा जं सिक्खिज्जइ, आयरित्रवदेसतो तयं सिष्पं। जं कीरती सर्यं तू, तं कम्मे तेमु सव्वेमु ॥१३५९॥ कत्तरिपयोयणद्वा, वत्थू बहुवित्थेरस्र तह चेव । कम्मेस य सिप्पेस य. सम्ममसम्मेस सृतिअतरा ॥१३६०॥ सब्बेसु भद्दपंता, णियमा दोसा इवंति विण्णेया। आजीवगपिंडेसो. एत्तो त वणीमगं वोच्छं ॥१३६१॥ कि भणियं वणीमें ? त्ति, भण्णति वणि जायणिमम धात तु। विणमगो पायप्पाणं, विणमो त्ती भण्णए तम्हा ॥१३६२॥ ते पंचहा वणीमग. जायणवित्ती तु होन्ति बोद्धव्या। समणा माहण किवणे, अतिही साणा य पंचमया ॥१३६३॥ समणे माहण किवणे, अतिही साणे य जाण पंचस्र वि। पत्तेयं चउल्रह्मा, आवत्ती दाणमायामं ॥१३६४॥ मयमादिवच्छगं पिव, वर्णेति आहारमादिलोभेणं। अप्पाण समण-माहण-किमिणा-ऽतिहि-साणभत्तेम् ॥१३६५॥ णिगंध सक तावस, गेरुय आजीव पंचहा समणा। तेसि परिषसणाष, लोभेण वणेइ को अप्पं ? ॥१३६६॥ तचिण्णियादि दहुं, शुंजंते दातु पीति अणुकूरूं। साहु तुमे विष्प ! कयं, दाउं जं देसि एतेसि ॥१३६७॥ भ्रंजंति चित्तकस्मद्रिय व्व कारुणिय दाणरुइणो वा। अवि कामगद्दमेसु वि, ण वि णासइ किं पुण जतीसु ? ॥१३६८॥

मिच्छत्तथिरीकरणं, उग्गमदोसा व ते पुण करेज्ञा। चटुकारऽदिण्णदाणा, पञ्चत्थिग मा पुणो एंत् ॥१३६९॥ एमेव माहणेसु वि, दिक्तंतं दिस्स बेति अणुकूलं। दोण्हं भणियं दाणं, समणाणं माहणाणं च ॥१३७०॥ लोगाणुग्गहकारिस, भूमीदेवेस बर्कारं दाणं। अवि णाम बंभबंधुस्, किं पुण छक्तम्मणिरुस्स ? ।: १३७१॥ किमणा उ क्रुट्टि-कर-पाय-अच्छिमादीसु जुंगिया जे तु। दहूण तेसि देन्तं, तस्स अणुकूलं इमं भणति ॥१३७२॥ किमणेसु दुब्बलेसु य, अबंधवा-ऽऽयंक-जुंगियंगेसु । पूयाहको लोए, दाणपडायं हरति देन्तो ॥१३७३॥ ते चिय एत्थ वि दोसा, कोई पुण देति दाणमतिहीणं। तत्थ वि अणुष्पयं तु , दाणपितम्सा इमं भणित ॥१३७४॥ पाएण देति लोगो, उवगारी परिचिए व असिए वा। जो पुण अद्धाखिण्णं, अतिहिं पूर्वि तं दाणं ॥१३७५॥ कोइ पुण साणभत्तो, भत्तं साणादियाण दि ज्ञंतं । तस्स य पियं नि भामनि, तुममेगो जाणनी दाउं॥१३७६॥ अवि णाम होज सुलमो, गोणादीणं नणादि आहारो । छिच्छिकारहयाणं, ण य सुलभो होति सुणयाणं ॥१३७०॥ केलासभवणा एते, आगया गुज्झगा महिं। चरंति जक्लरूवेण, पुरापुर हियाहिय ॥१३७८॥ पूर्वति पूर्वणिज्ञा, पूर्वाएँ हियाय आगया इहुई । ल्रोगस्स हिता एते, पूर्य अहवा हिया होन्ति ॥?३७९॥ अहवा वि पूयपूया, हिताहिता पूतिता हिता होन्ति । अपूर्तिता य अहिता, नम्हा खलु पूर्यणिज्ञेते ॥१३८०॥ पमादी अणुकूले. भणिते सन्वेसि माहणाईणं।

दाता चितेति ततो. मज्झत्थो एस समणो ति ॥१३८१॥ एतेण मज्झ भावो. विद्धो लोए पणामहज्जम्मि। प्केके पुच्चुत्ता, भद्दग-पंताइया दोसा ॥१३८२॥ दाणं ण होति अफलं, पत्तमधत्ते य सिणाउञ्जंतं । इय विभणिए वि दोसा, पसंसिमो किं पुण अपत्ते ? ॥१३८३॥ विणमगर्पिंदो भणितो, एत्तो वोच्छं तिमिच्छिपिटं तु। सा दुविहा तु तिगिच्छा, सुहुमा तह वायरा चेव ॥१३८४॥ मुहुमाए मासलहुं, आवत्ती दाण होति पुरिसहूं। बादरतेगिच्छाप्, चरलहुगा दाणमायामं ॥१३८५॥ भिक्लादिगतं संतं. प्रच्छिति रोगी त ओमहं किंचि। भणई किमहं वेज्जो ?, पढमतिगिच्छा भवे एसा ॥?३८६। वेज्जो त्ति पुच्छिय्व्वो. अन्यावत्तोइ मृतियं एयं। अब्रहाण बोहणं वा. अयाणमाणाण कतमेनं ११३८७॥ बेति व एरिस दक्खं. अग्रूएणं ओसहेण पडणं में। सहस्रष्टरं च रुपं. वारंमो अट्रमादीहिं ॥१३८८॥ एसा बितिय तिगिच्छा, दो वयाओ तु सहमतेगिच्छं। बादरतेगिन्छं पुण, सतमेव करेति वेज्जतं ॥१३८९॥ संसोहण संसम्भणं, णिढाणपरिवन्नणं च जं जत्थ। आगंत्रधातुःखोभे, व आमए कुणति किरियं तु ॥१३९०॥ अस्संजयतेगिच्छे, कीरंते तह य सहमकदणम्म । तहियं त अणेगविहा, दोसा इणमो पसज्जंति ॥१३९१॥ अस्तंजमजोगाणं, पसंजणं कायघाओं अयगोलो । दुब्बलवग्वाहरणं, अच्चुद्रष् गिण्हणुड्डाहो ॥१३९२॥ जम्हा एने टोसा, तम्हा कायव्विया ण ह तिगिच्छा ।दारं। भणितो तिर्गिच्छिपिंडो, एत्तो कोहादि वोच्छामि॥१३९३॥

चिकित्सा-विण्ड:

कोधादयो दोषाः

कोहादीणं कमसो, आहरणा होन्तिमे समासेणं। हत्थप्पं गिरिफुल्लिय, रायगिहं चेत्र चंपा य ॥१३९४॥

कोषे क्षपकः णगरम्मि इत्थकप्पे, करडुगभत्ते उ खमओं दिदृतो । कोसल्रदेसे गिरिफ़्लिगामे वणकोट्टकारम्मि ॥१३९५॥

माने क्षह्नकः

साहूण समुझावे, को णु हु अन्नं पए तु साहूणं। आणेज्ज इदृगातो ?, खुड्डाऽऽह तर्हि अहं आणे ॥१३९६॥ घत-गुल्लसंजुत्ता वि य, जह आणिय इदृगात खुड्रेणं। सेर्डगुलिमादीहिं, णाएहि एत्य भत्तहं।।१३९७।

मायायामा-षाढभूतिः

रायगिहे धम्मरुयी, असाहभृती तु खुडुओ तस्स । रायणहगेहपविसण, संभोइय मोटए लंभो ॥१३९८॥ आयरिय उवज्झाए, संघाडय अप्पयस्स अट्टाए। भुज्जो भुज्जो पविसति, काण-कुणी-खुज्जरूवेहिं ॥१३९९॥ उवरितल्रत्थो य णडो, पासित चिंतेनि बुद्धिमं सुडु । होज्ज णडो सारिक्खो, उवाययो एस घेत्तच्तो ॥१४००॥ चिंतिय उवायमेयं, वाहरिया देमि मोद्र बहवे। भणिओ य तओ एज्जस्र. दिणे दिणे जाहे कज्जं तु ॥१४०१॥ धृयदुगं संदिसती, हास-खेड्ड-परिहास-संफासे । एतेण समं कुव्वह, जह भज्जिति एस अचिरेणं ॥१४०२॥ जिंद णामं गिण्हेज्जा, तो बेज्जह सुयसु एय पव्यज्जं । ताहि तहक्कय खुभितो, रयहरणं लिंग मुयसु त्ति ॥१४०३॥ गुरु सिट्ट मोत्तुमातो, दिण्णा बीयाय भणिय णेणं च। पस्चमपगतीओ, जत्तेणं उवयरेज्जाह ॥१४०४॥ रायगिहे य कयायी, णिम्महिलं णाहगं णहाऽगच्छी। ताव विरहम्मि मत्ता, उवरिगिहे दो वि पासूत्ता ॥१४०५॥ वाघाएण पविद्वो. दिट्ट विचेला विरागमावण्णो । आयरियगुरुसमीवं. पट्टित दिट्टो णहेणं च ॥१४०६॥

इंगितणाए ध्रुयाखरंट पेसियय जीवणं देहि । देमि ति रद्वपाछं, णाडग गचीय कुसुमपुरे ॥१४०७॥ कडगादिअत्थदाणं, बहुपडितं तत्थ(नच)गम्मि णचंते । भरहो य वणादीया, भरहिद्दी तत्थ य णिबद्धा ॥१४०८॥ इक्लागवंस भरहो, आयंसघरे य केवलालोओ। हत्थे गहिओ मा कुण, कि भरहों णियत्तों ? पचाह ॥१४०९॥ ण हु तं पऽक्लउ एवं, वेलंबो होति जति णियत्तामि । पंच सता तेण समं. पव्वडता णाडए डहणं ॥१४१०॥ एमादि मायपिंडो, ण कप्पती णवरि कारणे कप्पे। गेलण्ण-खमग-पाइण-थेरादद्वेत्रमादीस ॥१४११॥ मायापिंडो भणितो (दारं), एत्तो बोच्छामि लोहपिंडं तु। सो कोहपिंडमादिसु, सन्वत्थऽणुपाति अहत्र इमो ॥१४१२॥ लोमे सिंहकेस रकः क्षपकः-लब्भंतं पि ण गिण्हति, अण्णं असुगं ति अज्ज घेच्छामि । भहरसं ति व काउं. गिण्हति खढं सिणिद्धादी ॥१४१३॥ तत्थोदाहरणिमणं, चंपाएँ छणिम्म को वि खमतो तु। गेण्हति अभिगाई तू, सीहेसरमोदए घेच्छ ॥१४१४॥ भिक्ख पविद्वो य तयो, पडिसेहे अण्ण लब्भमाणं पि । सीहेसरमलइंतो, संकिस्सति भावतो अइ सो ॥१४१५॥ सीहेसरगत्वित्तो. विसरिसचित्तो य धम्मलाभो ति । बेई सीहेसरए, सुरत्थमिए वि हिंदइ तु ॥१४१६॥ सङ्कुऽहुरत्त केसरभायणभरणं च पुच्छ पुरिमहे। जनओग चन्दजोयण, साह ति विर्गिचणे णाणं ॥१४१७॥ कोहादीणं कमसो. एमेते विष्णया उ आहरणा । एतेसिं चिय कमसो, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४१८॥ कोहे माणे चतुलह, आवत्ती दाण होइ आयामं। मायाए मासगुरू, आवती दाण भत्तेकं ॥१४१९॥

संस्तवदोषः

लोभे चलगुरुगा तू, आवत्ती दाण होयऽभत्तर्ह । दारं । संधुणण संथवी तु, थुणणा वंदणगमेगट्टं ॥१४२०॥ द्विहो य संथवो खलु, संबंधी वयणसंथयो चेत्र । एक्केको पुण दुविहो, पुन्वि पन्छा य णायन्त्रो ॥१४२१॥ संबंधे पुट्व दुविहो, इत्थी पुरिसे य होति णायच्यो । एमेव य पच्छा वी, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४२२॥ इत्थीए चतुगुरुगा, पुरिसेमु चतुलह मुणेतन्या । चउगुरुए तु चउत्थं, चउलहुए दाणमायामं ॥१४२३॥ वयणे वि पुट्य दुविहो, इत्थी पुरिसे य होिः णायन्त्रो । एमेव य पच्छा वी. आवनी दाण बोच्छामि ॥१४२४॥ इत्थीए मासगुरुं, आवत्ती दाण होति भत्ते हैं। पुरिसे मासलहुं तू, आवची टाण पुरियन् 👯 ४२५॥ संबंधे पुरुवसंथत्रो, माय-पियाडी तु होति ए।यन्त्रो । सासय-समुराजीओ, संबंधीसंथवी पच्छा : १४२६॥ आयवयं च पन्वयं, णाउं संवंधती तयण्रुक्वं । मम माना एरिसिया, समा व ध्रया व णह ी ॥१४२७॥ अदी दिट्टीपण्डय. पुच्छा कहणं ममेरिसी ः णणी। थणस्वेवो संबंधो, विहवासुण्हाय टाणं च ॥१४२८॥ एमेव य पुरिक्ष वि. पियभातादीहिं होति संबंधो । एमेव पच्छसंथव, अद्धिति दिहादि पुच्छादी ॥१४२९॥ पच्छासंथवदोमा, सामुय विहवादिघृयदाणं व । भज्जा मम एरिमिया, सन्जं घातो व भंगो वा ॥१४३०॥ संबंधे संथवेसी, एत्तो वोच्छामि संथवं वयणे। पुर्टिंव पच्छा व तहा, संथुणणे कुणति दानाए ॥१४३१॥ गुणसंथवण पुरुवं, संनासंतेण जो अणेजाहि। दातारमदिण्णम्मि, सो वयणे संथवो पुव्वि ॥१४३२॥

सो एसो जस्स गुणा. पयरंति अवारिया दसदिसास । इहरा कहास सञ्जिति, पचक्वं अज्ञ दिह्रो नि ॥१४३३॥ गुणसंथवेस पच्छा, मंतामंतेण जो थुणेज्ञाहि। दातारं दिण्णम्मी, सो पच्छासंथवो वयणे ॥१४३४॥ विमलीकय णे चक्खं, जहत्थतो वियरिया गुणा तुःई। आसि पुरा णे संका, इदाणि णीसंकियं जायं ॥१४३५॥ तत्थ वि भद्दग-पंता, दोसा तह चेव होंति णायच्या । भणिएस संथवो 📆 (दारं) विज्ञा-मंते अनो वोच्छं ॥१४३६॥ विज्ञा-मंते चतुलह आवत्तो दाण होति आयामं। विज्जा-मंतविसेसं, उद्घिंगेऽहं समासेणं ॥१४३७० विज्ञा-मंनविसेसो, विज्ञित्थी पुरिसों होनि मं हो तु। अहव ससाहण िज्जा, मंतो पुण पहिचसिद्धो तु ॥१४३८॥ विज्जाए उ णिः रसणं, जह कोई भिच्छवासयो पत्तो । साहण पिडियाणं. अह उल्लावो इमो नत्य ॥१४३९॥ इय पंतिभच्छवामो, साहण ण देति तत्थ भणाको । जड इच्छह विज्ञाए. यथ-गुल-बत्थाणि दार्वीम तर्४४०॥ पेच्छामो त्ति य भाषाए. गंतुं विज्ञाभिमंतिओ बेति । कि देमि ? त्ती वत-गुल-बन्धाणि दिण्ण साहरणं ॥१४४१॥ अण्णेहि य सो भणिओ, किह ने दिण्णं नि भत्त-पाणादी १। तो बेति तगो रहो, केण हिनं ? केण मुद्दो मि ? ॥१४४२॥ पहिविज्ज थंभणादी, सो वा अण्णो व से करंज्जाहि। पावाजीवी मायी, कम्मणकारी य गहणादी ॥१४४३॥ मंतिम उदाहरणं, पाडलियुत्ते मुरुंडराइस्स । उप्पण्ण सीसवेदण, पालित्तयकहण ओमज्जे ॥१४४४॥ जह जह परेसिणी जाण्यमिम पालित्तयो भमाडेति।

विद्या-मन्त्र-दोषी विद्या-मन्त्रयो-विद्योष:

विद्याया मिक्ष-पासकः

मन्त्रे पादलिप्त-मुरुण्डराजी तह तह सीसे वियणा, पणस्सित मुरुंडरायस्स ॥१४४५॥
मंतेणं अभिमंतिय, तह चेव दवाव दिन्न कोयि तु ।
तत्थ वि ते चिय दोसा, पिंडमंतादी इमे होन्ति ॥१४४६॥
पिंडमंतथंभणादी, सो वा अण्णो व से करेन्नाहिं ।
पावाजीवी मायी, कम्मणकारी य गहणादी ॥१४४७॥
विन्ना-मंताभिहिया,(दारं) अहुणा वोच्छामि चुण्ण-जोगादी ।
वसिकरणादी चुण्णा, अन्तद्धाणंजणादीया ॥१४४८॥
चुण्णे जोगे चउलहु, आवत्ती दाणमेत्थ आयामं ।
णिदिरसणं दुण्हं पी, उल्लिङ्गेऽहं समासेणं ॥१४४९॥
दिहंतो चुण्ण-जोगे, जह कुसुमपुरम्मि केति आयरिया ।
जंघावलपरिहीणा, ओमे सीसस्स तु रहम्मि ॥१४५०॥
कहयंति चुण्ण-जोगा, अंतद्धाणादि तत्थ दो खुङ्का।

आयरिएहिं य भणिता, दुद्रु कयं जं णियत्ता मे ॥१४५२॥
भिक्खे परिहायंते, थेराणं ओमें तेमि दंताणं ।
कि ओम गुरूणं तू, कुन्वामो ? खुड सामन्थे ॥१४५३॥
कुणिमो अंतद्धाणं, दन्ये मेलेत्त अञ्जियंजणया ।
सह भोज्ज चंदग्रते, ओमोदरियाएँ दोन्वल्लं ॥१४५४॥
चाणक पुच्छ इहालचुण्ण दारिषहणं तु धूमो य ।
दुर्दुं कुच्छ पसंसा, थेरसमीवे जवालंभो ॥१४५५॥
एवं वसिकरणादिसु, चुण्णेसु वसीकरंत्त जो तु परं ।
उप्पाएती पिंडं, सो होती चुण्णपिण्डो तु ॥१४५६॥
जे विज्ज-मन्तदोसा, ते चिय वसिकरणमादिच्रण्णे हिं ।

एगमणेगपयोसं, कुज्जा पत्थारयो वा वि ॥१४५७॥

पच्छण्णिं पिसामे, अवधारे अंजणं एक्कं ॥१४५१॥

वीसन्जिया वि साह, गुरूहि देसंत खुडुग णियत्ता ।

चूर्ण-योग-मूल-कर्मदोषाः

> चूर्णे श्रुत्नकद्वयम्

योगः

भणिएस चुण्णपिण्डो, (दारं) अहुणा बुच्छामि जोगपिंहं तु । तहियं जोग अणेगा, इणमो तु संपवनखामि ॥१४५८॥ सुभग-दोभग्गकरा, जोगा आहारिमा य इयरे य । आर्घंस ध्रुववासो, पायपलेवायिणो इतरे ॥१४५९॥ तत्थाहरणं इणमो, अणहारिमपादलेवजोगम्मि । आभीरगविसयम्मी, जह कत सुण तावसेहिं तु ॥१४६०॥ णदि कण्ह बेण्ण दीवे, पंच सया तावसाण णिवसंति । पन्वदिवसेसु कुलवइ, पालेवे लिंप पाए तु ॥१४६१॥ पाउगदुरूढ सिळलुप्परेण उत्तरिउ एति णगरं ति । आउट्ट लोग पूर्या, पञ्चक्खा तेते देव त्ति ॥१४६२॥ जण सावगाण खिंसण, तहियं तू वहरमामिमाउलया। आयरियअज्जसिमता, तेसिं च णिवेटियं तेहिं ॥१४६३॥ तेहि भणिया य वचह. ते मातिहाणि पायलेवेणं। णतिम्रुत्तरंति सगिहे, जेउसिणोएण घोव्यह णं ॥१४६४॥ तेहि य सगिहे णेउं, पाय वला घोयऽणिच्छमाणाणं । किं जाणति लोगो ? त्ती, दिर्ग्श विणएण बहुफलयं ॥१४६५॥ पहिलाभिय वर्चता, णिवुड्ड णदिकुल मिलिय समिया य । विम्हिय पंच सता तावसाण पव्वज्ज साहा य ॥१४६६॥ एमादीजोगेहिं, आउट्टावेच एसती पिण्डं। सो ण वि कप्पे (दारं) एत्तो, वोच्छामी मूलकम्मं तु॥१४६७॥ दुविहं तु मूलकम्मं, गन्भादाणे तहेव परिसाडे । दविहे वि मूलकम्मे, पच्छित्तं होति मूलं तु ॥१४६८॥ आदाणे अहिगरणं, पडिवंधो छोभगादिदोसा य । पाणवह साडणम्मि, छोभग पडिणीय उड्डाहो ॥१४६९॥ इय मूलकम्मेणं, पिंडो उप्पादिओ ण कप्पति तु। उप्पातेणेस भणिया, गर्वेसणा चेव य समत्ता ॥१४७०॥दारं।

योगे ब्रह्म-द्वैपिद्यः नाम्यः

मूलकर्म

ग्रहणै**ष**णा

एवं तु गविद्रस्सा. उग्गमज्ञ्यायणाविसुद्धस्स । गहणविसोहिविसुद्धस्स होति गहणं त पिंडस्स ॥१४७१॥ उग्गमदोस गिहीतो, उप्पायण होइ समणउत्थाणा । गहणेसणाए दोसे, आयपरसम्रद्विए बोच्छं ॥१४७२॥ दोण्णि वि समणसमुत्था, संकित तह भावतोऽपरिणयं च । सेसा अट्ट वि णियमा, गिहिणो त सम्रद्विए जाण ॥१४७३॥ सा गहणेसण चतुहा, णामं ठवणा य दव्वे भावे य । दव्वं वाणरज्ञहं, सब्वं वत्तव्य वित्थरयो ॥१४७४॥ द्व्विम्म एस भणिता, भावे गहणेसणं तु वोच्छामि । दसहि पदेहिं सुद्धे, संकितमादी इमेहिं तु ॥१४७५॥ संकित मक्खित णिक्खित, पिहित साहरण दायग्रम्मीसे। अपरिणय लित्त छड्डिय, एसणदोसा दस हवंति ॥१४७६॥ संकाए चडभंगो, पढमो गहणे य भोयणे चेव। बितिओ गहणे ण भायणे, तितओ पुण संकिना भागे॥१४७७॥ णीसंकिओं त चरिमे, किह पुण संका हवेडन ? जह कोई। भिक्ख पविद्रो छद्धम्मि. हिमभिक्खं विगिनेति ॥१४७८॥ किण्णु ह खद्धा भिक्खा, छद्धा ? ण य तरति पुच्छिउं तहियं। हिरिमं इति संकाए. भुंजित इह संकितो चेत्र ॥१४७९॥

वीएण गहिय संक्रिय, विगडन्तऽन्ने य णवरि संघाडे । पगयं पहेणगं वा, सोउं णिस्संकिओ भुंजे ॥१४८०॥

णीसंकगाहि तइओ, विगडेन्तो णिसम्ममण्णसंघाडं ।

संका पुणाइ जारिस, लद्ध मए अम्रुगगेहम्मि ॥१४८१॥

णीसंकिअ काऊणं, भ्रंजित तं संकिओ चेव ॥१४८२॥

महती भिक्खा तारिस, एतेहि वि लद्ध किण्ण होज्जाहि ?।

पढ़मो दोस्र वि लग्गो, वितिओ प्रण गहणे भोयणे तहती।

ग्रहणेषणा **दशभा**

शाङ्कितदोषः

शङ्काचतुर्भन्नी

जं संकितमावण्णो. पणुवीसा चरिमए सुद्धो ॥१४८३॥ छउमत्थो सतणाणी. गवेसती उज्ज्यं पयत्तेणं । आवण्णो पणुवीसं, स्रतणाणपमाणतो सुद्धो ॥१४८४॥ सग्ह सुतोवयुत्तो, सुतणाणी जइ वि गिण्हइ असुद्धं। तं केवली वि भुंजति, अपमाण सुयं भवे इहरा ॥१४८५॥ स्रत्तस्स अप्पमाणे, चरणाभावो ततो य मोक्खस्स । मोक्खाभावाओ चिय, पयत्तदिक्खा णिरत्या य ॥१४८६॥ सोलस उग्गमदोसा, णव एसणदोस संकमेतूण। ५ ग्वीसेए दोसा, संकियमासंकिओ वोच्छं ॥१४८७॥ जइ संका दोसकरी, एवं सुद्धं पि होति तु असुद्धं। णीसंकमेसियं नि व, अणेसणिज्जं पि णिहोसं ॥१४८८॥ भण्णति संकियभावो, अविसुद्धो अपहितेकतरपक्ले । एमि पि कुणयऽणेसि, अणेमिमेसि विसुद्धो तु ॥१४८९॥ णिस्संक काउ तम्हा, भोत्तव्वं संकियं भणितमेयं ।दारं। मिक्खनिमदाणि वोच्छं. मिक्खन जं होति संसत्तं ॥१४९०॥ दुविहं च मक्खितं खलु, सचित्तं चेव होइ अचित्तं। सिचतं तत्थ तिहा, पुढवी आङ य वणकाए ॥१४९१॥ पुढवीससरक्त्रेणं, हत्थे मत्ते व सुक्ते पणगं तु । आवत्ती दाणं पुण, णिन्वितियं होति दातव्वं ॥१४९२॥ कद्दममक्खियमीसे, लहुगो णिम्मीसे होन्ति लहुगा तु । लहुमासे पुरिमहूं, चतुलहुए होति आयामं ॥१४९३॥ ससणिद्धदुउद्घे या, पुर-पच्छाकम्म मक्खियं चतुहा । उक्कुट्ट-पिट्ट-कुक्कुसमिक्खतमेवादि वणकाये ॥१४९४॥ ससणिद्ध इत्थमत्ते, पणगं आवत्ति दाण णिन्विगई। उदउक्के मासलहुं, आवत्ती दाण पुरिमट्टूं ॥१४९५॥

म्रक्षितदोष:

पुरकम्म पच्छकम्मे, आवत्ती चतुल्रह मुणेतन्वा । दाणं आयामं त्र, वणकाय अतो तु वोच्छामि ॥१४९६॥ उक्कट्ट-पिट्ट-मिक्लय, परित्तहत्थे य मत्त सिचते। मासलहू आवत्ती, दाणं पुण होति पुरिमहुं ॥१४९७॥ एते चेव उ मिक्लप्, हत्थे मत्ते य होन्तऽणन्तेसु । आवत्ती मासग्रहं, दाणं पुण होति भत्तेक्कं ॥१४९८॥ छिंदती एव सागं, छिंदती एव जं रसोकित्तं। उक्कट्टमक्खितंत. परित्तऽणंतेण वा होज्जा ॥१४९९॥ सेसेहि तु काएहिं, तीहि वि तेऊ-समीरण-तसेहिं। सचित्तमीसएण व, मिक्खित ण विवज्जए किंचि ॥१५००॥ सचित्त मिक्खयम्मि उ, इत्थे मत्ते य होति चउभंगो । पढमिम दो विमिक्खिय, इत्थो वितियम्मि ण विमत्तो॥१५०१॥ तितए मत्तो मिक्खतो, ण वि हत्थो चरिमए ण एको वि । आदितिए पडिसेहो, चरिमो भंगो अणुण्णातो ॥१५०२॥ अचित्तमिक्तत दुहा, गरहितद्व्येण वा वि इतरेणं। गरहित होति दुहा तू, लोगे तह उभययो वा वि ॥१५०३॥ मंस-वस-सोणिया-८८सव-लस्णादी गरहिएस लोगम्मि । मुत्तपुरीसादीहिं, गरहियमेयं भवे उभए ॥१५०४॥ दुविहे तु गरहिए तु , आवत्ती चउलह मुणेतव्वा । दाणं आयामं त्र, अगरहितेत्तो पवक्खामि ॥१५०५॥ अगरहिय कूरकुसणं, गोरस-घत-तेल्लमादीहिं जं तु । संसत्तमसंसत्तं, दुविहं पि य होति णायव्वं ॥१५०६॥ अचित्तमिक्खयम्मी, चउसु वि भंगेसु होति भयणा तु । अगरहिएण तु गहणं, पडिसेहो गरहिए होति ॥१५०७॥ संसज्जिमेहिं वज्जं, अगरहिएहिं पि गोरसदवेहिं। मधु-घत-तेल्ल-गुलेहि य, मा मच्छि-पिवीलियाघाओ ॥१५०८॥

गोरससंसत्ते या. घत-तेल्ल-ग्रलादि-कीडिसंसत्ते। चतुळहुगा आवत्ती, दाणं पुण होति आयामं ॥१५०९॥ लोइयगरहित मज्जा-मंस-वसादी हिं मिक्ख्यं जे ता। नवरं पुराण भाविअ, देसिं व पडुच गहणं तु ॥१५१०॥ दोहि पि गरहिएहिं. मुच्चाराइ होइ अगाहणं। मक्खित भणितं एयं, एत्तो वोच्छामि णिक्खितं ॥१५११॥ णिक्सितं उवियं ति य, एगद्रं ठाणमग्गणा एत्थं। र्त तिविह होति ठाणं, सचित्तं मीस अचित्तं ॥१५१२॥ एत्थं चतुभंग भवे, सिचतादी अणेगह इमो तु। सचित्तं सचित्ते. सचित्तं मीसे वडचित्ते वा ॥१५१३॥ मीमं वा समचित्ते. मीमं मीसे व होति णिक्तिवर्त्त । चिन्तणं मीसेण य. एवंको होति चडभंगो ॥१५१४॥ अहणा चित्ताचित्ते, चित्तं चित्तम्मि होति णिक्खेवो । चित्तं वा अचित्ते, अचित्तं चित्तोभयमचित्तो ॥१५१५॥ अहुणा मीसं मीसे. मीसमचित्ते अचित्त मीसम्मि। अचित्तं अचित्ते, तित्तप्सो होनि चतुभंगो ॥१५१६॥ चत्रभंगेसेतेसं. संजोगाऽणेगहा मुणेयव्वा पुढवादिएस छस्स्र वि. काएस सटाण परटाणे ॥१५१७॥ सचित्तपुदविकाए, सचित्तो चेन पुदिन णिनिखत्तो । सिचतं अचित्रो, अचित्ते वा वि सिचित्तो ॥१५१८॥ अच्चित्ते अच्चित्तो, सद्वाणे एस होति चउभंगो। परठाणे पंचऽण्णे. आऊमादीसिमे होन्ति ॥१५१९॥ सचित्तपुढिवकाओ, सन्चित्ताउम्मि होति णिविखतो । सिच्चतो अध्यिते, अध्यितो चेव सिच्चते ॥१५२०॥ अस्वित्तो अस्विते, एवं सेसेसु तेउमादीसुं। संजोगा णेतव्वा. पंचस परठाणे चडभंगो ॥१५२१॥

निक्षिप्तदोषः

एमेव आड-तेऊ-वाड-वणस्सति-तसाण चतुभंगा । एकेके विण्णेया, छ च्चतुभंगाण संजोगा ॥१५२२॥ चित्ते सच्चित्तेणं. ते छत्तीसं हवंति संजोगा। अच्चित्तमीसएण वि एवतिया चेव संजोगा ॥१५२३॥ मीसे अच्चित्तण वि. एवतिय च्चिय द्वंति संजोगा । तिण्णि वि छत्तीसा तू, मिलिया अइत्तरसर्य तु ॥१५२४॥ अहवण सचित्तमीसा, य एगयो एगयो य अध्वित्तो। एत्थं चतुभंगो तू, तत्थाऽऽदिनिए कहा णित्थ ॥१५२५॥ जं पुण अचित्तद्वं. णिक्लिपति चेयणेमु कायेमु । तहिं मगगणा तु इणमो. अणंतर परंपरा होति ॥१५२६॥ चित्तपुढविड अणंतर, ओगाहिमगाइ होति णिकिम्बर्न । होती परंपरं पुण, पिहडगयं जं तु पुढविठियं ॥१५२७॥ उद्गमणंतर णवणीयमाडि पारंपरं तु णावादी । ते उ अणंतर पारंपरं य दुयमा इमे सत्त ॥१५२८॥ विज्ञायमुम्मुरिंगालमेव अप्पत्तपत्तसमजाले । बोलीणे सत्त दुगा, एते तु अणंतर परे य ॥१५२९॥ विज्झाउ चि ण दीसित, अग्गी दीसित य इंघणे छूटे। छारुम्मीसा पिगल, अगणिकणा ग्रम्मुरो होति ॥१५३०॥ णिज्जाला हिलिहलया, इंगाला ते भवे मुणेतच्या । होति चउत्थो भंगो, ते जालाऽपत्तिपहडं तु ॥१५३१॥ पंचम पत्ता पिहुडं, छट्टम्मि य होति कण्णसमजाला। सत्तमए समतीया, अणंतरा होति सत्तस्र वी ॥१५३२॥ पारंपर पिहुडादिसु, अगणीयहादि तन्थ दोसा तु। भयणा तु जंतचुल्लिसु, इणमो तु निह सुणेयव्या ॥१५३३॥ पासोलित कडाहे, परिसाडी णत्थि तं पि य विसाछं। सो वि य अचिरच्छ्रदो, उच्छ्रसो णाइउसिणो य ॥१५३४॥

गहणमघट्टिय कण्णे, घट्टित छारादिपडण अग्निवही । उसिणोदगस्स गुलरसपरिणामिय गहणऽणच्चिमिणे ॥१५३५॥ दुविह विराहण उसिणे, छड्डण हाणी य भाणभेदो य। अच्चुसिणातो ण घेष्पति, जंतोलितेस जयणा तु ॥१५३६॥ वाउक्तिताणंतर, पष्पडिगादी तु होति णायव्या। वित्य-दितपूरिओवरि, पनिद्विय परंपरं होनि ॥१५३७॥ इरियादि अणंतर पूरियाइ पारंपरं पिहुडमादी । गोणादिपिट्ट पूबाट्णंतरे भरगकुतिगितरं ।:१५३८।। सन्वं ण कष्पएयं, णिक्यित समासनो समक्खानं । पुढवादीणं एत्तो, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१५३९॥ पुढवादी जाव तसे, अर्णनवणकाय मोत्तु णिक्खित्ते । संति अर्णंतर लहुगा, परंपरे होति मासलहुं ॥१५४०॥ चतुलहुए आयामं, मासलहू दाण होति पुरिमट्टं। एयं सच्चित्तम्मि, भणियं मीसं अतो वोच्छं ॥१५४१॥ एतेमु चेत्र पुढतादिएसु मीसे अर्गनरं लहुओ । होति परंपरं पणगं, दाणं एत्तो तु बोच्छामि ॥१५४२॥ लहुमासे पुरिमट्टं, पणगे पुण दाण होति णिव्तिगतिं। वणकायमणंतेमुं, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१५४३॥ वणकायअणंतेमं, णिक्खित अणंतरं तु चतुगुरुगा। होति परंपरि गुरुओ, दाणं तु अता तु वोच्छामि ॥१५४४॥ चतुगुरुए तु चउत्थं, गुरुमासे दाणमेगभत्तं तु । आवत्ती दाण्ंपि य, पिहियम्मि अतो उ वोच्छामि॥१५४५॥ पिहियाणंनाऽणंतर, परंपरे चेव होति गुरुपणगं। लहुपणमं तु परित्ते, दोसु वि दाणं तु णिव्यिगती ॥१५४६॥ आवत्ती दाणे वा. पुढवादीणिक्खिवंत भणियं तु। एतो समासयो च्चिय, पिहिनद्दारं वतन्त्वामि ॥१५४७॥

पिहितदोष:

सच्चित्तादिसु अच्चित्तिपिहिय चतुभंग तह य संजोगा। जह भणिया णिक्खित, तह चेव य होन्ति पिहिते वि ॥१५४८॥ सचित मीस एको, एकं तोऽचित एत्थ चउभंगो। आदिदुवे पहिसेहो, तिनए भंगिम मग्गणया ॥१५४९॥ अस्वित्त सचित्तेणं, अतिरं सतिरं च जं भवे पिहितं। प्रहवादिएस छस्स वि. लोहादी अतिर प्रहवीए ॥१५५०॥ पच्छिय-पिहुडादिऽतिरं, ओगाहिमगादिऽणंतरं होति। बद्धणियादि परंपर, अगणिकाए इमं होति ॥१५५१॥ अतिरं अंगाराई, तहियं पुण संतरी सरावादी । तत्थेव अतिर वायु , परंपरी वित्थणा पिहिते ॥१५५२॥ अइरं फलादिपिहियं, वणम्मि इतरं त पच्छि-पिहडादो । कच्छवसंचारादी, अतिरतिरं पिच्छियादीहिं ॥१५५३॥ तइए भंगे मग्गण, भणिएस चउत्थभंगभथणा तु । अच्चित्त अच्चित्तेणं, पिहिएका भयण ? सुणस इमा ॥१५५४॥ चतुर्भगो पिहिएणं, गुरुषं गुरुएण लहुअ (गुरुअ) लहुएणं । लहुयं गुरुएण तहा, लहुवं लहुएण चरिमो तहिं गञ्जो ॥१५५५ पुढवादीणं कमसो. आवत्ती दाण जह तु णिक्यिते ! आयविराहण गुरुयं, ति कातु णवरं तु चउगुरुवा ॥१५५६॥ एत्थ उ दाण चतन्धं, एत्रो वोच्छामि साहरणदारं । साहरणं उक्तरणं. विरेयणं चेत्र एगई ।।१५५७॥ मत्तेण जेण दाहिति, तत्थ अदे जं त हो ज जं दव्वं। तं साहरितं अण्णहि, मत्तेणं देश साहरणा ॥१५५८॥ सा पुण छम्र णातव्वा, सचित्रमीसा तहेव अच्चिता। एत्य वि जह णिक्खित. भंगा संजोग तह चेव ॥१५५९॥ सच्चित्तमीस आदिञ्जएसु दुसु णित्थ मगगण विवेगो । तितयम्मि मग्गणा त्, छस् भोमादीस् साइरणे ॥१५६०॥

संहतदोषः

चरिमे भंगे भयणा, जं दुइमचित्त का तहिं भयणा ?। भण्णइ सुणस तहियं, चडभंगो होति इणमो तू ॥१५६१॥ सुक्के सुकं पढमं, सुक्के उन्हें तु बितियओ भंगो । उल्ले सुक्खं तइओ, उल्ले उल्लं चउत्थो तु ॥१५६२॥ एक्केक्के चडभंगो, सुकादीएस चडसु भंगेसु । थोवे थोवं थोवे, बहुयं बहु थोव बहु बहुगं ॥१५६३॥ जत्थ तु थोवे थोवं, सुक्खे उरुलं च छुभति तं गड्यं। जित तं तु समिवखतुं, थोवाहारं दळइ मत्तं (अन्नं) ॥१५६४॥ सेसेस तीसं पी, दाता भंगेस होति णातव्यो । थोव बहुं बहुग थोबो, बहु बहुगो चेव इणमो तु ॥१५६५॥ उक्खेवे णिक्खेवे, महस्रभाणिम्म खुद्ध वह डाहो। छकायवही य तहा, अचियत्तं चेव वोच्छेदो ॥१५६६॥ योवे योवं छूढं, सुक्से उस्लं तु उस्ले सुक्सं तु । वहुगं तु अणाइण्णं, कडदोसो सो त्ति कातूणं ॥१५६७॥ साहरणेयं भणियं, आवत्ती दाण जह तु णिक्खित । दायगदारं अहुणा, समासओ हं पवक्खामि ॥१५६८॥ नाले बुट्टू मत्ते, उम्मत्ते वेविए य जरिए य । अंधेल्लए पगलिए, आरूढे पाउयाहिं च ॥१५६९॥ हत्थंद-णियलबद्धे, विबज्जिए चेव हत्थ-पाएहिं। तेरासि गुन्त्रिणी बालवच्छ भुंजैति घुनुर्छेती ॥१५७०॥ भज्जेन्ती य दलेन्तो, कंडेन्ती चेत्र तह य पीसेन्ती । पिज्जंती रुंचंती, कत्तंती पगडूमाणी (पमदमाणी) य ॥१५७१॥ छकायवग्गहत्था, समणद्वा णिक्खिवितु ते चैव। ते चेवागाहेन्ती, संघट्टेंताऽऽरभंती य ॥१५७२॥ संसत्तेण तु दन्वेण लितहत्था य लित्तमत्ता य ।

दायकदोष:

ओयत्तेन्ती साहारणं च देन्ती य चोरिययं ॥१५७३॥ पाहृहियं च उवेन्ती, सपचवाया परं च उहिस्स । आभोग अणाभोगेण दलंती वक्जणिक्जा उ ॥१५७४॥ एतेसि दायगाणं, गहणं केसिचि होति भइयव्वं। केसिची अमाहणं, तप्पडिवबखे भवे गहणं ॥१५७५॥ एते दायगदोसा, एतेहिं दिज्जमाण ण वि कप्पे। जे त अकारणे गेण्हे, पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥१५७६॥ बाले बुट्टे मर्च, उम्मचे वैविए य जरिए य। एतेसि मासलहं, आवत्ती दाण पुरिमट्टं ॥१५७७॥ अंधेक्ट-पगलियादी, जाव तु दारं तु वालवच्छ ति । पत्तेयं चतुगुरुगा, दाणं पुण होयऽभत्तहं ॥१५७८॥ भुंजण-घुमुलेन्तीए, आवत्ती चतुल्रह् मुणेयन्ता । दाणं आयामं ती, भज्जणमादी अतो त्रोच्छं ॥१५७९॥ भज्जन्ती य दलंती, जाव त छवकायवग्गहत्थ ति । समणहा ते चेव त. णिविखव आगाह घट्टनी ॥१५८०॥ एत्थ तु विमरिसदाणं, पच्छितं होति कायणिष्फण्णं। सेसेसुं दारेसुं, चतुलहुगा दाणमायामं ५१५८१॥ एते दायग भणिता. एत्रो उम्मीसयं पवक्खामि । अन्मिश्रदोषः तं तिह सचित्त मोसग. अच्चित्तेणं च उम्मीसं ॥१५८२॥ जह चेव य संजोगो, कायाणं हेट्टओ त साहरणे।

तह चैव य उम्मीसे, होति विभागो णिरवसेसो ॥१५८३॥ चोएति को विसेसो. साहरणुम्मीसयाण दोण्हं पि १। भण्णति साहरणं तू, भिक्खट्टा भत्तयं रेये ॥१५८४॥ उम्मीसं पुण दायव्वयं च दो वेते मीसितुं देजा। बीय हरियाइएहिं, जह ओदण-कुसणमादीणि ॥१५८५॥ तं पि य सुक्ले सुक्लं, भंगा चत्तारि जह त साहरणे।

अप्पबहुए वि चउरो, तहेव चाइण्णऽणाइण्णं ॥१५८६॥ जम्मीस भणियमेयं, एत्तो वोच्छामि परिणयं दुविहं। दन्वे भावे य तहा, दन्वे पुढवादि छक्कं तु ॥१५८७॥ जीवत्तम्मि अविगते. अपरिणयं परिणयं गते जीवे । दिहुंतो दुद्ध दही, इय अपरिणयं परिणयं चेव ॥१५८८॥ दव्वे अपरिणयम्मी, पिछत्तं होति कायणिष्फणं। भावे अपरिणनं पुण, एत्तो वोच्छं समासेणं ॥१५८९॥ सिन्सिल्लगादिणं तू, अहवा अण्णेहिं होति सामण्णं। तत्थेगस्स परिणतो, भावो देमि ति साहस्स ॥१५९०॥ सेसाण ण वि परिणयो, अपरिणयं भावतो भने एयं। अहवा वि दाणमण्णं, अपरिणयं भावतो होति ॥१५९१॥ संघाडग हिंडतो, एगस्स गणम्मि परिणयं एसी बितिएण त परिणमती. तं पि अधेत्तव्य मा कलहो ॥१५९२॥ पढिमिन्छुग भावम्मी, अप्परिणयगेण्हणे तु लहुमासो। तस्सावत्ती भवति, दाणं पुण होति पुरिमहूं ॥१५९३॥ भणित अपरिणयमेयं, एत्तो बोच्छामि लित्तदारं त। लित्तक्मि जत्थ लेवो, लब्भित क्रसणाभिदन्त्रस्स ॥१५९४॥ तं खल ण गेणिहयव्वं, मा तहियं होज्ज पच्छकम्मं तु । तम्हा उ अलेवकडं. णिप्पावादी गहेतव्वं ॥१५९५॥ इति उदिते चोएई, जदि पच्छाकम्मदोस एवं तु । तो ण वि भोत्तव्वं चिय, जावज्जीवाए भणति गुरू ॥१५९६॥ को कल्लाणं नेच्छति, आवस्सगजोग जदि ण हायंति। तो अच्छतु मा शुंजतु, अह ण तरे तत्थ भंगऽहा ।।१५९७॥ संसद्रहत्य-मत्ते. सन्वम्मी सावसेस भंगऽहा । **ग्रहणं त** सावसेसे, सेसयभंगेस्र भयणा यु ॥१५९८॥

अपरिणतदोषः

लिप्तदोष:

छर्दित**दोषः**

संसत्तहत्य-मत्ते, लिते लहुगा तु दाणमायामं। अवसेस लि....च, दाणं पुण होति पुरिमहुं ॥१५९९॥ लितं ति गतं एयं, एतो वोच्छामि छड्डियं अहुणा। तं पि तिह छड्डियं तू, सचित्त मीसं च अच्चित्तं ॥१६००॥ छड्डिएँ चडलहुगा तू, आवत्ती दाण होति आयामं। अहव सचित्तादीणं, आवत्ती कायणिष्फण्णं ॥१६०१॥ सच्चित्त मीसए या, चडभंगो छड्डणिम्म इत्थ भवे। चडभंगे पहिसेहो, गहणे आणादिणो दोसा ॥१६०२॥ उसिणस्स छड्डणे देन्तओ व डज्झेज्न कायडाहो वा । सीयपडणम्मि काया, पडिए महुविंदुआहरणं ॥१६०३॥ छड्डिय भणियं एयं. गहणेहण एस परिसमत्ता तु । गहितस्स अतो विहिणा, वासेसण पत्तमहुणा उ ॥१६०४॥ सा चतुहा णामादी. सन्वं वण्णेत एत्थ दारम्मि। एतस्सेवोवणयं, वोच्छामि इमं समासेणं ॥१६०५॥ मच्छत्थाणी साह, मंसत्थाणी य भत्तपाणं तु । रागादीण समुद्यो, मच्छियथाणी मुणेतच्वो ॥१६०६॥ जह ण छिछओ तु मच्छो, उवायगहणेण एव साह वि। अप्पाणमप्पण चिय, अणुसासे भ्रंजमाणी उ ॥१६००॥ बायालीसेसणसंकडम्मि गेण्हंतों जीव! ण सि छलितो। एण्डि जह ण छलिजासि, भुंजंतो राग-दोसेहि ।१६०८॥ घासेमणा त भावे, होति पसन्था य अप्पसत्था य। अपसत्था पंचिवहा, तन्त्रिवरीता पसत्था त ।।१६०९॥ संजोइय अइबहुयं, संगाल सधूमयं अणद्वाए । पंचिवह अप्पसत्था, तन्त्रिवरीता पसत्था तु ॥१६१०॥ संजोयणेत्य दुविहा, दुव्वे भावे य दुव्वे बहियंतो ।

भिक्खं चिय हिण्डंता. संजोए बाहिरेसा त ॥१६११॥

प्रासेषणा

सं योजनादोष:

खीर-दहि-कट्टरादिण, लंभे गुड-सालि-कूर-घतमादी। जातिता संजोए, हिण्हंतंतो अतो वोच्छं ॥१६१२॥ अंतो तिह पादम्मी. लंबण वयणे य होइ बोद्धव्वं। जं जं रसोवकारिं, संजोययए त तं पाए ॥१६१३॥ वार्छक-वडग-वाईंगणादि संजोए लंबणेण समं। वयणम्मि छोद्ध लंबण, तो सालणगं छुमे पच्छा ॥१६१४॥ दव्विम्म एस संजोयणा तु संजोऍ जं तु दव्याई। रसहेडं तेहिं पुण, संजोयण होति भावम्मि ॥१६१५॥ संजोएन्तो दव्वे, राग-होसेहिं अप्पर्ग जोए। राग-होसणिमित्तं, संजोययए तु तो कम्मं ॥१६१६॥ कम्मेहितो य भनं, मंजीययए भनातु दुनखेणं। संजोययए अप्षं. एमा मंजोयणा भावे ॥१६१७॥ रसहेडं पडिकुट्टो, संजोयो कप्पए गिलाणहा । जस्स व अभत्तछंदो. सहोडओं अभाविनो जो य ॥१६१८॥ अहव ण जाई दब्बं, पत्ते य घयादिगा वि मेलंति । सत्त्रामादीहि समं, मा होतु विगिचणीयंति ॥१६१९॥ अंतो बहि चउगुरुगा, बिनियाएसेण बाहि चउलहुगा। चजगुरुगेऽभत्तर्द्धं, चजलहुगे होति आयामं ॥१६२०॥ संजोयण भणिएसा, अहुण पमाणं भणामि आहारे । जावतियं भोत्तव्वं, साहूहिं जावणट्टाए ॥१६२१॥ बत्तीसं किर कवला, आहारो कुन्छिपूरओ भणिओ। पुरिसम्स महिलियाए, अट्टावीसं भवे कवला ॥१६२२॥ चडवीस पंडगस्सा, ते ण गहिन जेण पुरिस-इत्थीणं। पच्चज्ज ण पंडस्स उ, तम्हा ते ण गहिना एत्थं ॥१६२३॥ एतो किणावि हीणं. अद्धं अद्धद्धगं च आहारं। साहुस्स बेन्नि धीरा, जायामायं च ओमं च ॥१६२४॥

प्रमाणदोषः

पकामं च णिकामं च, जो पणियं भत्त-पाणमाहारे । अतिबहुयं अतिबहुसो, पमाणदोसो मुणेयव्वो ॥१६२५॥ बत्तीसाउ परेणं, पकाम णिचं तमेव त णिकामं। जं पुण गलंतणेहं, पणीतिमिति तं बुहा बेंति ॥१६२६॥ अतिबहुयं अतिबहुसो, अतिष्पमाणेण भोयणं भुत्तं । हादेज्ज व वामेज्ज व, मारेज्ज व तं अजीरंतं ॥१६२७॥ णियगाहारादीयं, अइबहुयं अइबहुसों तिण्णि वारा उ । तिण्ह परेण तु नं तु, तं चेव अतिष्पमाणं तु ॥१६२८॥ अहवा अतिष्पमाणो, आतुरभूतो तु भुंजए जं तु । तं होति अतिषमाणं, हादणदोमा उ पुच्युत्ता ॥१६२९॥ जम्हा एते दोसा, अतिरित्ते तेण होति चतुलहुगा। आवत्ती दाणं पुण, आयामं होति णायव्त्रं ॥१६३०॥ दोसा अतिष्पमाणे, तम्हा भोत्तव्य होति केरिसयं ?। भण्णति सुणमु जारिस, भोत्तव्वं होति साहहि ॥१६३१॥ हियाहारा मियाहारा. अप्पाहारा य जे णरा। ण ते विज्ञा चिमिच्छंति, अप्पाणं ते चिमिच्छमा ॥१६३२॥ हितमहितं होति दहा. इह परलोगे य होति चडभंगो। इहलोग हिनं ण परे, किंचि परे णेय इहलोए ॥१६३३॥ किचि हित्रमुभयलोए, णोभयलोए चतुत्थओ भंगो। पढमगभंगो तहियं. जे दव्वा होन्ति अविरुद्धा ॥१६३४॥ जह खीर-दहि-गुलादी, अणेसणिज्जा व रत्तद्दे वा। भुंजंते होति हियं, इहई ण पुणाइ परलोए ॥?६३५॥ अमणुष्णेसणसुद्धं, परलोगहितं ण होति इहलोगे । पत्थं एमणसुद्धं, उभयहियं होति णातव्यं ॥१६३६॥ अहितोभयलोगम्मी, अपन्थदन्वं अणेसणिज्जं च ।

अहवा वि रत्तदुद्दी, भ्रंजिति एती मियं वीच्छं ॥१६३७॥ अद्धमसणस्स सन्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाष् । वायुपवियारणहा, छन्भागं ऊणगं कुज्जा ॥१६३८॥ सीयो उसिणो साहारणो य कालो तिहा सुणेयन्त्रो । एएसुं तीसुं पी, आहारे होतिमा मत्ता ॥१६३९॥ एगो दवस्स भागो, अवद्वितो भोयणस्स दो भागा। बहूंति व हायंति व, दो दो भागा तु एक्केक्के ॥१६४०॥ एत्थ तु ततियचतुत्था, दोण्णि वि अणवद्विता भवे भागा। पंचम छट्ठो पढमो, वितिओ य अवद्विता भागा ॥१६४१॥ एयं तु मियं भणियं, एत्तो वी हीणगं भवे अप्षं। एय पमाणाऽभिहिनं, संगालादी अनो बोच्छं ॥१६४२॥ संगाले चउगुरुगा, आवत्ती दाण होयऽभत्तहं। चजलहुगा तु सधूमे, आवत्ती दाणमायामं ॥१६४३॥ णिकारण ग्रुंजन्ते, एत्थ वि लहुगा तु दाणमायामं। वितियादेसे लहुओ, आवत्ती दाण पुरिमट्टं ॥१६४४॥ ण वि भुंजइ कारणतो, एत्थ वि लहुगा उ दाणमायामं। सेंगालादिण कमसो. सरूविमणमो पत्रक्लामि ॥१६४५॥ जह इंगाला जलिया, डहंति जं नत्थ इंघणं पडियं। इह चिय रागिंगाला, डढंति चरणियणं णियमा ।१६४६॥ रागेण सइंगालं, जं आहारेइ मुच्छिओं साहू । सुहु सुसंभित णिदं, सुपक सुरसं अहो सुरहि ॥१६४७॥ रागमीपज्जलिओ, भ्रंजंतो फासुरं पि आहारं। णिइ हिंगालणिमं, करेति चरणिघणं खिप्पं ॥१६४८॥ भणितं संगालेयं, अहुणा बोच्छं सधूमगं पगते। केवलवियणं तं तु, धूमायंतं तहा छगेणं ॥१६४९॥

अज्ञारदोषः

ध्मदोष:

जह वा वि चित्तक्रममं, धूमेणोरत्तयं ण सोभइ छ। तह धूमदोसर्त्त, चरणं पि ण सोभए मइलं ॥१६५०॥ दोसेण सधूमं तू, जं आहारेति माहु णिदंतो। विरसमलोणं कुहितं, रोरो भोक्खेति णं एयं ॥१६५१॥ दोसग्गी वि जलंतो, अप्पत्तियधूमधूमियं चरणं। अंगारमेत्तसरिसं, जा ण भवति णिइहति ताव ॥१६५२॥ रागेण सईगालं, दोसेण सपृषगं मुणेयव्वं। राग-होससहगतं, तम्हा तु ण होति भोत्तव्वं ॥१६५३॥ आहारंति तबस्सी, विगतिगालं च विगयधूमं च । ञ्चाण-ऽज्झयणणिमित्तं, एसुवएसो पवयणस्स ॥१६५४॥ भणितं सधूममेयं, एत्तो वोच्छामि कारणहारं तं पुण पडिक्कमंतो, चरिम्रस्सग्गे विचिन्तेति ॥१६५५। भोत्तव्य कारणम्मी, किं अन्यि अह्य नित्थ जइ अत्थी। तो भुंजेज्जा साहू. के पुण ते कारणा ? सुणसु ॥१६५६॥ छहिं कारणेहिं साह, आहारंतो उ आयरति धम्मं । छहिं चेव कारणेहिं, णिज्जृहंनो यु आयरित ॥१६५७॥ वेयण वेयावचे, इरियट्टाए य संजमट्टाए । तह पाणवत्तियाए, छट्टं पुण धम्मचिन्ताए ॥१६५८॥ णित्थ छुहाएँ सरिसिया. वियणा भुंजेज्ज तप्पममणट्टा । छादो वेयावच्चं, ण तरति काउं अयो भुंजे ॥१६५९॥ इरियं च ण सोहेती, खुहितो भमलीय पेच्छ अन्धारं। थामो वा परिहायइ, पेहादी संजमं ण तरे ॥१६६०॥ आयु-सरीर-प्पाणादि छव्विहे पाण ण तरती मोत्तं । तद्धारणद्वतेणं, भ्रंजेज्जा पाणवत्तीयं ॥१६६१॥ धम्मज्झाणं ण तरति, चिन्तेउं पुरुवरत्तकालम्मि । अहवा वी पंचिवहं, ण तरित सज्झाय काउं जे ॥१६६२॥

कारणदोषः

एतेहिं कारणेहिं, छहिं आहारेति संजतो णियमा । छहिं चेव कारणेहिं, णाहारेती इमेहिं तु ॥१६६३॥ आतंके उवसम्मे, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीए। पाणिद्या-तवहेऊ, सरीखोच्छेयणद्वाए ॥१६६४॥ आयंको जरमादी, तम्मुप्पण्णे ण भुंजे भणितं च। सहस्रपदया वाही, वारेज्जा अद्रमाटीहिं ॥१६६५॥ राया सण्णायादी, उवसम्मो तम्मि वी ण भ्रंजेच्चा । सहणद्वा त तितिक्खा, वाहिज्जंते त विसप्हि ॥१६६६॥ भणिनं च जिणिदेहिं. अवि आहारं जती ह वोचिंछदे। लोगे वि भणिय विसया, विणिवत्तंते अणाहारे ॥१६६७॥ तो वभरवखणहा, ण वि भ्रंजेज्जा हि एवमाहारं। पाणदय वास महिया, पाउसकाले व ण वि भ्रंजे ॥१६६८॥ तवहेत चउत्थादी. जाव तु छम्मासिओ तवा होति । छहं णिच्छिण्णभरो, छह्नेतुमणो सरीरं तु ॥१६६९॥ असमत्थों संजमस्स उ. कतिकचोवक्खरं व तो देहं। छड़मि त्ति न भुंजर, सन्बह वोच्छेय आहारं ॥१६७०॥ घासेसणा सम्मत्ता ॥ मृलाइ--सोलम उगमदोसा, सोलस उपादणाएँ दोसा तु। दस एसणाएँ दोसा, संजीयणमादि पंचेव ॥१६७१॥ सीयालीसं एते, सन्वे वी पिंडिता भवे दोसा । जैहिं अविसुद्ध पिंडे, चरणुक्यातो जतीण भवे ॥१६७२॥ एतहोसविग्रको. भणिताऽऽहारो जिणेहिं साहणं। धम्मावस्त्रगजोगा, जेण ण हायंति तं कुज्जा ॥१६७३॥ उग्गममादीणं तु, कारणपज्जन्तपत्थडो एस। लक्खण आवत्ती दाणमेव कमसो समक्खायं ॥१६७४॥

पिंडपत्थारो । अहुणा गाइत्थो-

_{गाथाया अर्थः} अहुणा गाहाणं तु, वोच्छामी अक्खरत्थमिणमो तु। उद्देस कम्म मोर्चु, चरमितयं होति सेसं तु ॥१६७५॥ पासंडाणं पढमं, बितियं समणाण ततिय साधुणं । चरिमतियं एवं त्, कम्मं ती आहकम्मं तु ॥१६७६॥ पासंड मीसजाए, साहमीसे य सघरमीसे य। बायरपाहुडिया तू, विवाह उस्सक ओसका ॥१६७७॥ आहड सपचवार्य, विराहणा जत्थ होति आयाए । लोमेण जो उ एसति, सो होती लोभपिडी तु ॥१६७८॥ सब्वेसु वि एतेसु, उद्देसिगमादिलोभपञ्जंते । पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु भत्तर्ह ॥१६७९॥३५॥ अतिरं अणंतणिक्खिन-पिहिय-साहरिय-मीसियादीसुं। संजोग सइंगाले, दुविह णिमित्ते य खमणं तु॥३६॥ अतिर णिरंतर भण्णति, अणंतकायो तु होनि वणकायो । पूर्वालमादी किंची, णिक्खितं होति एत्थं तु ॥१६८०॥ पिहिनं अणंतकाष्, साहरियमणंतमीसियं वा वि। आदिग्गहणेणं पुण, अपरिणएऽणंतकाए वि ॥१६८१॥३६। कम्मुद्देसिय-मीसे, धायादि-पगासणादिएसुं च । पुर-पच्छकम्म-कुच्छिय-संसत्तालित्तकरमत्ते ॥३७॥ जावंतिकम्म पढमे, जावंतियमीसजायमादिले । पंचिवह धातिपिंडे, खीरादी अंकपज्जन्ते ॥१६८२॥ आदिगगणेणं पुण, द्तीपिंडे णिमित्ततीए य। आजीव वणिमर्पिडो, बाद्रतेगिच्छणाहि च ॥१६८३॥ कोहे माणे य तहा, संबंधी वयणसंथवे थीस । विज्ञा मंते चुण्णे, जोगे एमेते आदिपदा ॥१६८४॥

पादोकरण पगासे, दन्वे कीए य आयपरकीए। भावे त आयकीते. लोइयपामिश्चिएम् च ॥१६८५॥ लोइयपरियट्टे बी. परगामे आहडम्मि णिरवाते । पिहिउन्भिण्णसचित्ते, तह य कवाडे य णायव्वे ॥१६८६॥ मालोहटमुकोसे, अच्छेज्जे तह य होति अणिसट्टे। एमेते त पगासणमादिपदा होति णायच्या ॥१६८७॥ पुरकम्म पच्छक्रम्मे, कुच्छियद्व्येण मक्खियं जं तु । संसत्तद्व्वलिते. इत्थे मत्ते व णातव्वं ॥१६८८॥ एतेस् जहहिद्दो, कम्मादिस् लित्तपञ्जवसिएस् । पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु आयामं ॥१६८९॥३७॥ अतिरं परित्तणिक्खित्त-पिहिय-माहरिय-मीसियादीसु। अइमाण-धूम-कारणविवज्जए विहियमोयामं ॥३८॥ अतिर णिरंतर भणिनं. परित्तकाए उ होति णिक्खितं। परितेण य जं निहितं, साहरियं वा परित्तेणं ॥१६९०॥ मीस परित्तेणं चिय, आदिगगहणा परित्तलितं वि! परितेस छड्डियम्मि वि, आदिग्गहणा त एमेते ॥१६९१॥ अइमाण सधुमे या, आहारे कारणे विवचासो । कारणवित्रज्ञओ तू, केरिसओ होतिमं वोच्छं ॥१६९२॥ आहारेति अकज्जे, ण सम्रहिसे एव कारणे जो तु। एस विवज्जो भणितो. सन्वत्य वि सोहि आयामं ॥१६९३॥३८॥ अज्झोयर-कड-पूतिय-मायाणंते परंपरगए य । मीसाणताणंतरगतादिए चेगमासणगं।।३९॥ पासंहऽज्झोयरओ, साहअज्झोयरो य णायन्त्रो। होति कडो चउहा तु, जावंतियमादि विन्नेयो ॥१६९४॥

आहारे प्रतियम्मी, मायापिंडे य होति णायव्ये । सिचत्रऽणंतकाष्, परंपरे जं त णिक्खिते ॥१६९५॥ मीसार्णतअर्णतरणिक्खित चेव होति णायव्वे । आदिगाहणे पिहिते, साहरिए मीसए चेव ॥१६९६॥ गहिताणंतपरंपरभीसऽतिरं पिहियमादि बोद्धव्वं । एव जहहिद्वेस, सन्वत्थ वि सोहि भत्तेकं ॥१६९७॥३९॥ ओह-विभागुद्देसोवकरण-पूतीअ-ठविय-पागडिए। लोउत्तर-परियट्टिय-पमिच-परभावकीए य ॥४०॥ ओहुद्देसविभागे, उद्देस चडव्विहे तु णातन्त्रो । उवगरणपूरिए या, चिरठविए पागडे चेव । १६९८॥ लोउत्तरपामिचे, परियद्विय उत्तरे य णायन्वे ॥ परभावकीय मंखादिएस सब्वेस उहिद्दो ॥१६९९॥ पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु होति पुरिमट्टं। सम्गामाहडमादी. पत्ते एयं पत्रक्लामि ॥१७००॥४०॥ सग्गामाहड-दहर-जहण्णमालोहडोतरे पढमे । सुहुमतिगिच्छा-संथवतिग-मक्लिय-दायगोवहए॥४१॥ सम्गामाहडदद्दर, उन्मिण्णे अहव गद्रिमहिए तु। मालोहडे जहण्णे. उयरो अज्झोयरो होति ॥१७०१॥ पढमो जावंतज्ङ्मोयरो तु एसो य हो मुणेतन्त्रो । सुहुमतिगिच्छा संथव, वयणे तू होति णायन्त्रो ॥१७०२॥ कद्दममक्खिय पुढवी-आऊ-उदउल्लमक्खिए जं तु। वणकायपरित्तेणं, उक्टुंड मक्खियतिगेणं ॥१७०३॥ दायगजवहय एत्तो, दायग वालादियऽप्पभ्र जे य । एतेसेत्यऽहिगारो, ते य इमे होंति बाळादी ॥१७०४॥

बाले बुहूं मत्ते, उम्मत्ते वेविए य जरिए य। एते देंति तु जं तू, तं होती दायगोवहयं ॥१७०५॥ प्तेसु जहु हिट्टेसाऽऽहदमादीसु जरिययन्तेसु । पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु पुरिमट्टं ॥१७०६॥४१॥ पत्तेयपरंपरठविय-पिहिय-मीसे अणंतरादीसु। पुरिमट्टं संकाए, जं संकइ तं समावज्जे ॥४२॥ वणकायपरित्तेणं, सचित्तपरंपरं तु णिक्खिते। तेणेव य पिहियं तू, परंपरं होति विण्णेयं ॥१७०७॥ एमेव य साहरिए, सचित्तपरंपरे परित्तम्मि । मीसपरित्त अणंतर, णिक्खित्ते होति णायव्वं ॥१७०८॥ आदिगाहणेणं तू, पिहिए उ अणंतरे तु मीसम्मि। एमेव य साहरणे, मीसेसु अर्णंतरे होति ॥१७०९॥ सन्वेसु जहुद्दिद्वेसु सोहि पुरिमहूमेत्थ पत्तेयं। संकाए जं संकति, तस्सेव य होति पच्छित्तं ॥१७१०॥४२॥ इत्तरठविए सुहुमे, ससणिद्ध सरक्ल मक्लिए चेव। मीसपरंपरठवियादिएसु वितिएसु वा विगती ॥४३॥ इत्तरव्या भत्तो, पाहुडिया मुहुम तह य ससणिद्धे। आयू मिक्खयमेयं, समरक्खं पुढविए होति । १७११॥ पुढवी आउकाए, तेऊ वाऊ परित्तवणकाए ह बेइंदिय तेइंदिय, चडरो पंचिदिएगुं च ॥१७१२॥ प्तेसुं पुढवाटिसु, मीसे उ परंपरे उ णिक्सिने। पत्तेयं पत्तेयं, लहुपणगं दाण णिव्त्रिगती ॥१७१३॥ वणकायअणंतमीसे, णिक्खितें परंपरं तु सोहीमा । ग्रह्मणमं आवसी, दाणं पुण होति जिविद्यति ॥१७१४॥

बितियाणंताऽणंतरणिविखने गुरुगपणग आवत्ती । दाणं णिव्विगती ऊ. परंपरे होति एमेव ॥१७१५॥ बितियपरित्ताणंतरणिक्खिते छहुगपणगमावत्ती । दाणं णिव्विगयं तु, परंपरे होति एमेव ॥१७१६॥४३॥ सहसाऽणाभोगेण व, जेसु पडिकमणमाहियं तेसु । आभोगओ विबहुसो,अतिष्पमाणे वणिव्विगती॥४४ सहसा-अणाभोगा तु, प्रव्युत्ता जेस्र जेस्र ठाणेसु । सन्वेसु वि तेसु भवे, पढिक्रमण पुन्वविहियं तु ॥१७१७॥ तेसु त्ति कारणेसुं, आभोगे इत्थ जाणमाणो उ। बहुसो होति पुणो पुणों, अतिष्पमाणे वि एमेव ॥१७१८॥ सञ्बत्य त णिव्विगई, सोही आभोगतो ग्रुणेतन्वा। बहुसो वि सोहि एसा, अतिष्पमाणे वि णातन्वा ॥१७१९॥४४ धावण-डेवण-संघरिस-गमण-किङ्वा-कुहावणादीसु । उक्कुहि-गीत-छेलिय-जीवरुयादीसु य चउत्थं ॥४५॥ धावण गतिमनिरित्ता, वाहित्ति व हैवणं तु... हुवणं । संघरिसों जमलिओ तू, को सिग्यगति ति वचति तु॥१७२०॥ किङ्का होयऽद्वावय, चउरंगा जूयमादि णायव्या । वद्यादि इंदजालं, खेड्डा उ कुहाबणा एसा ॥१७२१॥ आदिगाइणेणं तू, समासओं पहेलिया कुहेदादी। उक्कुट्टी पुकारो, गीतं पुण होइ कंटं तु ॥१७२२॥ डेलिय सेण्टा भण्णति, संगारो कीरती दु सासण्णा। जीवह्य मयूरादी, कोइलमादी व णातव्वं ॥१७२३॥ भावणमादिपदेसुं, सन्वेसु अहक्तमेण विण्णेयं। वर्षेयं वर्षेयं, सोही साहुस्सऽयर्षद्वं ॥१७२४॥४५॥

तिविहोवहिणो विच्चुतविस्सरितापेहिताणिवेदणए। णिञ्चितियं पुरिमेकासणाइ सहिम्म चायामं ॥४६॥ तिविहो त होति उवही, जहण्यओ मजिझमो य उद्घोसो । चतुविह छन्विह चतुमेदयो य कमसो मुणेयन्त्रो ॥१७२५॥ मुहपोत्ति पायकेसरि, पत्तद्ववणं तु गोच्छओ चेव । एसो जहण्णओ तू , मज्झिमगमतो पवनखामि ॥१७२६॥ पहलय रयतरणं वा. पत्ताबंधो य चोलपटो य। मत्तय रयहरणं वा. मिन्झमओ एस णातन्त्रो ॥१७२७॥ पच्छादतिग पहिगाह, एसो उक्कोसओ चत्रक्मेओ । ओहोबही उ एसो, तिबिहो तु समासतो होति ॥१७२८॥ ओवगाहिओ तिविहो, जहण्ण मज्झो तहेव उक्कोसो । सन्त्रो वण्णेयन्त्रो, जह भणिओ कप्पअन्झयणे ॥१७२९॥ विच्चत पहियं भण्णति, पुणरवि लखे जहण्णमादीस ! सोही पमायमूला, णिन्वियमादी य इणमो उ ॥१७३०॥ णिन्त्रिगति जहण्णिम्म. मिज्झमए सोहि होति पुरिमहूं। एकासणमुकासे. सन्वस्मि य होति आयामं ॥१७३१॥ तिविहोविह विस्सरिए, ण वि पिडलेहेइ तत्थ सोहि इमा। णिव्वितितं पुरिमेकासणं तु सन्वम्मि चाऽऽयामं ॥१७३२॥ तिविहोविह विस्सरिए, आयरियादीण जो त ण णिवेदे। सोही णिन्वितियादी, आयामंता मुणेयन्वा ॥१७३३॥४६॥ हास्यिधोतुग्गमियाणिवेदणादिण्णभोगदाणेसु । आसणमायामचतुत्थयाइं सन्वम्मि छहुं तु ॥४७॥ जहण्णोवहि हारेती, सोही इकासणं तु दातन्वं । मिन्सम् आयामं, उक्कोसे होयऽभत्तद्वं ॥१७३४॥

जघन्य उपधि:

मध्यम उपधिः

उत्कृष्ट उपधिः

सव्वोवहि हारेती, सोही छट्टं त होति णायव्वं। एत्तो धोए वोच्छं, सोही उ जहण्णमादीणं ॥१७३५॥ घोएँ जहण्णेकासण, मज्ज्ञिमए सोहि होति आयामं। उक्कोसें असहं, घोए सन्विम छहं तु ॥१७३६॥ तिविद्दोविद्वयुगमितुं, आयरियाणं तु जो ण णिव्वेदे । आसणमायामचतुन्थयाई सन्वम्मि छट्टं तु ॥१७३७॥ उवही जहण्णमादी, गुरूहिं अविदिण्ण जो तु परिभुंजे। सोहिकासणमादी, छट्टंना होति सन्वम्मि ॥१७३८॥ अणुण्णाय गुरूहिं, उबहि जहण्णादि देति अण्णस्स । सोहिक्कासणमादी, छट्टंतो होति जीएणं ॥१७३९॥४७॥ मुहणंतय रयहरणे, फिडिए णिव्विगतियं चउत्थं तु। नासिय हारविए वा, जीएण चउत्थछद्वाई ।।४८॥ मुहणंत फिडिय जग्गह, सोही णिन्विगनियं तु दाइन्वं । रयहरणे त चडत्थं, फिडिए सोहंस लद्धिमा ॥१७४०॥ म्रहणंत पमादेणं, हारविए णासिए व भत्तद्वं। रयहरणे छट्टं तू, सोहेम पमादिणो जीए ॥१७४१॥४८॥ कालऽद्धाणादीए, णिव्विगती खमणमेव परिभोगे । अविहिविगिंचणियाए, भत्तादीणं तु पुरिमृहं ॥४९॥ विकहादिपमाएणं, कालादीयं करेन्ते भतादी। सोही णिन्विगती तू, परिभोगे होयऽभत्तर्ह ॥१७४२॥ एवऽद्धाणातीए, अप्परिभोगे वि सोहि णिव्त्रिगति । परिभोगेऽभत्तहो, अविहीय विगिचणे पुरिषं ॥१७४३॥४९॥ पाणस्सासंवरणे, भूमितिगापेहणे य णिव्विगती। सबस्सासंवरणे, अगहणभंगे य पुरिमट्टं ॥५०॥

पाणस्सासंवरणे, सोही साहुस्स होति णिन्विगति। भूमीतिगं इमं तू. वोच्छामि समासतो इणमो ॥१७४४॥ उचारभूमि पढमा, बितिया पुण होति पासवणभूमी । भूमित्रिकम् तइया उ कालभूमी, सोहेन्य अपेहणे विगति ॥१७४५॥ असणादी चतुभेदो, सन्वो वि य एत्थ होति आहारो । तस्स असंवरणम्मी, सोही साहुम्य पुरिषट्टं ॥१७४६॥ अहव णमुकारादी, पचम्वाणं ण गेण्हए मञ्बं । गहितं वा जो भंजति, सोही सन्वन्य पुरिमट्टं ॥१७४०॥५०॥ एयं चिय मामण्णं, तव-पडिमा-ऽभिग्गहादियाणं पि। णिब्वितियादी पक्लिय-पुरिसादिविभागतो णेयं॥५१ एयं चिय पुरिमहं, सामण्ण विसेसियं मुणेयव्वं। तव पढिम अभिगाहे या. अगहणभंगे इमं वोच्छं ॥१७४८॥ नवो बारमहा होति, पहिमा तू एगरानिया। दव्बाती तु अभिगाह, अगहणभंगे तु पुरिमट्टं ॥१७४९॥ गाहापच्छद्रम्स तु. इमा विभामा तु, होति णातन्वा । लुड़ादी पंचण्ह वि. णिन्त्रिगर्नि अन्त भत्तहो ॥१७५०॥

एयं पित्स्त् । चाउम्मासिय लुडुग. भिक्स् थेरो उवज्झ आयरिए। पुरिमहु एगभत्तं. आयाम चउत्य छहंना॥१७५१॥चाउम्मासिए। पितदिणपचक्साणं. जहमत्ति अगेण्डणे तु मब्भिह्यं। खुड्डादी पंचण्ड वि, एकामणमृहमं अंतो॥१७५२॥ संवच्छिरिए। फिडिए सत्मुस्मारिय भंगे वेगादि वंदणादीसु। णिविगतिय-पुरिमेगासणादि सब्वेसु चायामं॥५२॥

फिडितुस्सम्गे एके, पमाइणो सोहि होति णिन्त्रिगति । दोहिं पुरिमृह भवे, तिहिं फिडिए सोहि भत्तेकं ॥१७५३॥ सच्चे काउस्सँगो, फिडिए जुयभो पडिकमे जो तु। सोही पच्छाऽऽयामं, उस्सारंते इमं बोच्छं ॥१७५४॥ सतम्रसारे एकं, काउस्सग्गं ति एत्थ णिव्विगति । दोसु तु पुरिमडू भवे, एकासणयं भवे तीहिं ॥१७५५॥ सन्वे सतग्रस्सारें, आयंबिल एत्थ होति सोही तु । भगो वि य एस चिय, सोही तह वंदणमदेन्ति ॥१७५६॥५२॥ अकएसु तु पुरिमा-ऽऽसणमायामं सब्वसो चउत्थं तु । पुञ्चमपेहितथंडिल, णिसिवोसिरणे दियासुवणे ॥५३ ण करें तस्सुस्ममां, सोही एत्थं तु होइ पुनिमहूं। दोहि य एकासणयं, तिहि अकरणे सोहि आयामं ॥१७५७॥ सन्वं चिय आवसयं, अकरेन्ते सोहि होयऽभत्तद्रो । काजस्सम्मे तह वंदणस्स सोही तहा[5]कर्णे ॥१७५८॥ गाहापच्छद्धेण तु, पुन्वं तु अपेहिए उ थंडिले । णिसिनोसिरणे सोही, माहुस्स भने अभत्तर्ह ॥१७५९॥ दियसुवणे णिकारणें, सोही साहुस्स होयऽभत्तर्ह । कोई परिवसमाणे, ककोछादीमना वोच्छं ॥१७६०॥५३॥ कोहे बहुदेवसिए, आसव-ककोलगादिएमुं च। लसुणादी पुरिमडूं, तण्णादीवंधमुयणे य ॥५४॥ पविस्वयमितकामन्तो. बहुदेवसिओ ति एस कोहो तु । अहवा बहुदेवसिए, चाउम्मासादिरित्ते तु ॥१७६१॥ एयं बहुदेवसियं, एत्थ उ सोही तु होइ भन्तहं। आसवो वियदं भण्णाति, तमाइयंते अभत्तद्वं ॥१७६२॥

ककोलयसेवंते, सोही साहुस्स होयऽभत्तहं। पूर्यफल-जाईफल-लवंग-तंबोलमादिसु य ॥१७६३॥ आदिग्गहणे णेतो. पत्तेयं एत्थ सोहऽभत्तर्ह । कमुणादिन्ते पुरिमं, आदिमाहणा पलंडुम्मि ॥१७६४॥ तण्णगबंधणसुयणा, सोही एत्थं तु होति पुरिमहूं। आदिमाइणेणं पुण, इंस-मयूरादिएसुं पि ॥१७६ँ५॥ ५४॥ अञ्चसिरतणेसु निव्विगतियं तु सेसपणएसु पुरिमङ्टं। अपडिलेहियपणए, एगासण तसवहे जं च ॥५५॥ अज्झुसिरं तु कुसादी, परिभोगा कारणे तु णिन्विगति । सेसपणगं त पंचर, सपंचमेयं पुणेकेकं ॥१७६६॥ पोत्यय-तणपणगं वा, दसे पणगं च दुष्पिडिछेहे । अप्पिडिलेडियद्से. पंचमयं चम्मपणगं च ॥१७६७॥ गंही कच्छिव ग्रुट्टी, छिवाहि संपुदयपोन्थए चेव। साली बीली कोहब, रालग रण्णे तणाई च ॥१७६८॥ अप्पहिलेहियद्से, तूली उवहाणए य णायव्वे । गंडुबहाणाऽऽलिंगणि, ममुरए चेव पोत्तणए ॥१७६९॥ परहिव कोयवि पावार णवयए तह य दाहियाली य। दुष्पहिलेहियद्से, एयं वितियं भवे पणगं ॥१७७०॥ गो-महिस-अया-एलग-मिगचम्मं पंचमं मुणेयध्वं। अहवा वि चम्मपणगं, एयं वितियं तु विण्णेयं ॥१७७१॥ तिलगा खल्लग बज्जो, को सग कत्ती य पंचमं पणगं। एते पंच उ पणगा, सर्य च भेया समक्खाता ॥१७७२॥ ५५॥ ठवणमणापुच्छाए, णिविसणे विरियगूहणाए य। जीएणेकासणयं, सेसगमायासु खबणं तु ॥५६॥

वनणकुल-दाणसङ्घादियाइ ताई तु गुरुमणापुच्छा । पविसइ णिन्विसँणा तू, पहिगाई जं तु भत्तादी ॥१७७३॥ विरियं सामत्थं वा. परक्कमो चेव होइ एगद्रा। गृहण गोवण णूमण, पल्चियंचणमेव एगट्टं ॥१७७४॥ एरिसमायासहिए, जीएणं देळ एगभतं तु । स्रयववहारे अण्णह. सेसं मायं अयो बोच्छं ॥१७७५॥ भद्दगं भद्दगं भोचा, विवण्णं विरसमाहरे । आयरियाण सगासे. जसोन्थी एव चितए ॥१७७६॥ ल्हिन्ती महाभागो, एस साह जितिदिओ। रसचागं करेड ची, अंतपैतेहिं लाढण ॥१७७७॥५६॥ दप्पेणं पंचिंदियवोरमणे मंकिलिइकम्मे य। दीहद्धाणासेविय-गिलाणकपावमाणेमु ॥५७॥ द्प्पो वमाण-धावण-डेवणमादी त होति णायच्यो । पंचिदियवोरमणं. उद्दवण विराहणेगद्वं ॥१७७८॥ कम्मं तु संकिल्डिं, करकम्मं कुणति अंगादाणे उ । टीहेणऽद्धाणेणं, कम्म पलंबाटि बहु सेवे ॥१७७९॥ गेळण्णाम्म तु दीहे, आहाकम्माटि मण्णिहीमाटी। बहुअतियारणिसेवी. सोहि एन्धं तु अवसाणे ॥१७८०॥ एयम्मि जहुद्दिं, वोरमणादी गिलाणपज्ञंते । पत्तेयं पत्तेयं, मोही तु पंचकछाणं ॥१७८१॥५७॥ मञ्बोवहिकपम्मि य, पुरिमत्तापेहणे य चरिमाए। चाउम्मासे वरिसे, य मोहणं पंचकलाणं ॥५८॥ पाउसकाले सन्वोवहिम्मि जयणा वि किष्पए सोही। पुरिमत्ताऍ पमाया. चरिमाऍ अपेहिने चेव ॥१७८२॥ उपही घोयवसाणे, युरिमत्तापेहणाएँ चरिमाए।

पत्तेयं पत्तेयं, सोहेत्थं पंचकञ्चाणं ॥१७८३॥ चाउम्मासिय वरिसे, णिरतियारं यऽवस्स दायव्वं । आलोइयम्मि सोही. णियमेणं पंचकल्लाणं ॥१७८४॥ किं कारणिमह सोही, णिरतियारे वि दिज्जए एवं ?। चोयग ! सुहुमअतियारे,कए वि ण वि जाणति कयाति॥१७८५॥ अहवण संभरती तू, जह पायोसीय अड्डरत्तीए। वेरत्तिय पाभाइय. अम्महणा काल अतियारं ॥१७८६॥ स्रतत्थपोरिसीअकरणस्मि दृष्पेह दृष्पमजासु । एतेण कारणेणं, सोही त् पंचकल्लाणं ॥१७८७:।५८॥ छेदादिमसद्दहयो, मिउणो परियायगाव्त्रियस्स वि य। छेदातीए वि तवो, जीएण गणाहिवइणो य॥५९॥ विपुलं नवमकरेंना, किह मुख्झित छेदमूलमेत्तणं १। गुरुआणामेत्तेणं, असद्दर्धते नवो देयो ॥१७८८ः। मतुओं वि छैद मुले. व दिज्जमाणस्मि होति परितृद्रो। इहरा वि वंदणिक्जो. तिक्ख्तो तस्म देह तवं ॥१७८९॥ द्विहो य गन्विभो खलु, चिरपरियाओ नहेव तवबलिओ। छेदम्मि दिज्जमाणे. परियादी गन्त्रिओ होति ॥१७९०॥ केत्तियमेत्तं छिदिह ?, तह वि य हं तुब्भ होमि राइणिओ। एमा उ गविवा खल. चिरपरियादी मुणेयव्यो ॥१७९१॥ तवबलिओ देह तवं, अहं समत्थो ति गव्विओ होति। नम्हा नहोसहरं, विवरीयं नेमि टातव्वं ॥१७९२॥ गणअहिवति आयरियो, तस्म वि छेडादि होति पत्तस्स । अप्परिणयसेहादिस्, मा होजा हीलिणजो ति ॥१७९३॥ धीबलसंघयणं वा. णातं कालं च तिविह गिम्हादी । तम्हा तहोसहरं, तबारिहं दिक्कप तस्त ॥१७९४॥५९॥०॥

जं जं ण भणियमिहतिं, तस्सावत्तीय दाणसंखेवे । भिण्णादिया य वोच्छं, छम्मासन्ता य जीएणं॥६०॥ जं जं ति होति विच्छा, ण वि भणियमिई ति जीतववहारे । पच्छित्तविसोही तू, तस्सावत्ती पणगमादी ॥१७९५॥ दाणं णिन्वितिगादी से य विसेसेणमेत्य भणिहामि। संखेवो तु समासो, किह ण वि जीएण भणितमिई?॥१७९६॥ कम्ही वा भणियं ? ती. गुरुराइ णिसीइ कप्प ववहारे । मुत्तत्ययो य भणियं, आणादि सवित्थरेणं तु ॥१७९७॥ पणगादी छम्मासावसाण आवत्तिविरयणाओ य । णेगविद्या भणिता उ, णिसिहादिसु वित्थरेणं तु ॥१७९८॥ इह पुण जीएणं तू, णिवणावत्तिदाणसंखेवं । भिण्णादी छम्मासा, णेदाणजिएणिमं वोच्छं ॥१७९९॥६०॥

भिण्णो अविसिद्घो चिय,मासो चउरो य छच्च लहुगुरुगा। णिव्वितियादी अट्टमभत्तन्तं दाणमेतेसिं ॥६१॥

पणुवीस दिणा भिण्णो, अविसिट्टो एस गुरु लहू वा वि । अविसेसिओ विसिद्धो, एसो तू होति णायन्त्रो ॥१८००॥ मासो लहुओ गुरुओ, चतुरो मासा य होन्ति लहुगुरुया। छम्मास्सा लहुगुरुगा, दाणं एतेसि बोच्छामि ॥१८०१॥ पणगं दस पण्णरसं, बीसा पणुवीस जाव णिव्विगती । ळहुमासे पुरिमट्टूं. गुरुमासे दाण भत्तिकं ॥१८०२॥ चउलहुए आयामं, चउगुरुए होति दाण भत्तद्वं। छल्लहूप छट्टं तू , छग्गुरुप दाणमट्टमयं ।।१८०३॥ णिव्यिगतिगमादीयं, अद्वमभत्तन्तमेय दाणं ति । भिष्णादीणं कमसो, छम्मासंताऽवसाणाण ॥१८०४॥६१॥०॥

इय सञ्वावत्तीओ, तवसो णाउं अहक्कमं समए। जीएण दिज णिव्वीतिगाति दाणं जहाभिहितं ॥६२ इय प्रतेण कमेणं. एवपगारेण अहव इतिसही । सन्वा आवत्ती पणगादिया द्व छम्मासपज्जन्ता ॥१८०५॥ णिव्वीइगमाईओ, अद्वमपज्जेतो होइ सन्त्रतवो । जीएण दिज्ज दाणं. णिव्वीतिगमादिगं कमसी ॥१८०६॥ जहिभहितं जह भणियं. तह तह देजाहिऽभिहितमेयं ति । सामण्णेणं एयं, समासतो होति णातव्यं ॥१८०७॥६२॥०॥ एयं पुण सञ्जं चिय, पायं सामण्णयो विणिद्दिद्रं । दाणं विभागतो पुण, द्व्वादिविसेसियं जाण ॥६३॥ प्यं ति जहुहिद्दं, पुणसद्दों विसेसणे तु णानव्यो । सन्वं पायन्छित्तं, दाणं पाएण बाहुङ्घा ॥१८०८॥ सामण्णं अविसेसित, णिहिट्टं विसेसितं विणिहिट्टं। दाणं णिन्वितिगादी, विभागतो देज वित्थरतो ॥१८०९॥ दव्वादीया पहिसेवणा तु लतिया तु आदिसहेणं। होति विसेसेणाऽवेक्खित्ण दिज्जाहि ऊणं पि ॥१८१०॥ अहवा वि समतिरित्तं, दाणं णाऊण देळा जीएणं। अहवा वि तत्तियं चिय, दिज्जाहि सुयोवदेसेणं ॥१८११॥६३॥०॥ द्व्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिस पडिसेवणाओ य। णातुमितं चिय दिज्जा, तम्मत्तं हीणमहितं व।|६४|| आहारादी दर्वं, खित्तं छुक्खादि काल गिम्हादी। हिट्ठादी भावं तू, पुरिसं गीयादि जाणिता ॥१८१२॥ आउद्दिनमादीया, पहिसेवण होति तू मुणेतव्या । णाऊण जाणितणं, इति मि ति जए त जीएणं न१८१ आ

देजाही तम्मिनं, हीणं अहितं व णातु दव्वाती। हीणे दव्वादीए, हीणं देजाऽहिए अहियं ॥१८१४॥६४॥ एसो तु अक्खरत्थो, दन्वादीणं तु विन्निनो कमसो । पुणरवि दव्वादीणं, विभागतो सुरिमाहंसु ॥१८१५॥ आहारादी दब्वं, बलियं सुलभं च णाउमहियं पि। देज्जाहि दुव्बलं दुल्लभं च णाऊण हीणं पि ॥६५॥ आहारों जैसिमादी. दव्याण ताइँ होति दव्याई। आहारादीयाई, बलियाई जिम्म देसम्म ॥१८१६॥ जह अणुबदेस सालीक्ररों सभावेण होति बलिओ तु । सुलभो य सो त णिचं, सेसा बहुंति एमेव ॥१८१७॥ एयं णाऊण तहि. जं भणितं दाण जीनवतहारे । तं देज्ज समन्भिहयं. जहिं पुण वणबक्ककलमादी ॥१८१८॥ कंजियरुक्ताहारो, दुब्बल द्लभो य एव णाऊणं। देज्ज सेत्यहीणं (?) जीतन्त्रवहारभणिया उ ॥१८१९॥६५॥ द्धक्वं सीतल साहारणं च खेत्तमहितं पि सीयम्मि। लुक्खिम्म य हीणयरं, एवं काले वि तिविहाम्मि॥६६॥ लुक्खं तु णेहरहिनं, जं खेत्तं वायपित्तलं वा वि। सीयं बलियं भण्णति, अहवा अणुवं भवं सीतं ॥१८२०॥ साहारणं समंत्, जंण वि णिद्धं ण चेव लुक्खं पि । एयं तिविद्दं खेत्तं, दाणं एतेसि वोच्छामि ॥१८२१॥ इय पत्र जीतदाणं, णिद्धे खित्ते ऽहियं पि देजाहिं। साहारणे तम्मत्तं, छुक्खे खेत्रं तु हीणयरं ॥१८२२॥६६॥ लुक्खादी तिह खेतं. एवेयं विष्णतं समासेणं। अहुणा तु तिविह कालं, गिम्हादि समासतो वोच्छं॥१८२३॥

गिम्ह-सिसिर-वासासू, देज्जऽहम-दसम-बारसंताइं। णातुं विहिणा णवविहसुतववहारोवदेसेणं ॥६७॥

गिम्हासु चतुत्थं देजा, छट्टं च हिमागमे। वासासु अट्टमं दिज्जा, तत्रो एस जहण्णओ ॥१८२४॥ गिम्हासु छट्टं देजा. अट्टमं च हिमागमे । वासासु दसमें देजा. एस मिडझमओ तवो ॥१८२५॥ गिम्हासु अटुमं देजा, दममं च हिमागमे। वासासु द्वालसमं, एम उक्कोमतो तवी ॥१८२६॥ जहासंखेणेमो. गिम्हादिनवो समामतो होति । एयं पुण कह दिज्जा ?, णवविहसुत्तोवएसेणं ॥१८२७॥ सुतवबहारंणऽहवा, णवभेदविचप्प सुहूम जाणित्ता । देजाहि निनिहकाले, बनहारो सो इमो णवहा ॥१८२८॥ अहलहुसग लहुसयरो, लहुमा त्ती होति लहुसपक्तिमा। अहलहुओ लहुपतरो, लहुओ त्ती लहुपपक्विम ॥१८२९॥ गुरुयो गुरुयतराओ, अदृगुरुओ एस होति गुरुपक्ले। णविवहववहारेसो, आवत्ती तेसि वाच्छामि ॥१८३०॥ पण दस पण्णरसं वा, तिविहेसो होति लहसपक्खिम्म । वीसा य पण्णवीसा, तीसा वि य छहुगपक्खम्मि ॥१८३१॥ गुरुमासी चतुमासी, छम्मासी चेत्र होति गुरुपक्ले । णविवह आवत्तेसा, णविवहदाणं भतो वोच्छं ॥१८३२॥ णिव्यिगति पुरिमहूं, एकासणयं च लहुसपक्खिम। आयंबिलंडभत्तहं, छहं वा होति लहुपक्ते ॥१८३३॥ अदृम दसम दुवालस, गुरुपक्ले एय होति दाणं तु । आवत्ती तवो एसो, समासतो जवहमक्खातो ॥१८३४॥

णवविद्ववद्दारेसो, लहुसादि समासतो समक्खातो । पुणरवि ओहेण विभागयो य गुरुमादि वोच्छामि ॥१८३५॥ गुरुओ गुरुगतरातो, अहागुरूयो व होति ववहारो । लहुओ लहुततरातो, अहालहू चेव ववहारो ॥१८३६॥ लहुसो लहुसतराओ, अहालहूसो य होति ववहारो। एएसि पच्छित्तं, वोच्छामि अहाणुपुन्त्रीए ॥१८३७॥ गुरुओ य होति मासो, गुरुयतराओ य होति चतुमासो । अहगुरुओ छम्मासो, गुरुपक्खे एस पडिवत्ती ॥१८३८॥ तीसा य पण्णवीसा, वीसा वि य होति लहुवपक्लिम्म । पण्णरस दस य पंच य, लहुसगपक्लिम्म पडिवत्ती ॥१८३९॥ गुरुषं च अट्टमं खल्ल, गुरुयतरायं च होति दसमं तु । अहगुरुयं बारसमं, गुरुपक्खे एस पहिवत्ती ॥१८४०॥ छट्टं च चउत्थं वा, आयंबिल एगढाण पुरिमडं । णिव्वितियं दायव्वं, अहलहुसे अहव सुद्धो वा ॥१८४१॥ ववहारो आरोवण, सोही पश्छित्तमेयमेगद्रं। योवो तू अहालहुसो, पहुबणा होति दाणं तु ॥१८४२॥ ओहेण एस भणिओ, एत्तो बोच्छं पुणी विभागेण । तिग णत्र सत्तात्रीसग, एकासीती य मेदेणं ॥१८४३॥ गुरुपक्लो लहुपक्लो, लहुसगपक्लो य तिविह एस भवे। प्केंको पुर्णो तिविहो, उक्कोसादी इमं वोच्छं ॥१८४४॥ गुरुपक्खे उक्कोसा, मज्ज्ञ जहण्णो य एव लहुए वि । एमेव लहुसए वी, उक्कोसो मज्ज्ञिम जहुणो ॥१८४५॥ गुरुपक्ले छम्मासो, पणमासो चेत्र होति उक्कोसो । मन्त्रिम तु तेमासो, दुमास गुरुमासिय जहण्णो ॥१८४६॥

लहुमास भिण्णमासो, वीसा वि य तिविहमेय लहुपक्ते।
पण्णरस दसग पंचग, लहुमुकोसादि तिविहेसो ॥१८४०॥
आवित्तवो एसो, णवभेदो विण्णतो समासेणं।
अहुणा उ सत्तवीसो, दाणतवो तिसमो होति ॥१८४८॥
गुरु-लहु-लहुसगपक्ते, एकेक्को णविवहो मुणेतव्वो।
उक्कोमुक्कोसो या, उक्कोसगमिल्झम जहण्णो ॥१८४९॥
मिल्झमजक्कोसो या, मिल्झममञ्झो तहा जहण्णो य।
होति जहण्णुक्कोसो, जहण्णमञ्झो दुइजहण्णो ॥१८५०॥
गुरुपक्तो—

उक्कोसुक्कोसो या, उक्कोसगमिडझमो जहण्णो य। मज्झिमजनकोसो तु, मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥१८५१॥ होति जहण्युक्कोसो, जहण्यमञ्ज्ञो जहण्यगजहण्यो । णविवहववहारेसो, लहुपक्ते होति णानन्वो ॥१८५२॥ उक्कोसुक्कोसो तू, उक्कोसगमन्द्रिमो जहण्णो य। मज्झिमउक्कोसो तू, मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥१८५३॥ होति जहण्युक्कोसो. जहण्यमञ्झो जहण्यगजहण्यो। णविवहववहारेसो, लहुसगपक्रेंब मुणेनन्त्रो ॥१८५४॥ बारसम दसम अद्वम, छप्पणमासेसु निविह दाणेदं। चउतेमासे दसमऽह, छट्ट उक्कोसगाति तिहा॥१८५५॥ एमेवुनकोसादी, दुमास गुरुमासिए तिहा दाणं । अद्दम छट्ट चउत्थं, णवविद्दमेयं तु गुरुपक्रवो ॥१८५६॥ दसमं अद्वम छद्वं, लहुमासुक्कोसगादि तिह दाणं। अहम छट्ट चडत्थं, उक्कोसादेय तिह भिण्णे ॥१८५७॥ छह चउत्याऽऽयामं, उक्कोसादेय दाण वीसाए । लहुपन्खम्मी णवगो. बीओ एसो मुणेयन्वो ॥१८५८॥ अद्भ छट्ट चज्त्यं. एवक्कोसादिदाण पण्णरसे ।

छट्ट चउत्थाऽऽयामं, दससू तिविहेत दाण भवे ॥१८५९॥ खमणाऽऽयामेक्कासण, तिविहोक्कोसादि दाण पणगेयं। ळहुसेस ततियणवगो, सत्तावीसेस वासाम्र ॥१८६०॥ सिसिरे दसमादी पुण, चारणभेदेण सत्तवीसे य। टायति पुरिमहूम्मी, अहूोक्कंती य तह चेव ॥१८६१॥ अट्टममादी गिम्हे, चारणभेदेण सत्तवीसेण। तह चेत्र अड्डोक्कंती, ढायति णिव्वीतिए णवरि ॥१८६२॥ अहुणा उ चारणा तु, उक्कोसुक्कोसगादि गुरुगादी । वासाम्र सिसिरे या, गिम्हे य समामतो वोच्छं ॥१८६३॥ अहगुरुए वासास् . उक्कोसुक्कोसए य वारसमं। उक्कोसमज्झ दसमं, उक्कोमजहण्णमद्वमगं ॥१८६४॥ अहगुरुए सिसिरंसुं. उक्कोसुक्कोसए य दसमं तु। उक्कोसमन्द्रिम अट्टम, उक्कोमजदृण्णए छट्टं ॥१८६५॥ अहगुरुए गिम्हासुं, उक्कोसुक्कोसमद्दम दिज्ञा । उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसजहण्णए चउन्थं ॥१८६६। अहागुरुपक्खे-गुरुयतरा वासामुं. मिडझमडकोसए य दसमं तु । मज्झिममञ्झे अद्वम, मञ्झजहण्णेण छट्टं तु ॥१८६७॥ गुरुततरा सिसिरंमुं, मिज्झमउक्कोसमट्टमं देज्जा। मिन्सममन्द्रे छट्टे. मन्द्रजहण्णे च उन्थं तु ॥१८६८ः। गुरुतनरा गिम्हेमुं, मज्झिमउक्कोसे देज छट्टं तु । मिडझममज्झ चउन्थं, मञ्झजहण्णेण छटं तु ॥१८६०॥ गुरुततगासि आयामं । गुरुअतग्वक्त्वे-गुरुष वास जहण्णे, उनकोसे अट्टमं तु देजाहि। छट्टं जहण्णमञ्झे, होइ चउत्थं दुहजहण्णे ॥१८७०॥

गुरु सिसिरेऽत्थ जहण्णे, उक्कोसं देज छट्टभतं तु । जहण्णयमज्झे चउत्थं, दुहयो जहण्णेण आयामं ॥१८७१॥ गुरुए गिम्ह जहण्णे, उक्कोसा देज तू चउत्थं तु । जहण्णयमज्झाऽऽयामं, एक्कासणयं दुहजहण्णे ॥१८७१॥ गुरुपक्ते ॥

लहुए वासारते, उक्कोसुक्कोसगम्मि दममं तु । उक्कोसमिज्झमऽहम. उक्कोमजहण्णए छट्टं ॥१८७३॥ लहुए उक्कोसुक्कोमनिम्म सिसिरम्मि अट्टमं टिज्जा । उक्कोसमज्झ छट्टं, उक्कोसजहण्णएँ चउन्धं ॥१८७४॥ लहुपक्ते उक्कोसे, गिम्हम्मी देज्ज छट्टभतं तु । मिज्झमगं तु चउत्थं. उक्कोसजहण्णमायामं ॥१८७५॥ लहुपपक्ते ॥

लहुयतरे वामामुं, मिड्समउक्कोसमहमं दिज्ञा ।
मिड्सममज्झे छहं, मज्झजहण्णेणऽभत्तहं ॥१८७६॥
लहुयतरा सिसिरंमुं, मिड्समउक्कोस देजन छहं तु ।
मिड्सममज्झ चउन्थं, मज्झजहण्णेणमायामं ॥१८७७॥
लहुयतरा गिम्हेसुं, मिड्समउक्कोम देज्जऽभत्तहं ।
मिड्सममज्झायामं, मज्झजहण्णेण भत्तकं ॥१८७८॥
लहुअतरपक्से ॥

अहलहुया वासासुं. जहण्णउनको म छट्ट देउजाहि।
मिज्यमगिम्म चडन्थं, जहण्णगजहण्णमायामं ॥१८७९॥
अहलहुया सिसिरेसुं. जहण्णउनको म देउजऽभत्तृः।
मिज्यमगे आयामं, जहण्णगजहण्णे भत्तेकं ॥१८८०॥
अहलहुगे गिम्हासुं. जहण्णगुनको म देउज आयामं।
एकासणगं मज्झे, पुरिमहुं दुहजहण्णिम्म ॥१८८१॥

अहालहुयपक्ले ॥

लहुसग वासामुक्कोसगम्मि उक्कोसमद्वमं देजा।
उक्कोसमञ्झ छई, उक्कोसजहण्णए चउत्थं।।१८८२॥
लहुसग सिसिरामुकोसगं तु उक्कोस छट्ट देज्जाहि।
मिज्झमगं तु चउत्थं, उक्कोसजहण्णमायामं।।१८८३।।
लहुसग गिम्हामुक्कोसगम्मि उक्कोस देज्जऽभत्तर्द्धं।
मिज्झमगं आयामं, उक्कोसजहण्ण भत्तकं।।१८८४॥
लहुसपत्रस्वे॥

लहुमतरा वामामुं, मज्झकोसेण छट्टभतं तु । मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झक्रहण्णेण आयामं ॥१८८५॥ लहुसतरा सिसिरामुं, मज्झक्रोसेण देज्जऽभत्तद्वं । मज्झिममज्झाऽऽयामं, मज्झक्रहण्णेण भत्तेकं ॥१८८६॥ लहुसतरा गिम्हेमुं, मज्झक्रोसेण देज्ज आयामं । मज्झिममज्झेक्कामण, मज्झक्रहण्णेण पुरिसहूं ॥१८८७॥ लहुसतरपक्ते ॥

अहलहुसय वासामुं, जहण्णमुकोस देज्ज उभत्तहं।
मिन्झिमगं आयामं, भत्तेकं दुहजहण्णेणं ॥१८८८॥
अहलहुसग सिसिरामुं, जहण्णमुक्ताम दिन्ज आयामं।
जहण्णगमन्झेकासण, जहण्णजहण्णेण पुरिमट्टं ॥१८८९॥
अहलहुमग गिम्हामुं, जहण्णमुक्तोम देन्ज भत्तेकं।
मिन्झिमगं पुरिमट्टं, दुहयो जहण्णेण णिन्तिगित ॥१८९०॥

अहालहुसपक्ते ॥

एते हिं ठाणे हिं, आवत्तीओं .. मटा णियमा । बोडव्बा सव्वाओं, असहुम्सेक्केक्कहामणया ॥१८९२॥ जाव ठियं एक्केकं, नं पि य हाविज्ञ असहुणो नाहे । दाउं सट्टाणेवं, परठाणं देज्ज एमेव ॥१८९२॥

एवं ठाणे ठाणे, हेट्टाहत्तो कमेण हासेता। णेतव्यं जाव डिनं, णियमा णिव्वीयियं एकं ॥१८९३॥ णवविद्व ववहारंसो, आवत्तीदाणसहितकालजुतो । बुद्धीओ विण्णेओ, विभागतो एसमक्खातो ॥१८९४॥ अहव तिमो लहुसादी, तिविहादि समास विन्थरे बोच्छं। हीणो मञ्जुकोसो, तिविहेसो होति णायव्यो ॥१८९५॥ लहुसगपऋषे पणगं, दस पण्णर तिविह एय णातव्वं। वीसा य भिण्णमामो, लहुमासो निविद्द लहुपक्ले ॥१८९६॥ गुरुमासो चडमासो, छम्मामो चेत्र एम गुरुपक्ते। णवविह आवत्तेसा, टाणं णवहा तिमं वोच्छं ॥१८९७॥ णिव्विगतिय पुरिमड्डं, एकामण लहुमए य दाणं ति । आयाम चउन्थं वा. छट्टं तु लहुगपऋषम्मि ॥१८९८॥ अट्टम द्रमम द्वालस. गुरुपक्ते एय होति दाणं तु। णवविहदाणं एमो, अहवाऽऽवत्ती इमा णवहा ॥१८९९॥ पण दस पण्णरमं वा, लहुगुरुगा लहुमए तु पक्खिमा। वीसा य भिण्णमासो. लहु गुरु लहुओ य मासेको ॥१९००॥ गुरुमासो द्गिण मासा, लहगुरुगा तिग चउक लहगुरुगा ॥ पंचग छम्मासा या, लह्गुरुगा एस णवहा तु ॥१९०१॥ आवत्तिनवो एसो. णवभेटो विष्णिनो समासेणं। अहुणा तु सत्तवीसो, दाणतवो तस्सिमो होति ॥१९०२॥ लहुसग लहुगुरुपक्यो, एक्केक्को णवविही मुणेतव्यो। दुहयो जहणो जहणगमञ्झा य जहण्णगुक्कासो ॥१९०३॥ मज्झिमजहण्णगं तू, मज्झिमज्झं तु मज्झिमुकोसं । उक्कोसगे जहण्णं, उक्कोसगमज्झ उक्कोसं ॥१९०४॥ लहसगपक्खे वेयं. णत्रभेद समासतो समक्खायं। लहुपक्से वि णविवहं, गुरुपक्ले त्री मुणेयन्त्रं ॥१९०५॥

वासासु अहालहुसो, दुइयो जहणेण देज्ज भत्तेवर्क । जहण्णगमञ्ज्ञायामं, जहण्णगुक्कोसए चउत्थं ॥१९०६॥ लहुसतर मन्झिमजहण्णयम्मि वासामु देन्न आयामं । मिन्सममञ्झे चउत्थं, मिन्समउक्कोसए छट्टं ॥१९०७॥ लहुसग उक्कोसजहण्णगम्मि त्रासामु देउनऽभत्तद्वं। उक्कोसमज्झ छहुं, उक्कोसुक्कोममहुमगं ॥१९०८॥ अहलहुए वासासुं, जहण्णजहण्णे तु देउन आयामं। जहण्णगमज्य चडन्थं, जहण्णउक्कोसए छट्टं ॥१९०९॥ लहुयतरा वासामुं, मज्झनहण्णम्मि इवयऽभत्तहं। मिज्यममञ्झे छहुं, मिञ्ज्यमञ्क्तोसमहमगं ॥१९१०॥ लहुए वासासुनकोसर्गाम्म जहणे तु देउन छहं तु। उक्कोसमज्झमट्टम. उक्कोसुक्कोसए द्समं ॥१९११॥ गुरुवनस्ते जहण्णाम्म, जहण्ण होनी चउत्थभत्तं तु । हीजगमञ्झे छट्टं, जहण्याउनकोयमहमगं ॥१९१२॥ गुरुअतरा वासासुं. मज्झजहण्णेण देज्ज छट्टं तु । मज्ज्ञिममज्ज्ञं अद्वम, मज्ज्ञिमउक्कोसए दसमं ॥१९१३॥ अहगुरुष् वासामुं, उक्कोमजहण्णमट्टमं देजा । उक्कोसमज्ज्ञ दसमं. उक्कोसुक्कोस बारसमं ॥१९१४॥ अइलहुसग सिसिरंमुं, जहण्णजहण्णेण होति पुरिमङ्ग्रं। हीणगमज्झेक्कामण, जहण्णउक्कोम आयामं ॥१०१५॥ छहुसनरा मिसिरंमुं, मञ्झजदृण्णेण भत्तमेकं तू । मज्ज्ञिममज्ज्ञाऽऽयामं, मज्ज्ञिमउक्तोसए चउत्थं ॥१९१६॥ लहुसग सिसिरुकोसे. जहण्ण एयं तु देज आयामं । मज्ज्ञिमगं तु चउत्थं, उक्कोमुक्कोम छट्टं तु ॥१९१७॥ अहलहुयग मिमिरेसुं, दृष्टा जहण्णेण देख भत्तेक्कं। जहणगमञ्झाऽऽयामं, जहण्णमुक्कोसए चउत्थं ॥१९१८॥

लहुसतरा सिमिरेसुं, मज्झजहण्णेण देज्ज आयामं। मिज्झममज्झ चउत्थं, मिज्झम उक्कोसए छट्टं ॥१९१०॥ लहुए सिसिस्क्कोसे, होति जहण्णं चतुत्थभतं तु । उक्कोसमज्ज्ञ छट्टं, उक्कोसुक्कोसमृहम्गं ॥१९२०॥ गुरुष सिमिर जहण्ये. जहण्यप्णं तु देळा आयामं। जहण्णगमज्ञ चउत्थं. जहण्णउक्कोसए छहुं ॥१९२१॥ गुरुयतरा सिसिरमं, मञ्झजहण्णेण देजाऽभत्तद्वं। मिज्ज्ञममज्ज्ञे छट्टं, मिज्ज्ञमज्क्कोसमहमगं ॥१९२२॥ अहगुरुए मिमिर्मं, उक्को सजहण्णएण छट्टं तु । उक्कोसमज्झिमऽहुम, उक्कोसुक्कोसए दसमं ॥१९२३॥ अहलहूमग गिम्हामुं, जहण्णजहण्णेण होति णिव्चिगति। हीणगमञ्जे पुरिमं, जहण्णउक्कोस भत्तेककं ।। १९२४॥ लहुसतरा गिम्हेमुं, मञ्झजहण्णेण होति पुरिमट्टं । मजिझममज्झेक्कामण, मजिझमजक्कासमायामं ॥१९२५॥ लहुसग गिम्हुक्कोसे, जहण्णगे होति भत्तमेक्कं तु । उक्कोसमज्झ आयबिलं तु उक्कोसए चउन्धं ॥१९२६॥ अहलहुयम गिम्हेमुं. पुरिमहूं होति दुहजहण्णेणं। मुद्धजहुण्लेक्कामण, जहुण्लाक्कोममायामं ॥१९२७॥ लह्यतरा गिम्हेमुं, मञ्झजहण्णेण भत्तमेक्कं तु । मज्ज्ञिमभज्ज्ञाऽऽयामं, मज्ज्ञिमउक्कोमए चउत्थं ॥१९२८॥ लहुयग गिम्ह्क्कोसे, जहण्णएणं तु होति आयामं । मिज्यमगं त चडन्थं, उनकोसुक्कोसए छट्टं ॥१९२९॥ गुरुष गिम्ह जहण्णे, जहण्णयं होति भत्तमेक्कं तु । हीणगमज्झाऽऽयामं, जहण्णउक्कोसए चउत्थं ॥१९३०॥ गुरुअतरा गिम्हेर्मु, मञ्झजहण्णेण होति आयामं । मज्जिममञ्ज चउत्थं, मज्जिमउनकोसए छहं ॥१९३१॥

अहगुरुए गिम्हासुं. उक्कोसजहण्णए चउत्थं तु ।
उक्कोसमञ्झ छहं. उक्कोसुक्कोसमहमगं ॥१९३२॥
णविवह ववहारेसो, आवती-दाणमहियकालजुओ ।
बुद्धीए विण्णेयो, विभागतो एसमक्खातो ॥१९३३॥६७॥०॥
हट्टगिलाणाभावम्मि देज्ज हट्टस्मण तु गिलाणस्स ।
जावतियं वा विसहति, तं देज्ज सहेज्ज वाकालं॥६८॥
भावं पडुच अहियं, देजाही हट्ट-बलिय-णिरुयस्म ।
गिलाणस्स तु उज्जतरं, ण व देज्ज सहेज्ज वा कालं॥१९३४॥
असुभ सुभो वा भावो, लेस्साभेदेण होति णायन्वो ।
निन्वो निन्वतरो वा. तिन्वतमो एव मंदो वि ॥१९३५॥
पणए वि सेवियम्मी, चरिमं भाओ उ केइ पावंति ।
चरिमाओ वा पणगं, एविमणं भाविणएफण्णं ॥१९३६॥
भावे ति गतम ।

पुरिसं पडुच अहियं, ऊणं वा दिज्ञ अहव तम्मतं।
ते पुण पुरिसादीया, इमे समासेण णायव्या ॥१९३७॥६८॥
पुरिसा गीतागीता, सहामहा तह सढासढा केति ।
परिणामाऽपरिणामा, अतिपरिणामा अवत्थ्र्णं ॥६९॥
केयी पुरिसा गीता, केवि अगीयत्थ होंति णावव्या ।
धिति-संघ्यणादीहि, केइ सहा केइ त् अमहा ॥१९३८॥
मायावी होन्ति सहा, असहा पुण उज्ज्जपण्ण णेतव्या ।
परिणामादी इणमो, समामतोऽहं पवक्यामि ॥१९३६॥
परिणामा अपरिणामा, अतिपरिणामा य वत्थु चरिमदुए ।
अंबादीदिहंता, होति विभागो इमो तेसि ॥१९४०॥
जो दव्यत्वेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्यायं।
तं तह सहहमाणं, जाणस परिणामगं साहं ॥१९४१॥

परिणामक-अपरिणामक-अतिपरिणा-मका:

जागति दव्य जहद्विय, सिचताचित्त मीसयं चेया। कप्पाकष्पं च तहा. जोगं वा जस्स जं होति ॥१९४२॥ खेत्ते जं कायव्वं, अद्वाणे जयण एव सहहति । काले स्भिन्ल-द्विभक्लमादिम् जो जहा कृषी ॥१९४३॥ भावे हद्रगिलाणं. आगाहे जं जहा व कायव्वं। तं सद्दृति करेति य, एसो परिणामओ साह ॥१२.४४॥ जो दव्यक्तेत्रकयकालभावयो जं जहा जिणक्लायं। तं तह असहहंतं, अप्परिणामं वियाणाहि ॥१९४५॥ जो दृष्वलेत्रकयकालभावयो जं नहा जिणक्लायं। तल्लेसुसमुत्तमती, अतिपरिणामं वियाणाहि ॥१९४६॥ परिणमति जहत्थेणं, मनी तु परिणामगस्स कज्जेसु । बिनिए ण त परिणमनी, अहितमनी परिणमें तितिए ॥१९४७॥ दोस्र त परिणमित मती, उस्सागऽववाययो त पढमस्स । बितियस्स त उस्मागे, अतिअववाए त ततियस्म ॥१९४८॥ अंबादीदिट्रेनेहिं परिक्खा नेम्मि होति कायव्या। जह कोयि गुरूहिं तू, भणिनो अंबाणि आणेहि ॥१९४९॥ परिणामगोऽन्थ भणती, किं सचित्तेऽचिते व आणेमि ?। भावतो केवइए वा ?, कि टाले (?) भिष्णऽभिष्णे वा ? ॥१९५०॥ बेति गुरू लद्ध चिय. पुणो व वोच्छिम्र अहव वीमंसा । भणिओ सि त्ती एवं, अप्परिणामी इमं बेति ॥१९५१॥ कि ते वित्तपलावो ?. मा वितियं एरिसाई जंपाहि। मा णं परो वि सोच्छिति. अहं पि णेच्छामि एयस्स ॥१९५२॥ अतिपरिणामी भणति. काली सिं अनिच्छए अही ताव। किं एचिरस्स वुत्तं ?, इत्थऽम्ह वि ण तरिमो भणितुं ॥१९५३॥ घेतुण भारमागतो. भणती अण्णे वि किं नु आणेमि ?। तो दो वि ग्ररू भणती, ज्वालभन्तो इमं तहितं ॥१९५४॥

णाभिष्पायं गिण्हसि, असमते चैव भासिस वयणे।
सुकंबिललोणकए, तिण्णे अहवा वि दोच्चंगे।।१९५५॥
एमेव य रुक्ते वी, भंजितु आणेह बेति अपरिणतो।
णिष्फावादी रुक्ते, भणामि ण हुमे अहं हरिए।।१९५६॥
एमेव य बीयाई. आणेती आणिए गुरू भणित।
अंबिलि विद्धत्थाणिव, भणामि ण वि रोहणि समत्थे।।१९५७॥
र्थुॐ॥६९॥

तह धितिसंघयणोभयसंपण्णा तदुभएण हीणा य । आयपरोभयणोभयतरगा तह अण्णतरगा य ॥७०॥

धितिदुब्बल देहे बली, धितिबलिओ देहदुब्बलो कोइ।
कोयी दोहि वि बलिओ. दोहिं पी दुब्बलो कोइ।।१९५८॥
दोहि वि बलिए सब्बं, धितिहीणे जत्थ चिट्टिन धिनी से।
आसज्ज व देहबलं, देज्ञा लहुयं उभयहीणे।।१९५९॥
अहवा पंच विकरणा—
केयी पुरिसा पंचह, आयतराटी इमे उ णायच्या।
पढमो आयतरो तू, णो परयो परतरं विनिओ ॥१९६०॥
उभयतरो तू तितओ. णोभयह चउन्थओ उ णायच्यो।
अण्णयरो परयो तू, पंचमओ होइ णानच्यो।।१९६१॥
आयतर-परतराणं, को णु विसेसो १ ति एत्थ चोदेति।
आततरो चउत्थादी, जं दिज्ञति तं तु णित्थरित ॥१९६२॥
वेयावचकरो तू, गच्छस्स उच्चगहम्म बट्टित तु।
एसो तु होति परतरो, चतुभंगो एव णायच्यो॥१९६३॥
वेयावचतराणं, एकं सकेनि दो ण णित्थरित।
पंचमगो तू पुरिसो, अण्णतरो एस णातच्यो॥१९६४।।धूँ०॥७०॥

कपष्टियादयो वि य, चतुरो जे सेतरा समक्खाता। सावेक्खेतरभेयादयो य जे ताण पुरिसाण।।७१।।

कप्पद्विता परिणता, कडजोगी चेव होन्ति तरमाणा । पहिपक्लेण वि चतुरो, अकप्पट्टियमादि णातन्त्रा ॥१९६५॥ पतिद्रा ठवणा ठवणी अवत्था संठिती डिती । अवत्थाणं अवत्था या, एगट्टा चिट्टणा ति य ॥१९६६॥ सामायिए य छेदे, णिव्विसमाणा तहेव णिव्विहे । जिणकप्पे थेरेसु य, छन्विह कप्पद्विती होति ॥१९६७॥ सो पुण ठिती मज्जायाणासो कप्पो य होति कतिहा उ ?। भण्णति सो दसभेदो, इणमो वोच्छं समासेणं ॥१९६८॥ आचेलक्क्रहेसिय, सेज्जायर रायपिंड किनिकम्मे । वत जेट्र पहिकमणे, मासं पज्जोसवणकप्पे '१९६९॥ कतिहि ठिता अठिता वा, सामायिककप्पसंठिती णियमा ?। कतिहाणपतिहो वा, छेदोबहाणकप्पो उ ? ॥१९७०॥ चतुहिं ठिया छहि अठिया, सामानियसंजया मुणेयन्त्रा । दसस्र वि णियमा तु ठिता, छेगोवट्टा सुणेतन्त्रा ॥१९७१॥ सेज्जातरपिंडे या, कितिकम्मे चेत्र चाउजामे य। पुरिसज्जेट्ट य तहा, चनारि अवट्टिया कप्पा ॥१९७२॥ आचेलक्कुद्देसिय, रायपिंडे तहा पडिक्रमणे । मासं पज्जोसवणाकप्पे तऽणवद्विना कप्पा ॥१२७३॥ दसठाणाठतो कप्पो. पुरिमस्य य पच्छिमस्स य जिणस्स । आचेलकादीसं, तेसि तु परूवणा इणमो ॥१९७४॥ द्विहा होति अचेला, संताचेला असंतचेला म।

तित्थगरऽसंतचेला, संताचेला भवे सेसा ॥१९७५॥

र्सतेहिं वि चेलेहि, किह पुण समणा अचेलया होन्ति ? ।

धाचेल**क्**यम्

भण्णति सुणस् चोदग !, जह संतेहिं अचेला उ ॥१९७६॥ सिस्सावेढियपोत्ति, णतिसंतरणिम णग्गयं बेन्ति। जुण्णेहिं णिग्गय मिंह, तरसालिय ! देहि मे पोत्ती ॥१९७७॥ जुण्णेहिं खंडिएहि य. असन्त्रतणुपाउएहिं पा य णिचं। संतेहिं वि णिग्गंथा, अचेलगा होंवि चेलेहिं ॥१९७८॥ एवं दुग्गयपहिया, वश्चेलया होंति ते भवे बुद्धी। ते खल असंततीए, धरंति ण त धन्मसद्धाए ॥१९७९॥ सति लाभिम साह, गेण्डन्तऽसहद्वणाइं ताई त । ताणि वि खण्डियमादी, धरेन्ति तह धम्मबुद्धीए ॥१९८०॥ आचेलुक्को धम्मो, पुरिमस्स य पिच्छमस्स य जिणस्सा । मन्सिमगाण जिणाणं, होति सचेलो अचेलो वा ॥१९८१॥ पहिमाए पाउया वा, णऽतिक्रमंते त मिज्झमा समणा। प्रियचरियाण सहणहुणा त भिण्णाणिमो मोर्च ॥१९८२॥ णिरुवहयलिंगभेदो, णिकारणयो ण कष्पये कातुं। कि पुण तं णिरुवहयं ?, भण्णति अहजायलिंगं तु ॥१९८३॥ जम्मं दुविहं होति, मातुकुच्छिम्म पढम जं जम्मं । भवसंसारचउके, णिप्फिडितो बितिय पन्त्रज्ञं ॥१९८४॥ तस्स इमे भेदा खलु, खंधद्वारे य समणे पाउरणे । गकलदंसे पट्टे, लिंगदुवे या इमा भयणा ॥१९८५॥ णिकारणयो--

लहुओ लहुओ लहुगा. तिस्र चतुगुरुगा य होति बोद्धव्वा।
गिहिलिंग अण्णलिंगे, दोसु वि मूलं तु बोद्धव्वं ॥१९८६॥
कुव्बिक्त कारणे पुण, भेदं लिंगस्सिमेहि कज्जेहिं।
गेलण्ण रोग लोए, सरीरवेयाविध्यमादी ॥१९८७॥
अहवा इमेहि कारणेहिं—

आसक्त खेत्तकप्पं, वासाठाई अभाविए असहू । काले अद्धाणम्मि य, सागरि तेणे य पंगुरणं ॥१९८८॥ असिवे ओमोयरिए, रायहुट्टे पवायिदुट्ट वा । आगाढे अण्णलिंगं, कालक्खेवो व गमणं वा ॥१९८९॥ अचेल ति गतं ।

मंघस्तोह विभागे, समणा समणी य कुल-गणस्तेत । कडिमह डिए ण कप्पति, अद्वियकप्पे जग्नुहिस्स ॥१९९०॥ आयरिए अभिसेगे, भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा उ । तिक्खुत्तऽडिवपवेसे, तियपरियट्टे तओ गहणे ॥१९९१॥ उद्देसिय त्ति गतं।

ओ।हेशिकम्

तित्थगरपिडकुटो, आणा अण्णाय उग्गमो ण सुज्झे।
अविम्रुत्ति अळाघवया, दुछभसेज्ञा ठितुच्छेदो॥१९९२॥
पुरपिच्छमवज्जेहिं, अवि कम्मं जिणवरेहिं लेसेणं।
भुतं विदेहगेहिं य, ण य सागरियस्स पिण्डो तु॥१९९३॥
दुविहे गेलण्णम्मी, णिमंतणा द्व्वदुछमे असिवे।
ओमोयरिय पयोसे, भए व गहणं अणुण्णातं॥१९९४॥
तिक्खुत्तो सक्खेत्ते, चडिहिंस मिगिऊण कडजोगी।
द्व्वस्स य दुछभया, सागारियसेवणा द्व्वं॥१९९५॥
सेज्ञायरे ति गयं।

शय्यातरः

राजपिण्हः

केरिसयो त्राया ?, भेया पिंडस्स के व ? सिं दोसा ?। केरिसयम्मि व कज्जे, कप्पति ? काए व जयणाए ?॥१९९६॥ मुदिए मुद्धऽभिसित्ते, मुद्धिओं जो होति जोणिमुद्धो तु। अभिसित्तो व परेहिं, सर्य व भरहो जहा राया ॥१९९७॥ पढमगभंगे वज्जो, होतुवमा वा वि जे भणिय दोसा। सेसेसु होयऽपिंडो, जिह्न दोसा तं विवज्जेज्जा॥१९९८॥ असणादीया चजरो, बत्ये पादे य कंवले चेव। पाइंग्रुणए य तहा, अट्टविहो रायपिंडो तु ॥१९९९॥

अट्टविह रायपिंडं, अण्णयरायं तु जो पहिग्गाहे । सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराहणं पावे ॥२०००॥ दोसा इमे ईसरतलवरमाडंविएहिं सत्थवाहेहिं। णिन्तेहिं अइन्तेहि य, वाघातो होति साहुस्स ॥२००१॥ ईसर भोइयमादी, तलवरपट्टेण तलवरो होति । वेट्ठणवट्टो सेट्टी, पच्चंतणियो उ माडंबी ॥२००२॥ जा जिन्त ५ इन्त ता अच्छतो तु सुत्तादि-भिवस्तपरिहाणी। इरिया अमंगलं ति य, पण्हाहणणा इहरहा तु ॥२००३॥ लोभे एसणवानो, संका तेणे णपुंस इत्थी य। इच्छंतमणिच्छंते, चातुम्मासा भवे गुरुगा ॥२००४॥ अण्णाःथ एरिसं दुञ्जभं नि नेण्हेज्जऽणेसणिज्जं पि । अण्णेण वि अवहरिए, संकिज्जिति एस तेणो ति ॥२००५॥ संका चारिय चोरं. मूलं णिस्संकिए य अणत्रहो । परदारि अहिमरे वा, णवमं णीसंकिने दसमं ॥२००६॥ अरुभंता य वियारं, इत्थिणपुंसा बला वि गिण्हेज्जा । आयरिय कुल गणे वा. संघे वा कुउन पत्थारं ॥२००७॥ अण्णे वि अत्थि दोसा, गोम्मियआइण्णर्यणमादी य। तण्णीसाए पविसे, निरिक्खमणुया भने दुद्वा ॥२००८॥ गोम्मियगहणा इणणा, रण्णो य णिवेइयम्मि जं पावे । आदीणरतणमादी, सत गेण्हेयरो व तण्णीसा ॥२००९॥ चारियचोराभिमरा. कामी व विसंति तत्थ तण्णीसा । वारणतरच्छवग्या, मेच्छा य णरा व घाएज्जा ॥२०१०॥ दुविहे गेलण्णम्मी. णिमंनणा द्व्वदुक्लभे असिवे। ओमीयरिय पदोसे, भए व गहुणं अणुण्णायं ॥२०११॥ निवलुत्तो सक्लेत्ते. चउहिसि मिगतूण कडजोगी । दन्त्रस्स य दुल्लभना. जनणाए कप्पनी ताहे ॥२०१२॥ रायपिडे ति गतं ।

कितिकम्मं पि य दुविधं, अब्भुट्टाणं तहेव बंदणयं। कृतिकर्म समणेहि य समणीहि य, जहारिहं होति कायव्वं ॥२०१३॥ सच्वाहिं संजईहिं, कितिकम्मं संजताण कातव्यं। पुरिसुत्तरिओ धम्मो, सन्त्रजिणाणं पि तित्थम्मि ॥२०१४॥ तुच्छत्तणेण गब्बो, जायइ ण य संकते परिभवेणं । अण्णो वि होज्ज दोसो, धियासु मा हुज्जहज्जासु ॥२०१५॥ अवि य हु पुरिसपणीनो, धम्मो पुरिसो य रक्खितुं सत्तो । लोगविरुद्धं चेयं, तम्हा समणाण कानव्वं ॥२०१६॥

किइकम्मो ति गयं।

पंचन्जामो धम्मो, पुरिमस्स य पन्छिमस्स य जिणस्स । मज्ज्ञिमयाण जिणाणं, चातुज्जामो भवे धम्मो ॥२०१७॥ पुरिमाण दुव्यिमोज्झो, चरिमाणं दुरणुपालयो कप्पो। मिज्यमयाण जिणाणं, सुविसोज्यो सुरुणुपालो य ॥२०१८॥ जङ्क्तरोण हंदी, आइक्खविभागववणदा दक्खं। सुहसम्मुयदंताण य, तितिक्ख अणुसासणा दुक्खं ॥२०१९॥ प्रिमाणं--

मिच्छत्तगोवियाणं. दुव्वियडूमतीण ठाणमीलाणं। आइनिखतु अइदुक्खं, उवणेउँ वा वि दुक्खं तु ॥२०२०॥ दुक्लेडिं भरिछयाणं, तणुधितिअवलत्तयो य दुतितिक्लं। एमेव दुरशुसासं, माणुकडयाय चरिमाणं ॥२०२१॥ एते चेत्र य ढाणा, सपण्णउन्जुत्तणेण मञ्झाणं । सहदृहउभयबलाण य, विमिस्सभावा भवे सुहमा ॥२०२२॥

वए ति गयं।

पुच्यतरं सामइयं. जम्म कयं जो व तेस्र वा ठवितो । एस कितिकम्मजेट्टो. ण जाति-सुययो दुपक्ले वि ॥२०२३॥

वतानि

पुरुष्ण्येष्टः

सा जेसि तुबद्धवणा, जेहि य ठाणेहि पुरिमचरिमाणं। पंचायामे धम्मे, आएसतिगं चिमं सुणसु ॥२०२४॥ दस चेव छच चतुरी, एते खछ तिण्णि होन्ति आदेसा । कतरे इवन्ति दस तु ? . भण्णति सुणस इमे ते तु ॥२०२५॥ ततो पारंचिया बुत्ता, अणबद्धप्पा य तिण्णि त । दंसणम्मि य वन्तम्मि, चरित्तम्मि य केवले ॥२०२६॥ अहवा चियत्तिक्चे. जीवकायं समारमे । सहे य दसमे बुत्ते, जस्सोबट्टावणा भवे ॥२०२७॥ एते दस तू बुत्ता, अण्णादेसेण होंति छत्त इमे । तिण्णि वि पारंचेकं, अणवटुप्पा वि तिण्णेकं ॥२०२८॥ दसणवन्ते तइए, चरित्तवंते भवे चउत्थं तु। पंचम चियत्तिक्यो. छट्टो सो होउबद्दल्यो ॥२०२९॥ एसो बितियाएसो, ततियाएसो इमो मुणेयच्त्रो। चत्तारि व उबहुप्पा, कयरे तु ? इमे ग्रुणेतव्वा ॥२०३०॥ पारंची अणुबहा, दंसण चरणे स्रुते पदिहा तु । दंसणचरित्तवंता, तो दोण्णेते भवन्ती तु ॥२०३१॥ चियत्तिका सेहो य. चत्तारेते हवंत्रबद्धपा । एते तिण्णादेसा, जवठवणाए ग्रुणेतच्या ॥२०३२॥ केवलगहणं कसिणं, जित वमती दंसणं चरित्तं वा । तो तस्स उबहुबणा, देसे वंतिम्म भयणा तु ॥२०३३॥ एमेव य किंचि पदं, सुर्यं च असुर्यं च अप्पदोसेणं। अविकोविए कहेन्तो, चोइय आउट्ट सुद्धो तु ॥२०३४॥ सो पुण दंसणवंतो, अणभोगेणं त अहव आभोगा। अणभोगेणं तहियं, कोयी सड्टो तु संवेगा ॥२०३५॥ दद्वण णिण्हगे तू , एते साहू जहुत्तकारि ति । णिक्तंतो अणभोगा, दिहो अण्णेहिं साहृहिं ॥२०३६॥

भणिओ य णिण्हगाणं, कीस सगासे तमं सि णिक्खंतो ?। तो बेति ण याणामि. एय विसेसं अहं भंते ! ॥२०३७॥ प्वमणाभोगेणं, मिच्छत्तगतो पुणो वि सम्मत्तं। जो पहिन्को सो तू, आस्रोतियणिन्दितो सुद्धो ॥२०३८॥ सो चेव य परियायो. णत्थि उवद्वावणा पुणो तस्स । तं चिय पच्छित्तं से, जं चिय सम्मं तु पडिवज्जे ॥२०३९॥ जो पुण जाणंतो स्थिन, गतो तु होज्जाहि णिण्हण्सुं तु । पुणरागतो य सम्मं, तस्स खबद्वावणा भणिया ॥२०४०॥ छण्डं जीवनिकायाणं, अणपज्झो तु विराहओ । आलोतियपिंदकंतो, सुद्धो इत्रति संजतो ॥२०४१॥ छण्डं जीवणिकायाणं, अवज्झो तु विराधयो । आस्रोतियपदिकंतो, मूलच्छेज्जं तु कारए ॥२०४२॥ खेत्तादिअणपण्डा. अणभोगेणं व जो गतो मिच्छं। सो तु अपायच्छित्तो, विराहती तस्स दिन्तो तु ॥२०४३॥ जं जो त समावण्यो, जं पायोगं व्य जस्स वत्थ्रस्स । तं तस्स त दायव्वं. असरिसदाणा इमं होति ॥२०४४॥ अप्पिक्छित्ते य पिक्छत्तं. पिक्छत्ते अतिमत्तया। धम्मस्साऽऽसायणा तिन्वा, मगगस्स य विराहणा ॥२०४५॥ उस्म्रत्त वयहरेंतो, कम्मं बंधति चिक्कणं। संसारं च पबड्टेति, मोहणिज्जं व कुव्यती ॥२०४६॥ उम्मग्गदेसए मग्गद्सए मग्गविष्पडीवाए । परं मोहेण रंजेन्तो, महामोहं पक्कन्तती ॥२०४७॥ एवं तु उबद्वितो जो पढमयरं तु अहव सामतिए। ढिवतो सो जेट्टयरो. कप्पपकप्पद्विताणं च ॥२०४८॥ पुरिसजेंट्ठे चि गतं॥

सपिदकमणो धम्मो, पुरिमस्स य पिन्छमस्स य जिणस्स । प्रतिकमणम्

मिल्समगाण जिणाणं, कारणजाए पिल्कमणं॥२०४९॥
गमणागमणिवहारे, सायं पादो य पुरिमचिरमाणं।
णियमेण पिल्कमणं, अतियारो होज वा मा वा॥२०५०॥
अतियारस्स तु असती, णणु होति णिरत्थयं पिल्कमणं।
भण्णित एवं चोदग!. तत्थ इमं होति णानं तु॥२०५१॥
जह कोिय ढंडिओ तू, रसायणं कारवेति पुत्तस्स ।
तत्थेगो तेगिच्छी, बेती मज्झं तु एरिसयं॥२०५२॥
जित दोसे होअगतं, अह दोसो णित्थ तो गयो होति।
वितियस्स हरति दोसं, ण गुणं दोसं व तद्भावा॥२०५३॥
दोसं हंतूण गुणे, करेति गुणमेव दोसरिहए ति।
तइयसमाहिकरस्स तु, रसायणं ढंडियसुतस्स॥२०५४॥
इय सइ दोसं छिंदति, असती दोसिम्म णिज्जरं कुणित।
कुसलितिगच्छरसायण, उवणीयिमणं पिल्कमणं॥२०५५॥
पिल्कमणे ति गतं।

मासद्धरपः

जिणथेरअहालंदे, परिहारिंग अज मासकप्पो तु ।
सेने कालमुवस्सयपिंडग्गहणे य णाणनं ॥२०५६॥
एतेसिं पंचण्ह वि, अण्णोण्णस्सा चतुप्पएहिं तु ।
सेनादीहि विसेसो, जह तह वोच्छं समासेण ॥२०५७॥
णित्य तु सेनं जिणकप्पियाण उडुबद्धे मासकालो तु ।
वासाम्रं चउमासा. वमही अममत्तपरिकम्मा ॥२०५८॥
पिंडो तु अलेवकडो, गहणं तु एसणाहुवरिमाहि ।
तत्थ वि कातुमभिग्गह, पंचण्हं अण्णयरियाए ॥२०५९॥
थेराण अत्थि सेनं, तु उग्गहो जाण जोयण सकोसं ।
णगरे पुण वसहीए, कालो उउबद्धे मासो तु ॥२०६०॥
उस्सग्गेण य भणितो, अववाएणं तु होज्ञ अहिओ वि ।
एमेव य वासाम्रु वि, चतुमासो होज्ञ अहिओ वा ॥२०६१॥

अममत्त-अपरिकम्मो, उवस्मओ एत्थ भंगया चतुरो । उरसागेणं पढमो, निष्णि तु अववायओ भंगा ॥२०६२॥ भत्तं लेवकडं वा, अलेवकडं वा वि ते तु गेण्हंति। सत्ति व एसणाहि, सावेक्खो गच्छवासो ति ॥२०६३॥ अहलंदियाण गच्छे, अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु । णवरं काले विसेसो, उदमासो पणग चतुमासो ॥२०६४॥ गच्छे पहिबद्धाणं, अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो । जो तेसि उमाही खल, सो साऽऽयरियाण आहवति॥२०६५॥ एगवसहीए पणगं, छव्वीहीओं य गाम कुव्वंति। दिवसे दिवसे अण्णं, अहंति वीहीं त णियमेणं ॥२०६६॥ परिहारविसद्धीणं, जहेव जिलकप्पियाण णवरं तु । आर्यविकं तु भन्ने, बोद्धक्वी बेरकप्पी तु ॥२०६७॥ अज्ञाण परिगाहियाण उगाही जो तु सो ह आयरिए। कालतो दो दो मामा, उद्बद्धे नासि कप्पो तु । २०६८॥ सेमं जह धेराणं, पिडो य उवस्मयो य तह तासि । सो सब्बो वि य द्विहो. जिणकप्पा येरकप्पा य ।२०६९॥ जिणकप्पियऽहालंदी, परिहारविसृद्धियाण जिलकप्पा । थेगण अज्ञियाण य, बोद्धच्यो थेरकषो तु ॥२०७०॥ द्विहा उ मामक पो. जिणक पो चेव थेरक पो य। विर्णुगहो जिनाणं, थेराण अणुगहपत्रत्तो । २०७१॥ उदवासकाल अनीए, जिलक प्यीणं तु गुरुगो गुरुगा य। होंति दिणस्मि दिणस्मी, थेराणं ने चिय लहु उ ॥२०७२॥ तीसं पदाऽवराहे, पुट्टो अणुवासियं अणुवसंता । जे तत्थ पदे दोसा, ने तत्थ ततो समावण्णो ॥२०७३॥ पण्णरस्रममदोसा, दम एसणदोम एय पणुत्रीसं। संजोयणाइ पंच य, एते तीसं तु अवराहा ॥२०७४॥

एते हिं दोसे हिं, संपत्तीए वि लग्गती णियमा । दिवसे दिवसे सो ऊ. कालातीते वसंतो तु ॥२०७५॥ वासावासपमाणं, आयारउदुप्पमाणियं कप्पं। एयं अणुम्ध्रयंतो, जाणसु अणुवासकत्वो तु ॥२०७६॥ आयारपकप्पम्मी, जह भणितं तीय संवसंतो वि। होति अणुवासकत्यो, तह संवसमाण दोस्रो तु ॥२०७०॥ दुविहे विहारकाले, वासावासे तहेव उदुबद्धे। मासातीतेऽणुवही, वासाईते भवे उवही ॥२०७८॥ उन्बद्धिएसु अद्वसु, तीतेमुं वास तत्थ ण वि कप्पे। घेतुणं उवहिं खलु, वासाम्र त तीने कप्पति त ॥२०७९॥ वासउद्वअहालंदे, इत्तरिसाहारणोगगहपुहत्ते । संकमणहा दच्वे, गच्छे पुष्फाविकण्णा तु ॥२०८०॥ वासासु चडम्मासो, उडबदे मासो लंद पंच दिणा। इत्तरिओ स्वस्तमुले, वीसमणहा ठियाणं तु ॥२०८१॥ साहारणा उ एते, समगठियाणं बहुण गुच्छाणं । एकेण परिग्गहिता. सन्वे वोहत्तिया होन्ति ॥२०८२॥ संकमणऽण्णोण्णस्सा, सगासे जित उ ते अहीयंते । सुत्तत्थतदुभयाई, सन्त्रो अहवा वि पडिपुच्छे ॥२०८३॥ ते पुण मंडलियाए, आवलियाए व तं तु गिण्हेजा । मंडलियमहिज्जेते, सिचतादी त जो लाभो ॥२०८४॥ सो तु परंपरएणं, संकमती ताव जाव सट्टाणं। जहियं पुण आवलिया, तहियं पुण ठाति अंतिम्म ॥२०८५॥ ते पुण जहा तु एक्काये, वसहीए अहव पुष्फकिण्णा तु । अहवा वि तु संक्रमणे, दच्चस्सिणमो विही अण्णो ॥२०८६॥ म्रुत्तत्यतदुभयविसारयाण थोवे अ संभतीभेदे । संक्रमणद्वा दव्ये, जोगे कप्पे य आवलिया ॥२०८७॥

पुन्वदिनाण खेते, जित आगच्छेज अण्ण आयिरओ।
बहुसुय बहुआगमिओ, तस्स सगासिम जित खेती॥२०८८॥
किंचि अहिज्जेजाही, थोवं खेतं च तं जह हवेजा।
ताहे असंथरंता, दोण्णि वि साहू विवज्जेन्ति॥२०८९॥
अण्णोण्णस्स सगासे, तेसिं पि य तत्थऽहिज्जमाणाणं।
आभवणा तह चेव य, जह भणियमणंतरं सुत्ते॥२०९०॥
एवं णिव्वायाए, मास चतुम्मासिओ तु थेराणं।
कप्पो कारणयो पुण, अणुवासो कारणं जाव॥२०९१॥
एसो तु मासकप्पो, थेरकप्पो य विष्णओघेणं।
अहुणा ठियमठियं तू, थेराणं इण्यु वोच्छामि ॥२०९२॥
सो थेरकप्पो दुविहो, अद्वितकप्पो य होति ठितकप्पो।
एमेव जिणाणं पी, ठितमठिनो होति कप्पो तु ॥२०९३॥
मासकप्पेति गतम।

पज्जोसवणाकष्पो, होनि ठिनो अहिश्रो य थेराणं।
एमेव जिणाणं पी. दुह ठियमठिश्रो य णानव्यो।।२०९४।।
चातुम्मासुक्रकोसो, सत्तरि राइंदिया जहण्णेणं।
ठिनमहिय एगतरे, कारणवच्चासिनण्णयरे।।२०९५।।
थेराण सत्तरी खल्छ, वासासु ठिनो उ दुण्णि मामो तु।
वच्चासिश्रो तु कज्जे, जिणाण णियमह चतुरो वा।।२०९६।।
दोसासित मिज्झमया, अच्छंनी जाव पुव्वकाही तु।
विहरंति य वासासु वि, अकहमे पाणरहिए य॥२०९७।।
भिण्णं पि वासक्ष्पं, करेंति तणुयं पि कारणं पष्प।
जिणकष्पिया वि एवं, एमेव महाविदेहे वि।।२०९८।।
एयं ठियम्मि मेरं, अहियकष्पं य जो पमाएति।
सो बहति पासत्थे, डाणम्मि तगम्मि वज्जेज्जा॥२०९९।।

पर्यवणाकस्पः

पासत्थसंकिलिहं, ठाणं जिणवृत्त थेरेहि य। तारिसं त गवेसंतो, सो विहारे ण सुज्झित ॥२१००॥ पासत्थसंकिलिहं, ठाणं जिणवृत्त थेरेहि य। तारिसं तु विवज्जेंनो, सो विहारे तु सुज्झति ॥२१०१॥ जो कप्पठितीमेयं, सहहमाणो करंति सहाणे। सो तारिसं तु गवेसेजा, जनो गुणाणं अपरिहाणी ॥२१०२॥ ठितमठियम्मि द्सविहे. ठवणाकृष् य द्विहमण्णयरे। उत्तरगुणकष्पिम्म य, जो मरिकष्यो म संभोगो ॥२१०३॥ उवणाकष्पो द्विहो, अकष्पठवणा य सेहठवणा य । पढमो अकप्पिएणं, आहारादीणि गिण्हावे ॥२१०४॥ अट्टारसेव पुरिसे, वीसं इत्थीण दस णपुंसे य। दिक्खेति जो ण एते. सेहट्टबणाए मो कप्पी ॥२१०५॥ आहार् उवहिसेज्जा. उगम्बद्धायणेसणासुद्धे । जो परिगिण्डति णिययं, उत्तरगुणकष्पित्रो स खलु ॥२१०६॥ सरिकापे सरिछंदे, तुल्लचरिते विमिद्वतरए वा। साहहि संथवं कुज्जा, णाणीहि चरिनगुत्तिहि ॥२१०७॥ सरिकणे सरिछंदे, तल्लचरित्ते विसिट्टारण वा । आइएज भत्तपाणं, सर्ण लाभेण दा तुस्से ॥२१०८॥ इय सामाइयछेदे. जिणथेराणं ठिनी समकवाना । एत्तो णिन्विसमाणे. णिन्विष्ट यात्रि बोच्छामि ॥२१०९॥ परिहारकल्यः परिहारकप्पं बोच्छामि, परिहरिनव्यं जहा विद् । आदी मज्झावसाणे य, आणुपुच्चि जहक्कमं ॥२११०॥ भरहरवयवासेसु, जदा तित्थगरा भवे। पुरिमा पच्छिमा चैव, परिहारी तेस होन्ति तु ॥२१११॥ मज्ज्ञिमाण ण संती तु, तित्थेमुं परिहारिया। ण यावि य विदेहेसु, विज्ञंतो परिहारिया ॥२११२॥

केवतियकालसंजोगो, गच्छो तु अणुसज्जती । तित्थंकरंसु पुरिमेसु, तहा पिच्छमएसु य ॥२११३॥ पुन्वसयसहस्साति, पुरिमस्सऽणुसज्जती। जम्हा ण पडिवज्जंति, दोण्ह गच्छा परेण तु ॥२११४॥ देमुणपुच्यकोडीओ, दो सा दोण्ह भवंति तु। दो सा एग्रणनीया तु. तेण ऊणा ततो भवे ॥२११५॥ वीसगमो य वासाई, चरिमस्सऽणुसज्जए। जाव देमूणगा दोण्णि, सवा वासाण होति तु ॥२११६॥ पन्यजा अद्भामस्म. उवटा णयमस्मि उ। एगुणवीसपरियाए, दिद्विवाओ य तस्स तु ॥२११७॥ उद्दिस्सति वरिसेण य, तस्स य सो तु समप्पती । णव वीसा य मेळीणा, ऋणतीसा भवंति तु ॥२११८॥ इति एगुणतीसाए, सयमुणं तु पच्छिमे । एमो दोम त एनेणं, अणाई दो सयाणि उ ॥२४१९॥ पालित्ता सर्व ऊणं, टाणं ते तु पन्छिमे । काले देसेन्ति अण्णेसिं, इति ऊणा उ वे सता ॥२१२०॥ पडिवज्जंनि जिणिद्स्स, पायमूलिम जे विज्ञ। ठावयंति उ ते अण्णे, नो त ठावितठावगा ॥२१२१॥ सब्वे चरित्तमंता य, दंसणे परिणिट्टिया। णवपुटवी जहण्णेणं, उक्कोस दसपुटिवया ॥२१२२॥ पंचिवहे ववहारं, कष्पे ते दुविहम्मि य । दमविहे य परिछत्त, सब्वे ते परिणिट्टिता ॥२१२३॥ अत्तणो आउगं सेसं, जाणिता ते महामुणी । परक्कमं बलं विरियं. पचवाए तहेव य ॥२१२४॥ जित जीनपद्मनाया, ण होति तेसि त अण्णतरा । तो तं पहिवडनंती, वाघाएणं तु तेण वी ॥२१२५॥

पडिवज्जंते वीसग्गसो कहं देसूणा दो सया भवंति ? वीसाए परेण वि एयमगां. पन्वज्ञा० सिलोगा ३। वाससयाच्या मणुस्सा जम्मातो. सेसं तहेव सन्वं ॥ तत्थ जे उसभसामिस्स तित्थे पुन्वसतसहस्सा ते देसुणा दो पुन्वकोडी भवंति । कहं ? अट्टवासपरियानो, सिलोगा ३ । ते पुष्वकोडिआउया मणुस्सा जम्माओ ८ पव्वइता,२९वासाए दिद्विताओ व समप्पति, सो उसभसामिकालपिडवण्णो, एसा एगा पुन्त्रकोही देसूणा। एयस्स मूले एवं च अण्णो पहिच-ज्जिति तस्स वि [एगा पुट्यकोडी देमुणा। एवं] देसुणाओ दो पुन्यकोडीओ । एतस्स अण्णा मूले ण पडिवज्जंति । उस-भसामिस्स आउयं ८४ [लक्खपुन्नाणि ।] आपुच्छिज्ञण अरहते, मर्गा देसिति ते इमं। पमाणाणि य सन्वाणि, मगगहे य बहुविहे ॥२१२६॥ उवहीगमणप्पमाणाणि, पुरिसाणं च जाणिउं। दर्ज खेत्तं च कारुं च, भावं अण्णे य पज्जवे ॥२१२७॥ संसद्धमाइयाणं, सत्तर्हं एयणाण तु । आदिल्लाहि दोहि तु, अग्नहो मह पंचहि ॥२१२८॥ तत्थ वि अण्णयरीष, एगीए अभिगाहं तु कातूणं। उवहिणो अग्गहो दोसुं, इयरो एगतरीय तु ॥२१२९॥ अडरुगयम्मि सूर्यम्म, कृष्पं देसेन्ति ते इमं। आलोइयपहिचकंता, ठावयंति तयो गणे ॥२१३०॥ सत्तावीसं जहण्णेणं, उक्कोसेणं सहस्यमो । णिग्गंथसूरा भगवंतो, सन्त्रगोण वियाहिया ॥२१३१॥ सयगसो य उक्कोसा, जहण्णेण तनो गणा । गणो य णवगो बुत्तो, एमेया पडिवत्तीओ ॥२१३२॥ एगं कप्पट्टियं, कुजा, चत्तारि पारिहारिया । अणुपारिष्ठारिया चैव, चत्तरो एनेसि ढावए ॥२१३३॥

ण तेसि जायते विग्धं, जा मासा दस अह य। ण वेयणा ण वाऽऽयंको, ण वायणे उवहवा ॥२१३४॥ अद्वारसम् पुण्णेसं, होज्जा एते उबहवा। कणिए कणिए यावि, गणे मेरा इमा भवे ॥२१३५॥ जिंचण गणो ऊणो, तिचए तत्थ पिक्खवे। एगं दवे अणेगा वा. एम कप्पे त ऊणिए ॥२१३६॥ एते अणूणिए कप्पे, उन्नसंपज्जिति जो तहिं। एगे दवे अणेगे वा, तेसिं कप्पो इमो भवे ॥२१३७॥ अच्छंति ता उदिक्खंना, जाव पुष्णा तु ते णव । पच्छा पडिवज्जंति, जं कप्पं तेसि अंतिए ॥२१३८॥ पमाण कप्पद्रितो तत्थ, ववहारं ववहरित्तए । अणुपरिहारियाणं पि. पमाणं होति सेव त ।।२१३९॥ आलोयण कष्पठिए, पचनस्वाणं तहेव वंदणयं । तं च वहंते ते तू, उज्जाणी एव मण्णंति ॥२१४०॥ अणुपरिहारी गोवालगन्वगावीण णिच्युउनुता । परिहारियाण मग्गतो. हिंहिंती णिश्चग्रुज्जुत्ता ॥२१४१॥ पडियुच्छं वायणं चेत्र, मोत्तणं णित्य संकहा । आलावो अत्तणिहेमो. परिहारियस्स कारणे ॥२१४२॥ परिहारियाण उ तवो, वासामुक्कोस मिडझम जहण्णो। बारसम दसम अट्टम, दसमऽट्टम छट्ट सिसिरेस ॥२१४३॥ अद्भा छट्ट चउत्थं, गिम्हे उक्कोस मिज्झम जहण्लो। आयंबिलपारणगं, अभिगहिताएमणाए त ॥२१४४॥ अणुपरिहारीया पुण, णिचं पारिति ते उ आयामे। कप्पट्रिए वि ते चिय, आणिति अभिगाहीताहि ॥२१४५॥ परिहारिय पत्तेयं, अणुपरिहारीण तह य कप्पठिए। पंचण्ह वि तेसिं तू, संभोगेको ग्रुणेतन्वो ॥२१४६॥

परिहारिएस बूढे, अणुपरिहारी ततो वहंती हु। कप्पट्टियो य पच्छा, वहती वृदेस तेसं तु ॥२१४७॥ परिहारिया वि छम्मासे, अणुपरिहारिया वि छम्मासे। कपट्टितो वि छम्मासे. एते अट्रारस त मासा ॥२१४८॥ अणुपरिहारिया चेव. जे य ते परिहारिया । अण्णमण्णेसु ढाणेसु, अविरुद्धा भवंति ते ॥२१४९॥ गतेहिं छहिं मासेहिं, णिव्विदा भवंति ते। अणुपरिहारिया पच्छा. परिहारं परिहरंति त ॥२१५०॥ गएहिं छहिं मासेहिं. णिन्त्रिट्रा भवंति ते । वहती कप्पद्रितो पच्छा. परिहारं अहाविहि ।२१५१।। पतेसि जे वहन्ती. णिव्वियमाणा हवंति ते णियमा । जेहिं वृढं पुण ने सिं. हर्वति णिव्विट्टकाइया ॥२१५२॥ अट्टारसिंह मासेहिं, कृष्पो होति समाणितो । मुलदृवणा एसा, समासेण वियाहिता ॥२१५३॥ एवं समासिए कप्पे, जे व सिं जिणकप्पिया। तमेव कर्ष ऊणा वि. पालए जावजीवियं ॥२१५४॥ अद्वारसिंहं पुण्णेहिं. मासेहिं थेरकिपया । पुण गच्छं णियच्छंति, एसा तेसि जहाविही ॥२१५५॥ ततिय चउत्था कप्पा, समोअरंते तु वितियकप्पिमा। पंचमछद्रवितीसं, हेट्टिल्लाणं समोयारं ॥२१५६॥ सामाछेदो णिव्विस, णिव्विद्व एनै जिणधेरे ओयर्रित ॥ अहणा जिणकपाठिनी, सा पुट्यं मामकप्पम्यत्तिम । भणिया स चेत्र इहं, णवरममुण्णत्थ भणित इमं ॥२१५७॥ गच्छिम्मि य णिम्माया, धीरा जाहे य म्रुणितपरमत्था । अगाह अभिगाहे या, उर्वेति जिणकत्पिगविहारं ॥२१५८॥ णवपुन्ति जहण्णेणं, उक्कोसेणं त दम असंपुण्णा । चोहसपुत्र्वी तित्थं. तेण त जिणकप्प ण पवज्जे ॥२१५९:।दारं।

जिनकम्पः

वहरोसभसंचयणा. सत्त्रस्यऽत्थो त हाति परमत्थो । संसारसंभवो वा णातो तो म्रणियपरमत्थो ॥२१६०॥ दारं । अगहो ततियातीया. पहिमाहि गहण भत्तपाणस्स । दोहिं तु उवरिमाहिं, गेण्हंती वत्थपायाई । २१६१।। दारं। दव्वे अभिग्नहा पुण, रतणावलिमाइनाइ बोद्धव्या । एतेस विदितभावी. उवेति जिणकप्पियविहारं ॥२१६२॥ दुविहा अतिसेसा वि य, तेसि इमे विष्णया समासेणं। बाहिर अब्भितरगा, तेसि विसेसं पवक्खामि । २१६३॥ वाहिरओ सरीरस्मा, अनिसेमो तेसिमो तु बोद्धव्यो । अच्छिद्दपाणिपाया, बङ्रोसभर्मघनण धीरा ॥२१६४॥ वग्गुलिपक्ससरिसयं, पाणितलं तेसि धीरप्रसिमाणं। होति खनोवसमेणं, लढ़ी तेसि इमाऽऽहंस्र ॥२१६५॥ माएज घडसहरसं, धारेज व सो त सागरा सब्वे। जो परिसलद्धीप, सो पाणिपहिमाही होति ॥२१६६॥ टारं। अब्भिनर अनिसेसो, इमो उ तेसि समासयो भणितो । **उदही वित्र अक्लोभा, मृरो इव तेयसा जुत्ता ॥२१६७॥** अन्वावण्णसरीरा, व गंधा ण होति से मरीरस्स । म वि ण कुच्छ तेसिं.परिकम्मं ण वि य कुर्व्वति॥२१६८॥ पाणिपडिग्गहिया तु, एरिसया णियमसो मुणेतन्वा । अतिसेसे वोच्छामि, अण्णे वि विसेसना तेसि ॥२१६९॥ द्विहो तैसऽतिसेसो, णाणातिसयो तहेव सारीरो । णाणादिसयो ओही, मणपज्जव तदुभयं चैव ॥२१७०॥ अहवाऽऽभिणिबोहीयं, सुतणाणं चेव णाणअतिसेसो । तिवलीअभिण्णचचा, एसो सारीर अतिसेसो ॥२१७१।। रतहरणं मुहपोत्ती. जहण्णम्रवगरण पाणिपत्तिस्स । उक्कोसं कप्पतियं, सञ्जो नि य एस पंचिवहो ॥२१७२॥

पिंदगहधारि जहण्णो, णवहा उक्कोस वारसिवकणो ।
तेसिं एयाणि चिय, अतिरेगे पायणिज्जोगो ॥२१७३॥
रुढणह णियणग्रुंडो, दुविहो उवही जहण्णओ तेसि ।
एसो लिंगो तेसि, णिव्वाधाएण णेतव्वो ॥२१७४॥
रतहरणं ग्रुहपोत्ती, संखेवेणं तु दुविह उवही तु ।
वाधात विगतलिंगे, अरिसाम्र व होति किटपट्टो ॥२१७५॥
सत्त य पिंडगहम्मी, रतहरणं चेव होति ग्रुहपोत्ती ।
एसो तु णवविकणो, उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥२१७६॥
एगो तित्थयराणं, णिक्खममाणाण होति उवही तु ।
तेण पर णिरुविही तू . जावज्जीवाए तित्थगरा ॥२१७७॥
एसा जिणकण्पिठती, ठाणामुण्णत्थया समक्खाता ।
वित्थरयो पुण णेया, जह भणितं मासकण्पिम ॥२१७८॥
णिज्जुत्तीए ॥

स्यविरकस्पः

अहुणा थेरिथती तू, सा वि य भिणता तु पुन्तमेवं तु ।
दारमसुण्णत्थिमयं. णवरं संखेवतो वोच्छं ॥२१७९॥
संजमकरणुज्जोया, णिष्फायग णाण-दंसण-चिरत्ते ।
दीहो य बुहुवासो. वसहीदोसेहि य विम्रको ॥२१८०॥
दीहो ति बुहुवासो, थेरा ण तरंति जाहे कातुं जे ।
अब्धुज्जयमरणं वा. अहवा अब्धुज्जयिवहारं ॥२१८१॥
दीहं च आउगं तू, बृदावासं तयो वसे ।
उग्गमादीहिं दोसेहिं, विष्पमुक्ताए वसहीए ॥२१८२॥
मोत्तुं जिणकष्पिटतिं, जा मेरा एस विण्णता हेट्टा ।
एसा तु दुपदजुत्ता, होति टिती थेरकष्पम्मि ॥२१८३॥
दुपदं ती उस्सग्गो, अववाओ चेव होंति दोण्णेते ।
एतेहिं होति जुत्तो, णियमा खलु थेरकष्पो तु ॥२१८४॥
पलंबाओ जाव दिती, उस्सग्गऽववाइयं करेमाणो।

अववाए उस्समं, आसायण दीहर्ससारी ॥२१८५॥ अह उस्सम्मेऽत्रवायं, आयरमाणी विराहओ होति। अववाए पुण पत्ते, उदसम्मणिसेवओ भड़ओ ॥२१८६॥ कह होती भतियन्वो ?, संवयणिवितिजुतो समग्गो तु । एरिसनो अववाए, उस्सग्गणिसेवओ सुद्धो ॥२१८७॥ इयरो उ विराहेई, असमत्थो जेण परिसहे सहितं। धितिसँघतणेहिं तू, एगतरेणं व सो हीणो ॥२१८८॥ इति सामाइयमादी, छव्तिह कप्पट्टिनी समक्ताया । दारं । विरियं दारं अहुणा, इणमो वोच्छं समासेणं ॥२१८९॥ परिणत गीतत्था तू, विपवस्वभूया अपरिणया होंति। कडजोगी कयजोगी, चतुत्थमादीहिं णायव्या ॥२१९०॥ अकडज्जोग्गा जोगावियचतुत्थादीहिं होन्ति णावच्या । धितिसंघयणादीहि, तरमाणा होति णायच्या ॥२१९१॥ धितिसंघयणेणं तू, एगयरजुया उ होंनि अनरा उ । अहवा दोहि वि जुत्ता, अतरगपुरिसा मुणेयन्वा ॥२१९२॥ एतेषां करपस्थितादीनाम् ॥ ॥७१॥४ई१॥

ज जह सत्तो बहुतरगुणो व्य तस्माहियं पि देज्जाहि हीणतरे हीणयरं, झोसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥७२॥ कप्पट्टियमातीणं, पुरिसाणं जाव उभयहा अतरो । जो जह सत्तो उ भवे, तस्स तहा होति दायव्वं ॥२१९३॥ बहुतरगुणसमगो तू, धितिसंघतणादि जो तु संपण्णो । परिणय कडजोगी वा, अहवा वि हवेज्ज उभयतरो ॥२१९४॥ एयगुणसमग्गस्स तु, जीयमया अहियगं पि देज्जाहि । होणस्स तु हीणतरं, मुंचेज्ज व सन्वहीणस्म ॥२१९५॥ ॥७२॥६र्जर॥

एत्थपुण बहुतरा भिक्खुणात्ति अकयकरणाणभिगयाय जंतेण जीतमञ्जमभत्तंनमविगतिमादीयं ॥७३॥

जीतयन्त्रविधः एत्थं इमम्मि जीए, बहुतस्या भिक्खुणो भवंनी तु । अकयकरणा उ जे तू, अणभिगया नेव णायव्या ॥२१९६॥ चस्सद्देण थिराथिर, गहिया तू एत्थ तू समासेणं। जंतयविद्वीकमेणं, जीयाभिमएण देजनाहि ॥२१९७॥ कतकरण अकयकरणा, कयकरणा गच्छवासि इयरे य अकयकरणा तु णियमा, णायच्या गच्छवासी तु ॥२१९८॥ ते अभिगत अणभिगता, अणभिगता थिराऽथिरा व होजनाहि। कत अभिगत जं सेवे, अणिभाने अत्थिरे इच्छा ॥२१९९॥ अहवा णिरवेविखयरा, दुविहा पुरिसा समामनो होंति । णिरवेक्तो जिणमादी, ते णियमा होति कतकरणा ॥२२००॥ सावेक्खा होंति निहा, आयरिय उत्रज्झ भिक्खुणो चेत्र । कतकरणमकतकरणा, आयरिया चेबुवज्झाया ॥२२०१॥ भिक्ख गीयाऽगीया, गीयत्थ थिराऽथिरा य वोद्धव्वा । कतकरण अकतकरणा, एकेका होन्ति ते द्विहा ॥२२०२॥ अग्गीया वि थिराऽथिर, कयाऽकया चेव होंनि एकेका। कतकरण अकतकरणा, केरिसया होंति ? सुणम् इमे ॥२२०३ छद्रऽद्रमाइएहिं, कनकरणा ते त उभयविग्वाए । अभिगत कतकरणत्तं, जं जोग नवारिहा केवी ॥२२०४॥ णिरवेक्खा एगविहा, सावेक्खाणं तु कि णिमित्तेणं । तिविद्दो भेदो त कतो, आयरियादी ? इमं सुणम्र ॥२२०५॥ भण्णाइ जुनरायादी, वत्थुविसेसेण दंडो जह लोए। तह वत्थुविसेसेणं, आयोरयादीण आरुवणा ॥२२०६॥ आयरिय-उत्रज्झाया, दोविण वि णियमेण होति गीयत्था । गीयत्यमगीयत्था, भिक्खु पुण होति णातन्त्रा ॥२२०७॥

कारणमकारणं वा, जयणाऽजयणा व णत्थऽगीयत्थे। एतेण कारणेणं, आयरियादी तिविह भेदी ॥२२०८॥ कज्जाऽकज्ज जयाऽजय, अविजाणंतो अगीयो जं सेवे । सो होति तस्स द्प्यो, गीते दप्याजते दोसा ॥२२०९॥ अविसिद्धा आवत्ती, चरिमं मन्त्रेसि तेण सावेक्खे । चरिमं चिय कयकरणे, आयरिए अकए अणवहो ॥२२१०। कतकरणउवज्झाए, अणवहो होति मृलमकयम्मि । भिक्खुगीयथिरम्मी, कतकरणे मृत्रमेव भवे ॥२२११॥ अकयथिरम्मी छेदो. अत्थिरकयकरणे होति सो चेव। अस्थिरअकते छग्गुरु, अगीतथिरकरणे ते चेव ॥२२१२॥ अग्गीतथिरे अकते, छल्लहुमा होति तू ग्रुणेनच्या । अगगीयअथिरकयकरण च्छल्लह् चउगुरू अकते ॥२२१३॥ एसाऽऽदेसो एको, अयमण्णो बिनियओ तु आदेसो । चरिमं चिय आवण्णे, कतकरणगुरुम्मि अणवट्टो ॥२२१४॥ अकतकरणम्म मूलं, मुलग्जवज्ञाए होति कतकरणे। अकतकरणिम्म छेदो. इय णेयं अहुकंनीए ॥२२१५॥ एमेव य अणवर्द्ध, आवण्णे होति दोण्णि आदेमा । णिरवेक्लो ण भणिएत्यं, जं दोण्णि ण होंति तस्सेते ॥२२१६॥ अहुणा मूळावण्णो, सच्चे मूछं तु होति णिरवेक्खे। मुळं चेव गुरुस्म वि, कतकरणे अकते छेदा तु ॥२२१७॥ कतकरणउवज्झाए, छेदे अकतम्मि होन्ति छग्गुरुगा । इय अट्टोकंनीए, णेयं अयमण्णो आएसो ॥२२१८॥ सावेक्लो ति व काउं, गुरुस्स कडजोगिणो भवे छेदो। अक्तनकरणिम छग्तुरु, कतकरण उवज्झे छग्तुरुगा ॥२२१९॥ अकते छल्लहुगा तू, इय अड्डोकंतीए तु णातव्त्रं । अहुणा छम्मुक्ते तू, आदत्तं ठाइ गुरुभिण्णे ॥२२२०॥

छ्छहुयादत्तम्मी, ठायति लहुए तु भिण्णमासम्मि । चतुगुरुआदत्तम्मी, अञ्चम्मी ठाइ गुरुवीसे ॥२२२१॥ चतुलहुए वीसाए, गुरुमासे ठाति पण्णरसिंहं तु । ('गुरुमासे ठाति गुरुग पण्णरसे' इति मत्यन्तरे)

लहुए लहुपण्णरसे, गुरुभिण्णे ठाति गुरुदसहिं .२२२२!! लहभिण्णे दसलहुए, गुरुवीसा अंते ढाति गुरुपणए। लहुवीसा आढतं. अंतम्मी ठाति लहुपणए ॥२२२३॥ पण्णरसहि गुरुएहिं, अंतम्मी अद्वमिम टायित तु । पण्णरसिं लहुएहि, अंतम्मी ठाति छट्टम्मि ॥२२२४॥ दसगुरुए आहत्तं, अंतम्मी ठायती चत्रत्थम्म । दसलहुए आढते, टायति तू अंते आयामे ॥२२२५॥ गुरुपणए आढत्ते, एकासणयम्मि अंते डायइ तू । लहुपणए आढत्ते, अंतम्मी ठाति पुरिमहू ॥२२२६॥ अद्वमभत्ताऽऽहत्तं, अंतम्मी ठायई अ णिन्त्रिगती । जंतिवहीपत्थारो, समासतो एसमक्खानो ॥२२२७॥ एयं तु अजयणाए, साविक्खाणं तु होति परिछत्तं । अह गीयत्थो सेवे, कारण जनणाए तो सुद्धो ॥२२२८॥ एयं त कारणम्मी, जतणासेविस्स विष्णयं दाणं। अहवा वि इमं अण्णं, आयरियादी जहाकमसो ॥२२२९॥ आयरिय उवज्झाए, कतकरणे अकतकरण दुविहा तु। भिक्खुम्मि अभिगते या, अणभिगते चेव दुविहो तु॥२२३०॥ अभिगते कत अकते या, अणभिगते थिरे तहेव अथिरे य। थिर कतकरणे अकते, अथिरे कनकरणमकए य ॥२२३१॥ एते सन्वेऽवेगं, आवत्ती पंचराइगाऽऽवण्णा । तं पणगं अविसिद्धं, चउत्थमादीहि विण्णेयं ॥२२३२॥

आतरिए कतकरणे, तं चिय पणगं तु होति दातव्वं । अकतकरणे चउत्थं, कयकरणे उवज्झे तं चेव ॥२२३३॥ अकयम्मी आयामं, भिक्लुम्मी अभिगतम्मि कतकरणे। आयामं दायव्वं, अकयकरणे उ भत्तेकं ॥२२३४॥ भिक्खुम्मी अणभिगते, थिरकयकरणे य एगभत्तं तु । अकयम्मी पुरिमहूं, अणभिगए अस्थिरे कतम्मि ॥२२३५॥ पुरिमड्रो चिय णियमा, अत्थिरअकयम्मि होति णिव्यिगति । अहवाऽणभिगय अथिरे, इच्छाए तं च अण्णं वा ॥२२३६॥ एमेव य दसरायं, सच्चे आवण्णमेगमावत्ति । कतकरणे आयरिए, दसरायं चेव दायव्वं ॥२२३७॥ अक्रयकरणम्मि पणगं, कतकरणे पणगमेवुदञ्ज्ञाए। अकतकरणे चज्त्यं, एवं तु अड्डुकंतीए ॥२२३८॥ ता णेयव्य कमेणं, जाव उ अंतम्मि होति पुरिमहूं। इय पण्णरमाऽऽरद्धं, ठायइ **ए**कासणगमंते ।।२२३९॥ वीसाऽऽरद्धं ठायनि, आयामे भिष्णमासऽभत्तद्व । मासाऽऽरद्धं पणगे. दुमास दसराए ठायइ तु ॥२२४०॥ तेमासे पण्णरसे, चतुमासे ठाति वीसरातम्मि । पणमासे पणुवीसे, छम्मासे मासिए ठाति ॥२२४१॥ छेदो दोमासीए, मूले तेमासियम्मि ठायति तु । अणवट्ट चतुमासे, पारंचिइए तु पणमासे ॥२२४२॥ एए भणिता लहुगा, सन्वे वि तवारिहा समासेणं। एमेव य गुरुगा वी, णेयन्त्रा अहुकंतीए ॥२२४३॥ एमेव य मीसा वी, अहुकंतीए होन्ति णेतव्वा । एमेव पंचपचिह, मासादी सातिरेगादी ॥२२४४॥

जा छम्मासा णेया, तत्थ वि खम्घाय तह अणुम्घाया । मीसा वि अ णेतब्वा, अहुोक्कंतीए सब्बत्य ॥२२४५॥ अहवा वी णिव्विगती, पुरिमेकासण तहेव आयामं। तत्तो चउत्थ पणगं, दस पण्णर त्रीस पणुत्रीसा ॥२२४६॥ मासो लहु गुरु चतु छच लहु गुरु च्छेद मृल अणवहो। पारंचिए य तत्तो, पणयादी हासण तहेव ॥२२४७॥ छहु गुरुग मीसगा वि य, तहेत्र एत्थं पि होन्ति णायन्ता । एवं एयं दाणं, बुद्धीए होति विण्णेयं ॥२२४८॥ एमेव य समणीणं, णवरं दुगवज्जितं तु कातव्वं । अणवट्टो पारंची, एय दुगं णित्थ समणीणं ॥२२४९॥ अहवा पुरिसा दुविहा, समासतो होन्तिमे उ णातव्या । एगविहारी य तहा, गणबद्धविहारिणो चेव ॥२२५०॥ गच्छाहि णिग्गया जै, पडिमापडिवण्णया य जिणकप्पी। जे यावि सयंबुद्धा, इत एगविहारिणो तिविहा ॥२२५१॥ ते णिचमप्पमत्ता, जति आवज्जे कहंचि कम्मुद्या। तक्खणमेव तु तं पहुवेन्ति णियमा य सक्खीवा ॥२२५२॥ संवयणधितिसमग्गा, सत्ताहिद्वियमहन्तजोगश्वरा । सुबहुं पि हु आवण्णा, वहन्ति णिरणुग्गई सब्वं ॥२२५३॥ आलोयणोवयुत्ता, ते तू आलोयणाए सुद्रवंति । तेसि जाव तु मूळं, करेन्ति सतमेव सुद्धांति ॥२२५४॥ अणिगृहियवल-विरिया, जहवादीकारया य ते धीरा। उत्तमसद्धसमण्णागया य सुडझंति ते णियमा ॥२२५५॥ गणपडिबद्धा दुविहा, जिणपडिरूवी य होति थेरा य। जिणपिंडरूवी दुविहा, विम्रुद्धपरिहारऽहार्रुदी ॥२२५६॥ ते णिचमप्पमत्ता, जति आवज्जे कहंचि कम्मुद्या । तक्त्वणमेव हु तं पट्टवेन्ति कप्पट्टियसगासे ॥२२५७॥

संघयणिधितसमग्गा, सत्ताहिहियमहंतजोगधरा।
सुबहुं पि हु आवण्णा, वहंति णिरणुगाहं धीरा।।२२५८॥
अट्ठविहा पट्टवणा, तेसि आलोयणाति मूलंता।
तं पट्टवेतु धीरा, सुज्झंति विसुज्झवारिता।।२२५९॥
थेरा वि विसुद्धतरा, तेसु वि जित केति किंचि आवज्जे।
तक्खणमेव हु तं पट्टवेंति णियमा गुरुसगासे ॥२२६०॥
एत्थ य पट्टवणं पित, आयरिओ विहिमिणं अजाणंतो।
लंछेइ य अप्पाणं. तं पि य सीमं ण सोहेति ॥२२६१॥
पुरिसे चि गतं दारं, इमं तु पिटसेवणं पवक्लामि।
मा पुण चतुहा सेवणा, आउट्टियमादिमाइंसु॥२२६२॥
॥ थ्रें ३॥७३॥

आउट्टियाय दप्पपमायकप्पेहिं वा णिसेविज्ञा । दव्तं खेत्तं कालं, भावं वाऽऽसेवओ पुस्मि ॥७४॥ आउट्टिया उवंचा, दप्पो एण होति वग्गणादीओ । कंटपाटि पमाओ, अहव कमायादिओ णेओ ॥२२६३॥ इमो—

कमाय विकहा वियहे. इंदिय णिह प्यमाय पंचिवहो । एम पमायो भणितो. कप्पं तु इमं पवक्खामि ॥२२६४॥ गीयन्थो कडजोगी, उवउत्तो जयणज्ञत्तो सेवेज्जा । गाहापच्छद्भस तु. इणमो उ समासतो वोच्छं ॥२२६५॥ द्वं आहारादी, खेत्तं अद्धाणमादि णातव्वं । कालो ओमादीओ, इट्टगिलाणादि भावो तु ॥२२६६॥ ॥ थूण्क ॥७४॥

जं जीयदाणमुत्तं, एयं पातं पमायसहियस्स । एत्तो चिय ठाणंतरमेगं वड्रेज्ज दणवयो ॥७५॥ जं जीतदाण भणियं, णिग्वीतियमादि अहमं अंते । तितयपिस्तवणाए, पमायसिहयस्स एयं तु ॥२२६७॥ दप्पपिस्तवणाए, पुरिमहुादी तु होति दायव्वं । अंते दसमं दिज्जा, आषट्टीए उ वोच्छामि ॥२२६८॥ ॥र्थुनृ॥७५॥

आउट्टियाए ठाणंतरं व सद्घाणमेव वा दिज्जा। कप्पेण पिडक्कमणं, तदुभयमहवा विणिहिहं ॥७६॥ आउट्टियावराहे, एकासणमादि अंते बारसमं। पाणितपायवराहे, सद्घाणं होति मूलं हु ॥२२६९॥ आउट्टिय ति गतम्॥

कप्पेण उ सेवाए, तह सुद्धो अहत्र मिच्छकारं तु । अहवा तदुभयप्रुत्तं, आलोय पिडकमाहि ति ॥ २२७०॥ कप्पपिडसेवणा गता ॥ थूर्फा ॥७६॥

आलोयणकालम्मि वि, संकेस विसोहि भावतो णातुं। हीणं वा अहियं वा, तम्मत्तं वा वि देज्जाहि॥७७॥ आलोयणकालम्म व, गृहित अहवा वि कुश्चती किश्चि। सो संकिलिट्टिचत्तो, तस्मऽहितं दिज्ज ऊणं वा ॥२२७१॥ जो पुण आलोएन्तो, काले संवेगमुवगतो जो उ। जिंदणगरहादीहिं, विम्रद्धित्ततो तु तस्सऽप्यं ॥ २२७२॥ जो पुण आलोएन्तो, ण वि गृहित ण वि य णिद्द जो तु। सो मिन्झमपरिणामो, तस्स उ देज्जाहि तम्मत्तं ॥२२७३॥ ॥ भूगि ॥७७॥

इति दवादिबहुगुणे, गुरुसेवाए य बहुतरं देज्जा। हीणतरे हीणतरं, हीणतरे जाव झोसो त्ति ॥७८॥ इति एस दव्न खेते, काले भावेसु बहुगुणेसू तु । गुरुसेवा तु पहाणा, एतेसुं बहुतरं दिज्जा ॥२२७४॥ हीणतरे हीणतरं, ति देज्ज दन्वादिमादिहीणेहिं । तह तह हीणं देज्जा, झोसेज्ज व सन्वहीणस्स ॥२२७५॥ ॥ थूँहां॥ ७८॥

झोसिज्जित सुबहुं पि हु, जीएणऽण्णं तवारिहं वहया। वेयावचकरस्स य, दिज्जित साणुग्गहतरं वा ॥७९॥

झोसण खवणा ग्रुंचण, एगट्टा तं तु ग्रुंचए कस्स ?।
अण्ण वर्चतु वहंते, जह पट्टिवए उ छम्मासे ॥२२७६॥
पंचिद्णोहिं गएहिं, पुणरिव जइ सो उ अण्णमावज्जे।
तो से तं तिहं छुन्भित, एवं झत्रणा तु तस्स भवे॥२२७०॥
वेयावच करेंतो, जित आवज्जित तु किंचि अण्णतरं।
ताविततं से दिज्जिति, जं णित्थरती तु सो बोहुं ॥२२७८॥
कालं ठावितु दिक्खे, णित्थिण्णे नं तु काहिती सो तु।
एय तवािरह भणिनं (दारं), अहुणा छेदारिहं वोच्छं ॥२२७९॥
॥ धुँॐ॥ ७९॥

तवगन्तिओ तवस्स य, असमत्थो तवमसद्दहन्तो य। तवसा त जो ण दम्मति, अतिपरिणाम प्यसंगी य।।८० वेदमानिश्वसम् सुबहुतस्गुणब्भंसी, छेदावत्तिसु पसज्जमाणो य। पासत्थादी जो वि य, जतीण पहितप्पिओ बहुसो।।८१ उक्कोसं तवभूमीं, समतीओ सावसेसचरणो य। छेदं पणगादीतं, पावति जा धरति परियाओ ।।८२।। दारगाहाओ तिण्णि॥ तवबलिओ देह तवं, अहं समत्थो ति गन्तिओ एस । तवअसमत्थ गिलाणो, बालादी अहव असमत्थो ॥२२८०॥ जो उ ण सदृहति तर्व, अहवा वी जो तवेण ण वि दम्मे । अतिपरिणामो जो तू. पुणो पुणो सेवति पसंगी ॥२२८१॥ उत्तरगुण बहुगा तू, पिंडविसोहादिगा उ णेगविहा। भंसेति विणासेती, पूर्णो पुर्णो जो तु ताई तु ॥२२८२॥ छेदावत्तीओ वा, पकरेति पसज्जनी य जो तेसं ! अहुणा पासत्थादी, आदीसद्देणिमाहंसु ॥ २२८३॥ पासत्थोसण्णो वा, क्रसील संसत्त अहव णीओ वा। वेयावचकराइण, जतीण पडितप्पिओ बहुसो ॥२२८४॥ उकोसा तवभूमी, आदिजिणिदस्य होति वरिसं तु । मिन्समगाण जिणाणं, अट्ट उ मासा भवे भूमी ॥२२८५॥ चरिमस्स जिणिदस्सा, उक्कोसा भूमि होनि छम्मासा । एयं तू उक्तोसं. समतीओ चरणसेसो य ॥ २२८६। एव जहु हिट्टाणं, तवगन्त्रियमादियाण सन्वेसि । छे**दं पणगादीयं, दे**ज्जा जा धरनि परियाओ ॥२२८७॥ छेदारिहं गयं ॥ ८२ ॥ ८२ ॥

मूलप्रायश्चित्तम्

आउट्टियाय पंचिंदियघाते मेहुणे य दण्पेणं। सेसेसुकोसाभिक्लसेत्रणादीसु तीसुं पि।।८३।। आउट्टि उवेचा तू. पंचिंदि वहेति मिहुण दण्पेणं। सेस वय मुसाऽदिन्नं, परिगाहो चेत्र णादन्तो ॥२२८८॥ एतेसुक्कोसाणि, पिंडसेत्रयऽभिक्लणं तु मिच्छा तु। एतेसि मन्त्रेसिं, मूलं तू होति दातन्त्रं ॥२२८९॥०३॥८३॥ तवगिन्वयादिएसु य, मूलुत्तरदोसन्तियरगएसुं। दंसणचरित्तनन्ते, चियत्तिक्चे य सेहे य।।८४॥ तवगिव्यमादीया, जावऽइपरिणाम अतिपसंगि ति ।
एत जहु हिट्टाणं, मूळं तू होति णातव्वं ॥२२९०॥
मूळगुण उत्तरगुणे, बहु विह बहुसो य द्से भंजति वा ।
वितकरमेयं होती, एरिसजुत्तस्स मूळं तु ॥२२९१॥
णिच्छयनयस्स चरणायिवघाये णाणदंसणवहो वि ।
ववहारस्स तु चरणे, हयम्मि भयणा तु सेमाणं ॥२२९२॥
चत्तं जेण दिस्सणं, चारितं वा वि मो तु णातव्वो ।
चत्तक्किचो वेसो, चियत्तकिचो मुणेतव्वो ॥२२९३॥

अहवा--

संजम सकलं किचं. जेणं चत्तं स चत्तकिचो तु । सेहो अणुबट्टविओ, मृलं एतेमि सन्वेसि ॥२२९४॥ ॥०क्ता।८४॥

अच्चंतोसण्णेसु य, परिलंगदुवे य मूलकम्मे य ।
भिक्खुम्मि य विहितत्वे, अणवहपारंचियं पत्ते॥८५॥
ओसण्णे पव्याविय, संविग्गेहिं व जप्पभिति ह ।
ओसण्णयाप विहरिओ, सो भणितऽचंतयोसण्णो ॥२२९६॥
गिहिलिंग अण्णजित्यप, परिलंगदुवे य कुणित दप्पेणं ।
गव्भादाणे साहण, दुविहमिहं मूलकम्मं तु ॥२२९६॥
भिक्खणमीला भिक्ख्, विहिततवं उत्रणयं तु णातव्वं ।
तत्रअणवह उत्रणय, पारंचितवं च णातव्वं ॥२२९॥
अतियारसेत्रणाप, पत्तं एयं तु होति दुविह तवं ।
एतेसिं सव्वेसिं, दातव्वं होति मूलं तु ॥२२९८॥० नृं॥८५॥
छेदेणापरियाएऽणवहपारंचियावसाणे य ।
मूलं मृलावित्सु, बहुसो यपसज्जणे भणियं ॥८६॥

छिज्जंते परियाए, जस्स तु छिण्णो हु णिरवसेसो तु । तवअणवट्टे वूढे, पारंचितवावसाणेसु ॥२२९९॥ म्लावित्तसु एसु, पुणो पुणो सज्जए तु जो सगणे। सन्वेसु वि एतेसुं, मूळं तू होति दातव्वं ॥२३००॥ मूलारिहं गतम्॥ एफा ॥८६॥

अणवहृत्यो दुविहो, आसायण तह य होति पिंडसेवी। आसायणभणवहं, समासयोऽहं इमं वोच्छं ॥२३०१॥ तित्थकरं संघ सुयं, आयरियं गणहरं मिहहृतियं। एते आसाएन्ते, पिच्छत्ते मग्गणा इणमो ॥२३०२॥ पदम बिति देस सच्वे, णवमं सेसेसु चउगुरू देसे। पिंडसेवणअणवहं, अहुणा उ इमं पवक्लामि ॥२३०३॥

अनवस्थ।प्य− प्रायश्वित्तम्

उक्कोसं बहुसो वा, पउड़िच्तो तु तेणियं कुणित ।
पहरित जो य सवक्खे, णिरवेक्खो घोरपरिणामो ॥
उक्कोसं तु विसिद्धं, पुणो पुणो एय होति बहुगं तु ।
कोहादी व अतीव तु. पउड़िच्तो सुणेतव्यो ॥२३०४॥
पित्सिवणअणवही. होती तिविहो इमो समासेणं ।
साहिम्मयऽण्णधिम्मयतेण्णे तह हत्थताले य ॥२३०५॥
साहिम्मतेण्ण दुविहं, सिच्तं तह य होति अच्चितं ।
अच्चित्तोवहि भत्ते, सिच्त सेहावहारो तु ॥२३०६॥
साहिम्मउविहहरणं, वावारण झावणा य पत्थवणा ।
तं पुण सेहमसेहो, हरेज अहिट्ट दिट्टं वा ॥२३०॥
सेहो ति अगीयत्थो, जो वा गीतो अणिट्टिसंपण्णो ।
उवही पुण वत्थादी, अपरिग्गह एतरो तिविहो ॥२३०८॥
अपरिग्गहितो तहियं, साहम्मी मोत्तु पवसितो झस्स ।
आहरमाणे सोही, होति हमा सेन्छणिप्पण्णा ॥२३०९॥

अण्णोवस्सयबाहिं, णिवेस वाडे य गामग्रज्जाणे । सीमाए जा णेयं, सञ्बत्य वि अन्तो बहिया वा ॥२३१०॥ एतेसुं तेण्णे तेमासस्रहुं आइकाउ जा छेदो। अड्डोक्कंती णेयं, अद्दिहेसा भवे सोही ॥२३११॥ मासगुरुगादि दिहे, मूलं सेहस्स एयणिहाई। अभिसेयाऽऽयरियाणं, एक्केक्कं ढाणगं वहूं ॥२३१२॥ एवं तुवस्सयाओ, साहम्मीणुवहिमवहरंतस्स । वावारिए इदाणि, बोच्छं सयमेव गेण्डन्ते ॥२३१३॥ वावारिया गुरूहिं, वश्वह आणेह तिविद्दश्चविहं ति। तं लदं तत्तो चिय, तुज्झं मज्झे य अत्तही ॥२३१४॥ लहुओ अत्तद्धंते, जित पुण आणेतु गुरुण न णिवेदे। तो होंती चतुल्रहुगा, अणवट्टपो व आदेसा ॥२३१५॥ वावारियतेण्णेयं, अण्णो पुण सावए णिमन्तेन्ते । पहिसिद्धाऽऽयरियेणं, दट्टूणं तत्थ गंतूणं ॥२३१६॥ बेती झामिय उवही, अहर्य च गुरूहिं पेसिओ देह। तो दिष्णो तेहुवही, किह पुण सह्रेहिं सो णातो ?॥२३१७॥ सो तं घेत्रण गतो, णवरं ते आगता गुरुसगासं। पुच्छंति यते सहूा, उवहि पहुत्तो व ण पहुत्तो ? ॥२३१८॥ केवडयं वा दट्टूं ?, तो विन्ति ण डज्झए हु उवहि चि। केण व णीतो उवही ?, इति सोचा पत्तिमप्पत्ति ॥२३१९॥ लहुगा अणुग्गहम्मी, गुरुगा अप्पत्तिए प्रुणेयन्त्रा । मुळं च तेणसहे, वोच्छेयपसज्जणा सेसे ॥२३२०॥ एवं ताव अडड्झंते, अह सर्च झामितो भवे उनहीं। पेसविओ य गुरूहिं, लद्धे तिहं अंतरा जो तु ॥२३२१॥

लहे अत्तहेती, चतुलहुगा अह गुरूण ण णिविदे । तो चतुगुरुगा तिह्यं, अणबदृष्पो व आदेसा ॥२३२२॥ सुत्रादेशात् ॥

एवं झामणहेतुं, अवहारी अह इयाणि पत्थवियं । आयरियादिण केणति, आयरियाणं तु अण्लेसि ॥२३२३॥ उक्कोसो सणिजोगो, पडिग्गहो अन्तरा तहि लद्धो । अत्तर्दृते लहुगा, गुरुगा अदत्तेऽणवद्दो वा ॥२३२४॥ एवं ता उवहिम्मी. अहुणा भत्तम्मि तेण्ण बोच्छामि। जित पविसे असंदिहो. ट्यणकुले तो भवे लहुगा ॥२३२५॥ अज अहं संदिही, पुहोऽपुहो व साहए एवं। पाहणगिलाणगद्वा, ते च पलोहंति तो बितियं ।२३२६॥ मायाणिष्फण्णं त्, प्वभणंतस्य होति मासगुरू। अहवा आगंतूर्णं. णाळोए तह वि मासगुरुं ॥२३२७। कह पूण हवेज णायं, माहृहिं नह य तेहिं महेहिं। जह खलु पितृहो अण्णो, उवणकुलाई अमंदिहाँ ? ॥२३२८॥ गुरुसंवाडम्मि गए, भणंति गुरुज्ञोग्ग णीयमेत्ताहे । णित्थ चऽणुगाहम्मी. लहुमा अप्पत्तिए गुरुमा ॥२३२०॥ वोच्छेद गुरुगिलाणे, गुरुगा लहुगा य खमगपाहुणए॥ गुरुगो य बालवुट्टे, सेहे य महोदरं लहुगो ॥२३३०॥ भत्तिम भणियमेतं. तेण्णं भणियं च मेयमचित्त । अहुणा सिचतम्मी, सेहं सेहीय बोच्छामि ॥२३३१॥ तं पुण णिज्जंनो वा, अभिहारेन्नो व आमियाडेजा । भिक्लादि पविद्वे वा, गाम वहि ठवेत् णिज्जेंगो ॥२३३२॥ तं पुण सण्णादिगतो. अद्धाणीओ व कोति पासेजा। वंदियपुट्टो कोनी, भणे अहं पत्रति उकामो ॥२३३३॥ ससहातो अमहानो ?. ति पुच्छनो भणित ताहे ससहायो । सो कत्य ? मज्झ कज्जे, छाय पिवासस्स वा अडति ॥२३३४॥ तो बेति अण्णपासं. इम भ्रंतऽणुकंपनाए सुद्धो तु । धम्मं च पुटुऽपृद्दो, कहेति मृद्धो अमहमात्रो ॥२३३५॥ सहयाए पुण दोमो, भत्ते देनम्म अहत कहयते । आसी आवणहेतं. मोहि इमेहिं त ठाणेहि ॥२३२६॥ भने पण्णवण णिगृहणा य वावार जंपणा चेव । पत्थवण सर्यहरणे. सेहे अव्वत्त वत्त्यं ॥ २३३७ ॥ गुरुओ चतुलह चतुगुरु, छल्लह छागुरुग छेद्मव्यते। वत्ते भिवलुणो मुलं, दगं तु अभिसेग आयरिए ।२३३८॥ एवं ना जो णिउनित, अहिहारेन्नो प्णोति जो जानि । मो वि य तहेव पुट्टो, भणाइ वचामऽमुगमूलं ॥२३३९॥ नह चेव भत्तपाणं, पण्णवणा चेव होति एन्थं पि। सेसा णिगुहणाती, सब्वे वि पया ण संति इहं ॥२३४०॥ एमेव य इत्थीए, णिज्जंनऽभिधारयंति एमेव। वत्तऽव्यत्ताए गर्मा, दोसा य इमे हर्गतम्स ॥२३४१॥ आणायऽणंतसंमारियत्त बोहीय दुझभत्तं च । साहम्मियनेण्णम्मी, पमत्तछलणार्शहकर्णं च ॥२३४२॥ बिनियपयं बोच्छेदं, पुच्वनए कालियाणुओने य । एनेहि कारणेहिं, कप्पति सेहाऽबहारो तु ॥२३४३॥ एवं त मो अवहितो, जाहे जातो मयं त पावयणी। कारणजाए य जया. होजाही अवहितो नेण ॥२३४४॥ सो तं चिय धरति गणे, कालगतो गुरुम्मि तं विहारेन्ते । जावेको जिप्फाणी, नाहे से अप्पणी इच्छा ॥२३४५॥ अह हरिए णिकारणे, नाहे पुरिमाण नेन सो जाति । अह अञ्जूज्जयमरणं, पहित्रण्णो गुरुतिहारं वा ॥२३४६॥ अण्णाम्म अविजनते, आयरियपदारुहे तमेव गणं। थारेनि जाव अण्णो, णिम्मानो तम्मि गच्छम्मि ॥२३४७॥

सिचततेण्णमेयं, साहम्मीणं त एवमक्खातं। आभवणं दोसा या. परधम्मियतेण्णे वोच्छामि ॥२३४८॥ परथम्मिया वि दुविहा, लिंगपविद्वा तहा गिहत्था य । तेसि तिविइं तेण्णं, आहारे उविह सचित्ते ॥२३४९॥ भिक्खमादीसंखिंह, तं लिंगं काउ भुंतर लुद्धो। आभोगम्मि उ लहुगा, गुरुगा उद्धंसणे हीति ॥२३५०॥ कुरणिमित्तं चेव उ, अजियंना एते एत्थ पव्यइया । अविदिण्णदाणगा खळु. पत्रयणहीला द्रस्पत्ति ॥२३५१॥ गिइवासे वि वरागा, धुवं खु एते अदिटुकल्लाणा । गलओ पवर प बलिओ, एतेसिं सन्धुणा चेव ॥२३५२॥ एवं ता आहारे. जबहीतेण्णं पुणी इहं होज्जा । जह कोदि भिन्छुगादी, उबस्सए मोत्त उबगरणं ॥२३५३॥ भिक्खादिगतो तं तू , जित गिण्हति चतुलह भवे नन्य । गिण्हण करुण ववहार पन्छकड तह य णिव्विसए ॥२३५४॥ गिण्हणे गुरुंगा छम्माम कटूणे छेटो होति बवहारे। पच्छाकडम्मि मुलं. णिव्यिमयोद्यायणे चरिमं ॥२३५५। जम्हा एने दोसा, तम्हा अविदिण्णगं ण घेत्तव्वं । उनहीतेण्णं एयं, एत्तो वोच्छामि सचिते ॥२३५६॥ खुड़े व खुड़ियं वा. तेणेनि अवत्त पुच्छितं गुरुगा । वत्तम्मि णत्थि पुच्छा, खेतं थामं च णातूणं २३५७॥ लिंगपविद्राणेवं, एमेव तिहा अदिण्ण गिहियाणं। गहणादीया दोसा, सविसेसतरा भवे तेसु ॥२३५८॥ आहारे पिट्टादी, विरक्षियं दृष्ट खुड्डिया गेण्हे । गेण्हंनी दिट्ठा वि य, ता द्धसलपरंपरा छूभणा ॥२३५९॥ तहियं होति चतुलहू, अगवदृष्पो व होति आदेमा । एमेव य जबहिम्मि वि, सुत्तद्वी वश्यमादीया ॥२३६०॥

णीएहिं तु अविदिण्णं, अप्पत्तवयं पुपं ण दिक्खेन्ति । अपरिग्गहमन्वत्तो, कप्पति तु जढो सदोसेहि ॥२३६१॥ अपरिग्गह णारी पुण, ण भवति तो सा ण कप्पति अदिष्णा। सा वि य ह काइ कप्पइ, जह प्रसा खुडुमाया वा ॥२३६२॥ वितियपदं पाऽऽहारे, अद्धाणोमाइएसु कडजेसु । उनही विवित्तमादिसु, आगाढे गहणमविदिण्णे ॥२३६३॥ सघलीस ताव पुरुवं, बला व गेण्हंति तस्य अदलेन्ते । बलवन्ते दृहुसुं पूणा, छण्णं पी ताहे गिण्हंति ॥२३६४॥ ताहे परलिगोण वि, जाति य पुन्वं अदत्ते छण्णिमा । गारत्थीसु वि एवं, आगाढे होति गहणं तु ॥२३६५॥ आहारे उत्रहिम्मि य, बितियपदे गहणमेतमक्खायं। एत्तो सचित्तगहणं, वोच्छामि अदिण्ण बितियपए ॥२३६६॥ णाऊण य वोच्छेयं, पुन्वगए कालिआणुओने य। उवयुज्जिऊण पुरुवं, होहिति जुगप्पहाण ति ॥२३६७॥ ताहे खुडूग खुड्डी, हरेज्ज गिहि-अण्णितिरथयाणं वा। साहरिम-अण्णधरिमय, एयं तेण्णं समक्खातं ॥२३६८॥ गाहापुट्यद्भस तु, इति एसा अभिहिता इहं तेण्णा। अहुणा पच्छद्धस्स तु. गाहासुत्तं इमाऽऽहंसु ॥२३६९॥ अह एतो वोच्छामो, इत्थायालं जहक्रमेणं तु । कि पुण इत्थायालं ?, भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२३७०॥ हत्थाताले हत्थालंबे, हत्थायाणे य होति बोद्धव्ये। एतेसि णाणतं, वोच्छामि जहाणुपुन्त्रीए ॥२३७१॥ हत्येणं जं तालण, हत्थायालं तगं सुणेतव्वं। तहियं हवति अ दण्डो, लोइय लोउत्तरो इणमो ॥२३७२॥ जिंगाण्णिम य गुरुओ, दंदी पहियम्मि होति भतणा तू । प्वं खु लोइयाणं, लोउत्तरियं अतो वोच्छं ॥२३७३॥

हस्तताल:

हत्थेण व पाएण व. अणवद्रप्पो त होति उमिगण्णे। पढियम्मि होति भयणा. उद्दर्गे होति पारंची ॥२३७४॥ बितियपय खुडू विणयं. गाहेन्ते अहव बोहिगादीसु । सावयभये व घोरे, देजाही इन्थतालं तु ।।२३७५॥ विणयमाहण खुडू, कण्णामोड-खुडा-चवेडादी। सावेक्खो हत्थतालं. दलाइ मम्माणि रक्खंनो ॥२३७६॥ परपरियावणकरणं, चोदेइ असायबंबहेड सि। तं कह तस्साणुल्ला, तन्मेहि कया ? इमं सुलसु ॥२३७७॥ कामं परपरितावो, असानहेतू जिणेहिं पण्णत्तो । आयपरहियकरो तू. इन्छिज्ञह द्म्सीले स खलु ॥२३७८॥ सिष्यं णेडणियहा, बाबाते सहीत लोइया गुरुणो । ते इहलोगफलाणं, महरविवागेम उवमा तु ॥२३७९॥ अहवा वि रोगिनस्सा, ओमह चाड्डीह दिज्जए पुठवं। पच्छा ताडेतं पी. देहहितहाए दिज्जित से 🗔२३८०॥ इय भवरोगत्तस्म वि. अणुकूलेण तु मारणा पुरुवं । पच्छा पडिकूलेण वि, परलोयहियह कायव्या ॥२३८१॥ इहपरलोगे य फलं, विणीतविणयो अणुत्तरं स्वर्भात । संविग्गाडगुणेहि, इमेहि जुत्तो महाभागी ॥२३८२॥ संविग्गो महविओ, अमुदी अणुयत्तओ विसेम्ण्य । उज्जुत्तमपरितंतो, इन्छियमन्थं लभइ माह ॥२३८३॥ बोहिभयमावयादिसु, गणस्य गणिणो व अचए पत्ते। इच्छंति इत्थयालं, कालाइवरं व सउनं वा ॥२३८४॥ एरिसए आगार, बोहियमादीस जीयमंदहै। जं जस्म तु सामत्थं, सो तु ण इावेति एन्थं तु ॥२३८५॥ कुणमाणो वि हु कडणं, कयकरणो णेव दोसमब्भेति। अप्पेण बहुं इच्छिति, विसुद्धमालंबणो समणा ॥२३८६॥

आयरियस्स विणासे, गच्छे अहवा वि कुल गणे संघे। पंचिदियवोरमणं, पि कात णित्थारणं कृज्जा ॥२३८७॥ एवं तु करेन्तेणं, अव्वोच्छित्ती कया उ तित्थिमा। जित वि सरीरावायो, तह वि य आग्रहओ सो उ ॥२३८८॥ जो पुण सइ सामन्थे, विज्ञानिमनी व अहव मारीरे। एरिसए आगाहै, हावेन्तो विराहयो भणितो ॥२३८९॥ एयं हत्थायालं, हत्थालंबं इमं मुणेतब्बं ! दुक्खेण अभिद्याणं, ज सत्ताणं परिताणं ॥२३९०॥ असिवे पुरोवरोहे. एमादीवइससेम् अभिभृता ॥ संजायपच्या खलु, अण्णेस य एवमादीस ॥ २३९१ ॥ मरणभएणऽभिभूए, ते णातुं तेहिं वा वि भणिया तु। पहिमं काउं मज्झे. चिद्रति मंते परिजवेन्तो ॥२३९२॥ एनं हत्थालंबं, हत्थायाणं अयो परं बोच्छं। जो अन्धं उपाए, णिमित्तमाडी इमं णातं ॥२३९३॥ उन्जेकी उस्साणं, दो बीणया पुच्छि इण आयरिश्रं। ववहारं ववहरंती, तं ताहे तैमि सा साहे ।।२३९४॥ तस्म य भागणीपुत्तो, भोगहिलासी तु धुंचए लिंगं। नो अणुकंपा भणती. कि काहिसि तं विणडन्थेणं ?॥२३९५॥ तो बच्च ते वर्णाए. भणाहि अत्थं पयच्छहा मज्झे । तेणाऽऽगंतं भणिता. तो तेसि बेति अह इको ॥२३९६॥ कत्तो अत्थो अम्हं !, कि सउणी रूबए इहं हमती १। बीआ चंगेरि भरेतु णिग्गतो णतुलयाणं तु ॥२३९०॥ गिण्हस्र जावइएहिं, कडनं तो गहित तेण जावऽहो । बितियम्मि हायणम्मो, किं गिण्हामो ? ति ते बेन्ति ॥२३९८॥ भणितो सर्जाणहयन्तो, तण कहु वस्थ रूत कप्पासे । णेहगुस्रधण्णमादी, अंतो णगरस्स ठावेहि ॥२३९९॥

हस्तालम्बः

हस्तादानम्

बितिओ य तर्हि भणिओ, सन्वादाणेण गिण्ह तणकहं। णगरबहिद्वा ठावय, गहिए णवरिं च वासासुं ॥२४००॥ **ढइएसुं गेहेसुं,** पिलत्ते दहूं ततो उ तं णगरं। तणकट्टाणं पुजो, अइवमहँग्वो तु सो जातो ॥२४०१॥ दड्टमियरस्स सन्वं, ताहे सो गंतु भणति आयरियं। उच्छाइओ अहोऽहं. किह व ण णातं समं तुब्मे ? ॥२४०२॥ किं सर्जाणया णिमित्तं, हयंति अम्हं ? ति भणति णैमित्ती । होति कयाइ तयऽण्णह, रुट्ठं णातुं तयो खामे॥ २४०३॥ एमादिणिमित्तेहिं, उप्पाएन्तम्मि अत्थयाण भवे । सो एरिसयो पुरिसो, अन्धुट्टेजा जड़ कयाइ ॥२४०४॥ तस्स तु ण उबद्ववणा, तम्मिं खेत्तम्मि जाव संचिक्खे । एस चिय अणवही, जऽणुबद्धत्रणा तहि खेते ॥२४०५॥ जैत्ण अण्णखेत्तं, तस्स उबद्वावणा त कायच्या । तहि णोवहा खेत्ते, किं कारण ? भण्णती सुणसु ॥२४०६॥ पुरुवदभासा भेसेजा, किचि गोरव सिणेह भययो वा । ण सहित परिस्महं पि य. णाणे कंडु व्य कच्छुल्लो ॥२४०७॥ तेण त नहितं थाणे, ण ह दैन्ती नस्म भावलिंगं तु । देज्ञा व कारणम्मी, असिवोमादीसु तिष्पहिति ॥२४०८॥ ण य ग्रचित अहहातो. तहितं पुट्टो त भणति वीसरियं। अहवा वि उत्तिमहे, देजाहो लिंग नत्थेव ॥२४०९॥ एवं ता ओसण्णे, गिहत्थे पुण दव्वभाविज्ञाई। दोण्णि वि ण वि दिज्जंती, दिज्जेज व उत्तिमदृश्मि ॥२४१०॥ एवं अत्थायाणे, जे पुण सेसा हवंति अणवहा। साइम्पि-अण्णधिमयतेणादी ते उ भयणिजा ॥२४११॥ का पुण भयणा एत्थं ?, आहारे उविहतेण अधिते । सहनो सहना गुरुगा, अणवहुरपो व आदेसा ॥२४१२॥

ì

कह पुण आएसेणं. अणवट्टी होइमं णिसामेह ।
अणुत्रसंतो कीरति. अहवा उस्मण्णदोसो तु ॥२४१३॥
अहवा भिक्खू पावति, एतेमु पदेसु तिविह पिछ्छतं ।
णवमं पुण बोद्ध्वंतं, अभिसेगे सृरिणो दममं ॥२४१४॥
तुष्ठम्म वि अवराहे, तुष्ठमतुष्ठं च दिज्जए दोण्हं ।
पारंचिए वि णवमं. अभिसेगे गुरुस्म पारंची ॥२४१५॥
अहवा अभिक्खसेवी. अणुवरमं पावती गणी णवमं ।
पावति मूलमेव तु, अभिक्खपिहसेविणो सेमा ॥२४१६॥
अत्थादाणे तिततो, अणवट्टो खेत्तओ ममक्खातो ।
गच्छे चेव वमंता. णिज्ज्हिज्जंति अवसेमा ॥२४१७।
अहवा—

अभिसेओ मठवेसु य, बहुमा पारंचियावराहेसु ।
अणवहणावित्तसु, पमज्जमाणो अणेगासु।।८८।।
अभिसेगो उवज्झाओ, पुणो पुणो होति बहुमसद्दो ऊ ।
पारंचियावराहे, आवज्जित मन्वसद्दो तु ॥२४१८॥
अणवहणावत्ती उ सेवए णेगमो ति बहुमो तु ।
णंतरगाधाए सो, अणवहणो ति कीरइ तु ॥२४१२॥
जुनं तावऽणवहे, दिज्जित अणवहमेव अभिसेगे ।
पारंचियावराहे, पत्ते किह पावती णवमं ? ॥२४२०॥
भण्णित जह णवदममे. आवण्णस्सावि भिक्खुणो मूलं ।
दिज्जित तहाऽभिसेगे, परं परं होति णवमं तु ॥२४२१॥

कीरति अणवद्वप्पो,सो लिंगक्खेत्तकालयो तवयो। लिंगेण द्व्य भावे, भणियो पव्वावणाऽणरिहो॥८९॥

1100 ही 1100H

अप्पडिविरयोसण्णो, ण भाविलंग।रिहोऽणवट्टप्पो । जो जेण जत्थ द्मति, पहिसिद्धा तत्थ मो खेते॥९०॥ जत्तियमेत्तं कालं, तवसा उ जहण्णएण छम्मासा। मंवच्छरमुक्कोसं, आसाती जो जिणादीणं ॥९१॥ वासं बारस वासा, पडिसेवी कारणे तु मब्वो वि । थोवं थोवनरं वा, बहेज्ज मुच्चेज्ज वा मब्वं ॥९२॥ वंदित ण य वंदिज्जिति, परिहारतवं सुद्च्चरं चरति । संवासो से कप्पति. णालवणादीणि सेमाणि॥९३॥ परपक्ख सपक्ले वा, ण वि विख्यो नेजगादिदोसेहिं। अप्पडिविस्यो अहवा, हत्थायालादिमु प्रमु :२४२२।। ओमन्नमाइया नू. अणुवर्या दो सर्लिंगमहिया ज। अणबहुष्पा ते ऊ. कायब्बा भावन्तिगेणं ॥२४२३। खेत्ततो गतं॥ कालतो अणवद्रत्यो, अणउवग्नदामो जित्तयं कालं। सो अणबहो कीरति, जिनयमेत्तं तयं कालं ॥२४२४। काले ति॥ तवअणवहो द्विहो. आमायणयाय हो ति पडिसेवी। एकेको विय द्विहो. जहणाओ चैव उक्कोमो ॥२४२५॥ तवअणवहा ऽऽसायण, जहण्ण छम्माम विस्ममुक्ताम । के पुण आसाएंनी ?. जिलमाटी जा महिट्टीयं ॥२४२६॥ पडिसेवी अणवड़ो, जहण्य विस्ति तु बारसुकोसा । कि पुण पडिसेवति तृ ?. तेण्णाटीया पदा सब्वे ॥२४२७॥ कारणमादिपदा तु. उविन वोच्छिमु अहुण पिहारी। वंडणमादी य पदा. समासयो हं इमं बोच्छ ।२४२८॥ परिहरणं परिहारो, आलावणमादि दमहि तु पदेहिं। सेहादिए वि वंदिन, मो पुण ण वि वंदिणिज्जो तु ॥२४२९॥

केरिसगुणसंजुत्तो, अणबद्दो कीरती ? इमं सुणसु । संघतण-विरिय-आगम-सत्तत्थ-धिनीय उन्नवेयो ॥२४३०॥ उत्ररिमतिगसंघयणो, सञ्जालो केवलं अजियणिहो । देज्जा से सञ्वतवं. अणवंद्र वा वि पारंची ॥२४३१॥ णवदसपुव्यकतत्थो, सट्टो इव उग्ममिथितिकयकरणो । परिणामसमगो ति य, अणबहुष्पं से दायव्यं ॥२४३२॥ एवं तु गुणसमग्गो, चरित्तसेहिं तु णहु भिण्णं वा । पोराणियगुणसेढिं, णिरवयर्व सो तु पूरेति ॥२४३३॥ मो बंदति सेहादि वि. पग्गहितत्वो जहा जिणो चेव। विहरति बारस वरिसे, अणवद्रत्यो गणे चेव ॥२४३४॥ तस्म य परिहारतवं, पडिवर्ज्ञंतस्स कीरउस्सरगो । संवाहठनणभीष, आमस असमत्थकरणं च ॥२४३५॥ किं कारणगुस्मागी ?, भण्णित सेहाण जाणणहार । भयजणणद्वाय तहा, णिरुवस्मागृहया चेत्र ॥२४३६॥उस्सगो चि कष्पद्वितो अहं ते. अणुपरिहारी य एम गीओ ते। पुच्चं कतपरिहारो, तस्मडमितऽण्णो वि दहदेही ॥२४३७॥ संघाडो ति गतम ।

एम तर्व पिडवज्ञित, ण किंचि आलवित मा ण आलवहा । अत्तद्विन्तगस्सा, वाघातो मे ण कायव्वो ॥२४३८॥ तात्रे य पिरहरिज्ञित, गच्छेणं सो य पिरहरित गच्छं । अपिरहरंताऽऽरोवण, दसिंहं पएहिं इमेहिं तु ॥२४३९॥ आलावण पिडवुच्छण, पिरयदुद्वाण वंदणग मत्ते । पिडलेहण संघाडग, भनदाण संश्वंजणे चेव ॥२४४०॥ जा संघाडो ताव तु, लहुओ मासो तु होति गच्छस्स । लहुगा य भन्तदाणे, संश्वंजणे होन्तऽणुग्धाता ॥२४४१॥ संघाडओ तु जाव ज, गुरुओ मासो दसण्ह तु पयाणं।

भत्तस्स दाण संग्रुंजणे य परिद्वारिए गुरुगा ॥२४४२॥
कितिकम्मं च पहिच्छति, परिण्ण पहिणुच्छ देति य गुरू से।
सो वि य गुरुग्रुवचिद्वति, उदन्तमिव पुच्छितो कहते ॥२४४३॥
टवणे सि गतं॥

एवं तू उवणाए, उवियाए भयं तु कस्सतुववज्जे । किह नु मए एक्केणं. णित्यरियव्वेत्तिओ कालो ? ॥२४४४॥ ताहे आसासेती, आयरिओ मा ह एव तं वीमे । अणुपरिहारी एस य, अहवा कप्पट्टिनी एसा ॥२४४५ ॥ जं किंचि पाडिपुच्छं, तं सच्च मए समं करेज्जाहि। हिडिहिसी भिक्खं पि य. अणुपिरहारीण तं मद्धि । २४४६॥ प्र भणिओ तु संतो, आसासती तं च ताहे णित्थरति। किह पुण होआसासी?. भण्णिन इणमो णिमामेहि ॥२४४७॥ जह कोति अगडपडिओ, जिन भण्णिन एम हा ! मनोवरनो । तो ग्रंचित अंगाई, पच्छा मरती य सो ताहे ॥२४४८॥ अह पुण भण्णति एवं, मा बीहस एस आणिया रज्जु। उत्तारिज्ञिस एवं, आसासो से इवित ताहे ॥२४४९॥ एवं णदिवुब्भेते, राया रुद्रो व कासती होज्जा। सो वि जति विणद्रो सि, त्ति भण्णए तो विराएउजा ॥२४५०॥ अह भण्णति मा बीभे, राया असमिक्खिए अक्जि वा। ण वि किंचि करेड़ ती, मोइज्जेहिसि व आससति ॥२४५१॥ एवासासी तस्स वि. होती आसासियस्स संतस्स । इय पडिवण्णो सो छ, वहड हु उग्गं तत्रोकम्मं ॥२४५२॥ आसासो ति गतम ॥

तो उग्गेण तवेणं, सो जाहे खामदुब्बलसरीरो । ण तरेज्जुहाणादी, काउं ताहे इमं भणति ॥२४५३॥ उट्टेज णिसीएज्जं, भिक्खं हिंदिज्ज भंदगं पेहे । क्रवितपितबंधवो विय, द्वसिणी संघाडो तो कारं ॥२४५४॥ बितियपय अण्णगच्छा, पेसेज्जा वंदणं अयाणंतो। गेलण्णे उभयस्य व. कुन्ना करणिन्न जयणाए ॥२४५५॥ गच्छिल्ल्या गुरुस्स उ, गुरु अणुपरिहारिए समप्पेति । अणुपरिहारी परिहारियस्स देन्तेस जयणा तु ॥२४५६॥ सो वा करंजन तेसिं, आगाढ परंपरेण एमेव। गुरुणो एगागिस्स व, अण्णऽसतीए करेडजाहि ॥२४५७॥ ताहे जित्थिण्यतयो, कलादिकज्जे व तिप्यतो जो त। उवडावण तस्स भवे, केयी गिहिवेस कातूणं ॥२४५८॥ गिहिवेसमकाऊणं, जबहुवेन्ते उ होति चउगुरुगा। आणादिणो य दोसा, पावइ अहवा इमे दोसे ॥२४५९॥ वरणेवत्थं एगे, ण्हाणविवज्जमवरं जुवलमेत्तं । परिमामज्झे धम्मं, सुणेज्ज कहणा पुणो दिवला ॥२४६०॥ किं तस्स त गिहिवेसं ?, किं वरणेवत्थ ? किं व जयलं त ?। किं वा परिसामज्झे, धम्मो से कहिज्जए तस्स ? ॥२४६१॥ ओभामिओ ण कुन्वति, पुणो वि सो तारिसं अतीयारं। होति भयं सेहाण य. गिहिभूए धम्मया चेत्र ॥२४६२॥ अणबट्टप्पे त्ति गतम् ॥ 👸 ३ ॥९३॥

तित्थगर पवयण सुतं, आयरियं गणहरं महिड्डीयं । आमाएन्तो बहुसो, आभिणिवेसेण पारंची ॥९४॥

पाराश्चिक-त्रायश्चित्तम्

किह पुण आसाएतो ?, अवण्णवायाइ वयइ जं तेसि । केरिसओ दु अवण्णो ?, भण्णइ इणमो णिसामेहि ॥२४६३॥ पाहुहियं उवजीवति, जाणंतो किं व धंनए भोगं ?। अज्ञतं च इत्थितित्थं, अतिकक्खड देसिया चरिया ॥२४६४॥

भाशातका-पाराचिकः अण्णं व एवमादी, अवि पिडमासु वि तिलोगमिहयाणं । जित भणित कीस कीरति. मल्लालंकारमादीयं ? ॥२४६५॥ जो वि पिडल्विविणयो, तं सन्त्रं अवितदं अकुन्वंतो । वंदणशुद्दमादीयं, तित्थगरासायणा एसा ॥ २४६६ ॥ तित्थगरे जि गतम ॥

अक्षोसतज्ज्ञणादिसु, संघमिहविखवइ संघपिडणीए। अण्णे वि अत्थि संघा, सियालणंतिकृहंकादी ॥ २४६७॥ पवयणे ति गतम्॥

काया वया य ते चिय. ते चेत्र पमाय अप्पमाया य । मोचलाहिगारियाणं,जोतिसनिञ्जाहि किं व पुणो ? ॥२४६८॥ स्रते त्ति गतं ।

इहिरससातगरुया, परोबदेसुङजया जहा मंखा । अत्तद्वपोसणस्या. आयरिया जह दिया चेव ॥२४६९॥ अब्धुङजयं विहारं, देसेन्ति परेसि सत्तम्रदामीणा । बवजीवंति य इहिं. णीसंगा मो त्ति य भणंति ॥ २४७०॥ आयरिए त्ति गृतम् ।

गणहर एव महिड्डी, महातवस्मी व वादिमादी वा ।
तित्थगरपढमसीसा, आदिग्गइणेण गहिना वा ॥२४७१॥
सा दुइ देसे सब्वे, देसम्मी एगदेसमादीया ।
जं वयति सब्व देसो, मन्वेसिं वा वि सन्वेसो ॥२४७२॥
तित्थकरं संघं वा, देसेणं वा वि अहव सन्वेणं ।
आसाएन्ते चरिमं, सेसेमुं चतुगुरू देसे ॥२४७३॥
सन्वे वाऽऽमाएन्तो, पावित पारंचितं तु सो ढाणं ।
एत्थं पुण सचरित्ती, देसे सन्वे य अचरित्तो ॥२४७४॥
तित्थगरपढमसीसं, एकं वी साद्यंतो पारंची ।
अत्यस्सेव जिणिदो, पभवो सुत्तस्स सो जेणं ॥२४७५॥

आसायणपारंची, एमेमो विण्णितो समासेणं । दारं । पडिसेवणपारंची, एत्तो वोच्छं समासेणं ॥२४७६॥

11 8 1 1 98 11

जो य सिलंगे दुहो, कमायविसएहिं रायवहओ य।
रायग्गमहिसिएडिसेवओ य बहुमो पगासो य।।९५॥
पिडसेवणपारंची, निविद्देसो विष्णिओ हु सुत्तिमि ।
दुहादीहिं पदेहिं, समासओ है पवनसामि ॥२४७७॥
दुहो य पमत्तो या, अण्णोण्णासेवणापमत्तो ।।
एतेसि विभागं तू, वोच्छामि जहक्रमेणेव ॥२४७८॥

दुनिहो य होति दुहो, कसायदुहो य निसयदुहो य। दुनिहो कमायदुहो, सपक्खपरपक्खनतुभगो ॥२४७९॥

सामत्रणाले ग्रुहणंतए य उत्त्राच्छि सिहरिणी चेत्र । एते सपत्रखदुद्दा, एतेसि परूत्रणा इणमो ॥२४८०॥ सासवणाले लर्डु, गुरु छंदिय खड्य सन्त्रितर कोहो । खामण अणुत्रसमन्ते, गणी ठवेत्तऽण्णाहि परिण्णा ॥२४८१॥

पुच्छंतमणक्याए. सोचऽण्णयो गंतु कन्य से मरीरं ? । गुरु पुच्यकद्दित दाइय, पडियरणं दन्तमंजणया ॥२४८२॥

मुह्णंतयमालोयण, आणियमुक्कोस गहित गुरुणा य। कुत्रिएण णिसी गंतुं, गलए लइओ य पामुक्तो ॥२४८३॥

सम्मृढंणियरेण वि, गलए लड्ओ उतो मता दो वि। अण्णो पुण सिन्वंतो, अत्यमिर गुरुहिं अह भणितो ॥२४८४॥ अन्यमियम्मि विसिन्वसि, उल्लुगसरिच्छच्छि तो वदे हसिती।

तुइ उक्तवणामि अच्छी, खामिङजंती विण वि पसिए॥२४८५॥ तो ठविय गणि गच्छे. भत्तपरिण्णं करेति अण्णगणे।

ता डावय गाण गच्छ. भत्तपारण्य करात अण्णगण । जह पढमो णवरि इहं, उल्लुअच्छी उ ति ढोंकेति ॥२४८६॥ प्रतिसंखना-पार ज्ञिक:

कषायदुष्टः

अवरो वि सिहिरिणीए, छंदिय सन्वाइयं तो उग्गिरणा।
तत्थेव तू परिण्णा, ण गच्छती णवर अण्णत्थ ॥२४८७॥
जम्हा एते दोसा, तम्हा ण वि गेण्हियन्वयं गुरुणा।
एगस्सेव तु सन्वं, अण्णायायारसीलस्स ॥२४८८॥
गहणम्मि विही इणमो, जित गहिया मत्तगा तु सन्वेहिं।
तेसि णिमंतेन्ताणं, अलाहि पज्जन्तमो बेंति ॥२४८९॥
णिब्बन्धे थोवथोवं, सन्वेसि गेण्हए ण एगस्स।
सन्वेसि पि ण गेण्हति, बितियाएसेण गहियं पि ॥२४९०॥
गुरुभत्तमं जो य मणाणुक्लो, सो गिण्हतो णिस्समणिस्सयो वा।
तस्सेव सो गेण्हति णेतरेसिं, अलब्भमाणम्मि व थोव थोवं॥
।। २४९१॥

सित लाभिम व गेण्हति. इतेरसिं जाणितूण णिब्वंधं।
सुंचित य सावसेसं, जाणित ज्वयारभणियं च ॥२४९२॥
गुरुसंसट्ट्विरियं, बालादसतीए मण्डलिं जाति।
जो अण्णायरमत्ता, गिलाणभुत्तुव्विरिते वि।।२४९३॥
सेसाणं संसटं, न छुव्भई मंडलीपिडिग्गहए।
पत्ते गहितं छुव्भइ, जब्भायण लंभ मोत्तुणं॥२४९४॥
पाहुणगद्वा व तयं, घरेत्तु अविवाहढं विगिचंति।
इति गहणभुंजणिवही, अविहीगहणेण दोसेते।।२४९५॥
एते सपक्लदुद्वा, परपक्ले उदायिमारगादीया।
परपक्लसपक्लिम य, पालक्कादी सुणेतव्या॥२४९६॥
पालको तु पुरोहितो. न्वंदगपसुद्वाण जेण पंच सया।
पुव्वि विराहियेणं, जंते पीलाविता जितणो ॥२४९७॥
मुणिसुव्वयतित्थम्मी, बाएण परातिओ स पुव्वि तु ।
खंदगरण्णो ताहे, पावो स पओसमावण्णो ॥२४९८॥

परपक्तो परपक्ते. रायादी अभमरा जहा केति । वहपरिणया व वहगा, भणिता चत्तारि दृहेते ॥२४९९॥ एतेसि चत्रण्हं पी, पन्छित्तमहाविहिं पनक्लामि । जे सासवणालादी, लिंगविवेगो भवे तेसि ॥२५००॥ जो वि सपक्लो रायादियाण वहपरिणयो व वहगो वा। सो लिंगतो पारंची, जो विय परिवर्ष तं तु ॥२५०१॥ सण्णी व असण्णी वा, जो परपक्खे सपक्खे दृहो तु। तस्य णिसिद्धं लिंगं. अइसेयी वा वि से देजा ॥२५०२॥ परपक्तो परपक्ते, रायामाडीपदुट्टो जो वि भवे । तस्स मदेसे ण कप्पति, कप्पइ अण्णिम उवसंते ॥२५०३। एमो कसायदृहो (दारं), विमयपदृहं इटाणि वोच्छामि । तस्स वि सपक्खपरपक्कयो य चतुभंगी तह चेव ॥२५०४॥ संजित कप्पटिए पढमो, सेज्ञानिर अण्णतिन्थिणी बीओ। परपक्ते संजनीए, उभयपरी होति उ चतुन्थो ॥२५०५॥ लिंगेण लिंगिणीए, संपत्ति जति णिगच्छती पावो । णिरयाउनं णिवंधड. आसायण ओ अबोही य ॥२५०६॥ लिंगेण लिंगिणीए. संपत्ति जो णिगच्छती पात्रो । मब्जिणाणऽज्ञानो, सघो आमाहिता नेणं । २५०७॥ पावाणं पावयरो, दृश्ण ण बद्दए हु साहूणं। जो जिणपुंगवमुद्दं, णिमिजण तमेव धरिसेति ॥२५०८॥ संमारमणवयमां. जानिजरामरणवेयणापउरं) पावमलपहलछन्ना. भगंति मुद्दाधरिसणेणं ॥२५०९॥ एमो पढमगभंगो, पारंचियमेन्थ होति पच्छितं। वितियगभंगिम तहा. अणुवरयम्मी भवे चरिमं ॥२५१०॥ जन्युप्पज्जिति दोसो, कीरति पारंचिओ स तम्हा उ। सो पुण सेवि असेवी. गीयमगीयो व एमेव ॥२५११॥

विषयदुष्टः

वसिंह णिवेसण वाहग. साही तह गाम देस रज्जू य । कुल गण संघे णिज्जूहणाए पारंचिओ होति ॥२५१२॥ जवसंतो वि समाणो, वारिज्जिति तेसु तेसु ठाणेसु । हंदि हु पुणो वि दोसं, तहाणाऽऽसेवणा कुणित ॥२५१३॥ जेसु विहरंति ताओ, वारिज्जिति णवर तेसु ठाणेसु । पढमगभंगे ताइं. सेसेसु वि ताइं ठाणाई ॥२५१४॥ इत्थं पुण अधिगारो, पढमगभंगेण उभयदुद्वण । जवारियसरिसाई, सेसाई विकोवणहाए ॥२५१५॥

पुन्त्रद्धं गतम् ।

इति एस अभिहिओ तू, उभयपदुट्टो य रायवहगो य ।
रायगगहिसिपिडिसेवओ छ अहुणा इमो होति ।'२५१६॥
रायस्म महादेवी. अहवा जा जस्म होति इटा तु ।
सा तस्स होति अग्गा, अग्ग पटाण ति एगटा ॥२५१७॥
तं पिडिसेवित जो तू, पुणो पुणो होति वहुमसहो उ ।
लोगपगासो अहवा, सो पावित चिरमठाणं तु ॥२५१८॥
चस्सहा अण्णाण वि, जा इट्टा सा हु तेसि होअग्गा ।
जुवरायाटीआणं, तेसि पि जहेत्र राडम्स ॥२५१९।
इयरमिहलासु चिरमं, ण विज्ञती कीस १ एव चोएति ।
भण्णइ बहुआऽवाया, इतरामुं अप्पणो चेव ॥२५२०॥
रायस्स अग्गमिहसीए अप्पणो कुल गणे व मंगे वा ॥
पत्थाराई दोसा, पागतमिहलामु तम्सेव ॥२५२१॥
वतलोवो सरीरे वा, दोसा ण हु कुलगणादिपत्थारो ।
एतेण कारणेणं, इतरासु ण होति चिरमपदं ॥२५२२॥

प्रमत्तपारा-चिकः दुहमी पारंची. भणिती अहुणा पमत्त वोच्छामि। सो कछस विकद विकडे, इंदिय णिदा य पंचविहे । २५२३॥ कोहाति चउह कलुसा, विकहा पुण इत्थिमादिया चउहा।
पुन्वन्भासा वियडं, इंदिय सोयादिए पणगं ॥२५२४॥
पोग्गल मोदग फरुसग, दंते वहसालभंजणे चेव ॥
थीणद्वीआहरणा, वोच्छामि विभागमेतेसि ॥२५२५॥

॥ 🖯 नृ॥९५॥

थीणद्धिमहादोसा, अण्णोण्णासेवणापसत्तो य। चरिमहाणावत्तिसु, बहुसो य पसज्जए जो उ ॥९६॥ जह उदअम्मि चए वा, थीणम्मि णोवलन्भए किंचि । इदं चित्तं भण्णति, तं थीणं तेण थीणद्धी ॥२५२६॥ पिसितासि पुन्वमहियं, विविचियं दिस्स तत्थ णिसि गंतु। अण्णं हंतुं खायति, उबस्सतं सेसयं णेति ॥२५२७॥ मोदगभत्तमलज्जं, भंतु कवाडे घरस्स णिसि खाइ। भाणं च भरंतृणं, आगओ आवासए वियडे ॥२५२८॥ अवरो वि फरुमग्रंडो, मत्तियपिंडे व छिंदिउं सीसे। एगन्ते पवित्रन्धति (य त्रिविंचति प्र०), पासुत्ताणं वियहणा य।। अवरो विवाडिओ मत्तहत्थिणा पुरक्तवाड भंतूणं। तस्युक्खिणनु दन्ते. वसही वाहिं वियडणा य ।।२५३०।। उद्भामग बहसालेण चट्टिओ कोइ पुष्व वणहत्थी। वडसालभंजणाऽऽणणः, उस्सम्माऽऽलोयण पभाए ॥२५३१॥ तस्सोदयकालम्मि, हवती जं केमवस्स अद्भवलं। ण वि देति अणतिसेसी, लिंगं अवि केवली होज्जा ॥२५३२॥ णानिम्म पण्णविज्ञति, ग्रुय लिंगं णत्थि तुज्झ चारित्तं। देसवय दंसणं वा. गिण्हस्र इच्छन्ते रमणिज्जं ॥२५३३॥ अह णेच्छति तो संघो. लिंगं हरई ण हरति सि एगो । मा गच्छेज पदोसं, छड्डेत्तऽसत्तीए पासुतं ॥२५३४॥

स्त्यानिः द्वंनि-द्वाप्रमत्तपारा-ञ्चिकः सन्यो ऽन्य-पाराश्चिकः णिइपमत्तो एसो, पारंची लिंगतो समक्खातो (दारं)।
कुणमाण अण्णमण्णं, पारंचीयं अतो वोच्छं ॥२५३५॥
करणं तु अण्णमण्णं, समणाण ण कप्पती स्विहियाणं।
किह करण अण्णमण्णे ?, भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२५३६॥
आसयपोसयसेवी. केई पुरिसा दुवेदगा होन्ति।
तेसिं लिंगविवेगो, कातच्वो होति णियमेणं ॥२५३७॥
अण्णोण्णसेवणे ति गतम्॥

चिरमं अंतं भण्णति, तं पुण पारंचियं ति णातव्यं । पारंचियावराहे, पुणो पुणो सज्जए जो तु ॥२५३८॥ थीणद्धिमादियाणं, सोहिं वोच्छं पुणो वि सव्वेसिं । र्छिगादीणं कमसो, पत्थ इमा होंति गाहाओ ॥२५३९॥

॥ 🖰 ॥९६॥

सो कीरति पारंची, लिंगाओ खेत्तकालओ तवतो। संपागडपिडसेवी, लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥९७॥ वसिहणिवेसणवाडगसाहिणिओयपुरदेसरज्जाओ खेताओ पारंची, कुलगणसंघालयाओ वा॥९८॥ जत्थुण्णणो दोसो, उप्पज्जिस्सित व जत्थ णाऊणं। तत्तो तत्तो कीरति, खेताओ खेत्तपारंची॥९९॥ जत्तियमेत्तं कालं, तवसा पारंचियस्स उ स एव। कालो दुविगप्पस्स वि,अणवहण्यस्म जोऽभिहितो१०० आसातण पिंडसेवण, दुह अणवहम्म को भवे कालो।

लिङ्कक्षेत्रादि-पाराधिकाः आसातण पहिसेवण, दुह अणवदृम्मि को भवे कालो। पारंचिए वि सो चेव होति उक्कोसग जहण्णो ॥२५४०॥ पारंचिया उ एते, तिण्णि वि सामण्णयो विणिहिट्टा। एत्तो जो जारिसतो, विसेसमेतेसि बोच्छामि ॥२५४१॥

दुहे य पमत्ते या, अण्णोण्णासेवणापसत्ते य । एतेसि तिण्हं पी, विसेसमेत्तो पवक्लामि ॥२५४२॥ तहियं तु विसयदुद्दी, सपक्खपरपक्खनी व जो होज्जा। सो कीरति पारंची, खेत्तेणं तू ण हिंगेणं ॥२५४३॥ अणुवरमंतो कीरति. सेसो णियमेण लिंगपारंची । खेत्रेण य लिंगेण य, पारंची अभिहिता एते ॥२५४४॥ किं एते चिय भेया, पारंचीए उयाहु अण्णे वि ?। भण्णति तवपारंची, अण्णो वि हु केरिसो स खलु?॥२५४५॥ इंदियपमायदोसा, जो तू अवराहमुत्तमं पत्तो । सन्भावसमाउद्दो, जइ य गुणा से इमे होंति ॥२५४६॥ वइरोसहसंघतणो. धितीय जो वज्जकुहुसामाणो। णवमस्स ततियवन्धुं, स्रुत्तऽत्थेहिं च जोऽहीओ ॥२५४७॥ खुड्डगसीहनवादीहिं भावितो जो य इंदियकसाए । णिग्वेत्रण समन्थो, पत्रयणसारं अभिगतत्थो ॥२५४८॥ णिज्जूहिनस्स असुभो, तिलतुसमेत्तो वि जस्स ण य भावो। णिज्जहणाए अरिहो. सेसे णिज्जहणा णित्थ ॥२५४९॥ एयगुणसंपउत्तो, पावित पारंचियं तु सो ठाण । एयगुणविष्पमुके. तारिसयम्मी भवे मूलं ॥२५५०॥ पारंचियं तु पावति, आसापन्तो तहेव पडिसेवी । एकंको होति दहा, जहण्ण उक्तोसओ चैव ॥२५५१॥ आसायणी जहण्णी, छम्मासुकोस बारस तु मासा । वासं बारसवासा, पहिसेवी कारणे भतिओ ॥२५५२॥ जित होजा आयरिओ, तो गणणिक्खेनिमित्तिरं कातं। गंतुणं अण्णाणे, दब्बादिसुभे विगडणा तु ॥२५५३॥ 11 Hoolisooll

एगागी खेत्तबहिं, कुणति तवं सुविपुलं महासत्तो। अवलोवणमायरिओ, पतिदिणमेगो कुणति तस्स १०१ ओलोयणं गवेसणमायरिओ कुणित णिश्वकालं पि। खेत्तबहिनिद्वियस्सा, इमेण विहिणा पवन्खामि ॥२५५४॥ जभयम्मि दातूण स पाडियुच्छं, वोहुं सरीरस्स य वृहमाणि। आसासतिचाण तवोकिलंतं, तमेव गच्छं पुणरेन्ति थेरा॥२५५५ असह सुत्तं दाउं, दो वि अदाउं व गच्छति पदे वि। संघाडो से भत्तं, पाणं चाऽऽणेति मग्गेणं ॥२५५६॥ पारंचितस्स तहियं, तं वहमाणस्स होज्ज गेलण्णं । ताहे से पडिकम्मं, तेहिं पयत्तेण कायव्वं ॥२५५७॥ आहरति भत्तपाणं, उन्त्रत्तणमाइयं पि से क्रणति। सतमेव गणाहिवई, वेयावचं जहत्थामं ॥२५५८॥ जो उ उवेहं कुजा, आयरिओ केणती पमाएणं। आरोवण तस्स भवे, गिलाणसुत्तम्मि जा भणिया ॥२५५९॥ अह पुण ण तरेज्ञ गुरू, गंतुं गेलण्णमादिहिं तहियं। कालुण्हे दुब्बलो वा, कुलादिकज्जेण वऽण्णेण ॥२५६०॥ अभिसेयं तो पेसे, अण्णं गीयं व जो तहिं जोग्गो। पुट्टो व अपुट्टो वा, सो वि य दीवेति तं कज्जं ॥२५६१॥ सी य समत्थो होज्जा, संपाडेतुमिह तस्स कज्जस्स । खीरादिलादिजुत्तो, विज्ञादिगंअतिसएहिं च ॥२५६२॥ जाणंता माहप्पं, सतमेव गुरू वदंति तं जोगं। अत्यि मम एत्य विसतो, अजाणए ते व सो वेति ॥२५६३॥ अच्छा महाशुभावो, जहासुई गुणसयागरो संघो। गुरुयं वि इमं कज्जे, मं पत्प भविस्सए लहुयं ॥२५६४॥ अभिहाणहेतुकुसली, बहुसु अणिराइओ विदुसभास । गंतृण रायभवणं, भणाइमं रायदारिष्ठं ॥२५६५॥

पिंडहाररूवी ! भण रायरूवी, तिमच्छए संजतरूवि दृढुं। णिवेयतित्ताण सपित्थवस्स, जिंह णिवो तत्थ तयं पवेसे॥२५६६॥ तं पूयतित्ताण सुहासणत्थं, पुर्चिछस राया गतकोज्हे । पण्हे उराले असुए कयाई, स यावि आइक्खित पत्थिवस्स ॥ २५६७॥

जारिसया सकादीण आयरक्खाण तारिसी एसी। तुह राय! दारपालो, तं पि य चक्कीण पडिस्की ॥२५६८॥ अट्ठारससीलसहस्सधारया होन्ति साहुणो अहुयं। तं पनि पडिरूवित्तं. अतियारणिसेवणापत्तो ॥२५६९॥ णिज्जुढो मि णरीसर !. खेते वि जतीण अच्छितं ण छमे । अतियारस्स विसोहिं, पकरेमि पमायमूलस्स ॥२५७०॥ धम्मकहा आतुद्दाण पुच्छणं दीवणा य कज्जस्स । कि प्रण हवेज कर्ज ?, इमेहिं होज्जाहि एगतरं ॥२५७१॥ वायपरायणक्विओ, चेतियद्दन्व संजतीगहणे। णिव्विसयादि चत्रण्ह वि. कज्जाण हवेज्ज एगतरं ॥२५७२॥ संघो ण लभति कर्ज, लद्धं कर्जं महाणुभावेणं। तुरुभंति विसज्जेमी, सेवियसंघो ति पूर्ति ॥२५७३॥ भणति य राया संघं, तुब्भं कड्जं करेमि अहमेयं। तुन्मे वि कुणह मन्झं, एयस्सेयं विसन्जेह ॥२५७४॥ अब्भत्थितो सर्यं वा. रण्णा संघो विसज्जए तुहो। आदी मज्बाज्यसाणे, सो यावि इवेज्ञ सोहीए ॥२५७५॥ देसं व देसदेसं. सञ्बं व वहेळा अहव ग्रुच्चेळा। छन्भागो से देसो, दसभागो देसदेसो तु ॥२५७६॥ छम्मासपरे बारसमासाणं बारसण्ह य समाणं। एको हो हो मासा, घउवीसा होति छन्भागो ॥२५७७॥

अद्वारस छत्तीसा, दिवसा छत्तीसमेव वरिसं च । बावत्तरिं च दिवसा, दसभागेणं इवेज्ञा वा ॥२५७८॥ एयासिं तिण्हं गाहाणं वक्खा— आसायणपारंची, जहण्ण छम्मास मास्रो छन्भागो । छन्भागेणं वरिसे, दो मासा हुंति णातन्त्रा ॥२५७९॥ पहिसेवणपारंची, वरिसे दो मास होन्ति छन्भागे । वरिसाण बारसण्हं, मासा चतुवीस छन्भागे ॥२५८०॥ देसे त्ति गतम् ।

दसभागेणऽद्वारस, दिवसा छण्हं हवंति मासाणं।
विस्तिस्स तु दसभागे, दिवसा छत्तीसई होंति।।२५८१।।
विस्तिमण बारसण्हं, विस्तं बावत्तरिं चऽहोरत्ता।
दसभागेण हवंति हु, एसो खल्छ देसदेसो तु॥२५८२॥
एवं तस्स तु संघो, तुहो देसं व देसदेसं वा।
ग्रेंचेज्ञ वहेज्ञा वा, अहवा सन्वं व झोसेज्ञा।।२५८३॥
अहव अगीयणिमित्तं, अप्परिणामे य तस्स ववहारं।
णवविह पत्थारेत्ता, गेण्ह्सु एयं लहुसभत्ते॥२५८४॥
हत्थं तु भमाडेतुं, दिसतेतुं णवविहं पि ववहारं।
ताहे भण्णति एवं, सो गेण्हसु लहुसयं एयं।।२५८५॥
॥ सु०१॥ १०१॥

अणवहुप्पो तवसा, तवपारंची य दो वि वोच्छिणा। चोहसपुवधरिम, धरेंति सेसा तु जा तित्थं ॥१०२॥ पारंचिय अणवहा, तवसा आरेण भद्दबाहूओ। बोच्छिण्णा दो तेसि, सेसा तु धरेंति जा तित्थं ॥१५८६॥ स्टिंगेण खेत्त काले, धरेन्ति पारंचियाऽणवहा जे। स्टिंगेणं अणुसज्जति, दन्वे भावे य जा तित्थं ॥२५८७॥ ॥ स०२॥ १०२॥

इति एस जीतकप्पे, समासतो सुविहिताणुकंपाए। कहितो देयोऽयं पुण, पत्तेस परिच्छियगुणेस ॥१०३॥ इति एस अणंतरतो. उद्दिहो होति जीतकप्पो तु। जीतं आयरणिक्तं, कप्पो पुण छिवहो इगमो ॥२५८८॥ आजीवियधरणाओ. व अहव जीतं इमं मुणेयव्वं। जीतस्स तस्स कप्पो, एत्थं जो जीतकप्पो सो ॥२५८९॥ सामत्थे वण्णणाए य. छेदणे करणे तहा। ओवम्मे आहिवासे य, कप्पसद्दो तु विणितो ॥२५९०॥ छेदणे वन्नणे चेव. कप्पसद्दो इहं कतो। जीयस्स वण्णणा जीतकप्पो तह छेदणं चेत्र ॥२५९१॥ एयस्स जीयकप्पस्स समासो इति इहं मुणेतन्त्रो ! संखेवी य समामी, ओही ति व हीन्ति एगद्वा ॥२५९२॥ सोभणविही त जेसि, सोभणविहिता व स्वविहिता ते त। तेसि अणुकंपाए. कहिनो देयो य पत्तेस ॥२५९३॥ सत्तेण वि अत्थेण वि. जो पत्तो स खलु जीयकप्पस्स । जोग्गो भिणतो इयरो, होति अजोगो ति णातव्यो ॥२५९४॥ पुणसद्दो त विसेसणे, किन्त विसेसेति ? तिन्तिणादीयं । एते त विसेसेती, विवरीया होन्ति पत्ता तु ॥२५९५॥ अहवा---संविग्गऽवज्जभीरु. परिणामो जो य होति गीयत्थो। आयरियवण्णवादी, संगइसीलो अपरितन्तो ॥२५९६॥ मेहावी य बहसतो. गुरुअसयी णिश्चमप्पमत्तो य। प्मादिगुणसमग्गो, जीतस्स स होति पत्तो ति ॥२५९७॥ जह ताव छेजा णिहसे. अविकीवि सुवण्णयं सुणेतव्वं ।

तह अविकारी जो खल्ल, आदी मज्झे य अवसाणे ॥२५९८॥

उपसंहारः

जीतशब्द-स्यार्थ:

कल्पशब्द-स्यार्थः

जीतकल्य-स्याध्ययने अधिकारी एवं देज्जा सुपरिक्रिक्यस्स णऽनस्स जीतववहारं। अणरिहदेन्ताऽऽरोवण, आणादी जं च पाविहिती ॥२५९९॥ पंचमहव्वयभेदो, छक्षायवहो य तेणऽणुण्णाओ । सहसीलणीयगाणं, कहयति जो पवयणरहस्सं ॥२६००॥ आमे घडे णिहिसं, जहा जलं तं घडं विणासेति। इय सिद्धंतरहस्सं, अप्पाहारं विणासेति ॥२६०१॥ मरेज्ञ सह विज्ञाए, काले णं आगए विद् । अपत्तं त ण वाएजा, पत्तं च ण विमाणए ॥२६०२॥ वितियपए वाएजा, अद्धाणादीहिं कारणजाए। बहुसी तिष्पस्सति वा, वेयाबचादिणा अम्हं ॥२६०३॥ अप्पगंथ महत्थो, इति एसो विण्णिओ समासेणं । पंचमतो ववहारो, नामेणं जीयकप्पो ति ॥२६०४॥ कप्प-व्ववहाराणं, उदिहसरिच्छाण तह णिसीहस्स । स्रतरतणबिन्दुणवणीतभूतसारेस णानच्त्रो ॥२६०५॥ कत्पादीए तिण्णि वि, जो सत्तत्थेहि णाहिती णितुणं। णिगदिस्सति सो एयं, सीसपसोसाण ण हु अण्णो ॥२६०६॥ || 現03 ||そ03||

॥ इति जीतकरुपस्त्रं सभाष्यं परिसमाप्तमिति ॥

॥ समृत्रस्य भाष्यस्य गाथाः २७०९ ॥

॥ ग्रन्थाग्रम् – ऋोकसंख्या ३२०० ॥